✤ वन्दे मातरमम्बिकां भगवतीं वाणीरमासेवितां कल्याणीं कमनीयकल्पलतिकां कैलाशनाथप्रियाम् ✤ वेदान्तप्रतिपाद्यमानविभवां विद्वन्मनोरञ्जिनीं श्रीचक्राङ्कितरत्नपीठनिलयां श्रीराजराजेश्वरीम्

✤ तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ✤ पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत्

✤ श्रीगणेशाय नमः ✤ मकरन्दानुसारि

✤ लक्ष्मीः स्यादचला तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिरं नक्षत्रं कृतपापतापशमनं योगो वियोगापहः ✤ सर्वाभीष्टकरन्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम्

✤ गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ ✤ राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथान् सदा ✤

✤ तिथ्यम्बुवृद्धं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम् ✤ योगोपबन्धं मनुजैरजस्रं सरोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत् ✤

✤ विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये ✤ गिरोनिकेते निरतैर्निबद्धं बुधैर्विबुद्धिं लभतां सदेदम् ✤

✤ अपेक्षितं सर्वमिहोपदिष्टं विसृष्टमन्यत्र नृणां यदिष्टम् ✤ ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽदो विपश्चितामर्चनमातनोतु ✤

विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्गम्

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः



दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥

जगल्लग्नम् ०७।२९

शु. ७ | बु. ५ | रा. ८ | सू. ६ | ४ | ९ | मं.बृ.श. ३ | चं.के. २ | १० | १२ | ११ | ल. १

विक्रमसंवत्	२०७७-७८
लक्ष्मणसंवत्	९११-१२
कलिसंवत्सरः	५१२२

राजा-मङ्गलः मन्त्री-शुक्रः
वर्षा ९ धान्यम् १३
वैशाखे महाकुम्भयोगो हरद्वारे

सन् १४२८ साल

कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयप्रकाशितम्

प्रधानसम्पादकः- राष्ट्रपतिसम्मानितः पं. श्रीरामचन्द्र झा
पूर्वप्राचार्यः विभागाध्यक्षः सङ्कायाध्यक्षः कुलपतिश्च
चलदूरवाणी-९४३००६३६४८

देशान्तरम्- १ । ३५ अक्षांशाः- २६ । ३५ पलभा- ६
वर्षम्- ४३ अङ्कः- ४३

वर्षलग्नम् ०३।१६

रा. १० | ११ | सू.चं. ९ | शु. १० | बु. ८ | ल. १ | बृ. श. ७ | २ | ४ | मं. के. ६ | ३ | ५

शालिवाहनशकाब्दः	१९४२-४३
भारतीयस्वतन्त्रताब्दः	७३-७४
क्रिस्ताब्दः	२०२०-२१

महाराजाधिराज-कामेश्वरसिंहः



प्रादुर्भावः २८-११-१९०७ ई.
तिरोभावः ०१-१०-१९६२ ई.

असली पञ्चाङ्ग में होलोग्राम स्टीकर पर विश्वविद्यालय लोगो देखकर लें ।

✱ प्रवर्तक:- स्व. रामकरण शर्मा, पूर्वकुलपतिः ✱ संरक्षक:- प्रो. राजेश सिंहः, कुलपतिः ✱ निदेशक:- डॉ. हरेन्द्रकिशोर झा
✱ सहसम्पादक:- पं. श्रीशिवाकान्त झा ✱ गणितकर्त्ता सम्पादकश्च- पं. श्रीराकेशकुमार झा, पं. श्रीवरुणकुमार झा

✤ प्राप्तिस्थानम्- बालाजी ऑफसेट प्रेस, बड़ा बाजार, दरभंगा (बिहार) । मो० : 7321933631, 9934655300, 9386825701
✤ मूल्यम् 80/- ✤ विदेशे मूल्यम् 15 $ ✤ मुद्रकः- बालाजी ऑफसेट प्रेस, बड़ा बाजार, दरभंगा (बिहार)

• आनन्दादियोगचक्रम् •

योगनाम	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	फलम्
आनन्दः	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	सिद्धिः
कालदण्डः	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वभाद्र	मृत्युः
धूम्रः	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ.	स्वाती	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	दुःखम्
धाता	रोहिणी	पुष्य	उफ.	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	शुभः
सौम्यः	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	सुखम्
ध्वाङ्क्षः	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वभाद्र	भरणी	हानिः
केतुः	पुनर्वसु	पूफ.	स्वाती	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	दुःखम्
श्रीवत्सः	पुष्य	उफ.	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	सम्पत्तिः
वज्रः	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	हानिः
मुद्गरः	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वभाद्र	भरणी	आर्द्रा	नाशः
क्षत्रम्	पूफ.	स्वाती	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	सम्मानः
मित्रम्	उफ.	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	पुष्टिः
मानसम्	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	सुखम्
पद्मः	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वभाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	लाभः
लुम्बः	स्वाती	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ.	हानिः
उत्पातः	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफ.	नाशः
मृत्युः	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	मृत्युः
काणः	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वभाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेशः
सिद्धिः	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ.	स्वाती	सिद्धिः
शुभः	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफ.	विशाखा	शुभः
अमृतम्	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	सम्मानः
मुशलम्	अभिजित्	पूर्वभाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	लाभः
गदः	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ.	स्वाती	मूल	हानिः
मातङ्गः	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफ.	विशाखा	पूर्वाषाढ	वृद्धिः
राक्षसः	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	कष्टम्
चरः	पूर्वभाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	सिद्धिः
सुस्थिरः	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ.	स्वाती	मूल	श्रवणा	शुभः
प्रवर्द्धमानः	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफ.	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	सुखम्

पञ्चाङ्ग देखने की विधि

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम तिथि, उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डपलात्मक मान, तिथि का घण्टा मिनट, उसके बाद नक्षत्र का नाम, दण्डपल एवं घण्टा मिनटात्मक मान, उसके बाद क्रमशः योग एवं करण के दण्डपलात्मक मान, मेषादि राशि में चन्द्रमा की अवस्थिति दण्डपल एवं घण्टामिनटात्मक समय, उसके आगे क्रमशः सूर्य का मिश्रमान (मध्यरात्रि) कालिक स्पष्टराश्यादि, दण्डपलात्मक दिनमान, घण्टा मिनटात्मक सूर्योदयास्त तथा राष्ट्रिय, सौर (गते) एवम् अङ्ग्रेजी तिथियाँ हैं। उसके बाद उस दिन के मुहूर्त एवं पर्वादि दिए गए हैं। यथा—श्रावणकृष्णप्रतिपदा सोम को प्रतिपदा तिथि का दण्डपलात्मक मान ०९।३७ (दिन घण्टा ०९ मिनट ०३) तक, उत्तराषाढनक्षत्र का दण्डपल ४६।४४ (रात्रि घण्टा ११ मिनट ५४) तक आदि सभी विषय इसी तरह जानना चाहिए। पञ्चाङ्ग के निचले भाग में निशीथ (मिश्रमान) कालिक दैनिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा—श्रावणकृष्णप्रतिपदा सोम को मिश्रमानकालिक स्पष्ट मङ्गलराश्यादि ११।०५।५५।४७ तथा स्पष्ट बुधराश्यादि ०२।०५।०९।०३ आदि। दो दिनों के स्पष्टग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा—श्रावणकृष्णप्रतिपदा सोम एवं द्वितीया मङ्गल के स्पष्ट मङ्गल का अन्तर ३१।१० कलादि मङ्गल की दैनिक गति है। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिए। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिक लग्नसारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरम्भ कर मीन तक लग्नों का मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखा गया है। अर्थात् १३, १४ आदि घण्टे से दिन के १, २ आदि घण्टे तथा शून्य घण्टे से २४ अर्थात् १२ बजे रात्रि समझना चाहिए। यथा—श्रावणकृष्णप्रतिपदा सोम को रात्रि ००।१३ बजे से ०१।४९ तक मेष, ०१।५० बजे से ०३।४५ तक वृष, ०३।४६ बजे से ०५।५८ तक मिथुन, ०५।५९ बजे से ०८।१६ बजे दिन तक कर्क, ०८।१७ बजे से १०।३२ तक सिंह, १०।३३ बजे से १२।४७ दिन तक कन्या, १२।४८ बजे से १५।०४ दिन तक तुला, १५।०५ बजे से १७।२१ सन्ध्या तक वृश्चिक, १७।२२ सन्ध्या से १९।२६ रात्रि तक धनु, १९।२७ से २१।१२ रात्रि तक मकर, २१।१३ से २२।४३ रात्रि तक कुम्भ एवं २२।४४ से ००।१२ रात्रि तक मीन लग्न रहेगा। इसी तरह प्रतिदिन समझना चाहिए। पाक्षिक विषयों के साथ—साथ अन्य उपयोगी विषय 'विविधविषयाः' में दिए गए हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रहस्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त, वक्र या मार्ग) लिखी गई है। शुद्धादि विषयों की सुविधापूर्वक जानकारी के लिए प्रत्येक पक्ष में पञ्चाङ्ग के ऊपरी भाग में दाईं ओर शुद्धादि विवरण दिए गए हैं जिससे सामान्य जानकारी रखने वालों को भी सुविधा हो। यात्रादिमुहूर्त अर्द्धप्रहर रहित नहीं हैं। अतः अर्द्धप्रहर एवम् आनन्दादियोग का विचार कर लेना चाहिए।

मिश्रमान (निशीथ) कालिक ग्रह से इष्टकालिक ग्रहस्पष्टीकरण—यथा श्रावणकृष्णद्वितीया मङ्गल को ३०।४८ दण्डादि पर स्पष्ट मङ्गल बनाना है तो मिश्रमानवारादि ०३।४६।५८ एवम् इष्टकालवारादि ०३।३०।४८ का अन्तर १६।१० मिश्रेष्टान्तर ऋणदण्डादि। तथा (११।०६।२६।५७)–(११।०५।५५।४७) = ३१।१० मङ्गल की गति कलादि। अतः (१६।१०) X (३१।१०) = ०८।२४ कलादि फल। अब (११।०६।२६।५७) – (००।००।०८।२४) = ११।०६।१८।३३ इष्टकालिक स्पष्टमङ्गल। वक्री ग्रह, राहु एवं केतु में विपरीत संस्कार करना चाहिए।

समर्थका विद्वांसः

पं.श्री विद्येश्वर झा, वेद — विभागाध्यक्षः
पं.श्री रेणुका सिन्हा, साहित्य — विभागाध्यक्षः
पं.श्री श्रीपति त्रिपाठी, दर्शन — विभागाध्यक्षः
पं.श्री हरेन्द्रकिशोर झा, ज्यौतिष — विभागाध्यक्षः
पं.श्री उमेश शर्मा, व्याकरण — विभागाध्यक्षः
पं.श्री श्रीपति त्रिपाठी, धर्मशास्त्र — विभागाध्यक्षः

पं.श्री कालीकान्त मिश्र
पं.श्री शशिनाथ झा
पं.श्री हृषीकेश झा
पं.श्री रामजीवन मिश्र
पं.श्री उपेन्द्र झा
पं.श्री महाकान्त पाठक
पं.श्री किशोरनाथ झा
पं.श्री उमारमण झा
पं.श्री भोला झा
पं.श्री हरिहर झा
पं.श्री गणेशकान्त झा
पं.श्री रामविलास चौधरी
पं.श्री चन्द्रनाथ मिश्र
पं.श्री हंसधर झा
पं.श्री अर्कनाथ चौधरी
पं.श्री धर्मेन्द्रनाथ मिश्र
पं.श्री कुलानन्द झा
पं.श्री शक्तिनाथ झा
पं.श्री अरुणकु. उपाध्याय
पं.श्री सुरेश्वर झा
पं.श्री लक्ष्मीनाथ झा
पं.श्री पुरेन्द्र वारिक
पं.श्री रवीन्द्र ना. झा
पं.श्री रामजी ठाकुर
पं.श्री इन्द्रमणि दास
पं.श्री चिरञ्जीव झा
पं.श्री चण्डेश्वर झा
पं.श्री राधाकान्त ठाकुर
पं.श्री कालिकादत्त झा
पं.श्री मदनमोहन पाठक

पं.श्री चक्रधर झा
पं.श्री देवनारायण झा
पं.श्री सर्वनारायण झा
पं.श्री विद्याधर मिश्र
पं.श्री बौआनन्द झा
पं.श्री सुप्रसन्न मिश्र
पं.श्री श्रुतिधर झा
पं.श्री विश्वनाथ झा
पं.श्री वाचस्पति त्रिपाठी
पं.श्री दामोदर झा
पं.श्री जयकान्त मिश्र
पं.श्री ब्रह्मदेव मिश्र
पं.श्री कमलेश झा
पं.श्री विकाऊ झा
पं.श्री उद्दिष्ट ना. झा
पं.श्री चित्रधर झा
पं.श्री शशिकान्त झा
पं.श्री शोभाकान्त झा
पं.श्री शिवाकान्त मिश्र
पं.श्री दिलीप कुमार झा
पं.श्री हेमनारायण चतुर्वेदी
पं.श्री सत्यनारायण झा
पं.श्री ताराकान्त झा
पं.श्री विन्ध्याचल ठाकुर
पं.श्री मीना कुमारी
पं.श्री दयानाथ झा
पं.श्री विश्राम तिवारी
पं.श्री घनश्याम मिश्र
पं.श्री भगीरथ मिश्र
पं.श्री विघ्नेशचन्द्र झा

पं.श्री शिवकान्त झा
पं.श्री गोविन्द चौधरी
पं.श्री रामगुलाम मिश्र
पं.श्री जगन्नाथ झा
पं.श्री शोभाकान्त मिश्र
पं.श्री अमरनाथ झा
पं.श्री चन्द्रमोहन झा
पं.श्री धनेश्वर झा
पं.श्री राजनाथ झा
पं.श्री राजेन्द्र प्र. दूबे
पं.श्री रामनारायण झा
पं.श्री स्वतन्त्रेश्वर झा
पं.श्री हरिनारायण झा
पं.श्री इन्द्रनाथ झा
पं.श्री धीरेन्द्र झा
पं.श्री देवेन्द्र झा
पं.श्री विजयकुमार मिश्र
पं.श्री सच्चिदानन्द झा
पं.श्री रामनिहोरा राय
पं.श्री गुणानन्द झा
पं.श्री बेचन झा
पं.श्री सुन्दर झा
पं.श्री शिवलोचन झा
पं.श्री ब्रह्मदेव शर्मा
पं.श्री थानेश्वर झा
पं.श्री चौठी सदाय
पं.श्री सुधीर कुमार झा
पं.श्री द्वारिकानाथ झा
पं.श्री पारसनाथ मिश्र
पं.श्री सुखेश्वर झा

पं.श्री चन्द्रकान्त शुक्ल
पं.श्री दुर्गानाथ झा
पं.श्री दिगम्बर मिश्र
पं.श्री कुशेश्वर झा
पं.श्री वामदेव झा
पं.श्री विघ्नेश झा
पं.श्री फणीन्द्र चौधरी
पं.श्री गङ्गाधर झा
पं.श्री जगन्नाथ झा
पं.श्री शम्भुनाथ झा
पं.श्री सूर्यकान्त झा
पं.श्री फूलचन्द्र मिश्र
पं.श्री तारणीश झा
पं.श्री महेश मिश्र
पं.श्री श्रीधर त्रिपाठी
पं.श्री रघुपति झा
पं.श्री शशिधर झा
पं.श्री लक्ष्मीश्वर झा
पं.श्री शङ्करकुमार मिश्र
पं.श्री विनयकुमार मिश्र
पं.श्री हेराम शर्मा
पं.श्री वायुनन्दन मिश्र
पं.श्री रामलखन झा
पं.श्री राधारमण झा
पं.श्री मोहनजी झा
पं.श्री ओङ्कारनाथ मिश्र
पं.श्री रामप्रपन्न शर्मा
पं.श्री बेचनेश्वर झा
पं.श्री उमेश मिश्र
पं.श्री गोविन्द झा
पं.श्री सीताचरण झा
पं.श्री महानन्द ठाकुर
पं.श्री रामलखन शर्मा
पं.श्री कुणालकुमार झा
पं.श्री काशीनाथ झा
पं.श्री बटोही झा
पं.श्री देवर्षि पाण्डेय
पं.श्री राजेन्द्र प्रतिहस्त
पं.श्री राजकुमार झा

पं.श्री खगेन्द्रनाथ झा
पं.श्री शशिधर मिश्र
पं.श्री भुवनेश्वर झा
पं.श्री भूपेन्द्र ना. झा
पं.श्री गङ्गेश ठाकुर
पं.श्री धनेश झा
पं.श्री कामेश्वर मिश्र
पं.श्री देवोत्तम ठाकुर
पं.श्री रामकृष्ण झा
पं.श्री भोलानाथ मिश्र
पं.श्री इन्द्रदेव झा
पं.श्री सुशीलकान्त मिश्र
पं.श्री गौरीनाथ राय
पं.श्री श्रवणकु.चौधरी
पं.श्री रतन मिश्र
पं.श्री विनयनाथ झा
पं.श्री गोपालकृष्ण झा
पं.श्री मनोज कुमार
पं.श्री पवनकुमार मिश्र
पं.श्री इन्द्रकान्त झा
पं.श्री भगलू झा
पं.श्री विश्वनाथ झा
पं.श्री हरिनारायण ठाकुर
पं.श्री भुवनेश्वर मिश्र
पं.श्री रामकुमार शर्मा
पं.श्री विद्याकान्त झा
पं.श्री उमेशचन्द्र झा
पं.श्री कलाधर झा
पं.श्री इन्दुनाथ ठाकुर
पं.श्री इन्द्रनारायण झा
पं.श्री विन्ध्यनाथ मिश्र
पं.श्री शक्तिनन्दन झा
पं.श्री उमेश झा
पं.श्री कृष्णकान्त मिश्र
पं.श्री बाबूलाल मिश्र
पं.श्री श्रीकान्त प्रतिहस्त
पं.श्री बैद्यनाथ झा
पं.श्री राधारमण ठाकुर
पं.श्री रघुवीर झा

पं.श्री राजेन्द्र झा
पं.श्री विष्णुदेव झा
पं.श्री भूपनारायण मिश्र
पं.श्री हर्षनाथ झा
पं.श्री बालकृष्ण पाठक
पं.श्री नवीनचन्द्र ठाकुर
पं.श्री मदनानन्द झा
पं.श्री चन्द्रनाथ झा
पं.श्री सत्यवान कुमार
पं.श्री लक्ष्मीकान्त झा
पं.श्री दिनेश ओझा
पं.श्री अभिराम झा
पं.श्री शिवानन्द झा
पं.श्री भवनाथ झा
पं.श्री तेजनारायण झा
पं.श्री जगन्नाथ मिश्र
पं.श्री चन्द्रकृष्ण मिश्र
पं.श्री सदानन्द झा
पं.श्री मदन कुमार झा
पं.श्री मुनीन्द्र झा
पं.श्री शुकदेव शर्मा
पं.श्री राजेश्वर झा
पं.श्री प्रेमकान्त झा
पं.श्री सुजीतकुमार मिश्र
पं.श्री रतीशचन्द्र झा
पं.श्री विनय पाठक
पं.श्री कामेश्वर चौधरी
पं.श्री जीवानन्द झा
पं.श्री गोविन्द झा
पं.श्री महाकान्त ठाकुर
पं.श्री विजयकान्त झा
पं.श्री विनोदानन्द झा
पं.श्री सत्येन्द्र शर्मा
पं.श्री गङ्गानाथ झा
पं.श्री मुकेश झा
पं.श्री सुरेश झा
पं.श्री कमलकान्त मिश्र
पं.श्री कमलापति त्रिपाठी
पं.श्री विकास

• ज्यौतिष(काल)शास्त्रमाहात्म्यम् •

नारदः — सिद्धान्तसंहिताहोरारूपस्कन्धत्रयात्मकम्। वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम्।।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्त्तं कर्म न सिद्ध्यति। तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।।

कश्यपः — ग्रहणग्रहसङ्क्रान्तियज्ञाध्ययनकर्मणाम्। प्रयोजनं व्रतोद्वाहक्रियाणां कालनिर्णयः।।

भारद्वाजः — यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा। तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्यौतिषं (गणितं) मूर्ध्नि संस्थितम्।।

वशिष्ठः — वेदस्य चक्षुः किल शास्त्रमेतत् प्रधानताङ्गेषु ततोऽर्थजाता। अङ्गैर्युतोऽन्यैः परिपूर्णमूर्त्तिश्चक्षुर्विहीनः पुरुषो न किञ्चित्।।

लगधः — वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः। तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्।।

सूर्यसिद्धान्ते — दिव्यं चक्षुर्ग्रहाणां तु दर्शितं ज्ञानमुत्तमम्। विज्ञायार्कादिलोकेषु स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम्।।

वराहमिहिरः — नासाम्वत्सरिके देशे वस्तव्यं भूतिमिच्छता। चर्क्षुभूतो हि यत्रैष पापं तत्र न विद्यते।।
न साम्वत्सरपाठी च नरकेषु प्रपद्यते। ब्रह्मलोकप्रतिष्ठां च लभते दैवचिन्तकः।।
ग्रन्थतश्चार्थतश्चैतत् कृत्स्नं जानाति यो द्विजः। अग्रभुक् स भवेच्छ्राद्धे पूजितः पङ्क्तिपावनः।।

जातकक्रोडे — अन्यानि शास्त्राणि विनोदमात्रं न किञ्चि तेषां तु विशिष्टमस्ति। चिकित्सितं ज्योतिषमन्त्रवादाः पदे पदे प्रत्ययमावहन्ति।।
अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्। प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।।

तथा च — सद्यः फलति गान्धर्वः मासमेकं पुराणिकः। नवाहं वैदिको भाति ज्योतिर्वैद्यौ निरन्तरम्।।

कल्पादिसंवत् १९७२९४९१२१ **सृष्टिसंवत्** १९५५८८५१२१ **रामसंवत्** ८८०१६२ **कृष्णसंवत्** ५२५६ **कलिसंवत्** ५१२१–२२ **सप्तर्षिसंवत्** ५०९६ **शकाब्दः** १९४२–४३, **विक्रमसंवत्** २०७७–७८, **सन्** १४२८ **साल**, **लक्ष्मणसंवत्** ९११–१२, **क्रिस्ताब्दः** २०२०–२१ ई., तत्र **प्रभवादिबार्हस्पत्यगताब्दादयः** ४७।००।२६।५२।४८।। भोग्याब्दादयः १२।११।०३।०७।१२।। अत्र विद्यमाने नेत्रवेदनवेन्दुमिते शकाब्दे **रुद्रविंशतिकायां** ज्वलनदैवतयुगे **सप्तचत्वारिंशत् प्रमाथीनामकमध्यमबार्हस्पत्यसंवत्सरफलम् —**

निष्पत्तिः सर्वशस्यानां सर्वत्र जायते प्रिये। प्रमाथी वत्सरे देवि! प्रमादो जायते तदा।।

वर्षेश (राजा) मङ्गलफलम् — वायुर्वातितरोः प्रणाशनकरो मेघस्य नाशाय वै शस्यानां च विनाशनं किमपि च स्वल्पा च वृष्टिर्भवेत्।
पीड्यन्ते महिषाश्वकुञ्जरनरा आधिज्वरेणाकुलाः क्षोणी जन्मनि चाधिपे निगदितं युद्धोद्यतो भूपतिः।।

संवाहक (मन्त्री) शुक्रफलम् — मेघास्तोयसमाकुला बहुजलव्यादानझङ्कारिणः पृथ्वी शस्यसमूहसंयुततनुर्नित्योत्सवैर्व्यापिता।
भूपाला निजधर्मकर्मनिरता गृह्णन्ति दण्डं जनैर्दुष्टानाशपरा महासुविकलाः सम्वाहके भार्गवे।।

पालकेशमङ्गलफलम् — वायुर्वाति महीरुहस्यपतनं तीक्ष्णः सदाहर्पीतिः मेघाः निर्जलतां प्रयान्ति विपदो लोकानतिक्रामति।
नाशं यान्ति गजाश्वसिंहमहिषीगोजातयः सर्वदा लोका मन्मथरुग्विमर्दविकलाः क्षोणीसुते पालके।।

मेघाधिपचन्द्रफलम् — किञ्चित्तोयं विमुञ्चन्ति जलदाश्चित्रितं विधौ।। **तोयाधिपमङ्गलफलम्**—अल्पतोययुता पृथ्वी धरणीतनये तथा।।

शस्याधिपसूर्यफलम् — रोगैर्व्याकुलिता लोकाः स्वल्पा वृष्टिर्महीतले। शस्यनाशो भवेद् घोरः शस्येशे वासराधिपे।।

लोकाधिपशनिफलम् — लोकाधिपे यदा मन्दे निःशस्या निर्द्धना नराः। नित्यासन्नभयाः क्षीणा दुःखसङ्घसमन्विताः।।

आवर्त्तकनामकमेघफलम् — आवर्त्तके महावर्त्तो हाहाकाराकुला मही। अल्पतोयकरो मेघो गर्जते भयदो रवः।।

तटगतरोहिणीफलम् — तटगता यदि सा शुभवृष्टिदा।। सुवृष्टिस्तटभे स्मृता।।

चैत्रशुक्लप्रतिपद्बुधफलम् — सौम्यो गुरुर्वा भृगुजो यदि स्यात् सम्पत् प्रयुक्ता धरणी सुशस्या।। **पौषामाबुधफलम्**—मध्यमम्।।

वायुः—सम्वहः।। **आर्द्राप्रवेशफलम्**—मध्यमम्।। **दीपावलीफलम्**—शोभनम्।। **मेषसङ्क्रान्तिफलम्**—शोभनम्।। **शकाब्दफलम्**—स्वल्पवृष्टिर्हानिश्च।।

विक्रमसंवत्फलम्—कलहो मध्यमसुखञ्च।। **जलाढकमानम्**—१००।। **समुद्रे**—५०।। **पर्वते**—३०।। **भूमौ**—२०।।

• वर्षादिविश्वाः •

वर्षा ९ धान्यम् १३ शीतम् १३ तृणम् ७ ऊष्णम् १७ वायुः १३ प्रजावृद्धिः १५ प्रजाक्षयः १५ विग्रहः ११ क्षुधा ११ तृष्णा ११ निद्रा ११ आलस्यम् ५ उद्यमः ११ शान्तिः १३ क्रोधः ११ दण्डः ३ मैत्री १ उत्सवः १३ पापम् ७ पुण्यम् ११ रसादि ९ उग्रत्वम् ७ रसोत्पत्तिः ७ फलोत्पत्तिः १३ रोगः १३ रोगक्षयः ११ आचारः ११ अनाचारः १७ मरणम् १५ जननम् ७ चौरभयम् १३ चौरशान्तिः १९ अग्निभयम् ९ अग्निशान्तिः १९ ।।

• मेषादिराशीनां सफलमायव्ययचक्रम् •

राशिः	मेषः	वृषः	मिथुनम्	कर्कः	सिंहः	कन्या	तुला	वृश्चिकः	धनुः	मकरः	कुम्भः	मीनः
आयः	०८	०२	०५	१४	०२	०५	०२	०८	११	१४	१४	११
व्ययः	१४	०८	०५	०२	१४	०५	०८	१४	०५	१४	१४	०५
फलम्	अयशः	लाभः	लाभः	जयः	जयः	लाभः	लाभः	अयशः	जयः	क्लेशः	क्लेशः	जयः

• सन् १४२८ साल, १९४२–४३ शकाब्दीय शुद्ध्यशुद्धी •

तत्र श्रावणकृष्णप्रतिपच्चन्द्रवासरान्मकरस्थबृहस्पतिकनीचांशजन्यदोषात् श्रावणकृष्णैकादश्यां बृहस्पतौ ४५।११ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ००।१०।४५।११।। ततो भाद्रकृष्णत्रयोदश्यां चन्द्रे ११।३१ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०१।०१।२६।२०।। ततः सिंहादित्य–मलमासदोषाभ्यां द्वितीयाश्विनकृष्णामायां भृगौ ४९।२४ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०२।००।३७।५३।। ततः कार्त्तिककृष्णत्रयोदश्यां भृगौ ०८।४८ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।२७।१९।२४।। ततो मकरस्थबृहस्पतिकनीचांशजन्यदोषाद् अग्रहायणकृष्णप्रतिपन्मङ्गले २६।५३ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ००।१८।१८।०५।। तत अग्रहायणशुक्लप्रतिपन्मङ्गले ५९।०० यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।१४।३२।०७।। ततो धनुरादित्य–बृहस्पतिक्षैण्यास्त–बाल्यदोषेभ्यो माघशुक्लपञ्चम्यां मङ्गले ५३।५५ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०२।०२।५४।५५।। ततो माघशुक्लनवम्यां रवौ ३७।५९ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।०४।४४।०४।। ततः शुक्रक्षैण्यास्त–बाल्यदोषेभ्यः चैत्रशुक्लतृतीयायां बृहस्पतौ ५३।०४ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०१।२३।१५।०५।। तत आषाढीं यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०३।१०।०६।५६।। अतो वर्षे शुद्धसमयमानं मासादि ०५।२८।०८।५१।। अशुद्धसमयमानं मासादि ०६।२५।५१।०९।। तेन वर्षपूर्त्तिदिनानि ३८४।।

• सन् १४२८ साल, १९४२–४३ शकाब्दीय शुद्धादि •

कार्त्तिके अशुद्धसमयः। अग्रहायणकृष्णे माघशुक्लषष्ठीतो दशमीमध्ये ततश्च चैत्रशुक्लवैशाखज्येष्ठाषाढमासेषु शुद्धसमये बहवो विवाहमुहूर्ताः। चैत्रादाषाढं यावदुपनयनदिनानि। वैशाखज्येष्ठमासयोरेकादशीव्रतोद्यापनदिने। चैत्रशुक्लादिमासेषु देवादिप्रतिष्ठा–तडागादिखननयज्ञादिमुहूर्ताः। अग्रहायणे माघशुक्ले च पूर्वोदितः शुक्रस्तेन तत्र पश्चिमदक्षिणदिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीयद्विरागमनदिनानि बहूनि, तदितर पूर्वोत्तरदिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीयद्विरागमनदिनानि शुक्रान्ध (रेवती–अश्विनी–रोहिणी–मृगशिरा) नक्षत्रेष्वेव। वैशाखे पश्चिमोदितः शुक्रस्तेन तत्र पूर्वोत्तरदिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीयद्विरागमनदिनानि, पश्चिमदक्षिणदिशोस्तु शुक्रान्धनक्षत्रेष्वेव। वैशाखे (मेषार्के) हरद्वारे **महाकुम्भयोगः**।

• सन् १४२९ साल, १९४३–४४ शकाब्दीय सङ्क्षिप्तशुद्धादि •

अग्रहायणे पश्चिमायाम्, फाल्गुने वैशाखे च पूर्वस्यां शुक्रोदयः। अग्रहायणे माघादिमासेषु (फाल्गुने स्वल्पः) च शुद्धसमयः। तत्र विवाह–उपनयन–गृहारम्भ–गृहप्रवेश–देवादिप्रतिष्ठा–तडागादिखनन–यज्ञादिमुहूर्ता बहवः। **फाल्गुने कुम्भकोणे महाकुम्भयोगः**।

• वर्षफलम् •

इस वर्ष के वर्षेश (राजा) मङ्गल, संवाहक (मन्त्री) शुक्र, पालकाधिपति मङ्गल, मेघपति चन्द्रमा, जलपति मङ्गल, शस्यपति सूर्य, लोकपति शनि, आवर्त्तकनामक मेघ तथा रोहिणीवास तट में है। प्रमाथी–आनन्दनामक बार्हस्पत्यवर्ष है। वर्षा ९ विश्वा, धान्य १३ विश्वा, संवहनामक वायु तथा जलाढ़कमान २० विश्वा है। शकाब्दानुसार हानि एवं स्वल्पवृष्टि तथा विक्रमसंवत्सरानुसार कलह एवं मध्यमसुख प्राप्त है। जगल्लग्न–वृश्चिक, वर्षलग्न–कर्क, राजा–मन्त्री में समभाव, वर्षलग्नेश चन्द्रमा भाग्यस्थ–सूर्ययुक्त–बृहस्पतिगृही, जगल्लग्नेश मङ्गल पराक्रमस्थ–उच्चगत, जगल्लग्न कुण्डली में बृहस्पतिगृही चन्द्रमा केतुयुक्त, सप्तमस्थ स्वगृही शुक्र, नीचगत बृहस्पति–स्वगृही शनियुक्त, वर्षलग्न कुण्डली में कर्मस्थ शुक्र, सप्तमस्थ बृहस्पति–शनि एवं षष्ठस्थ मित्रगृही मङ्गल केतुयुक्त हैं। दोनों कुण्डलियों में राजा–मन्त्री की नवमपञ्चम स्थिति सुदृढ़ है। अधिकारियों में पापग्रह की अधिकता तथा ग्रहयुति–दृष्टि के आलोक में समय–समय पर वैमनस्य की स्थिति के बावजूद अनुकूलता की स्थिति रहेगी। कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, व्यापार, ऊर्जाक्षेत्र, सञ्चार एवं वैज्ञानिक उपलब्धि के क्षेत्र में बाधा के बावजूद प्रगति होगी। वैश्विक स्तर पर देश की स्थिति मजबूत रहेगी। आर्थिक क्षेत्र में विविध प्रकार के कार्य होंगे। ग्रहयोगानुसार प्राकृतिक उत्पात (भूकम्प–ज्वालामुखी–जलवायु का प्रतिकूल प्रभाव–हिमपात–तूफान–वज्रपात–मेघगर्जन–भूस्खलन–ग्रीष्माधिक्य–रोगाग्निकोप आदि), हिंसक घटना, यान दुर्घटना, कलह–उपद्रव, राजनैतिक उथल–पुथल एवं हड़ताल आदि से जन–धन की क्षति सम्भावित रहेगी। खण्डवृष्टि, विषमवृष्टि, बाढ़ एवम् ईतिभय से कृषि प्रभावित होगी। भाद्री, अगहनी एवं चैत्री फसल की उपज क्रमशः ८०, ९० एवम् ९० प्रतिशत होगी।

• मासफलम् •

श्रावण — इस मास में ५ बृहस्पतिदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ एवं सौम्यशृङ्ग है। अतएव खाद्यपदार्थ, धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, गृहोपकरण, वस्त्र, रसादि, कन्दमूल एवं फलादि के भाव में सस्ती–तेजी का क्रम रहेगा। तरलपदार्थ के भाव में अपेक्षाकृत मँहगी का क्रम रहेगा। कहीं–कहीं बाढ़, अतिवृष्टि तथा कहीं–कहीं खण्डवृष्टि के कारण कृषिकार्य प्रभावित होगा। वायुवेग, अग्निभय, तापाधिक्य, रोग–चोरभय, भूस्खलन एवं दुर्घटना सम्भावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

भादव — इस मास में ५ सोमदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृङ्ग है। अतएव खाद्यपदार्थ, तरलपदार्थ, रसपदार्थ, फल–व्यञ्जनादि, वस्त्रादि, खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ एवं काष्ठोपकरण के मूल्य में साम्य की स्थिति रहेगी। कहीं–कहीं खण्डवृष्टि, कहीं अतिवृष्टि एवं बाढ़ से कृषि प्रभावित होगी। ग्रहयोगवशात् प्राकृतिक प्रकोप, राजनीतिक उथल–पुथल, हड़ताल, उपद्रव, तूफान, रोगाग्निभय एवं यान दुर्घटना सम्भावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिए।

आश्विन — इस मास में ५ बृहस्पतिदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३०, सौम्यशृङ्ग एवं चारग्रहों का योग है। अतएव खाद्यपदार्थ, धातुपदार्थ, फल–व्यञ्जनादि, तरलपदार्थ, वस्त्रादि एवं गृहोपकरण के भाव में सस्ती–साम्य का क्रम रहेगा। चारग्रहों के योग से हड़ताल, यान दुर्घटना, तूफान, हिमपात, भूस्खलन, प्राकृतिक उत्पात (भूकम्प), रोगभय एवम् उपद्रव सम्भावित है। खण्डवृष्टि की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।

कार्त्तिक — इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५, सौम्यशृङ्ग एवं चारग्रहों का योग है। अतएव धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, तरलपदार्थ, फल–व्यञ्जनादि, औषधि, वस्त्रादि, काष्ठोपकरण एवं गृहोपकरण के मूल्य में तेजी–साम्य का क्रम रहेगा। कृष्णपदार्थ, लौह आदि के भाव में अपेक्षाकृत तेजी रहेगी। श्वेतपदार्थ एवं रसपदार्थ के भाव में साम्य की स्थिति रहेगी। चारग्रहों के योग के कारण प्राकृतिक उत्पात (भूकम्प, तूफान, ज्वालामुखी विस्फोट आदि), उपद्रव, हड़ताल, दुर्घटना, राजनीतिक उथल–पुथल एवं खण्डवृष्टि सम्भावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

अगहन – इस मास में ५ सोमदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३०, सौम्यशृङ्ग एवं पञ्चग्रहयोग है। अतएव सभी प्रकार के वस्तुओं के मूल्य में तेजी–साम्य का क्रम रहेगा। रक्तपदार्थ, औषधि, गृहोपकरण, धातुपदार्थ, काष्ठोपकरण एवं वस्त्रादि के भाव में तेजी रहेगी। पञ्चग्रहयोग के कारण प्राकृतिक उत्पात (तूफान, भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, हिमपातादि), राजनैतिक उथल–पुथल, यान दुर्घना, उपद्रव एवं हड़ताल के साथ–साथ खण्डवृष्टि सम्भावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

पौष – इस मास में ५ मङ्गलदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३०, सौम्यशृङ्ग एवं चारग्रहों का योग है। अतएव सभी वस्तुओं के भाव में साम्य का क्रम बना रहेगा। खाद्यपदार्थ, धातुपदार्थ, औषधि, ऊनीवस्त्र, खनिजपदार्थ, काष्ठोपकरण, गृहोपकरण एवं तरलपदार्थ अपेक्षाकृत सस्ते होंगे। चारग्रहयोग के कारण प्राकृतिक प्रकोप, दुर्घटना, हड़ताल, हिमपात, उपद्रव, शीताधिक्य एवं झञ्झावात–उपलपात की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।

माघ – इस मास में ५ बृहस्पतिदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३०, सौम्यशृङ्ग एवं षडग्रहयोग है। अतएव सभी वस्तुओं के भाव में अपेक्षाकृत साम्य–सस्ती का क्रम रहेगा। फल, व्यञ्जन, रसादि, वस्त्रादि एवं गृहोपकरण अपेक्षाकृत सस्ते होंगे। षडग्रहयोग होने के कारण प्राकृतिक प्रकोप (हिमपात, तूफान, भूकम्प आदि), झञ्झावात, उपद्रव, हड़ताल, दुर्घटना एवं राजनैतिक उथल–पुथल की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

फाल्गुन – इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३०, समशृङ्ग एवं चारग्रहों का योग है। अतएव रसपदार्थ, वस्त्रादि, श्वेतपदार्थ एवं फल–व्यञ्जनादि के भाव में अपेक्षाकृत साम्य–महँगी का क्रम बना रहेगा। धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, गृहोपकरण, काष्ठोपकरण, रक्तपदार्थ एवम् औषधि अपेक्षाकृत महँगे होंगे। चारग्रहयोग होने के कारण प्राकृतिक प्रकोप, दुर्घटना, हड़ताल, उपद्रव, अग्निभय, झञ्झावात एवम् उपलपात की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिए।

चैत्र – इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं याम्यशृङ्ग है। अतएव पूर्वापेक्षया सभी वस्तुओं के मूल्य में साम्य–तेजी का क्रम रहेगा। रसपदार्थ, तरलपदार्थ, श्वेतपदार्थ, काष्ठोपकरण, गृहोपकरण, औषधि एवं फल–व्यञ्जनादि के भाव में अपेक्षाकृत तेजी रहेगी। झञ्झावात, उपलपात, अग्निभय, गर्मी की अधिकता, हड़ताल, दुर्घटना, राजनैतिक उथल–पुथल एवं प्राकृतिक प्रकोप की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।

वैशाख – इस मास में ५ मङ्गलदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ एवं याम्यशृङ्ग है। अतएव सभी वस्तुओं के भाव में तेजी का क्रम रहेगा। तरलपदार्थ, श्वेतपदार्थ, रक्तपदार्थ, फल–व्यञ्जनादि एवं वस्त्रादि के भाव में अपेक्षाकृत अधिक तेजी का क्रम सम्भावित रहेगा। झञ्झावात, राजनैतिक उथल–पुथल, यान दुर्घटना एवं प्राकृतिक उत्पात की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिए।

ज्येष्ठ – इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५, सौम्यशृङ्ग एवं चारग्रहों का योग है। अतएव खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, तरलपदार्थ, काष्ठोपकरण, वस्त्रादि, फल–व्यञ्जनादि एवं गृहोपकरण के मूल्य में पूर्वापेक्षया समता का क्रम रहेगा। चारग्रहयोग के कारण झञ्झावात, उपलपात, तूफान, राजनैतिक उथल–पुथल, विद्युदग्निभय, दुर्घटना, हड़ताल एवम् उपद्रव की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।

आषाढ – इस मास में ५ मङ्गलदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृङ्ग है। अतएव खाद्यपदार्थ, खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, तरलपदार्थ, गृहोपकरण, काष्ठोपकरण, वस्त्रादि एवं फल–व्यञ्जनादि के भाव में साम्य–तेजी का क्रम रहेगा। कृष्णपदार्थ, रसपदार्थ, औषधि एवं धातुपदार्थ के भाव में तेजी का क्रम रहेगा। ५ मङ्गलदिन होने के कारण झञ्झावात, विद्युदग्निभय, तापवृद्धि, दुर्घटना, उपद्रव एवं राजनैतिक उथल–पुथल सम्भावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

• राशिफलम् •

मेष (चु, चे, चो, ल, लि, लु, ले, लो, अ) – वर्षफल मिश्रित है। सन्तान–पारिवारिकसुख अनुकूल रहेगा। पूर्वार्द्ध में कार्य की सिद्धि होगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं कृषि कार्य से लाभ होगा। नवीन कार्यारम्भ एवं राजनीति के क्षेत्र में बाधा एवं विलम्ब से सफलता मिलेगी। तीर्थाटन एवं धर्ममूलक कार्य सम्पन्न होंगे। समय–समय पर वातपीड़ा, उदरविकार एवं चोट की सम्भावना रहेगी। अतएव १३ नवम्बर से २८ मार्च तक बृहस्पति की, ०५ अगस्त से १६ नवम्बर तक शनि की एवम् ०५ नवम्बर से राहु–केतु की उपासना करनी चाहिए। मङ्गलव्रत, चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ एवं वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

वृष (इ, उ, ए, ओ, व, वि, वु, वे, वो) – शनि की साढ़ेसाती चल रही है। अतएव उदरपीड़ा, घाव अथवा चोट, मूत्रविकार, वात–कफविकार की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख मध्यम तथा पारिवारिकसुख में बाधा सम्भव है। भ्रमण, स्थानपरिवर्त्तन एवं विवाद की स्थिति सम्भावित रहेगी। उद्योग, व्यापार, कृषि, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्रों में बाधा एवं विलम्ब के बाद आंशिक सफलता मिलेगी। नवीन कार्यारम्भ में बाधा होगी। अतएव धनुराशिवत् शनि की, राहु–केतु की तथा १२ नवम्बर तक बृहस्पति की उपासना लाभकर होगी। चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ, मङ्गलव्रत तथा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

मिथुन (क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह) – शनि की साढ़ेसाती चल रही है। अतएव वात–पित्त–कफजन्य पीड़ा, उदरविकार, मूत्रदोष, घाव या चोट की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख अनुकूल एवं पारिवारिकसुख बाधित रहेगा। उद्योग, व्यापार, कृषि, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्रों में बाधा–विलम्ब से आंशिक लाभ होगा। वैमनस्य–विवाद, भ्रमण एवं स्थानपरिवर्त्तन का योग सम्भावित रहेगा। अतएव धनुराशिवत् शनि की, राहु की, १३ नवम्बर से २८ मार्च तक बृहस्पति की एवं ०४ नवम्बर तक केतु की उपासना कर्त्तव्य है। मङ्गलव्रत, चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ एवं वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

कर्क (हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे, डो) – वर्षफल मिश्रित है। उदरपीड़ा, कफज्वर, वातदोष, घाव या चोट की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख मध्यम एवं पारिवारिकसुख बाधायुक्त रहेगा। शिक्षा, उद्योग, कृषि, व्यापार एवं राजनीति के क्षेत्रों में मध्यम कोटि की स्थिति रहेगी। भ्रमण एवं तीर्थाटन का योग लगेगा। अत: ०४ अगस्त तक एवं १७ नवम्बर से धनुराशिवत् शनि की, १३ नवम्बर से बृहस्पति की, ०५ नवम्बर से केतु की तथा ०४ नवम्बर तक राहु की उपासना लाभकर होगी। मङ्गलव्रत, वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ एवं चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ करना लाभकर होगा।

सिंह (म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे) – वर्षफल शुभप्राय है। स्वास्थ्य, सन्तानसुख एवं पारिवारिकसुख मध्यम कोटि का रहेगा। उदरपीड़ा, वातदोष एवं घाव सामान्य रूप से यदा–कदा सम्भावित रहेगा। शिक्षा, व्यापार, उद्योग, कृषि, नवीन कार्यारम्भ एवं राजनीति के क्षेत्रों में लाभकर स्थिति रहेगी। तीर्थाटन एवं धर्मकृत्य में व्यय की सम्भावना है। ०५ अगस्त से १६ नवम्बर तक धनुराशिवत् शनि की एवम् ०४ नवम्बर तक केतु की उपासना लाभकर होगी। रविव्रत/अनोना, आदित्यहृदयस्तोत्रपाठ, वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ एवं चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

कन्या (टो, प, पि, पू, ष, ण, ठ, पे, पो) – वर्षफल मिश्रित है। वात–कफदोष, घाव या चोट एवम् उदरविकार सम्भावित रहेगा। सन्तानसुख मध्यम तथा पारिवारिकसुख अनुकूल रहेगा। शिक्षा, कृषि, उद्योग, व्यापार, नवीन कार्यारम्भ एवं राजनीति के क्षेत्रों में बाधा एवं विलम्ब से सफलता मिलेगी। तीर्थाटन, धर्मकृत्य, स्थानपरिवर्त्तन एवं वैमनस्य की स्थिति सम्भावित रहेगी। उत्तरार्द्ध में अपेक्षाकृत लाभकर स्थिति रहेगी। अतएव धनुराशिवत् शनि एवं केतु की उपासना लाभकर होगी। मङ्गलव्रत, चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ/वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ/विष्णुसहस्रनामपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

तुला (र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते) – वर्षफल मिश्रित है। पारिवारिकसुख एवं सन्तानसुख अनुकूलप्राय रहेगा। वात–रक्तदोष एवम् उदरपीड़ा सम्भावित रहेगी। कृषि, उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्र में बाधा–विलम्ब से सफलता मिलेगी। चिरप्रतीक्षित कार्यसिद्धि का योग बनेगा। नवीन कार्यारम्भ में बाधा एवं विलम्ब से सफलता मिलेगी। अतएव धनुराशिवत् ०४ अगस्त तक तथा १७ नवम्बर से शनि की, ०५ नवम्बर से राहु–केतु की तथा १३ नवम्बर से २८ मार्च तक बृहस्पति की उपासना लाभकर होगी। चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ, मङ्गलव्रत एवं वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

वृश्चिक (तो, न नि, नु, ने, नो, य, यि, यु) – वर्षफल शुभप्राय है। वात–रक्तदोष, उदरविकार, मानसिक अशान्ति, घाव या चोट की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख अनुकूल एवं पारिवारिकसुख मध्यम रहेगा। शिक्षा, राजनीति, कृषि, उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। भ्रमण, तीर्थाटन एवं धर्मकृत्य का योग लगेगा। नवीन कार्यारम्भ में कुछ बाधा एवं विलम्ब के बाद सफलता मिलेगी। अत: राहु की एवं धनुराशिवत् ०५ अगस्त से १६ नवम्बर तक शनि की उपासना करनी चाहिए। मङ्गलव्रत, चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ एवं वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ कल्याणकर होगा।

धनु (ये, यो, भ, भि, भू, ध, फ, ढ, भे) – शनि की साढ़ेसाती चल रही है। अत: वात–रक्तदोष, उदरपीडा, शत्रुबाधा तथा घाव–चोट सम्भावित है। सन्तानसुख अनुकूल एवं पारिवारिकसुख मध्यम रहेगा। कृषि, व्यापार, उद्योग, शिक्षा एवं राजनीति आदि के क्षेत्रों में बाधा एवं विलम्ब से आंशिक लाभ होगा। हनुमद्दर्शन–पूजन–स्तोत्रपाठ, गोसेवा, मङ्गलव्रत, चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ, शनिपूजन–स्तोत्रपाठ–मन्त्रजप, तिलतैल से हनुमद्दीपदान, शनिदिन अश्वत्थपूजन, कृष्णकम्बल–छाता–जूता–लौहोपकरणादिदान, शिवपूजन, हनुमानचालीसापाठ शान्त्यर्थ करना चाहिए। काला घोड़ानाल/वृषोत्सर्ग दगनी/नाव के माङि के लोहे की अङ्गूठी, गङ्गाजल से सिक्त एवं शनि मन्त्राभिमन्त्रित कर वाम हाथ की मध्यमा में शनिदिन पूर्वाह्ण में धारण करना चाहिए। राहु–केतु की उपासना भी लाभकर होगी।

मकर (भो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खु, खे, खो, ग, गि) – शनि की साढ़ेसाती चल रही है। अतएव कार्यसिद्धि में बाधा और विलम्ब होगा। विरोध, विवाद एवं कलह की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख मध्यम तथा पारिवारिकसुख अनुकूल रहेगा। धर्मकृत्य एवं सद्व्यय का योग लगेगा। वात–रक्तदोष, उदरपीड़ा, चोट एवं कमर या पाँवदर्द सम्भावित है। शिक्षा, उद्योग, कृषि एवं व्यापार के क्षेत्र में बाधा–विलम्ब से मध्यमस्तर का लाभ होगा। राजनीति के क्षेत्र में मध्यम रूप से सफलता का योग लगेगा। साझेदारी के कार्यों में बाधा–वैमनस्य की सम्भावना रहेगी। अतएव धनुराशिवत् शनि की एवं ०४ नवम्बर तक केतु की उपासना लाभप्रद होगी। रविव्रत/अनोना/मङ्गलव्रत, चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ/वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

कुम्भ (गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द) – वर्षफल मिश्रित है। शनि की साढ़ेसाती भी प्रारम्भ है। अतएव वात–रक्तदोष एवम् उदरपीड़ा सम्भावित रहेगी। सन्तानसुख एवं पारिवारिकसुख मध्यमकोटि का रहेगा। नवीन कार्यारम्भ, राजनीति, कृषि, उद्योग, व्यापार एवं शिक्षा के क्षेत्र में बाधा एवं विलम्ब से लाभकर स्थिति रहेगी। स्थान परिवर्त्तन, तीर्थाटन एवं माङ्गलिककृत्य का योग लगेगा। ०४ अगस्त तक एवम् १७ नवम्बर से धनुराशिवत् शनि की, १३ नवम्बर से २८ मार्च तक बृहस्पति की तथा ०५ नवम्बर से राहु की उपासना एवं रविव्रत/अनोना/मङ्गलव्रत, चतुर्थाध्यायदुर्गापाठ/वाल्मीकिरामायणसुन्दरकाण्डपाठ श्रेयस्कर होगा।

मीन (दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि) – वर्षफल शुभप्रद है। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। थोड़ा वातदोष/उदरविकार सम्भव है। पारिवारिकसुख एवं सन्तानसुख मध्यमकोटि का रहेगा। नवीन कार्यारम्भ तथा राजनीति के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। मङ्गलकृत्य, धर्मकृत्य, तीर्थाटन तथा भ्रमण का योग लगेगा। शिक्षा, कृषि, उद्योग एवं व्यापार के क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। साझेदारी के कार्य सफल होंगे। थोड़ा वैमनस्य एवं विवाद की स्थिति बन सकती है। अतएव १३ नवम्बर से २८ मार्च तक बृहस्पति की एवं ०४ नवम्बर तक राहु की उपासना, चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ तथा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

• ग्रहाणां तान्त्रिकमन्त्राः •

सूर्यस्य—ॐ घृणिः सूर्य आदित्य। **चन्द्रस्य**—ॐ सों सोमाय नमः। **कुजस्य**—ॐ अं अङ्गारकाय नमः। **बुधस्य**—ॐ बुं बुधाय नमः। **बृहस्पतेः**—ॐ बृं बृहस्पतये नमः। **शुक्रस्य**—ॐ शुं शुक्राय नमः। **शनेः**—ॐ शं शनैश्चराय नमः। **राहोः**—ॐ राँ राहवे नमः। **केतोः**—ॐ कें केतवे नमः। **शुभनक्षत्राणि**—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, रेवती। **शुभलग्नानि राशयश्च**—वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन। **शुभदिनानि**—चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनानि। **शुभतिथयः**—२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५। **पापग्रहाः**—क्षीणचन्द्र(कृष्णपक्षीयैकादशीतः शुक्लपक्षीयपञ्चमीं यावत्)—पापयुक्तबुध—सूर्य—मङ्गल—शनि—राहु—केतवः। **शुभग्रहाः**—अक्षीणचन्द्र—पापवियुक्तबुध—बृहस्पति—शुक्रग्रहाः।

ग्रहाणां समिधः—अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः। **औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशश्च समिधः क्रमात्॥**

शाकल्यनिर्माणम्—तिलार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं यवाः स्मृताः। **यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता सर्वार्द्धन्तु घृतं स्मृतम्॥**

छन्दोगानां देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः—ॐ वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्म्म वर्म भूतिः प्रतिष्ठा॥

वाजसनेयिनां देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ॥

• ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम् •

लज्जावती, कुष्ठः(कुढ), बला (बरियार), प्रियङ्गुः(काउनी), घनः(मोथा), सर्षपः, हरिद्रा, देवदारुः, पुङ्खा(सहरफोका), लोध्रम् — एतैरौषधैर्युतजले पुष्पाक्षतदूर्वाश्रीखण्डरक्तचन्दनधान्यशतावरीतीर्थोदकसप्तमृत्तिकातिलयवपञ्चगव्यताम्बूलपञ्चपल्लवपञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जलैः स्नायात्। एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च।

• ग्रहाणामरिष्टहरत्वम् •

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः। त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः॥ पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमाः। सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे। शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च। लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति॥

• गर्भाधानमुहूर्तः •

रोहिणी, मृगशिरा, उत्तरा३, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, पुनर्वसु, अश्विनीनक्षत्रेषु। १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ तिथिषु। चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारेषु। रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत्। शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः, पापैस्त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

• सीमन्तपुंसवनमुहूर्तः •

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम्। सीमन्तोन्नयनञ्च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम्। मृगशिरा, पुष्य, श्रवणा, मूल, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, रेवती, उत्तरा३ (जन्मभं बिना) नक्षत्रेषु। १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथिषु। शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। सूर्यमङ्गलबृहस्पतिवारेषु। मतान्तरेण चन्द्रशुक्रौ अपि। पूर्वाह्णे, पुम्भस्याङ्गे तदंशे शुभम्। तत्र पापैः ३,६,११ स्थितैः। शुभैः १,४,५,७,९,१० स्थितैः। चन्द्रे २,३,४,५,९,१०,११ स्थिते। ४,८,१० पापरहितैः शुभम्।

• अर्द्धप्रहराबोधकचक्रम् •

दिनम्	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः
दिने	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रौ	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

• योगिनीवासो युद्धयात्रायाम् •

तत्र वामपृष्ठगता योगिनी शुभा। दक्षिणसम्मुखगा अशुभा॥

तिथयः	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशा	पूर्वे	आग्नेये	दक्षिणे	नैर्ऋत्ये	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे	ईशाने

• जातकर्ममुहूर्तः •

जातकस्य ग्रहदोषप्रशमनपूर्वकायुःश्रीवृद्धये जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात्। तदतिक्रमे एकादशे द्वादशे वा दिवसे कुर्यात्। तदभावे चित्रा, अनुराधा, रेवती, उत्तरा३, रोहिणी, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

• शिशोर्दुग्धपानमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, पुनर्वसु, उत्तरा३, पुष्य, चित्रा, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। शुभतिथिषु। वृषसिंहवृश्चिककुम्भलग्नेषु स्तनपानं शुभम्। अन्नप्राशनोक्ततिथिदिननक्षत्रेषु **सूतिकापथ्यं** शुभम्। औषधि—भक्षणोक्ततिथिदिननक्षत्रेषु **औषधिभक्षणं** शुभं स्यात्।

• सूतिकास्नानमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, अनुराधा, उत्तरा३, रेवतीनक्षत्रेषु। रविमङ्गलबृहस्पतिवारेषु। शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु। १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम्। आश्लेषा, पूर्वा३, ज्येष्ठा, धनिष्ठानक्षत्रेषु मध्यमम्।

• प्रसूतिनखच्छेदनमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। ३,५,७,१०,११,१३ तिथिषु। ३,५,६,७,८,११ लग्नेषु। शुभदिनेषु। पूर्वाह्णे शुभम्।

• स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणमुहूर्तः •

भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, विशाखा, शतभिषारहितनक्षत्रेषु। शनिमङ्गलरहितदिनेषु। शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरण(लहठी) धारणं शुभम्।

• शिशुनिष्क्रमणमुहूर्तः •

जन्मतो द्वादशेऽह्नि शुभम्। तदतिक्रमे तृतीये चतुर्थे वा मासि यात्रोक्ततिथिदिननक्षत्रेषु शुभं स्यात्।

• शिशोर्भूम्युपवेशनमुहूर्तः •

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजबले पञ्चमे मासि। उत्तरा३, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजिन्नक्षत्रेषु। रिक्तामारहिततिथिषु। शुभदिनेषु। वृषसिंहवृश्चिककुम्भलग्नेषु। शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्। **तन्मन्त्रः**—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निःक्षिपस्व हरिप्रिये॥ अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रम्, शस्त्रम्, लेखिनीम्, पुस्तकम्, सुवर्णं रौप्यं च स्थाप्यम्। तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति।

• शिशुविलोकनमुहूर्तः •

तृतीये मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफलवस्त्रद्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम्।

• कर्णवेधमुहूर्तः •

१,२,३,५,६,७,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। जन्मतारां विहाय श्रवणा, धनिष्ठा, हस्त, पुनर्वसु, उत्तरा३, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधानक्षत्रेषु। १२,६ मासे वा विषमवर्षे। चैत्रपौषहरिशयनरिक्तासमवर्षाणि त्यक्त्वा। २,३,४,६,७,९,१२ लग्नेषु। शुभैः १,४,५,७,९,१० गतैः। पापैः ३,६,११ गतैः। लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

• नामकरणमुहूर्तः •

विप्राणां ११, १२, क्षत्रियाणां १३, वैश्यानां १६, शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम्। अथवा स्वाती, पुनर्वसु, श्रवणा, धनिष्ठा, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, उत्तरा३, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधानक्षत्रेषु। १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ तिथिषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। पूर्वाह्णे शुभम्। मध्याह्ने मध्यमम्। शुभलग्ने। शुभैः १,४,५,७,९,१० स्थितैः। पापैः ३,६,११ स्थितैः। ८,१२ गृहे शुद्धे। चन्द्रे २,३,५,९,१० स्थिते। लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम्।

• अन्नप्राशनमुहूर्तः •

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु, बालकानां षष्ठात्सममासेषु। रोहिणी, उत्तरा३, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी, पुष्यनक्षत्रेषु। २,३,५,७,१०,१३,१५ तिथिषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुक्लपक्षे। पूर्वाह्णे। २,३,४,५,६,७,९,१०,११ लग्नेषु। एषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशं च रहितेषु। शुभैः १,४,५,७,९,१० स्थितैः। पापैः ३,६,११ गतैः। दशमस्थाने ग्रहरहिते, शुभदृग्युतलग्ने। ४,६,८,१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम्।

• चूडाकरण(मुण्डन—आद्यकचकर्त्तन)मुहूर्तः •

चैत्ररहितमाघादिषण्मासे अग्रहायणे च। ज्येष्ठाग्रहायणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना। विषमवर्षेषु। अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। मतान्तरेण रोहिण्युत्तरात्रयेष्वपि। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु। २,३,५,७,१०,११,१३ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। २,३,४,८,९,१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे। पापैः ३,६,११ गतैः। शुभैः १,४,५,७,९,१० गतैः। जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने। ८, १२ रहितचन्द्रे शुभम्।

• महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः •

श्रीगणेशादिस्मरणपूर्वकं शान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय **सङ्कल्पः**—ॐ अद्य अमुके मासि अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्रीअमुकशर्म्मणः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टझटितिप्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्ट्वबलपुष्टिनैरुज्यप्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत—माध्यन्दिनशाखीय "ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ" इति महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य एतत्सहस्रसङ्ख्यकजपमहं करिष्यामि। ॐ हौं ॐ जूं सः (समस्तमन्त्रः) अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठाः ऋषयः पङ्क्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रा देवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। **ऋष्यादिन्यासः**—वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः **शिरसि**। पङ्क्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः **मुखे**। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवताभ्यो नमः **हृदि**। हौं बीजाय नमः **नाभौ**। जूं शक्तये नमः **पादयोः**। सः कीलकाय नमः **सर्वाङ्गे**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा **हृदयाय नमः**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय **शिरसि स्वाहा**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा **शिखायै वषट्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं ह्रौं **कवचाय हुम्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्रयाय **नेत्रत्रयाय वौषट्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्ज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय **अस्त्राय फट्**। इति षडङ्गन्यासः। ततः चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपङ्केरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्राङ्कुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभिर्दशांशक्रमेण होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्।

लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः—ॐ जूं सः।

• उपनयन(व्रतबन्ध)मुहूर्तः •

शुद्धसमये। उत्तरायणे। माघादिषण्मासेषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु (सामवेदिनां मङ्गलवारेऽपि)। जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २,३,५,१०,११,१२ तिथिषु शुक्लपक्षे पूर्वाह्णे च शुभम्। मकरार्के पौषे ११,१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया। वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढे १०,११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्विनी,रोहिणी,मृगशिरा,आर्द्रा, पुष्य, आश्लेषा, पूर्वा३, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियुगादिषु, अपराह्णे, सायम्, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विघूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरवः षडष्टगा न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १,५,८ स्थाः पापा न शुभाः। ६,८,१२ गताः शुभा न शुभप्रदाः। ३,६,११ गताः पापाः शुभदाः। पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतः शुभो नान्यथा। लग्नेऽर्कः शुभः।

गुरुशुद्धिः—जन्मराशितः उपनयनकाले २,५,७,९,११ स्थानगतः गुरुः शुभः। ४,१०,१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः। १,३,६,८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १,३,६,१० स्थानगतो गुरुः शान्त्या शुभः। ४,८,१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तम्, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तम्, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम्।

प्रदोषनिर्णयः—यदा तृतीयायां प्रहररात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

• विवाहमुहूर्तः •

मार्गमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढमासेषु सौरक्रमेण (मार्गे देवोत्थानात्परमाषाढे हरिशयनात्प्रागेव)। १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु। अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु पञ्चशलाकावेधरहितेषु। वृषमिथुनकन्यातुलाधनुमीनलग्नेषु। शुभग्रहेषु १,४,५,७,९,१० स्थितेषु। पापेषु ३,६,११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुः शुक्रो वा १,४,५,७,९,१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठकन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्। आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्ययोर्विवाहः शुभः।

• वर—कन्या—वरणमुहूर्तः •

शुभतिथिदिनलग्नेषु। कृत्तिका, पूर्वा३, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणं कन्यावरणञ्च शुभम्।

• सङ्गीतनृत्यवाद्यारम्भमुहूर्तः •

शुभतिथिषु। शनिमङ्गलरहितदिनेषु। रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। लग्ने बुध, मिथुनकन्यागते चन्द्रे शुभदृष्टे, चतुर्थे शुभग्रहे, सङ्गीताद्यारम्भः शुभः।

• विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माणमुहूर्तः •

विवाहमुहूर्ते वैवाहिकमण्डपादिकम्, उपनयनादिमुहूर्ते च उपनयनादिमण्डपादिकं (आवश्यके शुभतिथिदिननक्षत्रेषु) विधेयम्।

• वधूप्रवेशमुहूर्तः •

विवाहदिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पञ्चमसप्तमनवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे। चैत्रपौषभाद्रक्षयमासमलमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। नात्र शुक्रविचारः कालविचारो वा। १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। चन्द्रबृहस्पतिशुक्रशनिवारेषु। मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु। २,३,५,६,७,८,९,११,१२ लग्नेषु। शुभैः १,२,५,७,१०,११ स्थितैः। पापैः ३,६,११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

• द्विरागमनमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। रविचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु मृत्युयोगरहितेषु। २,३,६,७,१२ लग्नेषु शुभयुतदृष्टेषु। शुक्रे १,४,७,१० गते। जीवे ३,६,१०,११ गते। पापैः ३,६,११ स्थितैः शुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेण माघफाल्गुनवैशाखमासेषु। शुक्रबाल्यास्तवृद्धत्वभिन्नकाले, वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः। तृतीयादिविषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित (रेवती, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा) नक्षत्रेषु। सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो विधेयः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम्।

• नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्तः •

रोहिणी, मृगशिरा, उत्तरा३, पुष्य, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। बुधबृहस्पतिशनिवारेषु। शुभतिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। २, ५, ८, ११ लग्नेषु। लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलयुते सप्तमस्थे शुभः।

• मासस्नानमुहूर्तः •

विवाहदिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तम्। २,३,५,७,१०,१३ तिथिषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वफल्गुनी, उत्तरफल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वातीनक्षत्रेषु। वृषमिथुनकन्यातुलालग्नेषु शुभम्।

• देवताजलाशयवाटिकादिप्रतिष्ठामुहूर्तः •

चैत्ररहितोत्तरायणे शुद्धसमये शुक्लपक्षे सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु। २,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी, उत्तरा३ नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकतिथिदिननक्षत्रेषु देवताप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यम्, कुम्भे ब्रह्माणम्, मिथुने शङ्करं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ३,६,११ स्थितैः। शुभैः १२,८ भिन्नस्थानगतैः देवताप्रतिष्ठा शुभा। ग्रहान् पुष्ये, बुद्धं श्रवणायाम्, गणेशादीन् रेवत्यां स्थापयेत्। भगवतो देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्याम्, कृष्णाष्टम्याम्। देव्याः नवरात्रौ, दीपमालिकायाम्, जानकीनवम्याम्। शङ्करस्य शिवरात्रौ (माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्याम्) वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

• वापीकूपतडागादिखनन(चापाकल—नल—बोरिङ्गस्थापन)मुहूर्तः •

विचैत्रोत्तरायणे, शुक्लपक्षे, शुद्धसमये। रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, उत्तरा३, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिदिनेषु, ४,१०,११,१२ लग्नेषु राशिषु च। शुक्रे दशमस्थे, बृहस्पतिबुधयोरन्यतरस्थलग्ने, पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः, शुद्धे वापीकूपतडागखनन(चापाकल—नल—बोरिङ्गस्थापन)चक्रे शुभम्।

• अक्षरारम्भमुहूर्तः •

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (बालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वतीलक्ष्मीकुलग्रामदेवताः विधिवत्सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः। अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, अभिजित्, श्रवणा, रेवतीनक्षत्रेषु। २,३,५,६,१०,११,१२ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। चन्द्र–बुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। वृषमिथुनकन्याधनुमीनलग्नेषु तत्रवांशे चोत्तमः। कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे, गुरौ दशमे, बुधे सप्तमे, शुक्रे लग्ने ग्रहबलाढ्ये शुभः।

• विद्यारम्भमुहूर्तः •

उत्तरायणे गणेशविष्णुलक्ष्मीसरस्वतीकुलग्रामदेवताश्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे सञ्जाते सति। सूर्यबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु। २,३,५,६,१०,११,१२ तिथिषु। अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, पूर्वा३, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १,४,५,७,९,१० गतैः, पापैः ३,६,११ गतैः। वृषमिथुनकन्याधनुर्मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारम्भः शुभः।

• दीक्षाग्रहणमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। २,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। अत्यावश्यके कृष्णपक्षे ५ यावत्। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुद्धसमये प्रातः मध्याह्ने वा। २,३,५,७,९,१२ लग्नेषु। शुभैः १,४,५,७,९,१० गतैः, पापैः ३,६,११ स्थितैः। वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्त्तिक, अग्रहायण, माघ, फाल्गुनमासेषु (सौरक्रमेण)। सङ्क्रान्तौ, पूर्णिमायाम्, नवरात्रमध्ये, सूर्यग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे, मन्वादि–युगादिषु च मुहूर्त विनाऽपि दीक्षाग्रहणं शुभम्।

• व्रतोद्यापनमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा। कार्त्तिक, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढमासेषु। शुभलग्नेषु। कार्त्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनं च शुद्धसमये वृश्चिकसङ्क्रान्तिपूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः १,४,५,७,९,१० स्थितैः, पापैः ३,६,११ स्थितैः, पञ्चमेशे नवमेशे गुरौ च बलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यके शुभम्।

• पुराणादिश्रवणमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणानक्षत्रेषु। २,३,५,७,८,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। सूर्यचन्द्र–बुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। शुभलग्ने। लग्ने शुभयुग्दृष्टे बलाढ्ये। शुभैः १,४,५,७,९,१० स्थितैः, पापैः ३,६,११ स्थितैः। उत्तरायणे। श्रावण, आश्विन, कार्त्तिक, मार्गमासेषु शुभम्। तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धक्षेत्रे, पर्वविशेषे, नवरात्रादौ च मुहूर्तं विनाऽपि शुभम्।

• कल्याणार्थं शान्तिमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। २,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुद्धसमये, आवश्यकेऽशुद्धेऽपि। चैत्रपौषभाद्रमलमासक्षयमासरहिते शुभम्। शुभलग्ने, लग्नस्थे गुरौ, चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्तिः शुभा।

• स्वामिसेवा(नौकरी)मुहूर्तः •

अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित्, रेवतीनक्षत्रेषु। सूर्यबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभतिथिलग्नेषु। लग्ने शुभयुते, सूर्ये कुजे वा १०,११ स्थिते, सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

• इन्धनस्थापनमुहूर्तः •

शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्। तत्र सूर्यनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभम्, ततः ६ अशुभम्, ततः ४ शुभम्, ततः ८ अशुभम्, ततः ४ शुभम्।

• देवालयारम्भगृहारम्भजलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम् •

खातदिक्	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयाम्	ऐशान्याम्	वायव्याम्
देवालयारम्भे	ध.म.कुं.सूर्ये	मी.मे.वृ.सूर्ये	मि.क.सिं.सूर्ये	कं.तु.वृ.सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध.सूर्ये	म.कुं.मी.सूर्ये	मे.वृ.मि.सूर्ये	क.सिं.कं.सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क.सूर्ये	सिं.कं.तु.सूर्ये	वृ.ध.म.सूर्ये	कुं.मी.मे.सूर्ये

•गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्•

स्थानम्	नक्षत्रम्	फलानि
शीर्षे	३	अग्निभयम्
अग्रपादे	४	शून्यम्
पृष्ठपादे	४	स्थैर्यम्
पृष्ठे	३	धनम्
दक्षोदरे	४	लाभः
पुच्छे	३	नाशः
वामोदरे	३	धननाशः
मुखे	३	कष्टम्

•गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात्•

स्थानम्	नक्षत्रम्	फलानि
मुखे	१	अग्निदाहः
पूर्वे	४	उद्वसनम्
दक्षिणे	४	लाभः
पश्चिमे	४	धनम्
उत्तरे	४	कलहः
मध्ये	४	विनाशः
अधोभागे	३	स्थिरता
कण्ठे	३	स्थिरता

• हवनचक्रं सूर्यभात् •

नक्षत्रम्	ग्रहाः	फलानि
३	सूर्यः	अशुभम्
३	बुधः	शुभम्
३	शुक्रः	शुभम्
३	शनिः	अशुभम्
३	चन्द्रः	शुभम्
३	मङ्गलः	अशुभम्
३	बृहस्पतिः	शुभम्
३	राहुः	अशुभम्
३	केतुः	अशुभम्

• रोहिणीभाद्वापीचक्रम् •

स्थानम्	नक्षत्रम्	फलानि
पृष्ठे	४	शुभजलम्
नाभौ	४	बुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनागमः
पादयोः	८	दुःखम्

• तिथिनन्दादिसंज्ञा •

संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	सिनीवाली	कुहूः
तिथयः	१,६,११	२,७,१२	३,८,१३	४,९,१४	५,१०,१५	दृष्टेन्दुमा	नष्टेन्दुमा

• सूर्यभात्तडागचक्रम् •

स्थानम्	नक्षत्रम्	फलानि
पूर्वे	२	जलशोषः
आग्नेये	३	बहुजलम्
दक्षिणे	२	जलहानिः
नैर्ऋत्ये	२	अमृतजलम्
पश्चिमे	३	स्वादुजलम्
वायव्ये	२	निर्जलम्
उत्तरे	३	स्थिरजलम्
ईशाने	३	नष्टजलम्
मध्ये	५	पूर्णजलम्
बाह्ये	३	अमृतजलम्

कलनलकूपबोरिङ्गचक्रं रोहिणीभात्

स्थानम्	नक्षत्रम्	फलानि
मध्ये	३	शीघ्रस्वादु
पूर्वे	३	निर्जलम्
आग्नेये	३	शीघ्रजलम्
दक्षिणे	३	निर्जलम्
नैर्ऋत्ये	३	निर्मलजलम्
पश्चिमे	३	शीतलजलम्
वायव्ये	३	जलहानिः
उत्तरे	३	मधुरजलम्
ईशाने	३	क्षारजलम्

अथवा **सूर्यर्क्षादप्येवमेव** गणनीयम्

• चुल्लिकास्थापनमुहूर्तः •

अश्विनी, भरणी, विशाखा, रोहिणी, मृगशिरा, उत्तरा३, कृत्तिका, मूल, पूर्वाषाढ, धनिष्ठा, आर्द्रानक्षत्रेषु। सूर्य–मङ्गल–शनि–दिनेषु। शुभतिथिलग्नेषु शुभम्।

•चुल्लिकाचक्रं सूर्यभादिनभावधि•

स्थानम्	नक्षत्रम्	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्
शीर्षे	४	मृत्युभयम्
बाहौ	८	सुखम्
गर्भे	५	नाशः
हस्ते	२	भोगः
चरणे	२	स्त्रीमृतिः

• पृथ्वीशयननक्षत्राणि •

सूर्यनक्षत्रात् पञ्च(५),सप्त(७),नव(९), द्वादश(१२),एकोनविंश(१९),षड्विंश(२६) मिते चन्द्रनक्षत्रे पृथ्वी शेते। एषु नक्षत्रेषु तडाग–वापी–कूपखननं–वास्तु–प्रभृतिकार्य चापाकल–नल–बोरिङ्ग–प्रभृतिस्थापनञ्च न कर्त्तव्यम्।

• गृहारम्भ(वास्तु)मुहूर्तः •

वैशाख, आषाढ (पशुगृहं त्यक्त्वा), कार्त्तिक, मार्ग, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषु। सम्मुखकालवर्जितसमये। २,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रशनिवारेषु। दिवा। शुद्धसमये। शुद्धे वृषचक्रे। २,३,५,६,८,९,११,१२ लग्नेषु। लग्ने शुभदृग्युते। शुभैः १,४,५,७,९,१० स्थितैः, पापैः ३,६,११ स्थितैः, ८,१२ ग्रहरहिते शुभः। तृणकाष्ठादिगृहनिर्माणमशुद्धेऽपि परञ्चेष्टकादिगृहनिर्माणं शुद्धसमये एव। देवालयमठादिनिर्माणमप्येष्वेव मुहूर्तेषु शुभम्।

• गृहप्रवेशमुहूर्तः •

वैशाख, आषाढ, श्रावण, कार्त्तिक, मार्ग, फाल्गुन (सौरक्रमेण) मासेषु। सम्मुखकालरहितसमये शुभः। २,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रशनिदिनेषु। दिवारात्रौ। शुद्धसमये। शुद्धे कुम्भचक्रे। २,५,८,११ लग्नेषूत्तमः, ३,६,९,१२ लग्नेषु मध्यमः। जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय ३,६,१०,११ राश्यंशयोः स्थिरराशौ, लग्नात् १,३,५,७,९,१०,११ स्थानेषु शुभाः, ३,६,११ स्थानेषु पापाः, ४,८ भवने ग्रहरहिते। इष्टकादिगृहप्रवेशः शुद्धसमये, तृणकाष्ठादिकगृहप्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपि। अग्निभये राजकोपे दैविकप्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्यः।

• चरणिविचारः •

स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम्। अष्टभिश्च हरेद्भागं शेषं चरणिरुच्यते।। **तत्फलम्**—पशुहानिः पशो रोगः पशुलाभः पशुक्षयः। पशुनाशः पशोर्वृद्धिः पशुभेदो बहुपशुः।।

• राज्याभिषेक(राष्ट्र–राज्य–कार्यभारग्रहण)मुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवणा, रेवतीनक्षत्रेषु। रिक्तामा–मङ्गलरहिततिथिदिनेषु। दिवा। जन्मराशीशलग्नेशमङ्गलसूर्यदशेशैः बलान्वितैः। पापैः ३, ६, ११ गतैः। शुभैः केन्द्रत्रिकोणधनसहजायस्थितैः। मिथुनसिंहकन्यातुलावृश्चिककुम्भलग्नेषु। जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय(३,६,११)राशिगतलग्ने शुभग्रहयुतदृष्टे,पापवर्जितेऽष्टमे शुभः।

• नवान्नपार्वणमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु शुभम्, मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम्। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिदिनेषु, शुक्लपक्षे। २,३,५,७,८,१०,१२,१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३।२० अंशतः १३ अंशं यावदावश्यके २३ अंशं यावदपि। ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुम्भस्थे सूर्ये वा कार्यम्। २,३,४,६,७,९,१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम्। नवान्नपार्वणे जन्मताराविशाखास्थसूर्यकृष्णपक्षाष्टमचन्द्रपूर्वात्रयमघा–भरण्याश्लेषाऽऽर्द्रानक्षत्रसौरक्रमेण कार्त्तिकपौषचैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशीरिक्तामङ्गलशुक्रशनिदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपक्षे पञ्चमीं यावद् ग्राह्यः।

• पञ्चक(भदवा)विचारः •

धनिष्ठाशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसंज्ञकानि। तत्र दक्षिणदिग्गमनगृहाच्छादनप्रेतदाहतृणकाष्ठादिसङ्ग्रहशय्यावितान निर्माणादिकं त्यजेत्। **तत्रापवादः**—वस्वन्ते शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्त्यके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत्।।

• दग्धतिथिमासान्तादिविचारः •

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषकुम्भगते सूर्ये चतुर्थी, मेषकर्कगते सूर्ये षष्ठी, मिथुनकन्यागते सूर्येऽष्टमी, सिंहवृश्चिकगते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्यं निषिद्धम्। एवमेव **सङ्क्रान्तिदिनं** तत्पूर्वापरदिनञ्च **(मासान्त–मासादिसंज्ञकम्)** यात्रादिसकलशुभकार्येषु त्याज्यम्।

• यात्रामुहूर्तः •

वामपृष्ठराहौ। मलमासक्षयमास–सौरक्रमेण चैत्रभाद्रपौषरहितमासेषु। अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, ज्येष्ठा, अनुराधा, श्रवणा, रेवतीनक्षत्रेषूत्तमः। रोहिणी, पूर्वा३, चित्रा, स्वाती, मूल, पूर्वाषाढ, धनिष्ठानक्षत्रेषु मध्यमः। मृत्युयोगदग्धतिथिमासान्तसङ्क्रान्तिमासादिप्रभृतिदोषरहिते। अमृतसिद्धसर्वार्थसिद्धादिशुभयोगेषु। अमावास्यां विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु। दिक्शूलरहितदिने, २,४,६,८,९ तारासु। पञ्चमतारायाः प्रथमद्वितीयावृत्त्योश्च। १,२,३,५,६,७,९,१०,११ चन्द्रेषु। आवश्यके ४,१२ चन्द्रेऽपि। द्विरागमनानन्तरं पितृगृहागतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालौ त्याज्यौ। तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुखकालस्त्याज्यः, दक्षिणकाले च सम्मुखचन्द्रवशेन यात्रा कार्या।

- **राहु(काल)वासः**—सौरक्रमेण मार्गपौषमाघेषु पूर्वस्यां, फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्यां, ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायां, भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवासो भवति।
- **सर्वदिग्गमननक्षत्राणि**—अश्विनीमृगशिरापुष्यश्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।
- **दिक्शूलविचारः**—सोमे शनौ च पूर्वस्याम्, बृहस्पतौ दक्षिणस्याम्, रवौ शुक्रे च पश्चिमायाम्, मङ्गले बुधे चोत्तरस्यान्दिशि दिक्शूलत्वाद्गमनं निषिद्धम्।
- **एतत्परिहारः**—रव्यादिदिनेषु क्रमेण घृत–पयो–गुड–तिल–दधि–यव–माषान् भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये परमावश्यके गच्छेत्।
- **विदिक्शूलविचारः**—शनौ पूर्वे, सोमेऽग्निकोणे, गुरौ दक्षिणे, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायव्ये, उत्तरे मङ्गलबुधयोः, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

• लग्नचन्द्रयोर्वासः •

मेषसिंहधनूराशिषु पूर्वस्याम्, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्याम्, मिथुनतुलकुम्भराशिषु पश्चिमायाम्, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयोः यात्रा शुभा। परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा।

• चन्द्रविचारः •

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद्गणनीयम्। तत्र १,२,३,५,६,७,९,१०,११ सङ्ख्याकश्चन्द्रः शुभप्रदः। ८ चन्द्रः कष्टप्रदः। ४ कलहप्रदः। १२ हानिकारकः। तत्र अशुभचन्द्रदोषशान्त्यर्थम् आमतण्डुल–शङ्ख–दधि–श्वेतवस्त्रादिदानं कार्यम्।

• द्वादशचन्द्रस्य विशेषः •

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु।यात्रा युद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।

• जन्मराशि–नामराशिवशेन विचारणीयविषयाः •

विवाहे सर्वमङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।।

- **जन्मनक्षत्रे त्याज्याः**—जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। क्षौरभैषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्। • **जन्ममासे त्याज्याः**—क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

• इष्टकारम्भमुहूर्तः •

अश्विनी,रोहिणी,मृगशिरा,पुष्य,उत्तरा३,हस्त,ज्येष्ठा,श्रवणा,रेवतीनक्षत्रेषु। वृषसिंहालिकुम्भलग्नेषु। रविगुरुशनिदिनेषु,शुभतिथिषु,चैत्रभाद्रपौषमलमासक्षयमासभिन्नसमये शुभः।

• वृक्षादिरोपणमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तरा३, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, अभिजित्, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। चन्द्रबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभतिथिषु च शुभम्।

• कदलीरोपणमुहूर्तः •

पञ्चक (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती) रहितनक्षत्रेषु। प्रतिपद्–द्वितीया–तृतीया–चतुर्थी–षष्ठीतिथिषु। शुभदिनेषु शुभम्।

• सिद्ध्यादियोगचक्रं तिथिदिननक्षत्रवशेन •

दिनानि	रविः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगः	३,८,१३	१,६,११	३,८,१३	२,७,१२	५,१०,१५	१,६,११	४,९,१४
अमृतयोगः	५,१०,१५	५,१०,१५	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	१,६,११
सर्वार्थसिद्धि योगः	अश्विनी,पुष्य हस्त,मूल	रोहिणी,मृगशिरा पुष्य,अनुराधा,श्रवणा	अश्विनी	रोहिणी,मृगशिरा हस्त,अनुराधा	अश्विनी,पुनर्वसु पुष्य,अनुराधा,रेवती	अश्विनी,पुनर्वसु अनुराधा,श्रवणा,रेवती	रोहिणी स्वाती,श्रवणा
मृत्युयोगः	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५
राज्यप्रदयोगः	———	———	४,९,१४	———	———	———	४,९,१४
मध्यमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

• ताराचक्रम् •

ताराः	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	प्रत्यरिः	साधकः	वधः	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१,१०,१९	२,११,२०	३,१२,२१	४,१३,२२	५,१४,२३	६,१५,२४	७,१६,२५	८,१७,२६	९,१८,२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	——	गुडम्	——	लवणम्	——	तिलाः	——	——

जन्मनामग्रामनक्षत्राद्वाऽभीष्टदिनावधि गणयित्वा नवभिर्हरेत्। शेषं तारा स्यात्। तत्र २,४,६,८,९ ताराः शुभदाः। प्रथमतारा मध्यमा। ३,७ अशुभदा।
विशेषः—पञ्चमतारा आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ मृत्युदा च भवेत्तेन प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृतेस्तारा अशुभा, तत्र दानं कार्यम्।

• **कालशूलम्**—उषःकाले पूर्वस्याम्, मध्याह्ने दक्षिणस्याम्, सायङ्काले (गोधूल्याम्) पश्चिमायाम्, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्, कालशूलदोषत्वात्।

• युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम् •

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथयः	दिनानि	फलानि
कुलः	अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वा३, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, श्रवणा	४, ८, १२, १४	मङ्गल, शुक्र	स्थायिजयदः (मुद्दालह)
अकुलः	भरणी, रोहिणी, पुनर्वसु, आश्लेषा, उत्तरा३, हस्त, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती	१, ३, ५, ७ ९, ११, १३, १५	सूर्य, चन्द्र बृहस्पति, शनि	यायिजयदः (मुद्दई)
कुलाकुलः	आर्द्रा, मूल, अभिजित्, शतभिषा	२, ६, १०	बुध	उभयोः सन्धिः

• नष्टवस्तुज्ञानाय चक्रम् •

संज्ञा	नक्षत्राणि	लाभालाभः	नष्टवस्तुदिक्
अन्धाक्षः	रोहिणी, पुष्य, उत्तरफल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ, धनिष्ठा, रेवती	शीघ्रलाभः	पूर्वस्याम्
मन्दाक्षः	मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ, शतभिषा, अश्विनी	प्रयत्नाल्लाभः	दक्षिणस्याम्
मध्याक्षः	आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित्, पूर्वभाद्र, भरणी	दूरे श्रवणमलाभश्च	पश्चिमायाम्
सुलोचनः	पुनर्वसु, पूर्वफल्गुनी, स्वाती, मूल, श्रवणा, उत्तरभाद्र, कृत्तिका	अलाभः	उत्तरस्याम्

• **खलकस्थापनमुहूर्तः**—ग्रामसमीपे उच्चप्रदेशे प्रसन्नभूमौ शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्।

• धान्यच्छेदनमुहूर्तः •

मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा, आर्द्रा, पूर्वभाद्र, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवणा, मृगशिरा, स्वाती, मघा, उत्तरा३, पूर्वाषाढ, भरणी, चित्रा, पुष्यनक्षत्रेषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। २,५,८,११ लग्नेषु शुभम्। अन्यान्यपि यवगोधूमादीनि एव्वेव छेद्यानि।

• मेधिरोपणमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुभतिथि—दिन—लग्नेषु मेधिरोपणं शुभम्।

• वर्षेशवशेन मेधिविचारः •

वर्षेशे सूर्ये वंशस्य, चन्द्रे शिम्बरस्य, मङ्गले कदम्बस्य, बुधे उदुम्बरस्य, गुरौ आम्रस्य, भृगुजे पलाशस्य, शनौ निम्बस्य मेधिरोपणं शुभम्।

• कणमर्दनमुहूर्तः •

मघा, पूर्वफल्गुनी, उत्तरफल्गुनी, रोहिणी, ज्येष्ठा, मूल, अनुराधा, श्रवणा, रेवतीनक्षत्रेषु। शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

• धान्यस्थापनमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। शुभतिथिदिनयोः, २,३,५,८,९,१०,११,१२ लग्नेषु शुभम्।

• धान्यवृद्धिमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

• बीजस्थापनमुहूर्तः •

रोहिणी, मृगशिरा, मघा, हस्त, स्वाती, मूल, उत्तराषाढ, पूर्वभाद्र, रेवतीनक्षत्रेषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। २,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। २,५,८,११ लग्नेषु शुभम्।

• बीजवपनमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, पुष्य, रेवतीनक्षत्रेषु। २,३,५,८,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभलग्नेषु, लग्ने शुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रकोणगैः, पापैः त्रिषडायगैः शुभम्।

• हलप्रवहणमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, मघा, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। चन्द्रमङ्गलबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभतिथिषु। शुभलग्नेषु। पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः, चन्द्रे जलचरराशिस्थे तन्नवांशे वा, गुरौ लग्नस्थे, शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम्।

• धान्यरोपणमुहूर्तः •

रोहिणी, उत्तरफल्गुनी, विशाखा, मूल, शतभिषा, पूर्वभाद्रपदनक्षत्रेषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु च शुभम्।

• कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्तः •

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु। सूर्यमङ्गलबुधशुक्रदिनेषु। शुद्धसमये। ३,५,८,१०,१३,१५ तिथिषु। शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम्।

• **त्रिविधप्रवेशः**—दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः शुभः।

• अग्निवासचक्रम् •

शुक्लपक्षे				कृष्णपक्षे				रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भुवि	भुवि	दिवि	भूतले	भुवि	भुवि	दिवि
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भुवि	दिवि	भूतले	भुवि	भुवि	दिवि	भूतले
३	७	११	१५	—	४	८	१२	दिवि	भूतले	भुवि	भुवि	दिवि	भूतले	भुवि
—	४	८	१२	१	५	९	१३	भूतले	भुवि	भुवि	दिवि	भूतले	भुवि	भुवि

फलम्—भुवि सौख्यम्, दिवि प्राणनाशः, भूतले च धननाश इति ज्ञेयम्।
विधिः—(शुक्लादितिथिसङ्ख्या+सूर्यादिदिनसङ्ख्या+१)÷४=३,० शेषे शुभः। १,२ शेषे अशुभः।

• **पार्थिवशिवपूजायां विहिततिथयः**—**शुक्लपक्षे**—२, ५, ६, ९, १२, १३. **कृष्णपक्षे**—१, ४, ५, ८, ११, १२, ३०. शिवस्वामिकत्वादष्टमीचतुर्दशी अपि शुभे।

विधिः—(शुक्लादितिथिसङ्ख्या X २ + ५) ÷ ७ = १, २, ३ शेषे शुभम्। अन्यदशुभम्।
१ शेषे कैलाशे, २ शेषे गौरिसन्निधौ, ३ शेषे वृषारूढः शिवः अभीष्टदः स्यात्।

• हलचक्रमर्कभुक्तभात् •					• बीजवपने फणिचक्रं राहुभात् •									
नक्षत्रम्	३	८	९	८	**नक्षत्रम्**	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फलम्	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	**फलम्**	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं

• ऋणप्रदानमुहूर्तः(द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः) •

स्वाती, पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, विशाखा, पुष्य, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुभतिथिषु, १,४,७,१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, ५,८,९ ग्रहरहिते, चन्द्रगुरुशुक्रशनिदिनेषु शुभम्।
ऋणदाने निषिद्धसमयः—बुधवासरः, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूर्वा३, चित्रा, ज्येष्ठानक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च।
ऋणग्रहणे निषिद्धसमयः—रविभौमदिने। सङ्क्रान्तिः। वृद्धियोगः। हस्तनक्षत्रम्। एषु ऋणार्पणं शुभम्।

• विपणिमुहूर्तः •

अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तरा३, अनुराधा, अभिजित्, रेवतीनक्षत्रेषु। १,२,३,५,६,७,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रशनिदिनेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णे १० यावत्। १,२,३,४,५,६,७,८,९,१०,१२ लग्नेषु, लग्ने चन्द्रशुक्रे, पापैः ८,२ रहितैः, शुभैः २,१०,११ स्थितैः शुभा।

• मीलचालनमुहूर्तः •

भरणी, कृत्तिका, आश्लेषा, पूर्वा३,विशाखानक्षत्रेषु। २,३,५,७,१०,११,१३,१५ तिथिषु। चन्द्रबुधगुरुशुक्रदिनेषु। शुभैः १,२,४,५,७,१० स्थितैः, पापैः ३,६,११ स्थितैः, कुम्भं विना लग्नेषु शुभः।

• **वस्तूनां क्रयमुहूर्तः**—शुभतिथिदिनलग्नेषु। अश्विनी,चित्रा,स्वाती,श्रवणा,शतभिषा,रेवतीभेषु शुभः।

• **रक्तमोक्षण(ऑपरेशन)मुहूर्तः**—अश्विनी,रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवणा, शतभिषानक्षत्रेषु। सूर्यमङ्गलबृहस्पतिदिनेषु। शुभतिथिलग्नेषु शुभा।

प्रथमलग्नसारिणी—इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च। यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नञ्च कलानुपातात्॥

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०२	०२	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६	०६	०६	०६
३	४७	५४	०१	०८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	०३	११	१९	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	००	०८	१६	२५	३३	४२
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
वृष	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०९	०९	०९	०९	०९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
४	५०	५८	०७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
५	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३३	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२	०३
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३७	४९
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
५	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	०७	१८	२९	४०	५२	०३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	०७	१८	२९
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१८	३०	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	०७
३८	०८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१५	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
५	१९	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	३७	५८	१०	२२	३३	४३	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२
३८	०८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	४८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
५	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२७	३९	५०	०२	१३	२५	३६
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	२४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
५	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	१९	२७	३६	४४	५२	०१	०९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	०८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	०६	१५
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
४	२३	३१	४०	४८	५६	०५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	०५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	०३	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	०१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	०४	४०	३६	५२	०८	५७	४०	५९	१२	५८	४०	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०२
३	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	०७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	०५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	०३	१०	१८	२५	३२	३९
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

उदाहरण—श्रावणकृष्ण पञ्चमी शुक्र को इष्टदण्डादि १५।३० है। इस दिन सूर्य के मिथुन राशि के २४ अंश के नीचे दण्डादि १६।०६।२२ में इष्टदण्डादि १५।३० जोड़ने से १६।०६।२२ + १५।३० = ३१।३६।२२ हुआ। यह दण्डादि कन्या राशि के १५ अंश के आगे १६ अंश के नीचे प्राप्त हुआ। अतः उक्त समय १६ अंश से कन्या लग्न हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

दशमलग्नसारिणी—यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम्। प्रत्यग्नतेनाढ्यमियान् विशेषो मध्यस्य(दशमलग्नस्य)सिद्ध्यै गणकैः प्रदिष्टः॥

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०३	०३	०३	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६	०६	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०८	०८
	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृष	०८	०८	०८	०८	०९	०९	०९	०९	०९	०९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
	२७	३७	४७	५६	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०९	२०	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२९	०६	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	४४	५५	०६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०९	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	०७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	०३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२८	३६	४५
२९९	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	०५	१४	२३
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
२७८	०८	२४	४१	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०९	२०	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
	४४	५५	०६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
	०७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	०३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२७	३६	४५
२९९	१४	२२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	०३
	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	०५	१४	२३
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

नतकालसाधनम्—गतैः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नो: गतं शेषकम्। विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्युतं नोन्नतम्॥

यथा—श्रावणकृष्ण पञ्चमी शुक्र को इष्टदण्डादि १५।३० के समय दिनार्द्ध—इष्टकाल = १६।५६–१५।३० = ०१।२६ = पूर्वनतघटी।

दशमलग्नोदाहरणम्—श्रावणकृष्ण पञ्चमी शुक्र को इष्टदण्डादि १५।३० है। नतकालानयनविधि से इस काल का पूर्वनत ०१।२६ दण्डादि हुआ। इसे सूर्य के मिथुनराशि के २४ अंश के नीचे दण्डादि १८।०९।०२ में घटाया तो १८।०९।०२–०१।२६ = १६।४३।०२ दण्डादि हुआ। यह फल दशमलग्नसारिणी में मिथुनराशि के १६ अंश के आगे १७ अंश के नीचे प्राप्त हुआ। अतः उक्त समय १७ अंश से मिथुन दशमलग्न हुआ।

• प्रथमादिमासेषु बालकानां दन्तजननफलबोधकचक्रम् •

मासाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फलानि	स्वयंनाशः	अनुजनाशः	भगिनीनाशः	मातृनाशः	अग्रजनाशः	भोगाप्तिः	पितृसुखम्	पुष्टिः	धनलाभः	सौख्यम्	सुखाप्तिः	सम्पत्तिः

जन्मकाल एव दन्तयुक्तो बालः आत्मानम्, पितरं मातरञ्च नाशयति। एवमेव निषिद्धसमये ऊर्ध्वभागे दन्तजननेऽपि आत्म–पितृ–मातृनाशको भवति। तत्र दन्तजननशान्तिर्विधेया। ततोऽशुभफलनाशः, शुभफलावाप्तिर्भवति।

• बालस्य प्रथमदोलारोहणमुहूर्तः •

जन्मदिनात् १०,१२,१६,१८,३२ दिवसेषु, सोमबुधबृहस्पतिशुक्रवासरे, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित्, रेवतीनक्षत्रेषु, रिक्तामारहिततिथौ, चरलग्ने शुभयुतेक्षिते, लग्नात् १,४,५,७,९,१०,११ गतैः शुभग्रहैः, ३,६,११ गतैः पापग्रहैः शुभम्। तत्र सूर्यनक्षत्रात् पञ्चमिते चन्द्रनक्षत्रे आरोग्यम्, ततः पञ्चनक्षत्रे कष्टम्, ततः पञ्चनक्षत्रे कृशत्वम्, ततः पञ्चनक्षत्रे रोगभयम्, ततः सप्तनक्षत्रे सुखम्।

• औषधिभक्षणमुहूर्तः •

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणीनक्षत्रेषु। शुभतिथिषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। ३,६,९,१२ लग्नेषु, शुभैः ३,६,९,१२ राशिगतैः, लग्नात् ७,८,१२ग्रहरहितेषु औषधि–भक्षणं शुभम्। जन्मनक्षत्रे औषधिभक्षणमशुभम्।

• चिकित्सामुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवणा, शतभिषानक्षत्रेषु। सूर्यचन्द्रमङ्गलबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभतिथिलग्नेषु शुभम्।

• उग्रकर्ममुहूर्तः •

भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूर्वा३, ज्येष्ठा, मूलनक्षत्रेषु। मङ्गलशनिदिनेषु। १,८,१०,११ लग्नेषु। १,३,४,५,९,१०,११,१४ तिथिषु शुभम्।

• मोटरबससाइकिलयानादिचालनमुहूर्तः •

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु। चन्द्रमङ्गलबृहस्पतिशुक्रशनिदिनेषु। १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१३,१५ तिथिषु। चतुर्थेशे बलयुक्ते १,४,५,७,९,१० स्थिते, लग्नेशदशमेशनवमेशैरपि १,४,५,७,९,१० गतैर्बलयुक्तैः, पापैः ३,६,११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम्।

• **चरकारकग्रहाः**—ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य–भ्रातृमातृ–पितृपुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः। अंशसाम्ये कलाधिक्यम्, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्।

• **स्थिरकारकाः**—तन्वादिभावानां क्रमेण सूर्य–बृहस्पति–मङ्गल–चन्द्रबृहस्पति–बृहस्पति–मङ्गल–शुक्र–शनि–बृहस्पति–बुध–शुक्र–शनयः स्थिरकारका भवन्ति।

• **स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्**—जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १,६,११ स्थिते स्वर्णपादे, २,५,९ स्थिते रजतपादे, ३,७,१० स्थिते ताम्रपादे, ४,८,१२स्थिते लौहपादे जन्म ज्ञेयम्।

• **आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु** रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म भवति। **तेषां फलम्**—स्वर्णपादेत्युत्कृष्टम्, रजतपादे शोभनम्, ताम्रपादे मध्यमम्, लौहपादे च हीनफलमिति।

• होरालग्नानयनम् •

द्विघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम्।
दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत्॥

• होराचक्रम् •

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१५°	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र
३०°	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य

• राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाघातादिचक्रम् •

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्वामी	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	शनि	शनि	बृहस्पति
संज्ञा	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव
प्रकृति	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ
आकृति	ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	सम
जाति	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
घातमास	कार्त्तिक	मार्ग	आषाढ	पौष	ज्येष्ठ	भाद्र	मार्ग	आषाढ	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घाततिथि	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा
दिन	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनुराधा	मूल	श्रवणा	शतभिषा	रेवती	मघा	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	विष्कम्भ	सुकर्मा	परिघ	व्याघात	धृति	शुभ	शुक्ल	व्यतीपात	वज्र	वैधृति	गण्ड	वज्र
करण	बव	शकुनि	चतुरङ्घ्रि	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	वणिज	विष्टि
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरुषचन्द्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्रीचन्द्र	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

• ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम् •

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेष १०°	वृष ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथुन	धनु
नीच	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु	मिथुन
मूलत्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कुम्भ	सिंह
जातिः	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	चाण्डाल	चाण्डाल	चाण्डाल
दिक्	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य
भाग्योदय	२२ वर्ष	२४ वर्ष	२८ वर्ष	२२ वर्ष	१६ वर्ष	२५ वर्ष	३६ वर्ष	४२ वर्ष	४८ वर्ष
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	वात	कफ	वात	वात	वात
पुंसादिसंज्ञा	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	नपुंसक	पुरुष
आकृति	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ

• द्रेष्काणचक्रम् •

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१०°	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	शनि	शनि	बृहस्पति
२०°	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	शनि	शनि	बृहस्पति	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र
३०°	बृहस्पति	शनि	शनि	बृहस्पति	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल

• वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम् •

स्वामी	शनि	रवि	मङ्गल	बृहस्पति	शुक्र	बुध	चन्द्र
नक्षत्र	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
नक्षत्र	विशाखा	स्वाती	चित्रा	हस्त	उत्तरफल्गुनी	पूर्वफल्गुनी	मघा
नक्षत्र	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ	उत्तराषाढ	अभिजित्	श्रवणा
नक्षत्र	भरणी	अश्विनी	रेवती	उत्तरभाद्र	पूर्वभाद्र	शतभिषा	धनिष्ठा
संज्ञा	चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृता

• ग्रहाणां धारणाय मणयः •

सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
माणिक्य	मुक्ता	विद्रुम	पन्ना	पोखराज	हीरा	नीलमणि	गोमेद	लहसुनियाँ
गारनेट	मूनस्टोन	मूङ्गा	लीली	सुनहला	स्फटिक	यमुनियाँ	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त
विद्रुम	चाँदी	मूङ्गा	सोना	मोती	चाँदी	लौह	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त

• नवमांशचक्रम् •

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३।२०	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.
६।४०	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.
१०।००	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.
१३।२०	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.
१६।४०	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.
२०।००	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.
२३।२०	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.
२६।४०	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.
३०।००	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.

• त्रिंशांशचक्रम् •

विषमराशौ		समराशौ	
अंशाः	मेषमिथुनसिंहतुलाधनुकुम्भ	अंशाः	वृषकर्ककन्यावृश्चिकमकरमीन
०५°	मङ्गल	०५°	शुक्र
१०°	शनि	१२°	बुध
१८°	बृहस्पति	२०°	बृहस्पति
२५°	बुध	२५°	शनि
३०°	शुक्र	३०°	मङ्गल

• त्रिविधायुर्बोधकचक्रम् •

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	स्थिरभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	द्विस्वभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः
लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्यां) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चायुर्निर्णेयम्।		

• आयुर्विचारः •

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्याम्, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णेयम्। प्रकारत्रयेप्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्, विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली, समे जन्मलग्ने द्वादशेशषष्ठेशयोर्यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुः। इत्थमेवात्मकारकवशेनापि। १,८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव। विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः, पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः। यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः, समश्चेन्मध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदा अल्पायुर्योगः। पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः। एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमशः ८०, ७२, ६४ वर्षाण्यायुः। अल्पायुष्यपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति।

आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च—अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते। क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः। मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा। लग्नेशपञ्चमेशनवमेशाना दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या। व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येन साहचर्याद्वा फलदा। चतुर्थेशसप्तमेशदशमेशानां दशा मध्यमफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च। अष्टमेशदशा पापफलदा, परं स्थानान्तरशुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति।

द्वादशांशज्ञानम्—प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानम् २।३० अंशात्मकं भवति। द्वादशांशेशाः स्वराशित एव गण्यन्ते।

श्रावणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क ०६।०७।२०२० ई. तः दिनाङ्क २०।०७।२०२० ई. यावत्।
अशुद्धः ११ तः शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः ११ तो वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम् ११ तो याम्यायनम्, पश्चिमे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः			श्रावणकृष्णपक्षः
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
०१ चं.	०९।३७	दि. ०९।०३	उषा. ४६।४४	रा. ११।५४	वैधृतिः ४४।२४	कौ. ०९।३७	घ. ०१।०८	प्रा. ०५।३९	०२।२०।३४।२२	३३।५८	५।२२	६।४८	१५	२२	०६	**पुनर्वसौ रविः** १०।४८ पुंस्त्रीचंचयोगः सिंहलग्नं मूषकवाहनं नीरानाडीपतिश्शुक्रस्तेन वृष्टियोगः, अशून्यशयनव्रतम्, **सोमव्रतम्**, श्रावणे वर्जयेच्छाकम्।
०२ मं.	०९।०२	दि. ०८।५०	श्रव. ४८।४६	रा. १२।४३	विष्क. ४१।५७	ग. ०९।०२	मकरः	अहोरात्रम्	०२।२१।३१।०४	३३।५६	५।२३	६।४७	१६	२३	०७	पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. १२।४३ उपरि, भ. ३९।२५ उपरि, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम्।
०३ बु.	०९।४७	दि. ०९।०८	धनि. ५२।०५	रा. ०२।०३	प्रीतिः ४०।४३	वि. ०९।४७	म. १९।५६	दि. ०१।२१	०२।२२।२७।५६	३३।५५	५।२३	६।४७	१७	२४	०८	**गणाधिप** ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०९।३१, भ. ०९।४७ यावत्।
०४ बृ.	११।४९	दि. ०९।५७	शत. ५६।३३	रा. ०३।५०	आयु. ४०।२०	बा. ११।४९	कुम्भः	अहोरात्रम्	०२।२३।२४।४८	३३।५४	५।२३	६।४७	१८	२५	०९	**शकुनम्**—कर्कप्रवेशसमये सूर्यं पश्यति चेद् गुरुः। पूर्णं पादोनदृष्ट्या वा तत्रकाले सुवृष्टयः।।
०५ शु.	१४।५६	दि. ११।२१	पूभा. ६०।००	अहोरात्रम्	सौभा. ४०।५०	तै. १४।५६	कुं. ४५।३९	रा. ११।२९	०२।२४।२१।४०	३३।५३	५।२३	६।४७	१९	२६	१०	**मौना** ५, **नाग** ५ मनसादेव्युत्थापनं पूजनञ्च, **मधुश्रावणीपूजाकथारम्भः**, उत्तरयात्रा मीनगते चन्द्रे, (६) एकोद्दिष्टम्।
०६ श.	१९।०४	दि. १२।५२	पूभा. ०२।०१	दि. ०६।०२	शोभ. ४१।५७	व. १९।०४	मीनः	अहोरात्रम्	०२।२५।२८।३२	३३।५२	५।२४	६।४६	२०	२७	११	भ. १९।०४ उपरि ५१।२६ यावत्, (७) एकोद्दिष्टम्।
०७ र.	२३।४८	दि. ०२।४५	उभा. ०८।०८	दि. ०८।२९	अगं. ४३।३१	ब. २३।४८	मीनः	अहोरात्रम्	०२।२६।२५।२४	३३।५१	५।२४	६।४६	२१	२८	१२	रविसप्तमी स्नानदानादावक्षयफलदा, उत्तरयात्रा सप्तम्यां रेवत्याम्, द.ति. २३।४८ उपरि।
०८ चं.	२८।५२	दि. ०४।४७	रेवती १४।४३	दि. ११।०७	सुकर्मा ४५।२१	कौ. २८।५२	मी. १४।४३	दि. ११।०७	०२।२७।२२।२७	३३।५०	५।२४	६।४६	२२	२९	१३	**सोमव्रतम्**, पञ्चकान्तो दिवा घं. ११।०७ उपरि, द.ति. २८।५२ यावत्, गं. ०२।४३ उपरि १७।४३ यावत्।
०९ मं.	३३।४५	सं. ०६।४४	अश्वि. २१।२०	दि. ०१।४२	धृतिः ४६।३८	तै. ०१।२८	मेषः	अहोरात्रम्	०२।२८।०१।२३	३३।४८	५।२४	६।४६	२३	३०	१४	इन्द्रसावर्णिमन्वादिः, उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्।
१० बु.	३८।०५	रा. ०८।२९	भरणी.२७।२०	दि. ०४।०७	शूलः ४७।३९	व. ०५।५५	मे. ४३।२८	रा. १०।३८	०२।२९।०६।०१	३३।४६	५।२५	६।४५	२४	३१	१५	मासान्तः, भ. ०५।५५ उपरि ३८।०५ यावत्।
११ बृ.	४१।३६	रा. ०९।५३	कृत्ति. ३२।२३	सं. ०६।२२	गण्डः ४७।५५	ब. ०९।५०	वृषः	अहोरात्रम्	०३।००।०३।०५	३३।४४	५।२५	६।४५	२५	०१	१६	**कामदा ११** व्रतं सर्वेषाम्, **कर्के रविः** ४३।३७ मु. ४५ फलं समर्घम्, **याम्यायनसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ उपरि दिने, **पुण्याहः**, याम्यायनारम्भः ४३।३७ उपरि, **वक्रन्मूले धनुषि बृहस्पतिः शुद्धारम्भश्च ४५।२१ उपरि।**
१२ शु.	४३।५४	रा. १०।४९	रोहि. ३६।३०	रा. ०७।५१	वृद्धिः ४७।२८	कौ. १२।४५	वृषः	अहोरात्रम्	०३।०१।००।०१	३३।४३	५।२५	६।४५	२६	०२	१७	मासादिः, दूर्वादलेन पारणम्।
१३ श.	४५।०३	रा. ११।२७	मृग. ३९।३१	रा. ०९।०४	ध्रुवः ४५।४५	ग. १४।२८	वृ. ०८।००	दि. ०८।२८	०३।०१।५६।५७	३३।४२	५।२६	६।४४	२७	०३	१८	प्रदोष १३ व्रतम्, पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि, भ. ४५।०३ उपरि।
१४ र.	४४।५३	रा. ११।२३	आर्द्रा ४१।२३	रा. ०९।४५	व्या. ४३।२०	वि. १४।५८	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०३।०२।५३।५२	३३।४१	५।२६	६।४४	२८	०४	१९	प्रदोष १४ व्रतम्, भ. १४।५८ यावत्।
३० चं.	४३।२९	रा. १०।४०	पुन. ४१।४३	रा. १०।०१	हर्षणः ३९।३५	च. १४।२१	मि. २६।३६	दि. ०३।५४	०३।०३।५०।४७	३३।४०	५।२६	६।४४	२९	०५	२०	**सोमवत्यमाव्रतं पूजनञ्च दिनं यावत्, सोमव्रतम्**, पूर्वां विना यात्रा प्रतिपदि, श्रावणी ३० स्नानदानादिः, **पुष्ये रविः** १४।२३ स्त्रीस्त्रीचंचयोगः कन्यालग्नं गजवाहनं नीरानाडीपतिश्शुक्रस्तेन मध्यमवृष्टियोगः, देवसावर्णिमन्वादिः।

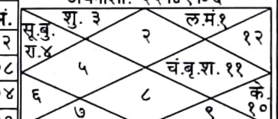
मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ चं.	११।०५।५५।४७	०२।०५।०९।०३	०९।०१।२०।४४	०१।२०।२२।२३	०९।०२।२७।२४	०८।०६।२३।२७	४६।५९
०२ मं.	११।०६।२६।५७	०२।०५।४३।०५	०९।०१।२२।४३	०१।२०।५७।५०	०९।०२।२२।४३	०८।०६।२०।०६	४६।५८
०३ बु.	११।०६।५८।०७	०२।०६।२७।०७	०९।०१।०४।४२	०१।२१।३३।२७	०९।०२।०८।०२	०८।०६।२६।५५	४६।५७
०४ बृ.	११।०७।२९।२७	०२।०६।५१।०९	०९।००।५६।४१	०१।२२।०९।०४	०९।०२।०३।२१	०८।०६।२३।४४	४६।५६
०५ शु.	११।०८।००।२७	०२।०७।२५।२१	०९।००।४८।४०	०१।२२।४४।४१	०९।०१।५८।४०	०८।०६।२०।३३	४६।५५
०६ श.	११।०८।३१।३७	०२।०७।५९।२३	०९।००।४०।४०	०१।२३।२०।२७	०९।०१।५३।५९	०८।०६।०७।२२	४६।५५
०७ र.	११।०९।०२।४७	०२।०८।३३।२४	०९।००।३२।४०	०१।२३।५५।५३	०९।०१।४९।२९	०८।०६।०४।२१	४६।५५
०८ चं.	११।०९।३३।५७	०२।०९।०७।२५	०९।००।२४।४०	०१।२४।३१।२९	०९।०१।४४।३९	०८।०६।०१।०१	४६।५५
०९ मं.	११।२०।०२।४१	०२।२०।२२।५९	०९।००।२६।२२	०१।२५।२५।२६	०९।०१।४०।०२	०८।०५।५७।५०	४६।५४
१० बु.	११।२०।३१।२५	०२।२१।२८।४२	०९।००।०८।०४	०१।२५।५९।२३	०९।०१।३५।२५	०८।०५।५४।३९	४६।५३
११ बृ.	११।२१।००।०८	०२।२२।२४।२५	०८।२९।५९।४६	०१।२६।४३।२०	०९।०१।३०।४८	०८।०५।५१।२८	४६।५२
१२ शु.	११।२१।२८।५१	०२।२३।३०।०८	०८।२९।५१।२९	०१।२७।२७।२६	०९।०१।२६।२१	०८।०५।४८।२७	४६।५१
१३ श.	११।२१।५७।३४	०२।२४।३५।५१	०८।२९।४३।२२	०१।२८।२१।२२	०९।०१।२१।३४	०८।०५।४५।०६	४६।५०
१४ र.	११।२२।२६।२७	०२।२५।४१।३४	०८।२९।३४।५५	०१।२८।५५।०८	०९।०१।२६।५८	०८।०५।४१।५६	४६।५०
३० चं.	११।२२।५५।००	०२।२६।४७।२७	०८।२९।२६।३८	०१।२९।३९।०४	०९।०१।२२।२२	०८।०५।३८।४६	४६।५०

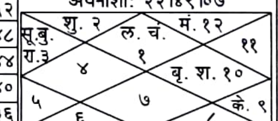
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ चं.	०१।४९	०३।४५	०५।५८	०८।२६	१०।३२	१२।४७	१५।०४	१७।२१	१९।२६	२१।२२	२२।४३	००।२२
०२ मं.	०१।४५	०३।४१	०५।५४	०८।२२	१०।२८	१२।४३	१५।००	१७।२७	१९।२२	२१।०८	२२।३९	००।०८
०३ बु.	०१।४१	०३।३७	०५।५०	०८।०८	१०।२४	१२।३९	१४।५६	१७।२३	१९।२८	२१।०४	२२।३५	००।०४
०४ बृ.	०१।३७	०३।३३	०५।४६	०८।०४	१०।२०	१२।३५	१४।५२	१७।०९	१९।२४	२१।००	२२।३१	००।००
०५ शु.	०१।३३	०३।२९	०५।४२	०८।००	१०।२६	१२।३१	१४।४८	१७।०५	१९।२०	२०।५६	२२।२७	२३।५६
०६ श.	०१।२९	०३।२५	०५।३८	०७।५६	१०।२२	१२।२७	१४।४४	१७।०१	१९।०६	२०।५२	२२।२३	२३।५२
०७ र.	०१।२५	०३।२१	०५।३४	०७।५२	१०।०८	१२।२३	१४।४०	१६।५७	१९।०२	२०।४८	२२।२९	२३।४८
०८ चं.	०१।२१	०३।२७	०५।३०	०७।४८	१०।०४	१२।२९	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४४	२२।२५	२३।४४
०९ मं.	०१।२७	०३।२३	०५।२६	०७।४४	१०।००	१२।२५	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।४०	२२।२१	२३।४०
१० बु.	०१।२३	०३।०९	०५।२२	०७।४०	०९।५६	१२।२१	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३६	२२।०७	२३।३६
११ बृ.	०१।०९	०३।०५	०५।२८	०७।३६	०९।५२	१२।०७	१४।२४	१६।४१	१८।४६	२०।३२	२२।०३	२३।३२
१२ शु.	०१।०६	०३।०२	०५।२५	०७।३३	०९।४९	१२।०४	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२९	२२।००	२३।२९
१३ श.	०१।०२	०२।५८	०५।२१	०७।२९	०९।४५	१२।००	१४।२७	१६।३४	१८।३९	२०।२५	२१।५६	२३।२५
१४ र.	००।५८	०२।५४	०५।०७	०७।२५	०९।४१	११।५६	१४।२३	१६।३०	१८।३५	२०।२१	२१।५२	२३।२१
३० चं.	००।५४	०२।५०	०५।०३	०७।२१	०९।३७	११।५२	१४।०९	१६।२६	१८।३१	२०।२७	२१।४८	२३।२७

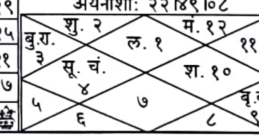
१ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३६।२२
अयनांशाः २२।४९।०६



८ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३६।२९
अयनांशाः २२।४९।०७



३० चन्द्रे वल्ली ८।३९।३६।२६
अयनांशाः २२।४९।०८



विविधविषयाः—श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्या उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। अस्याम्लतिक्त(निम्बपत्रबीजपूर) रससेवनं पुष्टिकरम्। सायङ्काले च मूषकमृत्तिकादुग्धलाजान् सर्पमन्त्रेणाभिमन्त्र्य गृहेषु विकिरेत्। **सर्पमन्त्रस्तु**—दू सप्पा चौसप्पा झाड़े सारे कारे विषा आस्तीक आस्तीक आस्तीक। आस्तीकेति वचः श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्त्तते। शतधा भिद्यते मूर्द्धा शिंशवृक्षफलं यथा।। **सोमव्रतम्**—सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्।। कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता **नन्दिपुराणे**—कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। **श्रेष्ठव्रतानि**—ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानीति निश्चयः।। **प्रदक्षिणविधिः**—एकं चण्ड्यां रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्।। आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणम्।। **मांसाभक्षणफलं महाभारते**—मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर।। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः।। **अभिवादन—वृद्धसेवनफलम्**—अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।। **दन्तधावनमन्त्रः**—आयुर्बलं यशो वर्च्चः प्रजापशुवसूनि च। ब्रह्मप्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वन्नो धेहि वनस्पते।। **वृक्षारोपणमन्त्रः**—वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्द्धतामिति।। **सत्यप्रशंसा श्रीमद्देवीमहाभागवते**—सत्यं न सत्यं खलु यत्र हिंसा दयान्वितं चानृतमेव सत्यम्। हितं नराणां भवतीह येन तदेव सत्यं मुनिनात्र गीतम्।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः, वक्री पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितो शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षादितः सप्तमीं यावद्वातमेघचारवृष्टयस्ततः त्रयोदशीं यावद्वातातपखण्डवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावद्वातवृष्टियोगः।

श्रावणशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क २१।०७।२०२० ई. तः दिनाङ्क ०३।०८।२०२० ई. यावत्।
शुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, पश्चिमे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः			श्रावणशुक्लपक्षः
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
०१ मं.	४०।५१	रा. ०९।३६	पुष्य: ४१।०१	रा. ०९।४०	वज्र: ३५।०३	किं. १२।१०	कर्क:	अहोरात्रम्	०३।०४।४७।४९	३३।३८	५।१६	६।४४	३०	०६	२१	दोलोत्सवारम्भः, उत्तरां विना यात्रा द्वितीयायां पुष्ये।
०२ बु.	३७।१२	रा. ०८।१०	श्ले. ३९।१८	रा. ०९।००	सिद्धि: २९।४१	बा. ०९।३१	क. ३९।१८	रा. ०९।००	०३।०५।४४।५०	३३।३६	५।१७	६।४३	३१	०७	२२	चन्द्रदर्शनमु. १५ सौम्यशृङ्गफलं साम्यम्, गं. २८।११ उपरि ४३।११ यावत्।
०३ बृ.	३२।४४	सं. ०६।२३	मघा ३६।४२	रा. ०७।५८	व्यती. २३।४१	तै. ०४।५८	सिंह:	अहोरात्रम्	०३।०६।४१।५१	३३।३४	५।१७	६।४३	०१	०८	२३	**मधुश्रावणीव्रतं पूजनञ्च, गणेश** ४ व्रतम्।
०४ शु.	२७।३१	दि. ०४।१८	पूफ. ३३।२५	सं. ०६।४०	वरी. १७।००	व. ००।०७	सिं. ४७।२८	रा. १२।१७	०३।०७।३८।५२	३३।३२	५।१८	६।४२	०२	०९	२४	पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्, भ. ००।०७ उपरि २७।३१ यावत्।
०५ श.	२१।४५	दि. ०२।००	उफ. २९।३९	दि. ०५।१०	परिघ: ०९।४९	बा. २१।४५	कन्या	अहोरात्रम्	०३।०८।३५।५३	३३।३०	५।१८	६।४२	०३	१०	२५	**नाग** ५ नागपूजनं शङ्खनामा नागराजः सितवर्णो द्वारमुभयतो गोमयनिर्मिता नागाः सिन्दूरदुग्धलाजादिभिः पूज्याः, द.ति. २१।४५ उपरि।
०६ र.	१५।४१	दि. ११।३४	हस्त: २५।३३	दि. ०३।३१	शिव: ०२।१७	तै. १५।४१	कं. ५३।२६	रा. ०२।४०	०३।०९।३२।५४	३३।२८	५।१८	६।४२	०४	११	२६	सिद्धदं. ५२।२१, द.ति. १५।४१ यावत्, पूर्वदक्षिणयात्रा सप्तम्यां कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा, (६–७) एकोद्दिष्टम्।
०७ चं.	०९।२५	दि. ०९।०५	चित्रा २१।१९	दि. ०१।५१	साध्य:४६।५७	व. ०९।२५	तुला	अहोरात्रम्	०३।१०।२९।५५	३३।२६	५।१९	६।४१	०५	१२	२७	**सोमव्रतम्, तुलसीदासजयन्ती**, शीतलासप्तमी, शीतलापूजा, **गृहप्रवेशः सप्तम्याम्**, पश्चिमदक्षिणयात्राष्टम्याम्, भ. ०९।२५ उपरि ३६।२१ यावत्।
०८ मं.	०३।१८	दि. ०६।३९	स्वाती १७।१२	दि. १२।१३	शुभ: ३९।२८	ब. ०३।१८	तु. ५९।२४	रा. ०५।०६	०३।११।२७।०४	३३।२२	५।२०	६।४०	०६	१३	२८	नवमीदं. ५४।०६, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
१० बु.	५१।५७	रा. ०२।०७	विशा.१३।२७	दि. १०।४३	शुक्ल:३२।१७	तै. २४।४०	वृश्चिक:	अहोरात्रम्	०३।१२।२४।१३	३३।१९	५।२०	६।४०	०७	१४	२९	**कर्के बुधः** ४३।१४, **गृहारम्भो गृहप्रवेशः** पश्चिमयात्रा चानुराधायाम्।
११ बृ.	४७।१०	रा. १२।१३	अनु. १०।१२	दि. ०९।२६	ब्रह्म: २५।३८	व. १९।३३	वृश्चिक:	अहोरात्रम्	०३।१३।२१।२२	३३।१६	५।२१	६।३९	०८	१५	३०	**पुत्रदा ११** व्रतं सर्वेषाम्, पञ्चदिवसीयदोलोत्सवारम्भः,**गृहारम्भप्रवेशावनुराधायाम्**, पश्चिमोत्तरयात्रा, भ. १९।३३ उपरि ४७।१० यावत्।
१२ शु.	४३।१२	रा. १०।३८	ज्ये. ०७।४०	दि. ०८।२५	ऐन्द्र: १९।३३	ब. १५।११	वृ. ०७।४०	दि. ०८।२५	०३।१४।१८।३१	३३।१३	५।२१	६।३९	०९	१६	३१	दूर्वादलेन पारणम्, श्रीधर १२, **गृहप्रवेशो मूले**, पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्, गं. ०१।४० उपरि १६।४० यावत्।
१३ श.	४०।१३	रा. ०९।२७	मूलम्०५।५७	दि. ०७।४५	वैधृति: १४।१४	कौ. ११।४२	धनु:	अहोरात्रम्	०३।१५।१५।४०	३३।१०	५।२२	६।३८	१०	१७	०१	**अगस्त** ८, **मिथुने शुक्रः** ५०।२१, प्रदोष १३ व्रतम्, **गृहप्रवेशो मूले**, उत्तरयात्रा।
१४ र.	३८।२१	रा. ०८।४३	पूषा. ०५।१६	दि. ०७।२९	विष्क. ०९।४५	ग. ०९।१७	घ. २०।२४	दि. ०१।३३	०३।१६।१२।४८	३३।०७	५।२३	६।३७	११	१८	०२	प्रदोष १४ व्रतम्, भ. ३८।२१ उपरि।
१५ चं.	३७।४१	रा. ०८।२७	उषा. ०५।४७	दि. ०७।४२	प्रीति: ०६।१२	वि. ०८।०१	मकर:	अहोरात्रम्	०३।१७।०९।५६	३३।०४	५।२३	६।३७	१२	१९	०३	श्रावणी १५ स्नानदानादिः, **सोमव्रतम्, गृहारम्भः पूर्णिमायाम्**, हयग्रीवावतारः, **उपाकर्म, संस्कृतदिवसः**, दोलोत्सवान्तः, **रक्षाबन्धनं** दिवा घं. ०८।३५ उपरि, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्, ✪

✪ **आश्लेषायां रविः** १५।०७ पुंस्त्रीचंचंयोगस्तुलालग्नं शिखिवाहनममृतानाडीपतिश्चन्द्रस्तेन सुवृष्टियोगः, भ. ०८।०१ यावत्।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च						
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ मं.	११।१३।२१।१८	०२।१८।१३।२०	०८।२९।१८।४८	०१।२०।२८।४०	०९।०१।०७।३५	०८।०५।३५।३५	४६।४९
०२ बु.	११।१३।४७।३६	०२।१९।३९।२३	०८।२९।१०।५८	०१।२१।१८।१६	०९।०१।०२।४८	०८।०५।३२।२४	४६।४८
०३ बृ.	११।१४।१३।५४	०२।२१।०५।२६	०८।२९।०३।०८	०१।२२।०७।५२	०९।००।५८।०१	०८।०५।२९।१३	४६।४७
०४ शु.	११।१४।४०।१२	०२।२२।३१।२९	०८।२८।५५।१८	०१।२२।५७।२८	०९।००।५३।१५	०८।०५।२६।०२	४६।४६
०५ श.	११।१५।०६।३०	०२।२३।५७।३२	०८।२८।४७।२८	०१।२३।४७।०४	०९।००।४८।२९	०८।०५।२२।५१	४६।४५
०६ र.	११।१५।३२।४७	०२।२५।२३।३५	०८।२८।३९।३९	०१।२४।३६।३९	०९।००।४३।४३	०८।०५।१९।४१	४६।४४
०७ चं.	११।१५।५९।०४	०२।२६।४९।३७	०८।२८।३१।५०	०१।२५।२६।१४	०९।००।३८।५७	०८।०५।१६।३१	४६।४३
०८ मं.	११।१६।२१।५६	०२।२८।२७।३६	०८।२८।२४।०९	०१।२६।२०।१९	०९।००।३४।१२	०८।०५।१३।२०	४६।४१
१० बु.	११।१६।४४।४८	०३।००।०५।३५	०८।२८।१६।२८	०१।२७।१४।२३	०९।००।२९।२७	०८।०५।१०।०९	४६।३९
११ बृ.	११।१७।०७।४०	०३।०१।४३।३४	०८।२८।०८।४७	०१।२८।०८।२७	०९।००।२४।४२	०८।०५।०६।५८	४६।३७
१२ शु.	११।१७।३०।३१	०३।०३।२१।३३	०८।२८।०१।०६	०१।२९।०२।३१	०९।००।१९।५७	०८।०५।०३।४७	४६।३५
१३ श.	११।१७।५३।२२	०३।०४।५९।३२	०८।२७।५३।२५	०१।२९।५६।३५	०९।००।१५।१२	०८।०५।००।३६	४६।३४
१४ र.	११।१८।१६।१३	०३।०६।३७।३२	०८।२७।४५।४५	०२।००।५०।३९	०९।००।१०।२७	०८।०४।५७।२६	४६।३३
१५ चं.	११।१८।३९।०४	०३।०८।१५।३२	०८।२७।३८।०५	०२।०१।४४।४३	०९।००।०५।४३	०८।०४।५४।१६	४६।३२

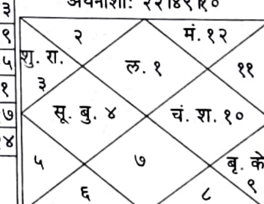
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ मं.	००।५०	०२।४६	०४।५९	०७।१७	०९।३३	११।४८	१४।०५	१६।२२	१८।२७	२०।१३	२१।४४	२३।१३
०२ बु.	००।४७	०२।४३	०४।५६	०७।१४	०९।३०	११।४५	१४।०२	१६।१९	१८।२४	२०।१०	२१।४१	२३।१०
०३ बृ.	००।४३	०२।३९	०४।५२	०७।१०	०९।२६	११।४१	१३।५८	१६।१५	१८।२०	२०।०६	२१।३७	२३।०६
०४ शु.	००।३९	०२।३५	०४।४८	०७।०६	०९।२२	११।३७	१३।५४	१६।११	१८।१६	२०।०२	२१।३३	२३।०२
०५ श.	००।३५	०२।३१	०४।४४	०७।०२	०९।१८	११।३३	१३।५०	१६।०७	१८।१२	१९।५८	२१।२९	२२।५८
०६ र.	००।३१	०२।२७	०४।४०	०६।५८	०९।१४	११।२९	१३।४६	१६।०३	१८।०८	१९।५४	२१।२५	२२।५४
०७ चं.	००।२७	०२।२३	०४।३६	०६।५४	०९।१०	११।२५	१३।४२	१५।५९	१८।०४	१९।५०	२१।२१	२२।५०
०८ मं.	००।२४	०२।२०	०४।३३	०६।५१	०९।०७	११।२२	१३।३९	१५।५६	१८।०१	१९।४७	२१।१८	२२।४७
१० बु.	००।२०	०२।१६	०४।२९	०६।४७	०९।०३	११।१८	१३।३५	१५।५२	१७।५७	१९।४३	२१।१४	२२।४३
११ बृ.	००।१६	०२।१२	०४।२५	०६।४३	०८।५९	११।१४	१३।३१	१५।४८	१७।५३	१९।३९	२१।१०	२२।३९
१२ शु.	००।१२	०२।०८	०४।२१	०६।३९	०८।५५	११।१०	१३।२७	१५।४४	१७।४९	१९।३५	२१।०६	२२।३५
१३ श.	००।०८	०२।०४	०४।१७	०६।३५	०८।५१	११।०६	१३।२३	१५।४०	१७।४५	१९।३१	२१।०२	२२।३१
१४ र.	००।०४	०२।००	०४।१३	०६।३१	०८।४७	११।०२	१३।१९	१५।३६	१७।४१	१९।२७	२०।५८	२२।२७
१५ चं.	००।०१	०१।५७	०४।१०	०६।२८	०८।४४	१०।५९	१३।१६	१५।३३	१७।३८	१९।२४	२०।५५	२२।२४

७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३६।३३
अयनांशाः २२।४९।०९



१५ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३६।४०
अयनांशाः २२।४९।१०



विविधविषयाः—पञ्चम्यां **नागपूजनम्**—श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्वणाः।। पूजयेद्विधिवद्वीर दधिदूर्वाङ्कुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणैः।। ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सराः। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्।। **पूर्णिमायां रक्षाबन्धनमन्त्रः**—येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।। **शकुनम्**—श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिश्चेदभ्रमेव वा। तदा तु चतुरो मासान् वृष्टिर्भवति भूयसी।। अष्टम्यां श्रावणे शुक्ले प्रभाते मेघडम्बरम्। रविराच्छादितस्तेन महावृष्टिं करिष्यति।। नभसि शुक्लदलेऽचलसंज्ञके रवितिथावुदयो रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदाः।। **ग्रहयोगेन वृष्टिविचारः**—बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निःसंशयं तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा।। समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः। तथैव जीवबुधयोः वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः।। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही।। बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम्। तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्।। पुरतः पृष्ठतो भानुः शुभा यदि समीपगाः। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेत्ते प्रतिलोमगाः।। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते।। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यङ्गारके वृष्टिः ध्रुवा वृष्टिश्शनैश्चरे।। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरुः। शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते।। **मिथ्यापि न दोषायेत्युक्तं भारते**—विवाहकाले रतिसम्प्रयोगे प्राणात्यये सर्वधनापहारे। विप्रस्य चार्थे ह्यनृतं वदेद्वै पञ्चानृतान्याहुरपातकानि।। **धर्मप्रशंसा**—धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः। तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः, वक्री पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षादितः षष्ठीं यावद्वातमेघचारवृष्टियोगस्ततस्त्रयोदशीं यावद्वातातपखण्डवृष्टियोगस्ततः पक्षान्तं यावद्वातवृष्टियोगः।।

भाद्रकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क ०४।०८।२०२० ई. तः दिनाङ्क १९।०८।२०२० ई. यावत्।
शुद्धः १३ तोऽशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, पश्चिमे कालः १३ तः उत्तरे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
०१ मं.	३८।१९	रा. ०८।४४	श्रवणा ०७।३१	दि. ०८।२४	आयु. ०३।४१	बा. ०८।००	म. ३९।०१	रा. ०९।००	०३।१८।०७।१३	३३।००	५।२४	६।३६	१३	२०	०४	दधि भाद्रपदे त्यजेत्, सिंहे अलाबुभक्षणं निषिद्धम्, पञ्चकारम्भो दिवा घं ०८।२४ उपरि, पूर्वयात्रा द्वितीयायां मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा।
०२ बु.	४०।१९	रा. ०९।३३	धनि. १०।३२	दि. ०९।३८	सौभा. ०२।१२	तै. ०९।००	कुम्भः	अहोरात्रम्	०३।१९।०४।३०	३२।५७	५।२५	६।३५	१४	२१	०५	**पूर्वास्तो बुधः** ३२।५९, **वक्रान्मूले धनुषि शनिः** ०६।५३, **गृहारम्भः**, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।
०३ बृ.	४३।२४	रा. १०।४७	शत. १४।४१	दि. ११।१७	शोभ. ०१।३५	व. ११।५१	कुम्भः	अहोरात्रम्	०३।२०।०१।४७	३२।५४	५।२५	६।३५	१५	२२	०६	कज्जलीतृतीया, विशालाक्षीपूजनम्, **गृहारम्भः शतभिषायाम्**, पश्चिमयात्रा तृतीयायां पूर्वभाद्रे, भ. ११।५१ उपरि ४३।२४ यावत्।
०४ शु.	४७।२९	रा. १२।२६	पूभा. १९।५४	दि. ०१।२४	अगं. ०१।५४	ब. १५।२६	कुं. ०३।३६	प्रा. ०६।५२	०३।२०।५९।०४	३२।५१	५।२६	६।३४	१६	२३	०७	**विनायक** ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०९।१८, बहुलापूजा, उत्तरयात्रा मीनगते चन्द्रे पूर्वभाद्रे।
०५ श.	५२।१२	रा. ०२।२०	उभा. २५।५३	दि. ०३।४८	सुकर्मा०२।५५	कौ. १९।५०	मीनः	अहोरात्रम्	०३।२१।५६।२१	३२।४८	५।२७	६।३३	१७	२४	०८	**गृहारम्भ उत्तरभाद्रे**, द.ति. ५२।१२ उपरि।
०६ र.	५७।१६	रा. ०४।२१	रेवती ३२।२३	सं. ०६।२४	धृतिः ०४।२२	ग. २४।४४	मी. ३२।२३	सं. ०६।२४	०३।२२।५३।३८	३२।४५	५।२७	६।३३	१८	२५	०९	हलधरषष्ठी, कपिलाषष्ठी, पश्चिमां विना यात्रा सप्तम्याम्, पञ्चकान्तः सायं घं. ०६।२४ उपरि, द.ति. ५७।१६ यावत्, भ. ५७।१६ उपरि।
०७ चं.	६०।००	अहोरात्रम्	अश्वि. ३८।५३	रा. ०९।०१	शूलः ०६।००	वि. २९।४५	मेषः	अहोरात्रम्	०३।२३।५०।५४	३२।४२	५।२८	६।३२	१९	२६	१०	त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, भ. २९।४५ यावत्।
०७ मं.	०२।१५	प्रा. ०६।२२	भरणी ४५।००	रा. ११।२८	गण्डः ०७।२८	ब. ०२।१५	मेषः	अहोरात्रम्	०३।२४।४८।२३	३२।३९	५।२८	६।३२	२०	२७	११	मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनम्, **जयन्तीव्रतम्**।
०८ बु.	०६।३९	दि. ०८।०९	कृत्ति. ५०।२४	रा. ०१।३९	वृद्धिः ०८।३४	कौ. ०६।३९	मे. ०१।२१	प्रा. ०६।०१	०३।२५।४५।५२	३२।३६	५।२९	६।३१	२१	२८	१२	**कृष्णाष्टमीव्रतम्**, श्रीकृष्णपूजनम्, ऐषमः विशिष्टयोगोऽत्र व्रते, **तथाहि स्कान्दे**—उदये चाष्टमी किञ्चिन्नवमी सकला यदि। भवेद्वै बुधसंयुक्ता प्राजापत्यर्क्षसंयुता।। अपि वर्षशतेनापि लभ्यते वा न वा विभो।।
०९ बृ.	१०।१४	दि. ०९।३५	रोहि. ५४।४८	रा. ०३।२४	ध्रुवः ०८।५८	ग. १०।१४	वृषः	अहोरात्रम्	०३।२६।४३।२१	३२।३३	५।२९	६।३१	२२	२९	१३	कृष्णाष्टमीव्रतपारणम्, पूर्वयात्रा दशम्यां रोहिण्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा, भ. ४१।२७ उपरि।
१० शु.	१२।४०	दि. १०।३४	मृग. ५८।०४	रा. ०४।४४	व्या. ०८।२८	वि. १२।४०	वृ. २६।२६	दि. ०४।०४	०३।२७।४०।४९	३२।३०	५।३०	६।३०	२३	३०	१४	पश्चिमां विना यात्रा मृगशिरसि, भ. १२।४० यावत्। ✪ **विष्णुपदीसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** दिवा घं. ०६ मि. ५६ उपरि घं. ०१ मि. २० यावद्दिने, **पुण्याहः**, द्वापरयुगादिः, भ. १२।३८ उपरि ४१।२३ यावत्।
११ श.	१३।५८	दि. ११।०६	आर्द्रा ६०।००	अहोरात्रम्	हर्षणः०७।०६	बा. १३।५८	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०३।२८।३८।२७	३२।२७	५।३१	६।२९	२४	३१	१५	**जया ११** व्रतं सर्वेषाम्, **चतुस्सप्ततिस्वातन्त्र्यदिवसः**, राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानम्, बाबागणिनाथजयन्त्युत्सवः।
१२ र.	१३।५५	दि. ११।०५	आर्द्रा ००।०४	प्रा. ०५।३३	वज्रः ०४।४२	तै. १३।५५	मि. ४५।३७	रा. ११।४६	०३।२९।३५।४५	३२।२५	५।३१	६।२९	२५	३२	१६	**मघायां सिंहे बुधः** ००।५१, कुष्माण्डेन पारणम्, प्रदोष १३ व्रतम्, मासान्तः।
१३ चं.	१२।३८	दि. १०।३५	पुन. ००।४८	प्रा. ०५।५१	सिद्धिः ०१।१८	व. १२।३८	कर्कः	अहोरात्रम्	०४।००।३३।१३	३२।२२	५।३२	६।२८	२६	०१	१७	व्यतीपातदं. ५५।३६, प्रदोष १४ व्रतम्, दुर्भर १४, भैरवपूजनम्, **मघायां सिंहे रविः** ११।३१ मु. ३० फलं साम्यं स्त्रीस्त्रीचंचंयोगस्तुलालग्नं रासभवाहनं जलानाडीपतिर्बुधस्तेन खण्डवृष्टियोगः, ✪
१४ मं.	१०।०८	दि. ०९।३५	पुष्यः ००।२०	प्रा. ०५।४०	वरी. ५१।४२	श. १०।०८	क. ५८।४८	रा. ०५।०३	०४।०१।३०।५३	३२।१८	५।३२	६।२८	२७	०२	१८	आश्लेषादं. ५८।२८, मासादिः, भौमान्विता अमावास्या स्नानदानादौ पुण्यतमा।
३० बु.	०६।३५	दि. ०८।११	मघा ५६।२८	रा. ०४।०८	परिघः ४५।४५	ना. ०६।३५	सिंहः	अहोरात्रम्	०४।०२।२८।३३	३२।१५	५।३३	६।२७	२८	०३	१९	भाद्री ३० स्नानदानादिः, **कुशोत्पाटनम्**, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च						
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ मं.	११।१८।५८।२६	०३।१०।००।४६	०८।२७।३१।०७	०२।०२।४२।२७	०९।००।०१।२७	०८।०४।५१।०५	४६।३०
०२ बु.	११।१९।१७।४८	०३।११।४५।५९	०८।२७।२४।०९	०२।०३।४०।११	०८।२९।५७।११	०८।०४।४७।५४	४६।२८
०३ बृ.	११।१९।३७।१०	०३।१३।३१।१२	०८।२७।१७।११	०२।०४।३७।५५	०८।२९।५२।५६	०८।०४।४४।४३	४६।२६
०४ शु.	११।१९।५६।३२	०३।१५।१६।२५	०८।२७।१०।१४	०२।०५।३५।३८	०८।२९।४८।४१	०८।०४।४१।३२	४६।२४
०५ श.	११।२०।१५।५४	०३।१७।०१।३८	०८।२७।०३।१७	०२।०६।३३।२१	०८।२९।४४।२६	०८।०४।३८।२१	४६।२३
०६ र.	११।२०।३५।१६	०३।१८।४६।५१	०८।२६।५६।२०	०२।०७।३१।०४	०८।२९।४०।११	०८।०४।३५।१०	४६।२२
०७ चं.	११।२०।५४।३८	०३।२०।३२।०४	०८।२६।४९।२३	०२।०८।२८।४७	०८।२९।३५।५६	०८।०४।३२।००	४६।२१
०७ मं.	११।२१।०९।२०	०३।२२।२०।३३	०८।२६।४३।१४	०२।०९।२९।१७	०८।२९।३१।५४	०८।०४।२८।४९	४६।१९
०८ बु.	११।२१।२४।०२	०३।२४।०९।०२	०८।२६।३७।०५	०२।१०।२९।४७	०८।२९।२७।५२	०८।०४।२५।३८	४६।१७
०९ बृ.	११।२१।३८।४४	०३।२५।५७।३१	०८।२६।३०।५६	०२।११।३०।१६	०८।२९।२३।५१	०८।०४।२२।२७	४६।१५
१० शु.	११।२१।५३।२६	०३।२७।४५।५९	०८।२६।२४।४७	०२।१२।३०।४५	०८।२९।१९।५०	०८।०४।१९।१६	४६।१४
११ श.	११।२२।०८।०८	०३।२९।३४।२७	०८।२६।१८।३८	०२।१३।३१।१४	०८।२९।१५।४९	०८।०४।१६।०५	४६।१३
१२ र.	११।२२।२२।४९	०४।०१।२२।५५	०८।२६।१२।३०	०२।१४।३१।४३	०८।२९।११।४८	०८।०४।१२।५४	४६।१२
१३ चं.	११।२२।३७।३०	०४।०३।११।२३	०८।२६।०६।२२	०२।१५।३२।१२	०८।२९।०७।४७	०८।०४।०९।४५	४६।११
१४ मं.	११।२२।४७।१५	०४।०५।००।५७	०८।२६।०१।२५	०२।१६।३५।०९	०८।२९।०४।२१	०८।०४।०६।३४	४६।०९
३० बु.	११।२२।५७।००	०४।०६।५०।३१	०८।२५।५६।२८	०२।१७।३८।०६	०८।२९।००।५५	०८।०४।०३।२३	४६।०७

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ मं.	२३।५७	०१।५३	०४।०६	०६।२४	०८।४०	१०।५५	१३।१२	१५।२९	१७।३४	१९।२०	२०।५१	२२।२०
०२ बु.	२३।५३	०१।४९	०४।०२	०६।२०	०८।३६	१०।५१	१३।०८	१५।२५	१७।३०	१९।१६	२०।४७	२२।१६
०३ बृ.	२३।४९	०१।४५	०३।५८	०६।१६	०८।३२	१०।४७	१३।०४	१५।२१	१७।२६	१९।१२	२०।४३	२२।१२
०४ शु.	२३।४५	०१।४१	०३।५४	०६।१२	०८।२८	१०।४३	१३।००	१५।१७	१७।२२	१९।०८	२०।३९	२२।०८
०५ श.	२३।४१	०१।३७	०३।५०	०६।०८	०८।२४	१०।३९	१२।५६	१५।१३	१७।१८	१९।०४	२०।३५	२२।०४
०६ र.	२३।३७	०१।३३	०३।४६	०६।०४	०८।२०	१०।३५	१२।५२	१५।०९	१७।१४	१९।००	२०।३१	२२।००
०७ चं.	२३।३३	०१।२९	०३।४२	०६।००	०८।१६	१०।३१	१२।४८	१५।०५	१७।१०	१८।५६	२०।२७	२१।५६
०७ मं.	२३।३०	०१।२६	०३।३९	०५।५७	०८।१३	१०।२८	१२।४५	१५।०२	१७।०७	१८।५३	२०।२४	२१।५३
०८ बु.	२३।२६	०१।२२	०३।३५	०५।५३	०८।०९	१०।२४	१२।४१	१४।५८	१७।०३	१८।४९	२०।२०	२१।४९
०९ बृ.	२३।२२	०१।१८	०३।३१	०५।४९	०८।०५	१०।२०	१२।३७	१४।५४	१६।५९	१८।४५	२०।१६	२१।४५
१० शु.	२३।१८	०१।१४	०३।२७	०५।४५	०८।०१	१०।१६	१२।३३	१४।५०	१६।५५	१८।४१	२०।१२	२१।४१
११ श.	२३।१४	०१।१०	०३।२३	०५।४१	०७।५७	१०।१२	१२।२९	१४।४६	१६।५१	१८।३७	२०।०८	२१।३७
१२ र.	२३।१०	०१।०६	०३।१९	०५।३७	०७।५३	१०।०८	१२।२५	१४।४२	१६।४७	१८।३३	२०।०४	२१।३३
१३ चं.	२३।०६	०१।०२	०३।१५	०५।३३	०७।४९	१०।०४	१२।२१	१४।३८	१६।४३	१८।२९	२०।००	२१।२९
१४ मं.	२३।०३	००।५९	०३।१२	०५।३०	०७।४६	१०।०१	१२।१८	१४।३५	१६।४०	१८।२६	१९।५७	२१।२६
३० बु.	२२।५९	००।५५	०३।०८	०५।२६	०७।४२	०९।५७	१२।१४	१४।३१	१६।३६	१८।२२	१९।५३	२१।२२

७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३६।४७
अयनांशाः २२।४९।११



१३ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३६।५४
अयनांशाः २२।४९।१२



विविधविषयाः—भाद्रकृष्णाष्टम्यां **श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतम्**। तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतमुदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशकन्तस्मात् सर्वैरवश्यमेव कार्यम्। भाद्रामायां **कुशोत्पाटनमाह मरीचिः**—मासे नभस्यमावास्या तस्यां दर्भश्च यो मतः। अयातयामास्ते दर्भा विनियोज्याः पुनः पुनः।। शुक्लादिगणनयात्र भाद्रामावास्या सिद्ध्यति। अस्यामुत्पाटिता दर्भा वर्षपर्यन्तं कर्मार्हा भवन्ति। **कुशोत्पाटनमन्त्रः**—कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।। कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।। **वर्ज्यकुशानाह लघुहारीतः**—चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।। **महिष्यादिप्रसवदोषः गार्ग्यपरिशिष्टे**—माघे बुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा। सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः।। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति। **शकुनम्**—प्रतिपत् सप्तमी भाद्रे द्वादशी च त्रयोदशी। पूर्णिमा चाशु वारुण्यां श्रितैर्मेघैः प्रवर्षणम्।। भाद्रशुक्लद्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते। तदा तेन भवेद्वर्षे शस्यसम्पत्तिरुत्तमा।। भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां चेद्वाराजीवेन्दुभार्गवाः। उत्तराहस्तचित्राभिः सुभिक्षं जायते ध्रुवम्।। शुक्लायां भाद्रपञ्चम्यां स्वातीभं यदि जायते। तदा सुभिक्षमादेश्यमित्याहुर्दैवचिन्तकाः।। यदि भाद्रपदे शुक्ले षष्ठ्यां भवति मैत्रभम्। तत्राभ्राणि तडिद्वृष्टिर्धान्यनिष्पत्तिहेतवे।। सप्तम्यां भाद्रमासस्य न विद्युन्न च गर्जितम्। न च वृष्टिस्तदा नूनं तत्र दुष्कालसम्भवः।। एकादश्यां तु भाद्रस्य सुभिक्षायाभ्रडम्बरः। निशि गर्जति चेत्तत्र शलभोपद्रवस्तदा।। भाद्रे पश्चिमतो वायौ मेघाभावं विनिर्दिशेत्। मेघे तु सत्यनेकाहं झञ्झावृष्टिर्भविष्यति।। **यात्रायां शकुनम्**—अग्रे धेनुः सवत्सा वृषगजतुरगा दक्षिणावर्त्तवह्निर्दिव्यस्त्री पूर्णकुम्भो द्विजवरगणिका श्वेतमाला पताका। मत्स्यो मांसं दधिमधुसहितं काञ्चनं शुक्लवस्त्रं दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पठित्वा फलमिह लभते मानवो गन्तुकामः।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः २ तः पूर्वास्तः, वक्री पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातमेघचारखण्डवृष्टियोगस्तन्मध्यभागे मेघचारवातातपखण्डवृष्टयः।

भाद्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क २०।०८।२०२० ई. तः दिनाङ्क ०२।०९।२०२० ई. यावत्।
अशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. द. प.	घं. मि.	योगाः यो. द. प.	करणानि क. द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानम् द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.
०१ बृ.	०२।११	प्रा. ०६।२६	पूफ. ५३।१८	रा. ०२।५३	शिवः ३९।०३	ब. ०२।११	सिंहः	अहोरात्रम्	०४।०३।२६।१२	३२।१२	५।३४	६।२६	२९	०४	२०
०३ शु.	५१।२२	रा. ०२।०७	उफ. ४९।३५	रा. ०१।२४	सिद्धः ३१।५१	तै. २४।१२	सिं. ०७।२२	दि. ०८।३१	०४।०४।२३।५१	३२।०९	५।३४	६।२६	३०	०५	२१
०४ श.	४५।१९	रा. ११।४३	हस्तः ४५।३२	रा. ११।४८	साध्यः २४।२१	व. १८।२१	कन्या	अहोरात्रम्	०४।०५।२१।३०	३२।०६	५।३५	६।२५	३१	०६	२२
०५ र.	३९।१०	रा. ०९।१५	चित्रा ४१।१८	रा. १०।०६	शुभः १६।४१	ब. १२।१५	कं. १३।२५	दि. १०।५७	०४।०६।१९।०९	३२।०३	५।३५	६।२५	०१	०७	२३
०६ चं.	३३।००	सं. ०६।४८	स्वाती ३७।११	रा. ०८।२८	शुक्लः०८।५६	कौ. ०६।०५	तुला	अहोरात्रम्	०४।०७।१६।४८	३२।००	५।३६	६।२४	०२	०८	२४
०७ मं.	२७।१०	दि. ०४।२९	विशा. ३३।१७	सं. ०६।५६	ब्रह्मः ०१।२०	ग. ००।०५	तु. १९।१५	दि. ०१।१९	०४।०८।१४।४२	३१।५६	५।३७	६।२३	०३	०९	२५
०८ बु.	२१।४४	दि. ०२।२०	अनु. २९।५१	दि. ०५।३४	वैधृतिः४७।०९	ब. २१।४४	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०४।०९।१२।३६	३१।५२	५।३८	६।२२	०४	१०	२६
०९ बृ.	१६।५४	दि. १२।२४	ज्ये. २७।०६	दि. ०४।२८	विष्क. ४०।५३	कौ. १६।५४	वृ. २७।०६	दि. ०४।२८	०४।१०।१०।३०	३१।४८	५।३८	६।२२	०५	११	२७
१० शु.	१२।५७	दि. १०।५०	मूलम् २५।१२	दि. ०३।३४	प्रीतिः ३५।१८	ग. १२।५७	धनुः	अहोरात्रम्	०४।११।०८।२३	३१।४४	५।३९	६।२१	०६	१२	२८
११ श.	०९।५७	दि. ०९।३९	पूषा. २४।१३	दि. ०३।२१	आयु. ३०।३५	वि. ०९।५७	ध. ३९।१६	रा. ०९।२२	०४।१२।०६।१६	३१।४०	५।४०	६।२०	०७	१३	२९
१२ र.	०८।०२	दि. ०८।५४	उषा. २४।२४	दि. ०३।२७	सौभा. २६।४४	बा. ०८।०२	मकरः	अहोरात्रम्	०४।१३।०४।०९	३१।३६	५।४१	६।१९	०८	१४	३०
१३ चं.	०७।२०	दि. ०८।३८	श्रवणा २५।४९	दि. ०४।०२	शोभ. २३।५५	तै. ०७।२०	म. ५७।०९	रा. ०४।३४	०४।१४।०२।०२	३१।३२	५।४२	६।१८	०९	१५	३१
१४ मं.	०७।५७	दि. ०८।५३	धनि. २८।२९	दि. ०५।०६	अगं. २२।०६	व. ०७।५७	कुम्भः	अहोरात्रम्	०४।१५।००।०८	३१।२८	५।४२	६।१८	१०	१६	०१
१५ बु.	०९।५७	दि. ०९।४२	शत. ३२।२२	सं. ०६।४०	सुकर्मा २१।१६	ब. ०९।५७	कुम्भः	अहोरात्रम्	०४।१५।५८।१४	३१।२४	५।४३	६।१७	११	१७	०२

द्वितीयादं. ५४।५२, चन्द्रदर्शनमु. ३० सौम्यशृङ्गफलं साम्यम्, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
हरितालिका (तीज) व्रतम्, रुद्रसावर्णिमन्वादिः, वराहावतारः, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।
गणेश ४ व्रतम्, **चतुर्थीचन्द्र(चौठचन्द्र)** पूजनम्, **गणेशपूजारम्भः**, दक्षिणयात्रा चतुर्थ्याम्, ❖
रविव्रतम्, ऋषिपञ्चमी, सप्तर्षि (मरीचिवशिष्ठाङ्गिरात्रिक्रतुपुलहपुलस्त्य) पूजनम्, पञ्चगव्यप्राशनम्, ✪
लोलार्कषष्ठी, सूर्यव्रतं पूजनञ्च, पश्चिमदक्षिणयात्रा षष्ठ्याम्।
ऐन्द्रदं. ५२।४१, भ. २७।१० उपरि ५४।२७ यावत्, पश्चिमयात्रानुराधायाम्।
राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी, महालक्ष्मीव्रतारम्भः, बुधाष्टमी स्नानदानादावक्षयफलदा।
द.ति. १६।५४ उपरि, गं. २१।०६ उपरि ३६।०६ यावत्, (९–१०) एकोद्दिष्टम्।
द.ति. १२।५७ यावत्, भ. ४१।२७ उपरि, पूर्वोत्तरयात्रैकादश्याम्। ❍ पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायाम्।
कर्माधर्मा ११ व्रतं सर्वेषाम्, हरेः पार्श्वपरिवर्त्तनम्, उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, भ. ०९।५७ यावत्।
रविव्रतम्, कुष्माण्डेन पारणम्, वामन १२, वामनावतारः, प्रदोष १३ व्रतम्, **इन्द्रपूजारम्भः**, ❍
प्रदोष १४ व्रतम्, **पूर्वफल्गुन्यां रविः** ०२।१४ पुंस्त्रीसूचंयोगः सिंहलग्नं मण्डूकवाहनममृतानाडीपतिश्चन्द्रस्तेन सुवृष्टियोगः, **कर्के शुक्रः** २२।५१, पञ्चकारम्भो दिवा घं. ०४।०२ उपरि, पूर्वां विना यात्रा त्रयोदश्याम्।
सितम्बर ९, कन्यायां बुधः ३८।०१, भ. ०७।५७ उपरि ३८।५७ यावत्, याम्यामगस्त्योदयः, **अनन्त १४ अनन्तपूजनं** तङ्गोरकधारणञ्च, **गणेशविसर्जनम्**, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्। **अनन्तचतुर्दशीव्रतनिर्णयः** ☆
वक्री मङ्गलः ११।४८, भाद्री १५ स्नानदानादिः, अगस्त्यार्घदानम्, शिवार्चनम्, **महालयारम्भः**, **पितृपक्षीयपार्वणतर्पणारम्भः**, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
❖ भ. १८।२१ उपरि ४५।१९ यावत्। ✪ पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा पञ्चम्याम्।

☆ **म.म.राजनाथीय तिथिनिर्णये**—अथ चतुर्दशी—सा शुक्ला परा ग्राह्या, **चतुर्दश्याथ पूर्णिमेति** युग्मवचनात्। एकादश्यष्टमी षष्ठी पौर्णमासीचतुर्दशी। अमावास्या तृतीया च ता उपोष्याः परान्विताः।। इति विष्णुधर्मोत्तरवचनात्। **उदये त्रिमुहूर्तापि ग्राह्याऽनन्तव्रते तिथिः** इति माधवीयाच्च। **पक्षधरीय तिथिचन्द्रिकायाम्–भविष्ये**—तथा भाद्रपदस्यान्ते चतुर्दश्यां द्विजोत्तम। पूर्णिमायाः समायोगे व्रतं चानन्तकं चरेत्।। **स्कान्दे**—मुहूर्तमपि चेद्भाद्रे पूर्णिमायां चतुर्दशी। सम्पूर्णां तां विजानीयात्पूजयेद्विष्णुमव्ययम्।। **कृत्यशिरोमणौ भविष्यपुराणम्**—अनन्तस्य व्रते राजन् घटिकैका चतुर्दशी। उदये घटिकार्द्धं वा सैव ग्राह्या महाफला।। **दिवोदासः**—चतुर्दश्युदये किञ्चित् पूर्णिमा सकला यदि। तत्र कुर्यादनन्तस्य महाविष्णोः प्रपूजनम्।। **म.म.अमृतनाथीय कृत्यसारसमुच्चये**—अथ भाद्रशुक्लचतुर्दश्यामनन्तव्रतम्—सा च त्रिमुहूर्ताऽप्यौदयिकी ग्राह्येति माधवाचार्यः। तथाहि—"उदये त्रिमुहूर्ताऽपि ग्राह्याऽनन्तव्रते तिथिः" इति। घटिकामात्राऽप्यौदयिकी ग्राह्येति निर्णयामृतः। **तथाऽह भविष्ये**—पौर्णमास्याः समायोगात् व्रतं चानन्तकं चरेत्। एवमेव कृत्यमहार्णव–शुभङ्करीयतिथिनिर्णय–समयप्रदीप–तिथितत्त्वचिन्तामणि–प्रभृतिग्रन्थेष्वपि। तेन त्रिमुहूर्ताधिकायामुदयव्यापिन्यां पूर्णिमायुतायां चतुर्दश्याम्मङ्गलवासरे एवानन्तव्रतं पूजनञ्चेति।

तिथयः दिनानि	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ बृ.	११।२३।०६।४५	०४।०८।४०।०५	०८।२५।५१।३१	०२।१८।४१।०३	०८।२८।५७।२९	०८।०४।००।१२	४६।०५
०३ शु.	११।२३।१६।३०	०४।१०।२९।३९	०८।२५।४६।३४	०२।१९।४४।००	०८।२८।५४।०३	०८।०३।५७।०१	४६।०३
०४ श.	११।२३।२६।१५	०४।१२।१९।१३	०८।२५।४१।३७	०२।२०।४६।५६	०८।२८।५०।३८	०८।०३।५३।५०	४६।०२
०५ र.	११।२३।३५।५९	०४।१४।०८।४७	०८।२५।३६।४०	०२।२१।४९।५२	०८।२८।४७।१३	०८।०३।५०।४०	४६।०१
०६ चं.	११।२३।४५।४३	०४।१५।५८।२०	०८।२५।३१।४३	०२।२२।५२।४८	०८।२८।४३।४८	०८।०३।४७।३०	४६।००
०७ मं.	११।२३।४९।४२	०४।१७।४५।४६	०८।२५।२७।५७	०२।२३।५७।२१	०८।२८।४०।५०	०८।०३।४४।१९	४५।५८
०८ बु.	११।२३।५३।४१	०४।१९।३३।१२	०८।२५।२४।११	०२।२५।०१।५४	०८।२८।३७।५२	०८।०३।४१।०८	४५।५६
०९ बृ.	११।२३।५७।४०	०४।२१।२०।३८	०८।२५।२०।२६	०२।२६।०६।२७	०८।२८।३४।५४	०८।०३।३७।५७	४५।५४
१० शु.	११।२४।०१।३९	०४।२३।०८।०४	०८।२५।१६।४१	०२।२७।११।००	०८।२८।३१।५६	०८।०३।३४।४६	४५।५२
११ श.	११।२४।०५।३८	०४।२४।५५।३०	०८।२५।१२।५६	०२।२८।१५।३३	०८।२८।२८।५८	०८।०३।३१।३५	४५।५०
१२ र.	११।२४।०९।३८	०४।२६।४२।५५	०८।२५।०९।११	०२।२९।२०।०६	०८।२८।२६।०१	०८।०३।२८।२५	४५।४८
१३ चं.	११।२४।१३।३८	०४।२८।३०।२०	०८।२५।०५।२६	०३।००।२४।३९	०८।२८।२३।०४	०८।०३।२५।१५	४५।४६
१४ मं.	११।२४।१४।२८	०५।००।१३।१५	०८।२५।०३।०४	०३।०१।३०।४५	०८।२८।२०।४३	०८।०३।२२।०४	४५।४४
१५ बु.	११।२४।१४।५२	०५।०१।५६।१०	०८।२५।००।४२	०३।०२।३६।५१	०८।२८।१८।२२	०८।०३।१८।५३	४५।४२

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
४६।०५	२२।५५	००।५१	०३।०४	०५।२२	०७।३८	०९।५३	१२।१०	१४।२७	१६।३२	१८।१८	१९।४९	२१।१८
४६।०३	२२।५२	००।४८	०३।०१	०५।१९	०७।३५	०९।५०	१२।०७	१४।२४	१६।२९	१८।१५	१९।४६	२१।१५
४६।०२	२२।४८	००।४४	०२।५७	०५।१५	०७।३१	०९।४६	१२।०३	१४।२०	१६।२५	१८।११	१९।४२	२१।११
४६।०१	२२।४४	००।४०	०२।५३	०५।११	०७।२७	०९।४२	११।५९	१४।१६	१६।२१	१८।०७	१९।३८	२१।०७
४६।००	२२।४१	००।३७	०२।५०	०५।०८	०७।२४	०९।३९	११।५६	१४।१३	१६।१८	१८।०४	१९।३५	२१।०४
४५।५८	२२।३७	००।३३	०२।४६	०५।०४	०७।२०	०९।३५	११।५२	१४।०९	१६।१४	१८।००	१९।३१	२१।००
४५।५६	२२।३३	००।२९	०२।४२	०५।००	०७।१६	०९।३१	११।४८	१४।०५	१६।१०	१७।५६	१९।२७	२०।५६
४५।५४	२२।३०	००।२६	०२।३९	०४।५७	०७।१३	०९।२८	११।४५	१४।०२	१६।०७	१७।५३	१९।२४	२०।५३
४५।५२	२२।२६	००।२२	०२।३५	०४।५३	०७।०९	०९।२४	११।४१	१३।५८	१६।०३	१७।४९	१९।२०	२०।४९
४५।५०	२२।२२	००।१८	०२।३१	०४।४९	०७।०५	०९।२०	११।३७	१३।५४	१५।५९	१७।४५	१९।१६	२०।४५
४५।४८	२२।१९	००।१५	०२।२८	०४।४६	०७।०२	०९।१७	११।३४	१३।५१	१५।५६	१७।४२	१९।१३	२०।४२
४५।४६	२२।१५	००।११	०२।२४	०४।४२	०६।५८	०९।१३	११।३०	१३।४७	१५।५२	१७।३८	१९।०९	२०।३८
४५।४४	२२।११	००।०७	०२।२०	०४।३८	०६।५४	०९।०९	११।२६	१३।४३	१५।४८	१७।३४	१९।०५	२०।३४
४५।४२	२२।०८	००।०४	०२।१७	०४।३५	०६।५१	०९।०६	११।२३	१३।४०	१५।४५	१७।३१	१९।०२	२०।३१

६ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३७।०१
अयनांशा: २२।४९।१३

ल. १ | मं. ११ | शु. रा. २ | १२ | १० | ३ | ९ | सू. बु. ४ | चं. ६ | बृ. श. के. ८ | ५ | ७

१३ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३७।०८
अयनांशा: २२।४९।१४

ल. १ | मं. ११ | रा. २ | १२ | १० | शु. ३ | चं. ९ | सू. बु. ४ | ६ | बृ. श. के. ८ | ५ | ७

विविधविषयाः—भाद्रशुक्लतृतीयायां **हरितालिका। सा च** चतुर्थीयुता ग्राह्या। **स्कान्दे**—कला काष्ठा मुहूर्त्ताऽपि द्वितीया यदि दृश्यते। सा तृतीया न कर्त्तव्या कर्त्तव्या गणसंयुता।। व्रतेऽस्मिन् पार्वतीशिवयोः पूजा क्रियते। चतुर्थ्यां सरोहिणीकचन्द्रपूजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च **पश्येत्तन्मन्त्रः**—सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः।। **प्रार्थनामन्त्रश्च**—दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्।। **चतुर्थीतस्त्रयोदशीं यावद्गणेशं** सम्पूज्य चतुर्दश्यां पूजनोत्तरं विसर्जनम्। **अष्टमी दूर्वाख्या।** अस्यां राधाजयन्त्युत्सवो महालक्ष्मीव्रतारम्भश्च। तथा च द्वादशीत **इन्द्रपूजारम्भः**। एकादश्यां विष्णोः **पार्श्वपरिवर्त्तनमन्त्रः**—प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि। कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते।। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्व सम्परिवर्त्तस्व सुखं स्वपिहि माधव।। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगदेतच्चराचरम्।। देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरञ्जन। कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे।। **अनन्तधारणमन्त्रः**—अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव। अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते।। **भाद्रपूर्णिमायां ऋषितर्पणोत्तरं शङ्खे जलाक्षतश्वेतपुष्प(काशपुष्प)फलद्रव्यादिकं गृहीत्वा सव्येनैव दक्षिणाभिमुख अगस्त्यार्घदानं कुर्यात्तन्मन्त्रः**—कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। शङ्खं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च। उदयन्ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसम्भव। उदयन्ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। **प्रार्थनामन्त्रः**—आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।
ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः १५ तो वक्री, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्री पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।
वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातवृष्टियोगस्तन्मध्यभागे वातातपच्छिन्नवृष्टयः।

प्रथमाश्विनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क ०३।०९।२०२० ई. तः दिनाङ्क १७।०९।२०२० ई. यावत्।
अशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. द. प.	घं. मि.	योगाः यो. द. प.	करणानि क. द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानम् द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	
०१ बृ.	१२।५८	दि. १०।५५	पूभा. ३७।२३	रा. ०८।४१	धृतिः २१।२२	कौ. १२।५८	कुं. २१।०८	दि. ०२।११	०४।१६।५६।२०	३१।२०	५।४४	६।१६	१२	१८	०३	दुग्धं त्यजेदाश्विने, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे।
०२ शु.	१७।०२	दि. १२।३४	उभा. ४३।१२	रा. ११।०२	शूलः २२।११	ग. १७।०२	मीनः	अहोरात्रम्	०४।१७।५४।२६	३१।१६	५।४५	६।१५	१३	१९	०४	उत्तरयात्रा रेवत्याम्, भ. ४८।५७ उपरि, (३) एकोद्दिष्टम्।
०३ श.	२१।५१	दि. ०२।३०	रेवती ४९।३४	रा. ०१।३६	गण्डः २३।२९	वि. २१।५१	मी. ४९।३४	रा. ०१।३६	०४।१८।५२।३१	३१।१२	५।४६	६।१४	१४	२०	०५	**एकदन्त** ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०८।२९, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पूर्वां विना यात्राश्विन्याम्, पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०१।३६ उपरि, भ. २१।५१ यावत्, गं. ३७।३४ उपरि ५२।३४ यावत्।
०४ र.	२६।५७	दि. ०४।३३	अश्वि. ५६।०६	रा. ०४।१२	वृद्धिः २५।०३	बा. २६।५७	मेषः	अहोरात्रम्	०४।१९।५०।३६	३१।०९	५।४६	६।१४	१५	२१	०६	**पश्चिमोदितो बुधः** ४५।४२, **रविव्रतम्**, पश्चिमां विना यात्रा पञ्चम्यामश्विन्याम्।
०५ चं.	३२।००	सं. ०६।३५	भरणी ६०।००	अहोरात्रम्	ध्रुवः २६।३३	तै. ३२।००	मेषः	अहोरात्रम्	०४।२०।४८।४१	३१।०६	५।४७	६।१३	१६	२२	०७	इन्द्रविसर्जनम्।
०६ मं.	३६।२९	रा. ०८।२४	भरणी ०२।१९	प्रा. ०६।४४	व्या. २७।३९	ग. ०४।१५	मे. १८।४३	दि. ०१।१७	०४।२१।४७।०२	३१।०२	५।४८	६।१२	१७	२३	०८	भ. ३६।२९ उपरि।
०७ बु.	४०।१२	रा. ०९।५३	कृत्ति. ०७।५४	दि. ०८।५८	हर्षणः २८।१२	वि. ०८।२०	वृषः	अहोरात्रम्	०४।२२।४५।२३	३०।५८	५।४८	६।१२	१८	२४	०९	स्त्रीणां भोजनं रात्रौ घं. ०९।५३ तः पूर्वमेव, रात्र्यन्ते विशिष्टभोजनं **(ओठगन)** नैव अष्टमीत्वात्, पूर्वदक्षिणयात्रा सप्तम्यां रोहिण्याम्, भ. ०८।२० यावत्।
०८ बृ.	४२।४६	रा. १०।५५	रोहि. १२।३४	दि. १०।५१	वज्रः २७।५१	बा. ११।२९	वृ. ४४।२०	रा. ११।३३	०४।२३।४३।४४	३०।५४	५।४९	६।११	१९	२५	१०	**महालक्ष्मीव्रत—जीमूतवाहनव्रतम् (जितिया)**, पूर्वयात्रा रोहिण्यां ततो दक्षिणां विना यात्राष्टम्याम्।
०९ शु.	४४।१२	रा. ११।३१	मृग. १६।०६	दि. १२।१६	सिद्धिः २६।४२	तै. १३।२९	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०४।२४।४२।०५	३०।५०	५।५०	६।१०	२०	२६	११	महालक्ष्मीव्रत—जीमूतवाहनव्रतपारणम्, **मातृनवमी**, अन्वष्टकाश्राद्धम्, पश्चिमां विना यात्रा मृगशिरसि, द.ति. ४४।१२ उपरि। **तिथितत्त्वचिन्तामणौ—**अन्वष्टकासु वृद्धौ च गयायाञ्च क्षयेऽहनि। ❖
१० श.	४४।१७	रा. ११।३४	आर्द्रा १८।२४	दि. ०१।१३	व्यती. २४।२८	व. १४।१४	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०४।२५।४०।२६	३०।४६	५।५१	६।०९	२१	२७	१२	पश्चिमदक्षिणयात्रैकादश्याम्, द.ति. ४४।१७ यावत्, भ. १४।१४ उपरि ४४।१७ यावत्। ❖ अत्र मातुः पृथक् श्राद्धमन्यत्र पतिना सह॥
११ र.	४३।०७	रा. ११।०७	पुन. १९।२२	दि. ०१।३७	वरी. २१।१५	ब. १४।१२	मि. ०४।०८	दि. ०७।३१	०४।२६।३८।४६	३०।४२	५।५२	६।०८	२२	२८	१३	**इन्दिरा ११** व्रतं सर्वेषाम्, **रविव्रतम्**, पश्चिमां विना यात्रा द्वादश्याम्, **उत्तरफल्गुन्यां रविः** ४६।३७ स्त्रीस्त्रीसूर्यचंयोगो मिथुनलग्नं मूषकवाहनं जलानाडीपतिर्बुधस्तेन मध्यमवृष्टियोगः।
१२ चं.	४०।४४	रा. १०।१०	पुष्यः १९।१०	दि. ०१।३२	परिघः १७।०१	कौ. ११।५५	कर्कः	अहोरात्रम्	०४।२७।३७।०६	३०।३८	५।५२	६।०८	२३	२९	१४	गुडेन पारणम्।
१३ मं.	३७।१९	रा. ०८।४९	श्ले. १७।५२	दि. ०१।०२	शिवः ११।५२	ग. ०९।०१	क. १७।५२	दि. ०१।०२	०४।२८।३५।४३	३०।३४	५।५३	६।०७	२४	३०	१५	प्रदोष १३ व्रतम्, भ. ३७।१९ उपरि, गं. ०६।५२ उपरि २१।५२ यावत्।
१४ बु.	३३।००	सं. ०६।४२	मघा १५।४३	दि. १२।११	सिद्धः ०५।५७	वि. ०५।०९	सिंहः	अहोरात्रम्	०४।२९।३४।१९	३०।३०	५।५४	६।०६	२५	३१	१६	**साध्यदं**. ५३।२३, **मार्गी बृहस्पतिः** १८।०६, भ. ०५।०९ यावत्, मासान्तः, प्रदोष १४ व्रतम्, शस्त्रादिहतश्राद्धम्।
३० बृ.	२७।५६	दि. ०५।०५	पूफ. १२।४२	दि. ११।००	शुभः ५२।११	च. ००।२८	सिं. २६।४८	सं. ०४।३८	०५।००।३२।५५	३०।२६	५।५५	६।०५	२६	०१	१७	प्रथमाश्विनी ३० स्नानदानादिः, महालया ३०, पितृपक्षीयतर्पणान्तः, **विश्वकर्मार्चा**, विश्वकर्मार्चायाः कन्यासङ्क्रान्तिपुण्याहे विधानात्, **मलमासारम्भः** २७।५६ उपरि, **कन्यायां रविः** ११।३३ मु. ४५ फलं समर्घम्, ✪

✪ **षडशीतिसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** दिवा घं. १०।३२ उपरि घं. ०४।५६ यावद्दिने, **पुण्याहः**।

तिथयः दिनानि	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ बृ.	११।२४।१२।१७	०५।०३।३९।०५	०८।२४।५८।२०	०३।०३।४२।५७	०८।२८।१६।०१	०८।०३।१५।४२	४५।४०
०२ शु.	११।२४।०९।४२	०५।०५।२१।५९	०८।२४।५५।५८	०३।०४।४९।०२	०८।२८।१३।४०	०८।०३।१२।३१	४५।३८
०३ श.	११।२४।०७।०७	०५।०७।०४।५३	०८।२४।५३।३६	०३।०५।५५।०७	०८।२८।११।१९	०८।०३।०९।२०	४५।३६
०४ र.	११।२४।०४।३२	०५।०८।४७।४७	०८।२४।५१।१४	०३।०७।०१।१२	०८।२८।०८।५८	०८।०३।०६।०९	४५।३४
०५ चं.	११।२४।०१।५६	०५।१०।३०।४१	०८।२४।४८।५२	०३।०८।०७।१७	०८।२८।०६।३८	०८।०३।०२।५९	४५।३३
०६ मं.	११।२३।५४।२५	०५।१२।०५।०४	०८।२४।४७।५८	०३।०९।१४।५०	०८।२८।०४।५८	०८।०२।५९।४८	४५।३१
०७ बु.	११।२३।४६।५४	०५।१३।३९।२७	०८।२४।४७।०४	०३।१०।२२।२३	०८।२८।०३।१८	०८।०२।५६।३७	४५।२९
०८ बृ.	११।२३।३९।२३	०५।१५।१३।५०	०८।२४।४६।१०	०३।११।२९।५६	०८।२८।०१।३८	०८।०२।५३।२६	४५।२७
०९ शु.	११।२३।३१।५२	०५।१६।४८।१३	०८।२४।४५।१६	०३।१२।३७।२८	०८।२७।५९।५९	०८।०२।५०।१५	४५।२५
१० श.	११।२३।२४।२२	०५।१८।२२।३६	०८।२४।४४।२३	०३।१३।४५।००	०८।२७।५८।२०	०८।०२।४७।०४	४५।२३
११ र.	११।२३।१६।५२	०५।१९।५६।५८	०८।२४।४३।३०	०३।१४।५२।३२	०८।२७।५६।४१	०८।०२।४३।५४	४५।२१
१२ चं.	११।२३।०९।२२	०५।२१।३१।२०	०८।२४।४२।३७	०३।१६।००।०४	०८।२७।५५।०२	०८।०२।४०।४४	४५।१९
१३ मं.	११।२२।५६।४७	०५।२२।५२।३९	०८।२४।३७।३६	०३।१७।०८।३१	०८।२७।५४।१८	०८।०२।३७।३३	४५।१७
१४ बु.	११।२२।४४।१२	०५।२४।१३।५७	०८।२४।३२।३५	०३।१८।१६।५७	०८।२७।५३।३४	०८।०२।३४।२२	४५।१५
३० बृ.	११।२२।३१।३७	०५।२५।३५।१५	०८।२४।३५।१३	०३।१९।२५।२३	०८।२७।५२।५०	०८।०२।३१।११	४५।१३

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

तिथयः दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ बृ.	२२।०४	००।००	०२।१३	०४।३१	०६।४७	०९।०२	११।१९	१३।३६	१५।४१	१७।२७	१८।५८	२०।२७
०२ शु.	२२।००	२३।५६	०२।०९	०४।२७	०६।४३	०८।५८	११।१५	१३।३२	१५।३७	१७।२३	१८।५४	२०।२३
०३ श.	२१।५७	२३।५३	०२।०६	०४।२४	०६।४०	०८।५५	११।१२	१३।२९	१५।३४	१७।२०	१८।५१	२०।२०
०४ र.	२१।५३	२३।४९	०२।०२	०४।२०	०६।३६	०८।५१	११।०८	१३।२५	१५।३०	१७।१६	१८।४७	२०।१६
०५ चं.	२१।४९	२३।४५	०१।५८	०४।१६	०६।३२	०८।४७	११।०४	१३।२१	१५।२६	१७।१२	१८।४३	२०।१२
०६ मं.	२१।४६	२३।४२	०१।५५	०४।१३	०६।२९	०८।४४	११।०१	१३।१८	१५।२३	१७।०९	१८।४०	२०।०९
०७ बु.	२१।४२	२३।३८	०१।५१	०४।०९	०६।२५	०८।४०	१०।५७	१३।१४	१५।१९	१७।०५	१८।३६	२०।०५
०८ बृ.	२१।३८	२३।३४	०१।४७	०४।०५	०६।२१	०८।३६	१०।५३	१३।१०	१५।१५	१७।०१	१८।३२	२०।०१
०९ शु.	२१।३५	२३।३१	०१।४४	०४।०२	०६।१८	०८।३३	१०।५०	१३।०७	१५।१२	१६।५८	१८।२९	१९।५८
१० श.	२१।३१	२३।२७	०१।४०	०३।५८	०६।१४	०८।२९	१०।४६	१३।०३	१५।०८	१६।५४	१८।२५	१९।५४
११ र.	२१।२७	२३।२३	०१।३६	०३।५४	०६।१०	०८।२५	१०।४२	१२।५९	१५।०४	१६।५०	१८।२१	१९।५०
१२ चं.	२१।२४	२३।२०	०१।३३	०३।५१	०६।०७	०८।२२	१०।३९	१२।५६	१५।०१	१६।४७	१८।१८	१९।४७
१३ मं.	२१।२०	२३।१६	०१।२९	०३।४७	०६।०३	०८।१८	१०।३५	१२।५२	१४।५७	१६।४३	१८।१४	१९।४३
१४ बु.	२१।१६	२३।१२	०१।२५	०३।४३	०५।५९	०८।१४	१०।३१	१२।४८	१४।५३	१६।३९	१८।१०	१९।३९
३० बृ.	२१।१३	२३।०९	०१।२२	०३।४०	०५।५६	०८।११	१०।२८	१२।४५	१४।५०	१६।३६	१८।०७	१९।३६

५ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३७।१५
अयनांशाः २२।४९।१५

१२ | मं. १० | ल.रा. १ | चं. ११ | ९ | शु. २ | ८ | सू. ३ | ५ | बृ. श. के. ७ | बु. ४ | ६

१२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३७।२२
अयनांशाः २२।४९।१६

१२ | मं. १० | ल.रा. १ | ११ | ९ | चं. शु. २ | ८ | सू. ३ | ५ | बृ. श. के. ७ | बु. ४ | ६

विविधविषयाः—जीमूतवाहनव्रतं भविष्ये—आश्विनस्यासिताष्टम्यां याः स्त्रियोऽन्नञ्च भुञ्जते। मृतवत्सा भवेयुस्ता विधवा दुर्भगा ध्रुवम्॥ इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका॥ शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया॥ पुनस्तत्रैव—प्रदोषसमये स्त्रीभिः पूज्यो जीमूतवाहनः। पुष्करिणीं विधायाथ प्राङ्गणे चतुरस्त्रिकाम्॥ तेनेयमष्टमी प्रदोषव्यापिन्युपोष्या। उभयदिने प्रदोषव्याप्तौ परा ग्राह्या, उदयव्याप्त्यनुरोधात्तिथ्यन्ते पूर्वाह्णे पारणानुरोधादुपवासद्वयापत्त्यनुरोधाच्च। यत्र च नैकस्मिन्नपि वासरे प्रदोषव्याप्तिस्तत्रापि परैव। **तथाहि स्मृतिः—**लक्ष्मीव्रतञ्चाभ्युदिते शशाङ्के यत्राष्टमी चाश्विनकृष्णपक्षे। यत्रोदयं वै कुरुते दिनेशस्तदा भवेज्जीवितपुत्रिका सा॥ पारणन्तु परदिने नवम्यामेव। **हस्तार्के खञ्जनदर्शनमन्त्रः—**नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते॥ तद्दर्शनमाकाशपूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यदिक्षु शुभमन्यदिक्ष्वशुभम्। **पुनश्च—**अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः॥ **आश्विनकृष्णपक्षे** प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्पः। पञ्चमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थकल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। **कृत्यसारसमुच्चये—**यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य सम्वत्सरं यावत् सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवम्॥ **श्राद्धे प्रशस्तवस्तूनि मात्स्ये—**उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्त पवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः॥ **श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि मात्स्ये—**कुष्माण्डं महिषीक्षीरं बिल्वपत्रमगद्विजाः। श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः॥ **श्राद्धकालः—**पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्॥ **मातृकं श्राद्धमन्वष्टकाश्राद्धम्।**

ग्रहस्थितिः—वक्री पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ४ तः पश्चिमोदितः, वक्री पूर्वोदितो बृहस्पतिः १४ तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षादिभागे वातातपच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातातपमेघचारखण्डवृष्टयः।

प्रथमाश्विनशुक्लपक्षः (मलमासः)

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क १८।०९।२०२० ई. तः दिनाङ्क ०१।१०।२०२० ई. यावत्।
अशुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ शु.	२२।२२	दि. ०२।५३	उफ. ०९।०७	दि. ०९।३५	शुक्लः ४४।४१	ब. २२।२२	कन्या	अहोरात्रम्	०५।०१।३१।३१	३०।२२	५।५६	६।०४	२७	०२	१८
०२ श.	१६।२२	दि. १२।२९	हस्तः ०५।०६	दि. ०७।५८	ब्रह्मः ३६।५९	कौ. १६।२२	कं. ३३।०१	सं. ०७।०८	०५।०२।३०।०७	३०।१८	५।५६	६।०४	२८	०३	१९
०३ र.	१०।१६	दि. १०।०३	चित्रा ००।५३	प्रा. ०६।१८	ऐन्द्रः २९।०८	ग. १०।१६	तुला	अहोरात्रम्	०५।०३।२८।४३	३०।१४	५।५७	६।०३	२९	०४	२०
०४ चं.	०४।१०	दि. ०७।३८	विशा. ५२।४१	रा. ०३।०२	वैधृतिः २१।२७	वि. ०४।१०	तु. ३८।४१	रा. ०९।२६	०५।०४।२७।१९	३०।१०	५।५८	६।०२	३०	०५	२१
०६ मं.	५२।५८	रा. ०३।१०	अनु. ४९।०७	रा. १२।३८	विष्क. १४।०१	कौ. २६।१०	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०५।०५।२६।११	३०।०६	५।५९	६।०१	३१	०६	२२
०७ बु.	४८।१४	रा. ०१।१८	ज्ये. ४६।०९	रा. १२।२८	प्रीतिः ०६।५८	ग. २०।३६	वृ. ४६।०९	रा. १२।२८	०५।०६।२५।०३	३०।०२	६।००	६।००	०१	०७	२३
०८ बृ.	४४।१९	रा. ११।४४	मूलम् ४४।०५	रा. ११।३८	आयु. ००।२७	वि. १६।१६	धनुः	अहोरात्रम्	०५।०७।२३।५५	२९।५८	६।००	६।००	०२	०८	२४
०९ शु.	४१।२१	रा. १०।३३	पूषा. ४२।५२	रा. ११।१०	शोभ. ४९।३८	बा. १२।५०	ध. ५७।५१	रा. ०५।०९	०५।०८।२२।४७	२९।५४	६।०१	५।५९	०३	०९	२५
१० श.	३९।३०	रा. ०९।५०	उषा. ४२।४७	रा. ११।०९	अग. ४५।३०	तै. १०।२५	मकरः	अहोरात्रम्	०५।०९।२१।३८	२९।५०	६।०२	५।५८	०४	१०	२६
११ र.	३८।५०	रा. ०९।३५	श्रव. ४३।५२	रा. ११।३६	सुकर्मा ४२।२१	व. ०९।१०	मकरः	अहोरात्रम्	०५।१०।२०।२९	२९।४७	६।०३	५।५७	०५	११	२७
१२ च.	३९।२९	रा. ०९।५१	धनि. ४६।१७	रा. १२।३४	धृतिः ४०।१३	ब. ०९।१०	म. १५।०४	दि. १२।०५	०५।११।१९।२०	२९।४४	६।०३	५।५७	०६	१२	२८
१३ मं.	४१।२९	रा. १०।४०	शत. ४९।५६	रा. ०२।०२	शूलः ३९।०८	कौ. १०।२९	कुम्भः	अहोरात्रम्	०५।१२।१८।२८	२९।४०	६।०४	५।५६	०७	१३	२९
१४ बु.	४४।३५	रा. ११।५५	पूभा. ५४।४०	रा. ०३।५७	गण्डः ३८।५२	ग. १३।०२	कुं. ३८।२९	रा. ०९।२९	०५।१३।१७।३६	२९।३६	६।०५	५।५५	०८	१४	३०
१५ बृ.	४८।४२	रा. ०१।३५	उभा. ६०।००	अहोरात्रम्	वृद्धिः ३९।२७	वि. १६।३८	मीनः	अहोरात्रम्	०५।१४।१६।४४	२९।३२	६।०६	५।५४	०९	१५	०१

मासादिः, मलमासे स्त्रीणां यात्रा न शुभप्रदा। **मलमासफलम्—**आश्विने परचक्रेण तस्करैः पीडिताः प्रजाः। सुभिक्षं क्षेममारोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिणापथे॥
चन्द्रदर्शनम्. ३० सौम्यशृङ्गफलं साम्यम्, दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, (२—३) एकोद्दिष्टम्।
स्वातीदं. ५५।४९, भ. ३७।१३ उपरि, **गणेश** ४ व्रतम्, दक्षिणयात्रा तृतीयायाम्।
पञ्चमीदं. ५४।१३, **तुलायां बुधः** ००।३०, भ. ०४।१० यावत्, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्।
पश्चिमयात्रा सप्तम्याम्।
द.ति. ४८।१४ उपरि, भ. ४८।१४ उपरि, गं. ४०।०९ उपरि ५५।०९ यावत्, पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायाम्।
सौभाग्यदं. ५४।११, द.ति. ४४।१९ यावत्, भ. १६।१६ यावत्। **४—५ ग्रहयोगफलम्—**एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्च वा ग्रहाः। प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण जलेन वा॥
पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे।
मघायां सिंहे शुक्रः ५६।२२, पूर्वा विना यात्रा श्रवणायाम्।
कमला ११ व्रतं सर्वेषाम्, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. ११।३६ उपरि, पश्चिमां विना यात्रा द्वादश्यां श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा, **हस्ते रविः** २४।०० पुंस्त्रीसूचंयोगो मकरलग्नम्श्ववाहनममृतानाडीपतिश्चन्द्रस्तेन वृष्टियोगः, ✪
गुडेन पारणम्, पश्चिमयात्रा त्रयोदश्यां धनिष्ठायाम्। ✪ भ. ०९।१० उपरि ३८।५० यावत्।
मार्गी शनिः १४।४८, प्रदोष १३ व्रतम्, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
प्रदोष १४ व्रतम्, पश्चिमयात्रा पूर्णिमायां पूर्वभाद्रे, भ. ४४।३५ उपरि।
अक्टूबर १०, प्रथमाश्विनी १५ स्नानदानादिः, भ. १६।३८ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः / दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ शु.	११।२२।१९।०३	०५।२६।५६।३३	०८।२४।३७।५१	०३।२०।३३।४९	०८।२७।५२।०६	०८।०२।२८।००	४५।११
०२ श.	११।२२।०६।२९	०५।२८।१७।५१	०८।२४।४०।२९	०३।२१।४२।१५	०८।२७।५१।२२	०८।०२।२४।४९	४५।०९
०३ र.	११।२२।५३।५५	०५।२९।३९।०९	०८।२४।४३।०७	०३।२२।५०।४१	०८।२७।५०।३९	०८।०२।२१।३९	४५।०७
०४ चं.	११।२१।४१।२१	०६।०१।००।२७	०८।२४।४५।४४	०३।२३।५९।०७	०८।२७।४९।५६	०८।०२।१८।२९	४५।०५
०६ मं.	११।२१।२५।४८	०६।०२।००।२३	०८।२४।४७।३८	०३।२५।०८।३९	०८।२७।४९।३२	०८।०२।१५।१८	४५।०३
०७ बु.	११।२१।१०।१५	०६।०३।००।१९	०८।२४।४९।३२	०३।२६।१८।११	०८।२७।४९।०८	०८।०२।१२।०७	४५।०१
०८ बृ.	११।२०।५४।४२	०६।०४।००।१५	०८।२४।५१।२५	०३।२७।२७।४२	०८।२७।४८।४४	०८।०२।०८।५६	४४।५९
०९ शु.	११।२०।३९।०९	०६।०५।००।१०	०८।२४।५३।१८	०३।२८।३७।१३	०८।२७।४८।२०	०८।०२।०५।४५	४४।५७
१० श.	११।२०।२३।३६	०६।०६।००।०५	०८।२४।५५।११	०३।२९।४६।४४	०८।२७।४७।५६	०८।०२।०२।३४	४४।५५
११ र.	११।२०।०८।०४	०६।०७।००।००	०८।२४।५७।०४	०४।००।५६।१५	०८।२७।४७।३२	०८।०१।५९।२४	४४।५३
१२ च.	११।१९।५२।३२	०६।०७।५९।५५	०८।२४।५८।५७	०४।०२।०५।४६	०८।२७।४७।०८	०८।०१।५६।१४	४४।५२
१३ मं.	११।१९।३५।४९	०६।०८।२७।२२	०८।२५।०२।२३	०४।०३।१५।४९	०८।२७।४७।०७	०८।०१।५३।०३	४४।५०
१४ बु.	११।१९।१९।०७	०६।०८।५४।४९	०८।२५।०५।४८	०४।०४।२५।५२	०८।२७।४८।०९	०८।०१।४९।५२	४४।४८
१५ बृ.	११।१९।०२।२५	०६।०९।२२।१६	०८।२५।०९।१३	०४।०५।३५।५५	०८।२७।४९।११	०८।०१।४५।४१	४४।४६

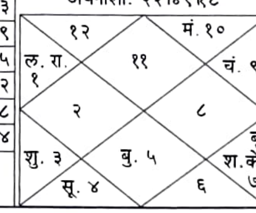
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ शु.	२१।०९	२३।०५	०१।१८	०३।३६	०५।५२	०८।०७	१०।२४	१२।४१	१४।४६	१६।३२	१८।०३	१९।३२
०२ श.	२१।०५	२३।०१	०१।१४	०३।३२	०५।४८	०८।०३	१०।२०	१२।३७	१४।४२	१६।२८	१७।५९	१९।२८
०३ र.	२१।०२	२२।५८	०१।११	०३।२९	०५।४५	०८।००	१०।१७	१२।३४	१४।३९	१६।२५	१७।५६	१९।२५
०४ चं.	२०।५८	२२।५४	०१।०७	०३।२५	०५।४१	०७।५६	१०।१३	१२।३०	१४।३५	१६।२१	१७।५२	१९।२१
०६ मं.	२०।५४	२२।५०	०१।०३	०३।२१	०५।३७	०७।५२	१०।०९	१२।२६	१४।३१	१६।१७	१७।४८	१९।१७
०७ बु.	२०।५१	२२।४७	०१।००	०३।१८	०५।३४	०७।४९	१०।०६	१२।२३	१४।२८	१६।१४	१७।४५	१९।१४
०८ बृ.	२०।४७	२२।४३	००।५६	०३।१४	०५।३०	०७।४५	१०।०२	१२।१९	१४।२४	१६।१०	१७।४१	१९।१०
०९ शु.	२०।४३	२२।३९	००।५२	०३।१०	०५।२६	०७।४१	०९।५८	१२।१५	१४।२०	१६।०६	१७।३७	१९।०६
१० श.	२०।४०	२२।३६	००।४९	०३।०७	०५।२३	०७।३८	०९।५५	१२।१२	१४।१७	१६।०३	१७।३४	१९।०३
११ र.	२०।३६	२२।३२	००।४५	०३।०३	०५।१९	०७।३४	०९।५१	१२।०८	१४।१३	१५।५९	१७।३०	१८।५९
१२ च.	२०।३२	२२।२८	००।४१	०२।५९	०५।१५	०७।३०	०९।४७	१२।०४	१४।०९	१५।५५	१७।२६	१८।५५
१३ मं.	२०।२९	२२।२५	००।३८	०२।५६	०५।१२	०७।२७	०९।४४	१२।०१	१४।०६	१५।५२	१७।२३	१८।५२
१४ बु.	२०।२५	२२।२१	००।३४	०२।५२	०५।०८	०७।२३	०९।४०	११।५७	१४।०२	१५।४८	१७।१९	१८।४८
१५ बृ.	२०।२१	२२।१७	००।३०	०२।४८	०५।०४	०७।१९	०९।३६	११।५३	१३।५८	१५।४४	१७।१५	१८।४४

४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३७।२९
अयनांशाः २२।४९।१७



१२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३७।३६
अयनांशाः २२।४९।१८



विविधविषयाः—प्रतिमासं सौरचान्द्रमासयोरन्तरं किञ्चिदधिक ५४ दण्डात्मकं भवति। तेनाविशेषरूपमन्तरमिदं वर्धितं सत् सार्द्धवर्षद्वयासन्ने माससमं भवति। तेन मध्यममानेन तदानीम्, स्पष्टमानेन तु २७—३६ मासाभ्यन्तरे मलमासो जायते। अतः कालाधिक्ये सत्यसङ्क्रान्तत्वं मलमासत्वमिति युक्तियुक्तम्। मलमासे कर्त्तव्याकर्त्तव्यविचारस्तत्र **बृहस्पतिः—**नित्यनैमित्तिकं कुर्यात्प्रयतः सन् मलिम्लुचे। तीर्थस्थानं गजच्छायां प्रेतस्नानं तथैव च॥ गर्भे वार्द्धुषिकृत्ये च मृतानां पिण्डकर्मसु। सपिण्डीकरणे चैव नाधिमासं विदुर्बुधाः॥ तत्र नित्यं सन्ध्यावन्दनादि, नैमित्तिकं ग्रहशान्त्यादिनिमित्तकस्नानादि, तीर्थस्नानं द्वितीयाद्यावृत्ति (अतएव मलिम्लुचे त्वनावृत्तं तीर्थस्नानमपि त्यजेदिति बृहस्पतिवचनं सङ्गच्छते), गजच्छायेति ग्रहणनिमित्तकश्राद्धम्, प्रेतस्नानं मरणनिमित्तकस्नानम्, गर्भाधानजातकर्मर्णप्रयोगमृतनरपिण्डकर्मसपिण्डीकरणानि च मलमासेऽपि कर्त्तव्यानि। एवञ्च मरणदिनमारभ्य द्वादशमासस्य मलमासत्वे प्रथमवार्षिकं मलमास एव। पुनश्च मरणमासस्य मलमासत्वे तत्र मृतानां वार्षिकं मलमास एव भवति। एतदतिरिक्तान्याग्न्याधानयज्ञचूडाकरणोपनयनवेदारम्भ—समावर्त्तनमहादानवापीकूपतडागदेवालयारम्भप्रतिष्ठादिकर्माणि त्याज्यानि। मलमासे **दानादि—**विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं हरिं कृष्णमधोक्षजम्। केशवं माधवं राममच्युतं पुरुषोत्तमम्॥ गोविन्दं वामनं श्रीशं श्रीकान्तं विश्वसाक्षिणम्। नारायणं मधुरिपुमनिरुद्धं त्रिविक्रमम्॥ वासुदेवं जगद्योनिमनन्तं शेषशायिनम्। सङ्कर्षणं च प्रद्युम्नं दैत्यारिं विश्वतोमुखम्॥ जनार्दनं धरावासं दामोदरमघार्दनम्। श्रीपतिञ्च त्रयस्त्रिंशदुद्दिश्य प्रतिनामभिः॥ त्रयस्त्रिंशदपूपानि कांस्यपात्रे निधाय च। सघृतं सहिरण्यं ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥ प्राप्नुयात्तेन लक्ष्मी पुत्रपौत्रादिसम्पदः॥ **मलमासे राजगिरौ** (पाटलिपुत्रसमीपे) वासः **गैरिकानद्यां** (नेपालदेशे) स्नानं च महापुण्यप्रदमिति।

ग्रहस्थितिः—वक्री पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः १३ तो मार्गी।

वातावरणम्—पक्षादिभागे वातातपच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरभागे वातमेघच्छायाखण्डवृष्टयः।

द्वितीयाश्विनकृष्णपक्षः (मलमासः)

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क ०२।१०।२०२० ई. तः दिनाङ्क १६।१०।२०२० ई. यावत्।
अशुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
०१ शु.	५३।३४	रा. ०३।३२	उभा. ००।२०	प्रा. ०६।१४	ध्रुव: ४०।३३	बा. २१।०८	मीन:	अहोरात्रम्	०५।१५।१५।५१	२९।२८	६।०६	५।५४	१०	१६	०२	महात्मागान्धी—लालबहादुरशास्त्रीजयन्ती, उत्तरयात्रा प्रतिपदि रेवत्याम्, गं. ५४।३५ उपरि।
०२ श.	५८।४५	रा. ०५।३७	रेवती ०६।३५	दि. ०८।४५	व्या. ४२।०२	तै. २६।०९	मी. ०६।३५	दि. ०८।४५	०५।१६।१४।५८	२९।२४	६।०७	५।५३	११	१७	०३	पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पूर्वा विना यात्रा, पञ्चकान्तो दिवा घं. ०८।४५ उपरि, गं. ०९।३५ यावत्।
०३ र.	६०।००	अहोरात्रम्	अश्वि. १३।०७	दि. ११।२३	हर्षण: ४३।३१	व. ३१।१९	मेष:	अहोरात्रम्	०५।१७।१४।०५	२९।२०	६।०८	५।५२	१२	१८	०४	त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, पश्चिमां विना यात्राश्विन्याम्, भ. ३१।१९ उपरि।
०३ चं.	०३।५३	दि. ०७।४२	भर. १९।२७	दि. ०१।५६	वज्र: ४४।४१	वि. ०३।५३	मे. ३५।५३	रा. ०८।३०	०५।१८।१३।१२	२९।१६	६।०९	५।५१	१३	१९	०५	**गणेश** ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०८।१५, भ. ०३।५३ यावत्।
०४ मं.	०८।२९	दि. ०९।३४	कृत्ति. २५।१३	दि. ०४।१५	सिद्धि: ४५।२१	बा. ०८।२९	वृष:	अहोरात्रम्	०५।१९।१२।३६	२९।१२	६।१०	५।५०	१४	२०	०६	**वक्री बुधः** ३४।५७, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्, भौमवती चतुर्थी स्नानदानादावक्षयफलदा।
०५ बु.	१२।१८	दि. ११।०५	रोहि. ३०।०८	सं. ०६।१३	व्यती. ४५।१२	तै. १२।१८	वृष:	अहोरात्रम्	०५।२०।११।५९	२९।०८	६।१०	५।५०	१५	२१	०७	पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि।
०६ बृ.	१४।५८	दि. १२।१०	मृग. ३३।५७	रा. ०७।४६	वरी. ४४।११	व. १४।५८	वृ. ०१।३२	प्रा. ०६।४८	०५।२१।११।२२	२९।०४	६।११	५।४९	१६	२२	०८	दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि, भ. १४।५८ उपरि ४५।४४ यावत्, (७) एकोद्दिष्टम्।
०७ शु.	१६।३०	दि. १२।४८	आर्द्रा ३६।३२	रा. ०८।४९	परिघ: ४२।१०	ब. १६।३०	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०५।२२।१०।४५	२९।००	६।१२	५।४८	१७	२३	०९	द.ति. १६।३० उपरि, (८) एकोद्दिष्टम्। ✪ ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।
०८ श.	१६।४२	दि. १२।५४	पुन. ३७।५१	रा. ०९।२१	शिव: ३९।०४	कौ. १६।४२	मि. २२।००	दि. ०३।०१	०५।२३।१०।०८	२८।५६	६।१३	५।४७	१८	२४	१०	**चित्रायां रविः** ५४।२६ स्त्रीस्त्रीसूचंयोगः सिंहलग्नच्छागवाहनज्वलानाडीपतिर्बुधस्तेन मध्यमवृष्टिः, **पश्चिमास्तो बुधः** ०७।३६, द.ति. १६।४२ यावत्, (९) एकोद्दिष्टम्, पश्चिमदक्षिणयात्रा नवम्यां मिथुनगते चन्द्रे ✪
०९ र.	१५।३८	दि. १२।२९	पुष्य: ३७।५७	रा. ०९।२५	सिद्ध: ३४।५८	ग. १५।३८	कर्क:	अहोरात्रम्	०५।२४।०९।३१	२८।५२	६।१४	५।४६	१९	२५	११	भ. ४३।२९ उपरि, पश्चिमां विना यात्रा दशम्यां पुष्ये, (१०) एकोद्दिष्टम्।
१० चं.	१३।२०	दि. ११।३४	श्ले. ३६।५३	रा. ०८।५९	साध्य:२९।५९	वि. १३।२०	क. ३६।५३	रा. ०८।५९	०५।२५।०८।५४	२८।४८	६।१४	५।४६	२०	२६	१२	भ. १३।२० यावत्, गं. २५।५३ उपरि ४०।५३ यावत्।
११ मं.	१०।००	दि. १०।१५	मघा ३४।५८	रा. ०८।१४	शुभ: २४।११	बा. १०।००	सिंह:	अहोरात्रम्	०५।२६।०८।३३	२८।४४	६।१५	५।४५	२१	२७	१३	**पद्मा ११** व्रतं सर्वेषाम्, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
१२ बु.	०५।४८	दि. ०८।३५	पूफ. ३२।०८	रा. ०७।०७	शुक्ल:१७।४२	तै. ०५।४८	सिं. ४६।१६	रा. १२।४६	०५।२७।०८।१२	२८।४०	६।१६	५।४४	२२	२८	१४	गुडेन पारणम्, प्रदोष १३ व्रतम्, पूर्वयात्रा द्वादश्याम्।
१३ बृ.	००।४८	प्रा. ०६।३६	उफ. २८।४१	सं. ०५।४५	ब्रह्म: १०।३७	व. ००।४८	कन्या	अहोरात्रम्	०५।२८।०७।५१	२८।३६	६।१७	५।४३	२३	२९	१५	प्रदोष १४ व्रतम्, चतुर्दशीदं. ५४।२९, भ. ००।४८ उपरि २८।०३ यावत्।
३० शु.	४९।२४	रा. ०२।३२	हस्त: २४।४६	दि. ०४।१२	ऐन्द्र: ०३।११	च. २२।५५	कं. ५२।४०	रा. ०३।२२	०५।२९।०७।३०	२८।३२	६।१८	५।४२	२४	३०	१६	द्वितीयाश्विन ३० स्नानदानादिः, वैधृतिदं. ५२।१४, मासान्तः, **मलमासान्तः शुद्धारम्भश्च** ४९।२४ उपरि।

मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ शु.	११।१८।४५।४३	०६।०९।४९।४३	०८।२५।१२।३८	०४।०६।४५।५७	०८।२७।५०।१३	०८।०१।४२।३०	४४।४४
०२ श.	११।१८।२९।०१	०६।१०।१७।१०	०८।२५।१६।०३	०४।०७।५५।५९	०८।२७।५१।१५	०८।०१।३९।१९	४४।४२
०३ र.	११।१८।१२।१९	०६।१०।४४।३७	०८।२५।१९।२८	०४।०९।०६।०१	०८।२७।५२।१७	०८।०१।३६।०९	४४।४०
०३ चं.	११।१७।५५।३७	०६।११।१२।०४	०८।२५।२२।५३	०४।१०।१६।०३	०८।२७।५३।१९	०८।०१।३३।५९	४४।३८
०४ मं.	११।१७।४०।४०	०६।११।१४।२३	०८।२५।२७।३२	०४।११।२६।४४	०८।२७।५४।३७	०८।०१।३०।४८	४४।३६
०५ बु.	११।१७।२५।४४	०६।१०।५६।१६	०८।२५।३२।११	०४।१२।३७।२४	०८।२७।५५।५५	०८।०१।२७।३७	४४।३४
०६ बृ.	११।१७।१०।४८	०६।१०।३८।०९	०८।२५।३६।५०	०४।१३।४८।०४	०८।२७।५७।१३	०८।०१।२४।२६	४४।३२
०७ शु.	११।१६।५५।५२	०६।१०।२०।०२	०८।२५।४१।२९	०४।१४।५८।४४	०८।२७।५८।३१	०८।०१।२१।१५	४४।३०
०८ श.	११।१६।४०।५६	०६।१०।०१।५५	०८।२५।४६।०७	०४।१६।०९।२४	०८।२७।५९।४९	०८।०१।१८।०४	४४।२८
०९ र.	११।१६।२६।००	०६।०९।४३।४७	०८।२५।५०।४५	०४।१७।२०।०४	०८।२८।०१।०७	०८।०१।१४।५३	४४।२६
१० चं.	११।१६।११।०४	०६।०९।२५।३९	०८।२५।५५।२३	०४।१८।३०।४४	०८।२८।०२।२५	०८।०१।११।४३	४४।२४
११ मं.	११।१५।५९।३७	०६।०८।३९।२२	०८।२६।०१।०३	०४।१९।४२।१६	०८।२८।०४।२८	०८।०१।०८।३२	४४।२२
१२ बु.	११।१५।४८।१०	०६।०७।५३।०५	०८।२६।०६।४३	०४।२०।५३।४८	०८।२८।०६।३१	०८।०१।०५।२१	४४।२०
१३ बृ.	११।१५।३६।४३	०६।०७।०६।४८	०८।२६।१२।२३	०४।२२।०५।१९	०८।२८।०८।३४	०८।०१।०२।१०	४४।१८
३० शु.	११।१५।२५।१७	०६।०६।२०।३१	०८।२६।१८।०३	०४।२३।१६।५०	०८।२८।१०।३७	०८।००।५८।५९	४४।१६

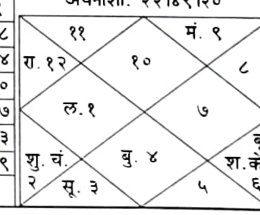
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ शु.	२०।१८	२२।१४	००।२७	०२।४५	०५।०१	०७।१६	०९।३३	११।५०	१३।५५	१५।४१	१७।१२	१८।४१
०२ श.	२०।१४	२२।१०	००।२३	०२।४१	०४।५७	०७।१२	०९।२९	११।४६	१३।५१	१५।३७	१७।०८	१८।३७
०३ र.	२०।१०	२२।०६	००।१९	०२।३७	०४।५३	०७।०८	०९।२५	११।४२	१३।४७	१५।३३	१७।०४	१८।३३
०३ चं.	२०।०७	२२।०३	००।१६	०२।३४	०४।५०	०७।०५	०९।२२	११।३९	१३।४४	१५।३०	१७।०१	१८।३०
०४ मं.	२०।०३	२१।५९	००।१२	०२।३०	०४।४६	०७।०१	०९।१८	११।३५	१३।४०	१५।२६	१६।५७	१८।२६
०५ बु.	१९।५९	२१।५५	००।०८	०२।२६	०४।४२	०६।५७	०९।१४	११।३१	१३।३६	१५।२२	१६।५३	१८।२२
०६ बृ.	१९।५६	२१।५२	००।०५	०२।२३	०४।३९	०६।५४	०९।११	११।२८	१३।३३	१५।१९	१६।५०	१८।१९
०७ शु.	१९।५२	२१।४८	००।०१	०२।१९	०४।३५	०६।५०	०९।०७	११।२४	१३।२९	१५।१५	१६।४६	१८।१५
०८ श.	१९।४८	२१।४४	२३।५७	०२।१५	०४।३१	०६।४६	०९।०३	११।२०	१३।२५	१५।११	१६।४२	१८।११
०९ र.	१९।४५	२१।४१	२३।५४	०२।१२	०४।२८	०६।४३	०९।००	११।१७	१३।२२	१५।०८	१६।३९	१८।०८
१० चं.	१९।४१	२१।३७	२३।५०	०२।०८	०४।२४	०६।३९	०८।५६	११।१३	१३।१८	१५।०४	१६।३५	१८।०४
११ मं.	१९।३७	२१।३३	२३।४६	०२।०४	०४।२०	०६।३५	०८।५२	११।०९	१३।१४	१५।००	१६।३१	१८।००
१२ बु.	१९।३४	२१।३०	२३।४३	०२।०१	०४।१७	०६।३२	०८।४९	११।०६	१३।११	१४।५७	१६।२८	१७।५७
१३ बृ.	१९।३०	२१।२६	२३।३९	०१।५७	०४।१३	०६।२८	०८।४५	११।०२	१३।०७	१४।५३	१६।२४	१७।५३
३० शु.	१९।२६	२१।२२	२३।३५	०१।५३	०४।०९	०६।२४	०८।४१	१०।५८	१३।०३	१४।४९	१६।२०	१७।४९

३ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३७।४३
अयनांशा: २२।४९।१९



१० चन्द्रे वल्ली ८।३९।३७।५०
अयनांशा: २२।४९।२०



विविधविषया:—मलमासविमर्शः—सूर्यसङ्क्रान्तिविहीनशुक्लादिचान्द्रमासोऽधिमासः सूर्यसङ्क्रान्तिद्वययुक्त-शुक्लादिचान्द्रमासश्च क्षयाख्यो मासः। तथाहि **कमलाकरः**—असङ्क्रान्तिमासो हि चान्द्रोऽधिमासो द्विसङ्क्रान्तिमासः क्षयाख्यस्तदानीम्। क्षयाख्यः कदाचित्ततः प्राक् च पश्चादवश्यं हि तत्राधिमासद्वयं स्यात्।। तत्र क्षयमासवति वर्षे क्षयमासात्पूर्वं पश्चाच्च मासत्रयान्तरेऽधिमासद्वयं जायते। अधिमासद्वयमित्यसङ्क्रान्तमासद्वयमसङ्क्रान्ति-मासोऽधिमास इति लक्षणेन केवलमसङ्क्रान्तमासद्वयमेव भवति, न तूभयत्र मासवृद्धिः, मासवृद्ध्यर्थमधि-शेषोद्भवमासासन्नकालस्यापेक्षितत्वात्। स च कालः मध्यममानेन सार्द्धद्वात्रिंशासन्नसमये, स्पष्टमानेन त्वयं मासासन्नकालः सौरचान्द्रान्तररूपः सप्तविंशतिमासादारभ्य षट्त्रिंशन्मासमध्ये समापतति। तेन वर्षाभ्यन्तरे द्विधा मासवृद्धिरसम्भवैव। अतस्तद्वर्षे पूर्वाधिमासस्य त्रिंशत्तिथ्यात्मकस्यासङ्क्रान्तत्वादधिमासत्वमिति मासवृद्ध्यभाव एव ज्यौतिषलक्षणसङ्गतिः। तथा चाधिशेषरूपकालाधिक्यवशाच्चोत्तरासङ्क्रान्ताधिमासे एव मासवृद्धिः, यथोक्तलक्षणसन्निकटत्वात्। अत्रेदं ध्येयं सावनदिनप्रविष्टे चान्द्रदिने तिथिक्षयः, चान्द्रमासप्रविष्टे सौरमासे क्षयमास इत्युभौ क्षयदिन(तिथिक्षय)—क्षयमासौ विजातीयपदार्थौ। तेन यथाधिशेषवशादधिमासः २७—३६ मासाभ्यन्तरे पतति न तथा क्षयदिनवशात् षड्वर्षासन्नसमये क्षयमासः। तेनाधिमासो द्विविधः—मध्यममानसिद्धो व्यवहारबहिर्भूतः प्रथमः, स्पष्टमानसिद्धो व्यवहारविहितश्च द्वितीयः। पुनः स्पष्टाधिमासोऽपि द्विविधः—असङ्क्रान्तोऽवृद्धिमदधिमासः प्रथमः, असङ्क्रान्तो वृद्धिमदधिमासश्च द्वितीय इति। यथैषमः अधि-शेषोद्भवकालाधिक्यवशाज्जायमान असङ्क्रान्तो वृद्धिमदधिमासः मलमासो वा पूर्वाधिमासात् (१४२५ सालसंज्ञकवर्षस्य ज्येष्ठमासात्) २९ तमे मासे आश्विने समायातीति।

ग्रहस्थितिः—वक्री पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ४ तो वक्री ८ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे मेघचारवातच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातातपखण्डवृष्टयः।

द्वितीयाश्विनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क १७।१०।२०२० ई. तः दिनाङ्क ३१।१०।२०२० ई. यावत्।
शुद्धः, शरदृतुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ श.	४३।२१	रा. ११।३९	चित्रा २०।३५	दि. ०२।३३	विष्क. ४७।३२	किं. १६।२२	तुला	अहोरात्रम्	०६।००।०७।०८	२८।२८	६।१९	५।४१	२५	०१	१७
०२ र.	३७।२०	रा. ०९।१५	स्वाती १६।२२	दि. १२।५२	प्रीति: ३९।४५	बा. १०।२१	तु. ५८।१९	रा. ०५।३९	०६।०१।०६।४६	२८।२४	६।१९	५।४१	२६	०२	१८
०३ चं.	३१।३६	रा. ०६।५८	विशा. १२।१९	दि. ११।१६	आयु. ३२।०८	तै. ०४।२८	वृश्चिक:	अहोरात्रम्	०६।०२।०६।२४	२८।२०	६।२०	५।४०	२७	०३	१९
०४ मं.	२६।१४	सं. ०४।५१	अनु. ०८।३९	दि. ०९।४९	सौभा. २४।५२	वि. २६।१४	वृश्चिक:	अहोरात्रम्	०६।०३।०६।१९	२८।१६	६।२१	५।३९	२८	०४	२०
०५ बु.	२१।३५	दि. ०३।००	ज्ये. ०५।३३	दि. ०८।३५	शोभ. १८।१०	बा. २१।३५	वृ. ०५।३३	दि. ०८।३५	०६।०४।०६।१३	२८।१२	६।२२	५।३८	२९	०५	२१
०६ बृ.	१७।४५	दि. ०१।२८	मूलम् ०३।१७	दि. ०७।४१	अगं. १२।०६	तै. १७।४५	धनु:	अहोरात्रम्	०६।०५।०६।०७	२८।०८	६।२२	५।३८	३०	०६	२२
०७ शु.	१४।५२	दि. ११।२०	पूषा. ०१।४५	दि. ०७।०५	सुकर्मा ०६।४७	व. १४।५२	ध. १६।३९	दि. ०१।०३	०६।०६।०६।०१	२८।०४	६।२३	५।३७	०१	०७	२३
०८ श.	१३।०६	दि. ११।३८	उषा. ०१।२३	दि. ०६।५७	धृति: ०२।१९	ब. १३।०६	मकर:	अहोरात्रम्	०६।०७।०५।५५	२८।००	६।२४	५।३६	०२	०८	२४
०९ र.	१२।३१	दि. ११।२५	श्रवणा ०२।११	दि. ०७।१७	गण्ड: ५६।२०	कौ. १२।३१	म. ३३।१३	रा. ०७।४२	०६।०८।०५।४९	२७।५७	६।२५	५।३५	०३	०९	२५
१० चं.	१३।१६	दि. ११।४३	धनि. ०४।१४	दि. ०८।०७	वृद्धि: ५४।५४	ग. १३।१६	कुम्भ:	अहोरात्रम्	०६।०९।०५।४३	२७।५४	६।२५	५।३५	०४	१०	२६
११ मं.	१५।२३	दि. १२।३५	शत. ०७।३५	दि. ०९।२८	ध्रुव: ५४।१७	वि. १५।२३	कुं. ५५।५६	रा. ०४।४८	०६।१०।०५।५२	२७।५०	६।२६	५।३४	०५	११	२७
१२ बु.	१८।३४	दि. ०१।५३	पूभा. १२।०२	दि. ११।१६	व्या. ५४।३४	बा. १८।३४	मीन:	अहोरात्रम्	०६।११।०६।०१	२७।४७	६।२७	५।३३	०६	१२	२८
१३ बृ.	२२।५०	दि. ०३।३५	उभा. १७।२९	दि. ०१।२७	हर्षण: ५५।२८	तै. २२।५०	मीन:	अहोरात्रम्	०६।१२।०६।१०	२७।४४	६।२७	५।३३	०७	१३	२९
१४ शु.	२७।४८	सं. ०५।३५	रेवती २३।३६	दि. ०३।५४	वज्र: ५६।४७	व. २७।४८	मी. २३।३६	दि. ०३।५४	०६।१३।०६।१९	२७।४१	६।२८	५।३२	०८	१४	३०
१५ श.	३३।०४	रा. ०७।४२	अश्वि. ३०।०७	सं. ०६।३१	सिद्धि: ५८।१४	वि. ००।२६	मेष:	अहोरात्रम्	०६।१४।०६।२८	२७।३८	६।२८	५।३२	०९	१५	३१

तुलायां रवि: ३७।०३ मु. १५ फलं महार्घम्, धान्यविषुवसङ्क्रान्तिपुण्यकालो दिवा घं. १२ उपरि दिने, **पुण्याह:**, **शारदीयनवरात्रारम्भ:**, कलशस्थापनम्, श्रीदुर्गापूजनोत्सव:, नवरात्रव्रतारम्भ:, ○
मासादि:, रेमन्तपूजा, चन्द्रदर्शनमु. ४५ सौम्यशृङ्गफलं समर्घम्। ○ तुरगवाहनाया दुर्गाया आगमनफलं क्षत्रभङ्गकरम्, **याम्यगोलारम्भ:** ३७।०३ उपरि, कार्त्तिकस्नानारम्भ:, सिमरियाधाम्नि कल्पवासारम्भ: ☆
पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायां तृतीयायाम्, भ. ५८।५५ उपरि।
पश्चिमयात्रा, भौमवती चतुर्थी, भ. २६।१४ यावत्, गं. ५९।३३ उपरि।
गृहप्रवेश: पञ्चमीमूलयो:, पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां तत: पूर्वयात्रा, गं. १४।३३ यावत्।
कन्यायां शुक्र: २०।४२, गजपूजा, बिल्वाभिमन्त्रणम्, पूर्वोत्तरयात्रा।

☆ केचित्तु चित्रायां वैधृतौ वा कलशस्थापनादिकं निषिद्धयन्ति—**"त्वाष्ट्रवैधृतियुक्ता चे"**दित्यादि स्मृतिवचनेन, तत्र मनोरमम्। यतो हि **"पूर्वाह्णो वै देवाना"**मित्यादि श्रुतिवचनबलात्कलशस्थापनादौ पूर्वाह्णस्य (दशवादनदिनं यावत्) विहितत्वात् श्रुतिस्मृत्योर्द्वैधे श्रुतेर्बलीयस्त्वाच्च पूर्वाह्ण एव कलशस्थापनादिकं कार्यमिति सिद्धान्त:। अत: **"प्रातरावाहयेद्देवी"** मित्यादि विष्णुधर्मोक्तवचनमपि सङ्गच्छते। प्रात:कालस्तु सूर्योदयाद्दशघटी यावदिति।

पत्रिकाप्रवेश:, **महारात्रिर्निशापूजा (रात्रिजागरणम्)**, सरस्वतीपूजारम्भ:, **गृहारम्भप्रवेशौ सप्तम्युत्तराषाढयो:**, भ. १४।५२ उपरि ४३।५९ यावत्, (७—८) एकोद्दिष्टम्।
महाष्टमीव्रतम्, सन्धिपूजा, दीक्षाग्रहणम्, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्, शूलदं. ५६।३१, **स्वात्यां रवि:** १८।०२ पुंस्त्रीसूचंयोगो मकरलग्नं महिषवाहनममृतानाडीपतिश्चन्द्रस्तेन वृष्टियोग:।
महानवमीव्रतम्, त्रिशूलिनीपूजा, प्रभूततरबलिदानम्, दक्षसावर्णिमन्वादि:, पूर्वयात्रा दशम्यां मकरस्थे चन्द्रे, पञ्चकारम्भो दिवा घं. ०७।१७ उपरि।
अपराजितापूजा, **विजया १०**, देवीविसर्जनम्, सरस्वतीविसर्जनम्, जयन्तीधारणम्, नवरात्रव्रतपारणम्, यात्रा, महिषवाहनफलं रुजशोककरम्, नीलकण्ठादिदर्शनम्, **गृहप्रवेश:**, **गृहारम्भ: शतभिषायाम्**, ✪
पाशाङ्कुशा ११ व्रतं सर्वेषाम्, द.ति. १५।२३ उपरि, भ. १५।२३ यावत्, (१२) एकोद्दिष्टम्। ✪ पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्, **पूर्वोदितो बुध:** ०८।४४, **वक्रात्कन्यायां बुध:** २७।२७, भ. ४४।१९ उपरि।
गुडेन पारणम्, पद्मनाभ १२, **गृहप्रवेशस्त्रयोदश्याम्**, प्रदोष १३ व्रतम्, द.ति. १८।३४ यावत्।
मार्गी बुध: ३६।४६, प्रदोष १४ व्रतम्, **गृहप्रवेशस्त्रयोदश्याम्**, **गृहारम्भ:** पश्चिमोत्तरयात्रा च त्रयोदशीरेवत्यो:, (१३) एकोद्दिष्टम्। ❖ भ. २७।४८ उपरि, गं. ११।३६ उपरि २६।३६ यावत्।
कौमुदी(कोजागरा)महोत्सव: प्रदोषे घं. ०७।०८ यावद्रात्रौ लक्ष्मीपूजनम्, दीक्षाग्रहणम्, **गृहारम्भ: पूर्णिमायाम्**, उत्तरयात्रा रेवत्यां तत: पश्चिमां विना यात्राश्विन्याम्, पञ्चकान्तो दिवा घं. ०३।५४ उपरि, ❖
आश्विनी १५ स्नानदानादि:, **आदिकविमहर्षिवाल्मीकिजयन्ती**, **गृहारम्भ अश्विन्याम्**, भ. ००।२६ यावत्।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च						
दिनानि	मङ्गल:	बुध:	बृहस्पति:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानम्
०१ श.	११।१५।१३।५१	०६।०५।३४।१४	०८।२६।२३।४३	०४।२४।२८।२१	०८।२८।१२।३९	०८।००।५५।४८	४४।१४
०२ र.	११।१५।०२।२५	०६।०४।४७।५७	०८।२६।२९।२२	०४।२५।३९।५२	०८।२८।१४।४१	०८।००।५२।३८	४४।१२
०३ चं.	११।१४।५०।५९	०६।०४।०१।४०	०८।२६।३५।०१	०४।२६।५१।२३	०८।२८।१६।४३	०८।००।४९।२८	४४।१०
०४ मं.	११।१४।४४।४२	०६।०३।२५।४३	०८।२६।४२।१६	०४।२८।०३।३८	०८।२८।१९।२८	०८।००।४६।१७	४४।०८
०५ बु.	११।१४।३८।२६	०६।०२।४९।४७	०८।२६।४९।३१	०४।२९।१५।५३	०८।२८।२२।१३	०८।००।४३।०६	४४।०६
०६ बृ.	११।१४।३२।१०	०६।०२।१३।५१	०८।२६।५६।४६	०५।००।२८।०८	०८।२८।२४।५७	०८।००।३९।५५	४४।०४
०७ शु.	११।१४।२५।५४	०६।०१।३७।५५	०८।२७।०४।०१	०५।०१।४०।२३	०८।२८।२७।४१	०८।००।३६।४४	४४।०२
०८ श.	११।१४।१९।३८	०६।०१।०१।५९	०८।२७।११।१६	०५।०२।५२।३८	०८।२८।३०।२५	०८।००।३३।३३	४४।००
०९ र.	११।१४।१३।२२	०६।००।२६।०३	०८।२७।१८।३१	०५।०४।०४।५२	०८।२८।३३।०९	०८।००।३०।२३	४३।५८
१० चं.	११।१४।०७।०६	०५।२९।५०।०७	०८।२७।२५।४६	०५।०५।१७।०६	०८।२८।३५।५३	०८।००।२७।१३	४३।५७
११ मं.	११।१४।०५।३१	०५।२९।४२।०७	०८।२७।३३।५१	०५।०६।२९।३१	०८।२८।३९।२७	०८।००।२४।०२	४३।५५
१२ बु.	११।१४।०३।५६	०५।२९।३४।०७	०८।२७।४१।५६	०५।०७।४१।५६	०८।२८।४३।०१	०८।००।२०।५१	४३।५३
१३ बृ.	११।१४।०२।२१	०५।२९।२६।०७	०८।२७।५०।०१	०५।०८।५४।२१	०८।२८।४६।३४	०८।००।१७।४०	४३।५१
१४ शु.	११।१४।००।४६	०५।२९।३९।४६	०८।२७।५८।०६	०५।१०।०६।४६	०८।२८।५०।०७	०८।००।१४।२९	४३।४९
१५ श.	११।१३।५९।११	०५।२९।५३।२६	०८।२८।०६।१०	०५।११।१९।११	०८।२८।५३।४०	०८।००।११।१८	४३।४८

तिथयः	दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्											
दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ श.	१९।२३	२१।१९	२३।३२	०१।५०	०४।०६	०६।२१	०८।३८	१०।५५	१३।००	१४।४६	१६।१७	१७।४६
०२ र.	१९।१९	२१।१५	२३।२८	०१।४६	०४।०२	०६।१७	०८।३४	१०।५१	१२।५६	१४।४२	१६।१३	१७।४२
०३ चं.	१९।१५	२१।११	२३।२४	०१।४२	०३।५८	०६।१३	०८।३०	१०।४७	१२।५२	१४।३८	१६।०९	१७।३८
०४ मं.	१९।११	२१।०७	२३।२०	०१।३८	०३।५४	०६।०९	०८।२६	१०।४३	१२।४८	१४।३४	१६।०५	१७।३४
०५ बु.	१९।०७	२१।०३	२३।१६	०१।३४	०३।५०	०६।०५	०८।२२	१०।३९	१२।४४	१४।३०	१६।०१	१७।३०
०६ बृ.	१९।०३	२०।५९	२३।१२	०१।३०	०३।४६	०६।०१	०८।१८	१०।३५	१२।४०	१४।२६	१५।५७	१७।२६
०७ शु.	१८।५९	२०।५५	२३।०८	०१।२६	०३।४२	०५।५७	०८।१४	१०।३१	१२।३६	१४।२२	१५।५३	१७।२२
०८ श.	१८।५५	२०।५१	२३।०४	०१।२२	०३।३८	०५।५३	०८।१०	१०।२७	१२।३२	१४।१८	१५।४९	१७।१८
०९ र.	१८।५१	२०।४७	२३।००	०१।१८	०३।३४	०५।४९	०८।०६	१०।२३	१२।२८	१४।१४	१५।४५	१७।१४
१० चं.	१८।४८	२०।४४	२२।५७	०१।१५	०३।३१	०५।४६	०८।०३	१०।२०	१२।२५	१४।११	१५।४२	१७।११
११ मं.	१८।४४	२०।४०	२२।५३	०१।११	०३।२७	०५।४२	०७।५९	१०।१६	१२।२१	१४।०७	१५।३८	१७।०७
१२ बु.	१८।४०	२०।३६	२२।४९	०१।०७	०३।२३	०५।३८	०७।५५	१०।१२	१२।१७	१४।०३	१५।३४	१७।०३
१३ बृ.	१८।३६	२०।३२	२२।४५	०१।०३	०३।१९	०५।३४	०७।५१	१०।०८	१२।१३	१३।५९	१५।३०	१६।५९
१४ शु.	१८।३२	२०।२८	२२।४१	००।५९	०३।१५	०५।३०	०७।४७	१०।०४	१२।०९	१३।५५	१५।२६	१६।५५
१५ श.	१८।२८	२०।२४	२२।३७	००।५५	०३।११	०५।२६	०७।४३	१०।००	१२।०५	१३।५१	१५।२२	१६।५१

३ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३७।५७
अयनांशा: २२।४९।२१



१० चन्द्रे वल्ली ८।३९।३८।०४
अयनांशा: २२।४९।२२



विविधविषया:—प्रतिपदि **कलशस्थापनं** ततो देवीपूजनपूर्वकनवदिनं यावच्छप्तशतीस्तोत्रवेदपुराणादि—धर्मग्रन्थपाठो मन्त्रजपश्च कर्त्तव्य:। **दुर्गापाठमहत्त्वम्**—यथाश्वमेध: क्रतुराड् देवानां च यथा हरि:। स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तव:।। चण्ड्या: शतावृत्तिपाठात् सर्वा: सिद्ध्यन्ति सिद्धय:। **दुर्गाऽऽगमनयानविचार:**—शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरङ्गमे। गुरौ शुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्त्तिता।। **तत्फलम्**—गजे च जलदा देवी क्षत्रभङ्गस्तुरङ्गमे। नौकायां सर्वसिद्धि: स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम्।। **विजयदशम्यां देव्या गमनयानफलम्**—शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा। शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुधयानकरी विकला।। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा। सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा।। **जयन्तीपूजनदानधारणमन्त्र:**—जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तु ते।। **बिल्वपत्रत्रोटनमन्त्र:**—अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शङ्करस्य सदा प्रिय। क्षमस्व शिवपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम्।। **तुलसीपत्रत्रोटनमन्त्र:**—तुलस्यमृतजन्मा त्वं केशवस्य सदा प्रिया। क्षमस्व हरिपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम्।। **नीलकण्ठदर्शनमन्त्र:**—नीलकण्ठाय भद्राय भद्ररूपाय ते नम:। भद्रत्वं देहि मे भद्रमाशां पूरय पूरय।। **खञ्जनदर्शनमन्त्र:**—नारायणशरीरोत्थ सम्वत्सरशुभप्रद। शालग्रामशिलाकण्ठ खञ्जरीट नमोऽस्तु ते।। **कोजागरायां लक्ष्मीप्रणाममन्त्र:**—विश्वरूपस्य भार्याऽसि पद्मे पद्मासने शुभे। सर्वत: पाहि मां देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। **इन्द्रप्रणाममन्त्र:**—विचित्रैरावतस्थाय भास्वत् कुलिशपाणये। पौलोम्यालिङ्गिताङ्गाय सहस्राक्षाय ते नम:।। **कुबेरप्रणाममन्त्र:**—धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च। भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादिसम्पद:।।

ग्रहस्थिति:—वक्री पूर्वोदितो मङ्गल:, वक्री पश्चिमास्तो बुध: १० त: पूर्वोदित: १३ तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पति:, मार्गी पूर्वोदित: शुक्र:, मार्गी पूर्वोदित: शनि:।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयो: मेघचारवातातपच्छिन्नवृष्टयस्तन्मध्यभागे वातमेघचारवृष्टय:।

कार्त्तिककृष्णपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क ०१।११।२०२० ई. तः दिनाङ्क १५।११।२०२० ई. यावत्।
शुद्धः १३ तोऽशुद्धः, शरदृतुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. द. प.	घं. मि.	योगाः यो. द. प.	करणानि क. द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानम् द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.
०१ र.	३८।२७	रा. ०९।४८	भर. ३६।३२	रा. ०९।०६	व्य. ५९।२८	बा. ०५।४०	मे. ५३।०१	रा. ०३।४१	०६।२५।०६।३७	२७।३५	६।२९	५।३१	१०	१६	०१
०२ च.	४२।५७	रा. ११।४१	कृत्ति. ४२।३०	रा. ११।३०	वरी. ६०।००	तै. १०।३७	वृषः	अहोरात्रम्	०६।२६।०६।४६	२७।३२	६।३०	५।३०	११	१७	०२
०३ मं.	४६।५१	रा. ०१।२४	रोहि. ४७।३९	रा. ०१।३४	वरी. ००।२२	व. १४।५४	वृषः	अहोरात्रम्	०६।२७।०७।०८	२७।२८	६।३०	५।३०	१२	१८	०३
०४ बु.	४९।३१	रा. ०२।२९	मृग. ५१।४२	रा. ०३।२२	परिघः ००।२६	ब. १८।२१	वृ. १९।४०	दि. ०२।२३	०६।२८।०७।३०	२७।२४	६।३१	५।२९	१३	१९	०४
०५ बृ.	५१।०७	रा. ०२।५७	आर्द्रा ५४।३७	रा. ०४।२३	सिद्धः ५७।३३	कौ. २०।२९	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०६।२९।०७।५२	२७।२०	६।३२	५।२८	१४	२०	०५
०६ शु.	५१।२०	रा. ०३।०५	पुन. ५६।२५	रा. ०५।०३	साध्यः ५४।४३	ग. २१।२४	मि. ४०।०३	रा. १०।३४	०६।२०।०८।२४	२७।२७	६।३३	५।२७	१५	२१	०६
०७ श.	५०।२८	रा. ०२।४०	पुष्यः ५६।४०	रा. ०५।२३	शुभः ५०।५२	वि. २०।४९	कर्कः	अहोरात्रम्	०६।२१।०८।३६	२७।२४	६।३३	५।२७	१६	२२	०७
०८ र.	४८।०६	रा. ०१।४८	श्ले. ५५।५४	रा. ०४।५६	शुक्लः ४६।०५	बा. १९।२२	क. ५५।५४	रा. ०४।५६	०६।२२।०८।५८	२७।२१	६।३४	५।२६	१७	२३	०८
०९ चं.	४४।४८	रा. १२।२९	मघा ५४।०७	रा. ०४।२३	ब्रह्म ४०।२९	तै. १६।२७	सिंहः	अहोरात्रम्	०६।२३।०९।२०	२७।०८	६।३४	५।२६	१८	२४	०९
१० मं.	४०।३८	रा. १०।५०	पूफ. ५१।२९	रा. ०३।२१	ऐन्द्रः ३४।२२	व. १२।४३	सिंहः	अहोरात्रम्	०६।२४।०९।५६	२७।०४	६।३५	५।२५	१९	२५	१०
११ बु.	३५।४२	रा. ०८।५३	उफ. ४८।२१	रा. ०१।५२	वैधृतिः २७।२५	ब. ०८।२०	सिं. ०५।३९	दि. ०८।५२	०६।२५।२०।३२	२७।०१	६।३६	५।२४	२०	२६	११
१२ बृ.	३०।२५	सं. ०६।४२	हस्तः ४४।२२	रा. १२।२१	विष्क. १९।४८	कौ. ०२।५८	कन्या	अहोरात्रम्	०६।२६।२१।०८	२६।५८	६।३६	५।२४	२१	२७	१२
१३ शु.	२४।२७	दि. ०४।२४	चित्रा ४०।२५	रा. १०।४३	प्रीतिः १२।०५	व. २४।२७	कं. १२।२६	दि. ११।३१	०६।२७।२१।४४	२६।५५	६।३७	५।२३	२२	२८	१३
१४ श.	१८।२८	दि. ०१।४९	स्वाती ३६।००	रा. ०९।०२	आयु. ०४।२४	श. १८।२८	तुला	अहोरात्रम्	०६।२८।२२।२९	२६।५२	६।३८	५।२२	२३	२९	१४
३० र.	१२।३१	दि. ११।३८	विशा. ३१।५४	रा. ०७।२४	शोभ. ४८।३७	ना. १२।३१	तु. १७।५४	दि. ०१।२८	०६।२९।२२।५४	२६।४९	६।३८	५।२२	२४	३०	१५

- ०१ — **नवम्बर ११, तुलायां बुधः** १२।३८, कार्त्तिके द्विदलं त्यजेत्, कार्त्तिके शूरणभक्षणं निषिद्धम्।
- ०२ — दक्षिणयात्रा तृतीयायाम्।
- ०३ — **मार्गी मङ्गलः** ३५।२७, भ. १४।५४ उपरि ४६।५१ यावत्, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा।
- ०४ — शिवदं. ५९।२७, **वृश्चिके केतुवृषे राहुश्च** १७।२९, **कृष्णपिङ्गाक्ष** ४ व्रतम्, **करकचतुर्थी**, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०८।२३, उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्यां मृगशिरसि।
- ०५ — पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ। ○ लक्ष्मीपूजनमुल्काभ्रमणं पितृविसर्जनञ्च, दीक्षाग्रहणम्, अकृतपितृपक्षीयपार्वणैरद्यावश्यमेव पार्वणं विधेयम्, रात्रिशेषे शूर्पवादनपुरस्सरं दरिद्रानिस्सारणम्, शनैश्चरी चतुर्दशी।
- ०६ — **विशाखायां रविः** ३५।२७, भ. ५१।२० उपरि, दक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा षष्ठ्याम्।
- ०७ — भ. २०।४९ यावत्, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।
- ०८ — गं. ४४।५४ उपरि ५९।५४ यावत्।
- ०९ — उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्। ❖ पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा, हनुमज्जन्मोत्सवो हनुमद्ध्वजदानञ्च, **वायुपुराणे**—कार्त्तिकस्यासिते पक्षे स्वात्यां भौमे चतुर्दशी। मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरः शिवः।।
- १० — पूर्वयात्रा दशम्याम्, भ. १२।४३ उपरि ४०।३८ यावत्।
- ११ — **रम्भा ११ व्रतं** सर्वेषाम्, द.ति. ३५।४२ उपरि। ☆ स्वयं धन्वन्तरिर्महान्। पुरा समुद्रमथने समुत्तस्थौ महोदधेः।।
- १२ — बिल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणम्, गोवत्स १२, प्रदोष १३ व्रतम्, द.ति. ३०।२५ यावत्, पूर्वयात्रा त्रयोदश्याम्, सिमरियाधाम्नि अमृतप्राप्त्युत्सवः, **धन्वन्तरि(धनतेरस)जयन्ती, ब्रह्मवैवर्ते**—नारायणांशो भगवान् ☆
- १३ — **मकरे बृहस्पतिः** ०८।४८, **मकरस्थबृहस्पतिकनीचांशजन्यदोषारम्भः** ०८।४८ उपरि, प्रदोष १४ व्रतम्, चतुर्दशशाकभोजनम्, शिवादीनां दीपदानं प्रदोषे, भ. २४।२७ उपरि ५१।२८ यावत्, ❖
- १४ — सौभाग्यदं. ५२।०६, भ. १८।२८ उपरि ४५।२९ यावत्, पश्चिमदक्षिणयात्रा चतुर्दश्याम्, **कालीतारापूजा**, निशीथे श्रीविद्याकालीताराप्रादुर्भावः, **दीपावली**, सुखरात्रिः प्रदोषे घं. ०८।०६ यावद्रात्रौ ○
- १५ — मासान्तः, कार्त्तिकी ३० स्नानदानादिः, कालीताराविसर्जनम्, **अन्नकूटः**, बलिपूजा, अग्न्यादिदेवोत्थापनम्, **गोवर्द्धनपूजा**, गोपूजा नैव, गोक्रीडा, वृषभे औषधिदानम्, (३०—१) एकोद्दिष्टम्।

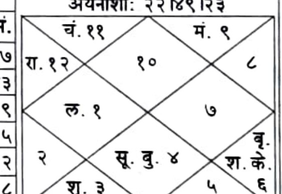
मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ र.	११।२३।५७।३६	०६।००।०७।०६	०८।२८।२४।२४	०५।२२।३१।३५	०८।२८।५७।२३	०८।००।०८।०८	४३।४७
०२ चं.	११।२३।५६।०२	०६।००।२०।४६	०८।२८।२२।२८	०५।२३।४३।५९	०८।२९।००।४६	०८।००।०४।५८	४३।४६
०३ मं.	११।२३।५७।४१	०६।०१।०३।५३	०८।२८।३१।२४	०५।२४।५७।२०	०८।२९।०४।५०	०८।००।०१।४७	४३।४४
०४ बु.	११।२४।००।३९	०६।०१।४७।००	०८।२८।४०।३०	०५।२६।२०।२१	०८।२९।०८।५४	०७।२९।५८।३६	४३।४२
०५ बृ.	११।२४।०४।२१	०६।०२।३०।०७	०८।२८।४९।३६	०५।२७।२३।३२	०८।२९।२२।५७	०७।२९।५५।२५	४३।४०
०६ शु.	११।२४।०८।०३	०६।०३।२३।२४	०८।२८।५८।४२	०५।२८।३६।४३	०८।२९।२७।००	०७।२९।५२।२४	४३।३८
०७ श.	११।२४।२१।४६	०६।०३।५६।२१	०८।२९।०७।४७	०५।२९।४९।५४	०८।२९।२१।०३	०७।२९।४९।०३	४३।३६
०८ र.	११।२४।२६।४०	०६।०४।३९।२८	०८।२९।२६।५२	०५।२१।०३।०५	०८।२९।२५।०६	०७।२९।४५।५२	४३।३५
०९ चं.	११।२४।२२।२३	०६।०५।२२।३५	०८।२९।२५।५७	०५।२२।२६।२६	०८।२९।२९।०९	०७।२९।४२।४२	४३।३४
१० मं.	११।२४।३०।४१	०६।०६।३२।२५	०८।२९।३५।५४	०५।२३।२९।४०	०८।२९।३३।५१	०७।२९।३९।३१	४३।३२
११ बु.	११।२४।३९।०९	०६।०७।४१।५५	०८।२९।४५।५१	०५।२४।४३।०४	०८।२९।३८।३३	०७।२९।३६।२०	४३।३०
१२ बृ.	११।२४।४७।३७	०६।०८।५१।३५	०८।२९।५५।४८	०५।२५।५६।२८	०८।२९।४३।२५	०७।२९।३३।०९	४३।२८
१३ शु.	११।२४।५६।०५	०६।२०।०१।२५	०९।००।०५।४५	०५।२७।०९।५१	०८।२९।४७।५७	०७।२९।२९।५८	४३।२६
१४ श.	११।२५।०४।३३	०६।२१।२०।५४	०९।००।२५।४२	०५।२८।२३।२४	०८।२९।५२।३९	०७।२९।२६।४७	४३।२५
३० र.	११।२५।२३।०१	०६।२२।२०।३३	०९।००।२५।३८	०५।२९।३६।३७	०८।२९।५७।२१	०७।२९।२३।३७	४३।२४

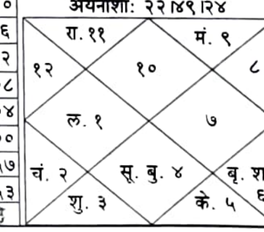
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ र.	१८।२४	२०।२०	२२।३३	००।५१	०३।०७	०५।२२	०७।३९	०९।५६	१२।०१	१३।४७	१५।२८	१६।४७
०२ चं.	१८।२०	२०।२६	२२।२९	००।४७	०३।०३	०५।२८	०७।३५	०९।५२	११।५७	१३।४३	१५।२४	१६।४३
०३ मं.	१८।२६	२०।२२	२२।२५	००।४३	०२।५९	०५।२४	०७।३१	०९।४८	११।५३	१३।३९	१५।२०	१६।३९
०४ बु.	१८।२२	२०।०८	२२।२१	००।३९	०२।५५	०५।२०	०७।२७	०९।४४	११।४९	१३।३५	१५।०६	१६।३५
०५ बृ.	१८।०९	२०।०५	२२।२८	००।३६	०२।५२	०५।०७	०७।२४	०९।४१	११।४६	१३।३२	१५।०३	१६।३२
०६ शु.	१८।०५	२०।०१	२२।२४	००।३२	०२।४८	०५।०३	०७।२०	०९।३७	११।४२	१३।२८	१४।५९	१६।२८
०७ श.	१८।०१	१९।५७	२२।२०	००।२८	०२।४४	०४।५९	०७।२६	०९।३३	११।३८	१३।२४	१४।५५	१६।२४
०८ र.	१७।५७	१९।५३	२२।०६	००।२४	०२।४०	०४।५५	०७।२२	०९।२९	११।३४	१३।२०	१४।५१	१६।२०
०९ चं.	१७।५३	१९।४९	२२।०२	००।२०	०२।३६	०४।५१	०७।०८	०९।२५	११।३०	१३।२६	१४।४७	१६।२६
१० मं.	१७।४९	१९।४५	२१।५८	००।२६	०२।३२	०४।४७	०७।०४	०९।२१	११।२६	१३।२२	१४।४३	१६।२२
११ बु.	१७।४५	१९।४१	२१।५४	००।२२	०२।२८	०४।४३	०७।००	०९।२७	११।२२	१३।०८	१४।३९	१६।०८
१२ बृ.	१७।४१	१९।३७	२१।५०	००।०८	०२।२४	०४।३९	०६।५६	०९।२३	११।२८	१३।०४	१४।३५	१६।०४
१३ शु.	१७।३७	१९।३३	२१।४६	००।०४	०२।२०	०४।३५	०६।५२	०९।०९	११।२४	१३।००	१४।३१	१६।००
१४ श.	१७।३४	१९।३०	२१।४३	००।०१	०२।२७	०४।३२	०६।४९	०९।०६	११।२१	१२।५७	१४।२८	१५।५७
३० र.	१७।३०	१९।२६	२१।३९	२३।५७	०२।२३	०४।२८	०६।४५	०९।०२	११।०७	१२।५३	१४।२४	१५।५३

२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३८।२१
अयनांशाः २२।४९।२३



९ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३८।२८
अयनांशाः २२।४९।२४



विविधविषयाः—कार्त्तिके सकलं मासं प्रातः स्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। **प्रातः स्नानमन्त्रः**—कार्त्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह।। **दीपमालिकादानफलम्**—यः कुर्यात् कार्त्तिके मासि शोभनां दीपमालिकाम्। घृतेन च चतुर्दश्याममायाञ्च विशेषतः।। यावद्दीपप्रसङ्ख्यात्र घृतेनापूर्य बोधिता। तावद्युगसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते।। अतः प्रदोषसमये दीपान् दद्यात्प्रयत्नतः। ब्रह्मविष्णुशिवादीनां भवनेषु मठेषु च।। कूटागारेषु चैत्येषु गुहासु च नदीषु च।। **तत्र दीपदानमन्त्रः**—नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे। नमो धर्माय रुद्राय कान्तारपतये नमः।। **चतुर्दश्यां चतुर्दशशाकभोजनम्**—ओलं केमुकवास्तुकं सरिसपं कालञ्च निम्बं जयां, शालिञ्च हिलमोचिकाञ्च पटुकं शौल्फं गुडुचीं तथा। भण्टाकीं सुनिषण्णकं शिवदिने खादन्ति ये मानवाः, प्रेतत्वं न च यान्ति कार्त्तिकदिने कृष्णे च भूते तिथौ।। **शाकनामानि क्रमेण मैथिल्याम्**—ओल, केउआं, बथुआ, सरिसव, करमी, नीम, भाङ्ग, शालिपत्री, सरहच्ची, पटुआ, सोवा, गुडीच, वनभट्टा, अमरोरा। **उल्काभ्रमणमन्त्रः**—शस्त्राशस्त्रहतानाञ्च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना।। अग्निदग्धाश्च ये जीवाः येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्।। यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।। **तुलासङ्क्रमणे आकाशदीपदानफलम्**—तुलायां तिलतैलेन सायङ्काले समागते। आकाशदीपं यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः।। **आकाशदीपदानमन्त्रः**—दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।।

ग्रहस्थितिः—वक्री पूर्वोदितो मङ्गलः ३ तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातमेघचारादयस्तन्मध्यभागे वातमेघचारच्छिन्नवृष्टयः।

कार्त्तिकशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क १६।११।२०२० ई. तः दिनाङ्क ३०।११।२०२० ई. यावत्।
अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्, पूर्वे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ चं.	०६।५२	दि. ०९।२४	अनु. २८।०८	सं. ०५।५४	अगं. ४१।११	ब. ०६।५२	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०७।००।१३।२९	२६।४६	६।३९	५।२१	२५	०१	१६
०२ मं.	०१।३७	दि. ०७।१९	ज्ये. २४।५१	दि. ०४।३६	सुकर्मा ३४।१५	कौ. ०१।३७	वृ. २४।५१	दि. ०४।३६	०७।०१।१४।१६	२६।४२	६।४०	५।२०	२६	०२	१७
०४ बु.	५३।१७	रा. ०३।५९	मूलम् २२।१७	दि. ०३।३५	धृतिः २७।५६	व. २५।०९	धनुः	अहोरात्रम्	०७।०२।१५।०३	२६।३९	६।४०	५।२०	२७	०३	१८
०५ बृ.	५०।३१	रा. ०२।५३	पूषा. २०।३६	दि. ०२।५५	शूलः २२।१८	ब. २१।५४	ध. ३५।२६	रा. ०८।५१	०७।०३।१५।५०	२६।३६	६।४१	५।१९	२८	०४	१९
०६ शु.	४८।५३	रा. ०२।१४	उषा. १९।५६	दि. ०२।३९	गण्डः १७।३१	कौ. १९।४२	मकरः	अहोरात्रम्	०७।०४।१६।३७	२६।३३	६।४१	५।१९	२९	०५	२०
०७ श.	४८।२६	रा. ०२।०४	श्रव. २०।२७	दि. ०२।५३	वृद्धिः १३।३८	ग. १८।४०	म. ५१।१९	रा. ०३।१४	०७।०५।१७।२४	२६।३०	६।४२	५।१८	३०	०६	२१
०८ र.	४९।२०	रा. ०२।२७	धनि. २२।१२	दि. ०३।३६	ध्रुवः १०।४७	वि. १८।५३	कुम्भः	अहोरात्रम्	०७।०६।१८।११	२६।२७	६।४३	५।१७	०१	०७	२२
०९ चं.	५१।३६	रा. ०३।२१	शत. २५।१४	दि. ०४।४९	व्या. ०८।५५	बा. २०।२८	कुम्भः	अहोरात्रम्	०७।०७।१८।५७	२६।२४	६।४३	५।१७	०२	०८	२३
१० मं.	५४।५६	रा. ०४।४२	पूभा. २९।२३	सं. ०६।२९	हर्षणः ०७।५९	तै. २३।१६	कुं. १३।२१	दि. १२।०४	०७।०८।१९।५६	२६।२२	६।४४	५।१६	०३	०९	२४
११ बु.	५९।१७	रा. ०६।२७	उभा. ३४।३९	रा. ०८।३६	वज्रः ०७।५८	व. २७।०६	मीनः	अहोरात्रम्	०७।०९।२०।५५	२६।२०	६।४४	५।१६	०४	१०	२५
१२ बृ.	६०।००	अहोरात्रम्	रेवती ४०।३८	रा. १०।५९	सिद्धिः ०८।४०	ब. ३१।४९	मी. ४०।३८	रा. १०।५९	०७।१०।२१।५४	२६।१८	६।४४	५।१६	०५	११	२६
१२ शु.	०४।२०	दि. ०८।२९	अश्वि. ४७।०५	रा. ०१।३५	व्य. ०९।४७	बा. ०४।२०	मेषः	अहोरात्रम्	०७।११।२२।५३	२६।१७	६।४५	५।१५	०६	१२	२७
१३ श.	०९।४३	दि. १०।२८	भर. ५३।३४	रा. ०४।११	वरी. ११।११	तै. ०९।४३	मेषः	अहोरात्रम्	०७।१२।२३।५१	२६।१६	६।४५	५।१५	०७	१३	२८
१४ र.	१४।५९	दि. १२।४५	कृत्ति. ५९।३९	रा. ०६।३७	परिघः १२।२८	व. १४।५९	मे. १०।०५	दि. १०।४७	०७।१३।२४।४९	२६।१५	६।४५	५।१५	०८	१४	२९
१५ चं.	१९।४२	दि. ०२।३८	रोहिणी६०।००	अहोरात्रम्	शिवः १३।१९	ब. १९।४२	वृषः	अहोरात्रम्	०७।१४।२५।४७	२६।१४	६।४५	५।१५	०९	१५	३०

तुलायां शुक्रः ०२।३१, **मकरे शनिः** १७।२०, **वृश्चिके रविः** ३०।०४ मु. १५ फलं महार्घम्, **विष्णुपदीसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** दिवा घं. १२ उपरि दिने, **पुण्याहः**, कार्त्तिकस्नानसमाप्तिः, ✪
तृतीयादं. ५५।२५, गं. १८।५१ उपरि ३३।५१ यावत्, मासादिः, **कदुमहुली ३**, प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां निरामिषभोजनम्।
श्रीगणेश ४ व्रतम्, प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां संयमः **(नहा—खाय)**, पूर्वयात्रा पञ्चम्याम्, भ. २५।०९ उपरि ५३।१७ यावत्।
अनुराधायां रविः ४७।२४, प्रतिहारषष्ठीव्रतैकभुक्तम् **(खरना)**, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे। ✪ सिमरियाधाम्नि कल्पवाससमाप्तिः, **महाकविकालिदासजयन्त्युत्सवः** उच्चैठग्रामे तज्जन्मस्थले उज्जयिन्यां तत्कर्मस्थले च, ❍
प्रतिहारषष्ठीव्रतम्, सायङ्कालिकार्घदानम्, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां षष्ठ्याम्। ❍ चन्द्रदर्शनमु. ३० सौम्यशृङ्गफलं साम्यम्, यमद्वितीया, **भ्रातृद्वितीया**, भगिनीगृहे भोजनम्, यमुनास्नानम्, श्रीचित्रगुप्तपूजा।
प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, **सामापूजारम्भः**, जगद्धात्रीपूजारम्भः, पञ्चकारम्भो दिवा घं. ०२।५३ उपरि, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे, भ. ४८।२६ उपरि।
गोपाष्टमी, गोपूजा, भ. १८।५३ यावत्।
अक्षयनवमी, गङ्गास्नानदानादिः, धात्रीच्छायायां भोजनम्, दीक्षाग्रहणम्, सत्ययुगादिः, द.ति. ५१।३६ उपरि।
जगद्धात्रीविसर्जनम्, द.ति. ५४।५६ यावत्।
देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषाम्, भीष्मपञ्चकव्रतारम्भः, पश्चिमयात्रा रेवत्याम्, भ. २७।०६ उपरि ५९।१७ यावत्। ✪ गं. २८।३८ उपरि ४३।३८ यावत्, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा।
बिल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणम्, **नवान्नपार्वणम्**, **द्विरागमनम्**, दामोदर १२, **तुलसीविवाहः**, चातुर्मास्यव्रतपारणम्, तामसमन्वादिः, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, पञ्चकान्तो रात्रौ घं. १०।५९ उपरि, ✪
वृश्चिके बुधः ४५।२६, प्रदोष १३ व्रतम्, **कर्णवेधः**, **मुण्डनं त्रयोदश्याम्**, **द्विरागमनं** पश्चिमां विना यात्रा च त्रयोदश्यामश्विन्याम्।
पूर्वास्तो बुधः ०८।२०, प्रदोष १४ व्रतम्, वैकुण्ठ १४, काशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनम्, **विद्यापति(५९४)स्मृतिदिवसः**, बाबासाहेबरामपरमहंसस्य २३१ स्मृतिदिवसः।
कार्त्तिकेयावतारः, कार्त्तिकेयपूजनम्, **सामाविसर्जनम्**, **षाण्मासिकरविव्रतारम्भः**, **द्विरागमनं** पूर्वदक्षिणयात्रा च रोहिण्याम्, भ. १४।५९ उपरि ४६।५० यावत्, (१५) एकोद्दिष्टम्।
कार्त्तिकी १५ गङ्गास्नानदानादिः, **सोनपुरमेलापकम्**, भीष्मपञ्चकव्रतसमाप्तिः, सर्वदेवदेव्युत्थापनम्, **नवान्नपार्वणम्**, **द्विरागमनम्**, दक्षिणयात्रा, औत्तममन्वादिः, निम्बार्क—नानकजयन्ती, ❖
❖ हरिहरप्रभासपुष्करवराहक्षेत्रादिषु स्नानादिकम्, **गोशालाघट्टे** कमलायां जीवछघट्टे जीववत्सायां स्नानदानार्चनादिकम्।

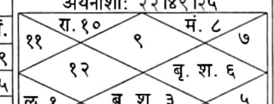
मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ चं.	११।१५।२१।२९	०६।१३।३०।१२	०९।००।३५।३४	०६।००।५०।००	०९।००।०२।०२	०७।२९।२०।२७	४३।२३
०२ मं.	११।१५।३३।५५	०६।१४।५६।१८	०९।००।४६।२८	०६।०२।०३।४६	०९।००।०६।४०	०७।२९।१७।१६	४३।२१
०४ बु.	११।१५।४६।२१	०६।१६।२२।२३	०९।००।५७।२२	०६।०३।१७।३२	०९।००।११।१८	०७।२९।१४।०५	४३।१९
०५ बृ.	११।१५।५८।४६	०६।१७।४८।२८	०९।०१।०८।१५	०६।०४।३१।१८	०९।००।१५।५६	०७।२९।१०।५४	४३।१७
०६ शु.	११।१६।११।११	०६।१९।१४।३३	०९।०१।१९।०८	०६।०५।४५।०४	०९।००।२०।३३	०७।२९।०७।४३	४३।१५
०७ श.	११।१६।२३।३६	०६।२०।४०।३८	०९।०१।३०।०१	०६।०६।५८।५०	०९।००।२५।१०	०७।२९।०४।३२	४३।१४
०८ र.	११।१६।३६।०१	०६।२२।०६।४३	०९।०१।४०।५४	०६।०८।१२।३६	०९।००।२९।४७	०७।२९।०१।२२	४३।१३
०९ चं.	११।१६।४८।२६	०६।२३।३२।४८	०९।०१।५१।४७	०६।०९।२६।२१	०९।००।३४।२४	०७।२८।५८।१२	४३।१२
१० मं.	११।१७।०४।५१	०६।२५।०८।४१	०९।०२।०३।०८	०६।१०।४०।३२	०९।००।४०।४०	०७।२८।५५।०१	४३।११
११ बु.	११।१७।२१।१६	०६।२६।४४।३४	०९।०२।१४।२९	०६।११।५४।४३	०९।००।४६।५६	०७।२८।५१।५०	४३।१०
१२ बृ.	११।१७।३७।४१	०६।२८।२०।२७	०९।०२।२५।५०	०६।१३।०८।५४	०९।००।५३।१२	०७।२८।४८।३९	४३।०९
१२ शु.	११।१७।५४।०६	०६।२९।५६।२०	०९।०२।३७।११	०६।१४।२३।०४	०९।००।५९।२८	०७।२८।४५।२८	४३।०८
१३ श.	११।१८।१०।३१	०७।०१।३२।१३	०९।०२।४८।३१	०६।१५।३७।१४	०९।०१।०५।४४	०७।२८।४२।१८	४३।०७
१४ र.	११।१८।२६।५५	०७।०३।०८।०६	०९।०२।५९।५१	०६।१६।५१।२४	०९।०१।१२।००	०७।२८।३९।०७	४३।०७
१५ चं.	११।१८।४३।१९	०७।०४।४३।५८	०९।०३।११।११	०६।१८।०५।३४	०९।०१।१८।१६	०७।२८।३५।५७	४३।०७

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ चं.	१७।२६	१९।२२	२१।३५	२३।५३	०२।०९	०४।२४	०६।४१	०८।५८	११।०३	१२।४९	१४।२०	१५।४९
०२ मं.	१७।२२	१९।१८	२१।३१	२३।४९	०२।०५	०४।२०	०६।३७	०८।५४	१०।५९	१२।४५	१४।१६	१५।४५
०४ बु.	१७।१८	१९।१४	२१।२७	२३।४५	०२।०१	०४।१६	०६।३३	०८।५०	१०।५५	१२।४१	१४।१२	१५।४१
०५ बृ.	१७।१३	१९।०९	२१।२२	२३।४०	०१।५६	०४।११	०६।२८	०८।४५	१०।५०	१२।३६	१४।०७	१५।३६
०६ शु.	१७।०९	१९।०५	२१।१८	२३।३६	०१।५२	०४।०७	०६।२४	०८।४१	१०।४६	१२।३२	१४।०३	१५।३२
०७ श.	१७।०५	१९।०१	२१।१४	२३।३२	०१।४८	०४।०३	०६।२०	०८।३७	१०।४२	१२।२८	१३।५९	१५।२८
०८ र.	१७।००	१८।५६	२१।०९	२३।२७	०१।४३	०३।५८	०६।१५	०८।३२	१०।३७	१२।२३	१३।५४	१५।२३
०९ चं.	१६।५६	१८।५२	२१।०५	२३।२३	०१।३९	०३।५४	०६।११	०८।२८	१०।३३	१२।१९	१३।५०	१५।१९
१० मं.	१६।५२	१८।४८	२१।०१	२३।१९	०१।३५	०३।५०	०६।०७	०८।२४	१०।२९	१२।१५	१३।४६	१५।१५
११ बु.	१६।४७	१८।४३	२०।५६	२३।१४	०१।३०	०३।४५	०६।०२	०८।१९	१०।२४	१२।१०	१३।४१	१५।१०
१२ बृ.	१६।४३	१८।३९	२०।५२	२३।१०	०१।२६	०३।४१	०५।५८	०८।१५	१०।२०	१२।०६	१३।३७	१५।०६
१२ शु.	१६।३९	१८।३५	२०।४८	२३।०६	०१।२२	०३।३७	०५।५४	०८।११	१०।१६	१२।०२	१३।३३	१५।०२
१३ श.	१६।३४	१८।३०	२०।४३	२३।०१	०१।१७	०३।३२	०५।४९	०८।०६	१०।११	११।५७	१३।२८	१४।५७
१४ र.	१६।३०	१८।२६	२०।३९	२२।५७	०१।१३	०३।२८	०५।४५	०८।०२	१०।०७	११।५३	१३।२४	१४।५३
१५ चं.	१६।२५	१८।२१	२०।३४	२२।५२	०१।०८	०३।२३	०५।४०	०७।५७	१०।०२	११।४८	१३।१९	१४।४८

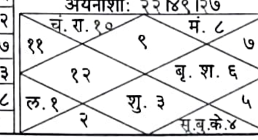
१ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३८।२५
अयनांशाः २२।४९।२५



९ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३८।३२
अयनांशाः २२।४९।२६



१५ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३८।३९
अयनांशाः २२।४९।२७



विविधविषयाः—कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्त्तिं निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् गाश्च पूजयेत्। **गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः**—गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव॥ **गोपूजनमन्त्रः**—लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनू रूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु॥ अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥ **भ्रातृद्वितीयायां भगिनीपठनीयमन्त्रः**—भ्रातस्तवानुजाताहं भुङ्क्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः॥ **कनिष्ठभ्रातरि सति**—भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुङ्क्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः॥ **धात्रीमाहात्म्यम्**—धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुङ्क्ते योऽन्नं हि मानवः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत्॥ धात्रीफलविलिप्ताङ्गो धात्रीफलविभूषितः। धात्री फलकृताहारो नरो नारायणो भवेत्॥ **एकादश्यां विष्णूत्थापनमन्त्रः**—ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। मेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्र शारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्॥ **हरिवासरयोगः**—आ—भा—का—सितपक्षस्य मैत्रश्रवणरेवती। द्वादशी बुधवारेण हरेर्वासर उच्यते॥ आषाढशुक्लद्वादश्यां सूर्योदयकाले बुधानुराधयोः, भाद्रशुक्लद्वादश्यां बुधश्रवणयोः, कार्त्तिकशुक्लद्वादश्यां बुधरेवतीनक्षत्रयोः योगेन हरिवासरयोगः स्यात्। तत्र व्रतमनन्तफलदम्। **वृषव्रतम्**—कार्त्तिक्यां यो वृषोत्सर्गं कृत्वा नक्तं समाचरेत्। स शैवं पदमाप्नोति वृषव्रतमिदं स्मृतम्॥
ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः १३ तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।
वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातमेघचारादयस्तन्मध्यभागे वातमेघचारस्वल्पवृष्टयः।

अग्रहायणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क ०१।१२।२०२० ई. तः दिनाङ्क १४।१२।२०२० ई. यावत्।
शुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्, पूर्वे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ मं.	२३।३५	दि. ०४।१२	रोहि. ०५।०१	दि. ०८।४६	सिद्धः १३।३२	कौ. २३।३५	वृ. ३७।११	रा. ०९।३८	०७।१५।२६।५४	२६।१२	६।४६	५।१४	१०	१६	०१
०२ बु.	२६।१८	सं. ०५।१७	मृग. ०९।२२	दि. १०।३१	साध्यः१२।५४	ग. २६।१८	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०७।१६।२८।०१	२६।१०	६।४६	५।१४	११	१७	०२
०३ बृ.	२७।५२	रा. ०५।५५	आर्द्रा १२।३७	दि. ११।४९	शुभः ११।२६	वि. २७।५२	मि. ५९।०४	रा. ०६।२४	०७।१७।२९।०८	२६।०८	६।४६	५।१४	१२	१८	०३
०४ शु.	२८।०४	रा. ०६।०१	पुन. १४।३३	दि. १२।३६	शुक्लः०८।५३	बा. २८।०४	कर्कः	अहोरात्रम्	०७।१८।३०।१५	२६।०७	६।४७	५।१३	१३	१९	०४
०५ श.	२७।०४	रा. ०५।३७	पुष्यः १५।१४	दि. १२।५३	ब्रह्मः ०५।२२	तै. २७।०४	कर्कः	अहोरात्रम्	०७।१९।३१।२२	२६।०६	६।४७	५।१३	१४	२०	०५
०६ र.	२४।५०	दि. ०४।४३	श्ले. १४।४३	दि. ११।४०	ऐन्द्रः ००।५२	व. २४।५०	क. १४।४३	दि. १२।४०	०७।२०।३२।२८	२६।०५	६।४७	५।१३	१५	२१	०६
०७ चं.	२१।३२	दि. ०३।२४	मघा १३।१०	दि. १२।०३	विष्क.४९।२५	ब. २१।३२	सिंहः	अहोरात्रम्	०७।२१।३३।३४	२६।०४	६।४७	५।१३	१६	२२	०७
०८ मं.	१७।२४	दि. ०१।४६	पूफ. १०।४८	दि. ११।०७	प्रीतिः ४२।४०	कौ. १७।२४	सिं. २५।००	दि. ०४।४८	०७।२२।३४।४९	२६।०२	६।४८	५।१२	१७	२३	०८
०९ बु.	१२।३१	दि. ११।४८	उफ. ०७।३७	दि. ०९।५१	आयु. ३५।२२	ग. १२।३१	कन्या	अहोरात्रम्	०७।२३।३६।०४	२६।०१	६।४८	५।१२	१८	२४	०९
१० बृ.	०७।०७	दि. ०९।३९	हस्तः ०३।५३	दि. ०८।२१	सौभा. २७।४३	वि. ०७।०७	कं. ३१।५२	रा. ०७।३३	०७।२४।३७।१९	२६।००	६।४८	५।१२	१९	२५	१०
११ शु.	०१।२१	दि. ०७।२०	स्वाती५५।३६	रा. ०५।०२	शोभ. १९।५२	बा. ०१।२१	तुला	अहोरात्रम्	०७।२५।३८।३३	२५।५९	६।४८	५।१२	२०	२६	११
१३ श.	४९।३६	रा. ०२।३८	विशा. ५१।२९	रा. ०३।२४	अगं. ११।५६	ग. २२।३०	तु. ३७।३०	रा. ०९।४८	०७।२६।३९।४७	२५।५८	६।४८	५।१२	२१	२७	१२
१४ र.	४४।०३	रा. १२।२६	अनु. ४७।३६	रा. ०१।५१	सुकर्मा०४।०७	वि. १६।४९	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०७।२७।४१।०१	२५।५७	६।४९	५।११	२२	२८	१३
३० चं.	३८।५५	रा. १०।२३	ज्ये. ४४।११	रा. १२।२९	शूलः ४९।२५	च. ११।२९	वृ. ४४।११	रा. १२।२९	०७।२८।४२।१५	२५।५६	६।४९	५।११	२३	२९	१४

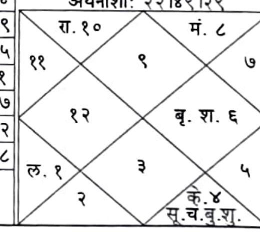
दिसम्बर १२. मकरगतबृहस्पतिकनीचांशदोषनिवृत्तिः शुद्धारम्भश्च २६।५३ उपरि, उत्तरां विना यात्रा द्वितीयायाम्।
ज्येष्ठायां रविः ५४।५१, भ. ५७।०५ उपरि, शनिवेधाद्विवाहो नैव मृगशिरसि, **मुण्डनं कर्णवेधो गृहारम्भो द्विरागमनम्** उत्तरां विना यात्रा च मृगशिरसि।
गजानन ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०७।५३, भ. २७।५२ यावत्, **मुण्डनं कर्णवेधो गृहारम्भश्च पुनर्वसौ, द्विरागमनं** पश्चिमयात्रा च तृतीयायां पुनर्वसौ।
द्विरागमनं पञ्चम्याम्, उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये।
वीडपञ्चमी, मनसादेवीशयनम्, विषहरापूजनम्, **गृहारम्भः पुष्ये।**
विवाहो मघायाम्, वैधृतिदं. ५४।३९, गं. ०३।४३ उपरि १८।४३ यावत्, भ. २४।५० उपरि ५३।११ यावत्।
कालभैरवाष्टमी, कालभैरवावतारः, कालभैरवव्रतं पूजनञ्च, **विवाहो मघायाम्,** उत्तरयात्राष्टम्याम्।
महाराजाधिराजकामेश्वरसिंहजयन्ती, अष्टकाश्राद्धम्, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
अन्वष्टकाश्राद्धम्, द.ति. १२।३१ उपरि, भ. ३९।४९ उपरि, (९–१०) एकोद्दिष्टम्।
चित्रादं. ५५।५७, **वृश्चिके शुक्रः** १८।३०, द.ति. ०७।०७ यावत्, भ. ०७।०७ यावत्, **विवाह एकादश्याम्,** पूर्वयात्रैकादश्यां कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा।
द्वादशीदं. ५४।०४, **उत्पन्ना ११** व्रतं सर्वेषाम्, **विवाह स्वात्याम्,** दक्षिणयात्रैकादश्याम्।
गोमूत्रेण पारणम्, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्, प्रदोष १३ व्रतम्, भ. ४९।३६ उपरि।
धृतिदं. ५२।२६, भ. १६।४९ यावत्, प्रदोष १४ व्रतम्।
मार्गी ३० स्नानदानादिः, **सोमवत्यमाव्रतं पूजनञ्च दिनं यावत्, विवाहो मूले,** पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा, गं. ३८।११ उपरि ५३।११ यावत्।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च							दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्											
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ मं.	११।१९।०२।४५	०७।०६।२५।३२	०९।०३।२३।१६	०६।१९।१९।५७	०९।०१।२४।१५	०७।२८।३२।४६	४३।०६	१६।२१	१८।१७	२०।३०	२२।४८	०१।०४	०३।१९	०५।३६	०७।५३	०९।५८	११।४४	१३।१५	१४।४४
०२ बु.	११।१९।२२।११	०७।०८।०७।०६	०९।०३।३५।२१	०६।२०।३४।२०	०९।०१।३०।१४	०७।२८।२९।३५	४३।०५	१६।१७	१८।१३	२०।२६	२२।४४	०१।००	०३।१५	०५।३२	०७।४९	०९।५४	११।४०	१३।११	१४।४०
०३ बृ.	११।१९।४१।३७	०७।०९।४८।४०	०९।०३।४७।२६	०६।२१।४८।४२	०९।०१।३६।१३	०७।२८।२६।२४	४३।०४	१६।१२	१८।०८	२०।२१	२२।३९	००।५५	०३।१०	०५।२७	०७।४४	०९।४९	११।३५	१३।०६	१४।३५
०४ शु.	११।२०।०१।०३	०७।११।३०।१४	०९।०३।५९।३१	०६।२३।०३।०४	०९।०१।४२।१२	०७।२८।२३।१३	४३।०३	१६।०८	१८।०४	२०।१७	२२।३५	००।५१	०३।०६	०५।२३	०७।४०	०९।४५	११।३१	१३।०२	१४।३१
०५ श.	११।२०।२०।२९	०७।१३।११।४७	०९।०४।११।३६	०६।२४।१७।२६	०९।०१।४८।१०	०७।२८।२०।०२	४३।०२	१६।०४	१८।००	२०।१३	२२।३१	००।४७	०३।०२	०५।१९	०७।३६	०९।४१	११।२७	१२।५८	१४।२७
०६ र.	११।२०।३९।५५	०७।१४।५३।२०	०९।०४।२३।४०	०६।२५।३१।४८	०९।०१।५४।०८	०७।२८।१६।५१	४३।०२	१५।५९	१७।५५	२०।०८	२२।२६	००।४२	०२।५७	०५।१४	०७।३१	०९।३६	११।२२	१२।५३	१४।२२
०७ चं.	११।२०।५९।२१	०७।१६।३४।५३	०९।०४।३५।४४	०६।२६।४६।१०	०९।०२।००।०६	०७।२८।१३।४१	४३।०२	१५।५५	१७।५१	२०।०४	२२।२२	००।३८	०२।५३	०५।१०	०७।२७	०९।३२	११।१८	१२।४९	१४।१८
०८ मं.	११।२१।२१।१०	०७।१८।१९।२३	०९।०४।४८।२१	०६।२८।००।५७	०९।०२।०६।२१	०७।२८।१०।३०	४३।०१	१५।५१	१७।४७	२०।००	२२।१८	००।३४	०२।४९	०५।०६	०७।२३	०९।२८	११।१४	१२।४५	१४।१४
०९ बु.	११।२१।४२।५९	०७।२०।०३।५३	०९।०५।००।५८	०६।२९।१५।४४	०९।०२।१२।३६	०७।२८।०७।१९	४३।००	१५।४६	१७।४२	१९।५५	२२।१३	००।२९	०२।४४	०५।०१	०७।१८	०९।२३	११।०९	१२।४०	१४।०९
१० बृ.	११।२२।०४।४८	०७।२१।४८।२२	०९।०५।१३।३५	०७।००।३०।३१	०९।०२।१८।५१	०७।२८।०४।०८	४२।५९	१५।४२	१७।३८	१९।५१	२२।०९	००।२५	०२।४०	०४।५७	०७।१४	०९।१९	११।०५	१२।३६	१४।०५
११ शु.	११।२२।२६।३७	०७।२३।३२।५१	०९।०५।२६।१२	०७।०१।४५।१७	०९।०२।२५।०६	०७।२८।००।५७	४२।५८	१५।३८	१७।३४	१९।४७	२२।०५	००।२१	०२।३६	०४।५३	०७।१०	०९।१५	११।०१	१२।३२	१४।०१
१३ श.	११।२२।४८।२५	०७।२५।१७।२०	०९।०५।३८।४९	०७।०३।००।०३	०९।०२।३१।२०	०७।२७।५७।४६	४२।५८	१५।३४	१७।३०	१९।४३	२२।०१	००।१७	०२।३२	०४।४९	०७।०६	०९।११	१०।५७	१२।२८	१३।५७
१४ र.	११।२३।१०।१३	०७।२७।०१।४९	०९।०५।५१।२६	०७।०४।१४।४९	०९।०२।३७।३४	०७।२७।५४।३६	४२।५८	१५।२९	१७।२५	१९।३८	२१।५६	००।१२	०२।२७	०४।४४	०७।०१	०९।०६	१०।५२	१२।२३	१३।५२
३० चं.	११।२३।३२।०१	०७।२८।४६।१८	०९।०६।०४।०२	०७।०५।२९।३५	०९।०२।४३।४८	०७।२७।५१।२६	४२।५८	१५।२५	१७।२१	१९।३४	२१।५२	००।०८	०२।२३	०४।४०	०६।५७	०९।०२	१०।४८	१२।१९	१३।४८

७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३८।४६
अयनांशाः २२।४९।२८



३० चन्द्रे वल्ली ८।३९।३८।५३
अयनांशाः २२।४९।२९



विविधविषयाः—मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमतस्तद्दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्यः। **पञ्चोपचारपूजा—**गन्धः पुष्पञ्च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च। पञ्चोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः।। **दशोपचारपूजा—**अर्घ्य–पाद्याचमनीयमधुपर्काचमनानि च। गन्धादिपञ्चकञ्चेति उपचारा दशोदिताः।। **षोडशोपचारपूजा—**आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा। मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा।। **अष्टाङ्गार्घः—**आपः क्षीरं कुशाग्रानि घृतञ्च दधितण्डुलाः। सिद्धार्थकाश्च पुष्पाणि चाष्टाङ्गार्घः प्रकथ्यते।। **अष्टाङ्गप्रणामः—**उरसा शिरसा दृष्ट्वा मनसा वचसा तथा। पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टाङ्ग ईरितः।। **चरणोदकग्रहणमन्त्रः—**अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्। देव्याः (विष्णोः) पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्।। **पञ्चगव्यम्—**गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्।। **पञ्चामृतम्—**शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्। पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते।। **पञ्चरत्नानि—**कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागञ्च मौक्तिकम्। एतानि पञ्चरत्नानि कलशस्यान्तरे क्षिपेत्।। **पञ्चपल्लवाः—** अश्वत्थोदुम्बर–प्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः। पञ्चपल्लव इत्युक्तः कलशे निःक्षिपेद्बुधः।। **सप्तधान्यम्—**यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्कुस्तथैव च। श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्।। **सर्वौषधिः—**मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। शुण्ठी चम्पकमुस्तञ्च सर्वौषधिगणः स्मृतः।। **सर्वौषधीनामभावे दद्यादेकां शतावरीम्।। सप्तमृत्तिका—**अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद् हृदात्। राजद्वाराद् गोकुलाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्।। **पूजायां पुष्पादिसमर्पणक्रमः—**पुष्पमूर्ध्वमुखं योज्यं पत्रं योज्यमधोमुखम्। फलन्तु सम्मुखं योज्यं यथोत्पन्नं तथार्पयेत्।। **कृतघ्नस्य निन्दा वाल्मीकिरामायणे—**गोघ्ने चैव सुरापे च चौरे भग्नव्रते तथा। निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धे वातहिमपातस्वल्पवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातमेघचारशीतादयः।

अग्रहायणशुक्लपक्षः

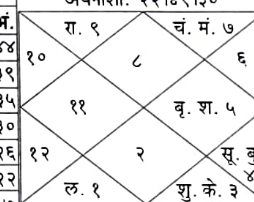
शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क १५।१२।२०२० ई. तः दिनाङ्क ३०।१२।२०२० ई. यावत्।
अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्, पूर्वे कालः।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि न. द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः यो. द. प.	करणानि क. द. प.	चन्द्राशयः रा. द. प.	चन्द्राशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानम् द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	अग्रहायणशुक्लपक्षः
०१ मं.	३४।२८	रा. ०८।३६	मूलम् ४१।२७	रा. ११।२४	गण्डः ४२।४८	किं. ०६।४१	धनुः	अहोरात्रम्	०७।२९।४३।३६	२५।५४	६।४९	५।११	२४	३०	१५	हरिशोव्रतम्, मासान्तः, **मूले धनुषि रविः** ५९।०० मु. ३० फलं साम्यम्, **अशुद्धारम्भः ५९।०० उपरि, मूले धनुषि बुधः** २५।१९, द.ति. ५९।०० उपरि।
०२ बु.	३०।५०	रा. ०७।१०	पूषा. ३९।३७	रा. १०।४१	वृद्धिः ३६।५३	बा. ०२।३९	ध. ५४।२३	रा. ०४।३५	०८।००।४४।५६	२५।५२	६।५०	५।१०	२५	०१	१६	**षडशीतिसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** दिवा घं. १२ यावद्दिने, **पुण्याहः**, चन्द्रदर्शनमु. ३० सौम्यशृङ्गफलं साम्यम्, द.ति. ३०।५० यावत्।
०३ बृ.	२८।१२	रा. ०६।०७	उषा. ३८।४१	रा. १०।१८	ध्रुवः ३१।४७	ग. २८।१२	मकरः	अहोरात्रम्	०८।०१।४६।१६	२५।५०	६।५०	५।१०	२६	०२	१७	मासादिः, **गणेश ४** व्रतम्, भ. ५७।२७ उपरि।
०४ शु.	२६।४२	रा. ०५।३१	श्रवणा३८।५५	रा. १०।२४	व्या. २७।३३	वि. २६।४२	मकरः	अहोरात्रम्	०८।०२।४७।३६	२५।४९	६।५०	५।१०	२७	०३	१८	पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. १०।२४ उपरि, भ. २६।४२ यावत्।
०५ श.	२६।२४	रा. ०५।२४	धनि. ४०।२५	रा. ११।००	हर्षणः २४।१७	बा. २६।२४	म. ०९।४०	दि. १०।४२	०८।०३।४८।५६	२५।४८	६।५०	५।१०	२८	०४	१९	**विवाहपञ्चमी**, श्रीसीतारामविवाहोत्सवः, जनकपुरे श्रीसीतारामदर्शनम्, पश्चिमयात्रा षष्ठ्यां धनिष्ठायाम्, गोस्वामिलक्ष्मीनाथ(ववाजी)परमहंसस्य २२७ जयन्त्युत्सवः १४८ स्मृतिदिवसश्च।
०६ र.	२७।२७	रा. ०५।५०	शत. ४३।०९	रा. १२।०७	वज्रः २२।०२	तै. २७।२७	कुम्भः	अहोरात्रम्	०८।०४।५०।१६	२५।४७	६।५१	५।०९	२९	०५	२०	स्कन्दषष्ठीव्रतम्, चम्पकषष्ठी।
०७ चं.	२९।४८	रा. ०६।४६	पूभा. ४७।०६	रा. ०१।४१	सिद्धिः२०।४९	व. २९।४८	कुं. ३१।०७	रा. ०७।१८	०८।०५।५१।३६	२५।४६	६।५१	५।०९	३०	०६	२१	पश्चिमोत्तरयात्राष्टम्यां पूर्वभाद्रे, भ. २९।४८ उपरि।
०८ मं.	३३।१८	रा. ०८।१०	उभा. ५२।०९	रा. ०३।४३	व्य. २०।२७	वि. ०१।३३	मीनः	अहोरात्रम्	०८।०६।५३।००	२५।४६	६।५१	५।०९	०१	०७	२२	पश्चिमयात्रा रेवत्याम्, भ. ०१।३३ यावत्।
०९ बु.	३७।४६	रा. १०।०१	रेवती ५८।०१	रा. ०६।०३	वरी. २०।५१	बा. ०५।३२	मी. ५८।०१	रा. ०६।०३	०८।०७।५४।२४	२५।४७	६।५१	५।०९	०२	०८	२३	पश्चिमयात्रा दशम्यां रेवत्याम्, पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०६।०३ उपरि, गं. ४६।०१ उपरि।
१० बृ.	४२।५३	रा. ११।५९	अश्वि. ६०।००	अहोरात्रम्	परिघः २१।५०	तै. १०।१९	मेषः	अहोरात्रम्	०८।०८।५५।४८	२५।४८	६।५०	५।१०	०३	०९	२४	दक्षिणां विना यात्राश्विन्याम्, गं. ०१।०१ यावत्।
११ शु.	४८।२०	रा. ०२।१०	अश्वि. ०४।२५	दि. ०८।३६	शिवः २३।०९	व. १५।३६	मेषः	अहोरात्रम्	०८।०९।५७।१२	२५।४९	६।५०	५।१०	०४	१०	२५	**मोक्षदा ११ व्रतं** सर्वेषाम्, **गीताजयन्ती**, पश्चिमां विना यात्राश्विन्याम्, भ. १५।३६ उपरि ४८।२० यावत्।
१२ श.	५३।३६	रा. ०४।१६	भरणी ११।०१	दि. ११।१४	सिद्धः २४।२६	ब. २०।५८	मे. २७।३४	सं. ०५।५२	०८।१०।५८।३६	२५।५०	६।५०	५।१०	०५	११	२६	केशव १२, गोमूत्रेण पारणम्।
१३ र.	५८।१८	रा. ०६।०९	कृत्ति. १७।१५	दि. ०१।४४	साध्यः२५।२७	कौ. २५।५७	वृषः	अहोरात्रम्	०८।१२।००।००	२५।५१	६।५०	५।१०	०६	१२	२७	प्रदोष १३ व्रतम्, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां त्रयोदश्याम्।
१४ चं.	६०।००	अहोरात्रम्	रोहि. २२।५१	दि. ०३।५८	शुभः २५।५६	ग. ३०।१३	वृ. ५५।१०	रा. ०४।५४	०८।१३।०१।२४	२५।५२	६।५०	५।१०	०७	१३	२८	प्रदोष १४ व्रतम्, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्।
१४ मं.	०२।०७	दि. ०७।४०	मृग. २७।२९	सं. ०५।४९	शुक्लः२५।३७	व. ०२।०७	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०८।१४।०२।५०	२५।५४	६।४९	५।११	०८	१४	२९	**पूर्वाषाढे रविः** ०१।०६, **अश्विन्यां मेषे मङ्गलः** ४९।१५, **पश्चिमोदितो बुधः** २०।५३, भ. ०२।०७ उपरि ३३।२६ यावत्, उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि।
१५ बु.	०४।४५	दि. ०८।४३	आर्द्रा ३१।०२	रा. ०७।१४	ब्रह्मः २४।२८	ब. ०४।४५	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०८।१५।०४।१६	२५।५६	६।४९	५।११	०९	१५	३०	मार्गी १५ स्नानदानादिः, क्षेत्रस्नानम्, हरिहरनाथपूजनदर्शनादिकम्, दत्तात्रेयावतारः, पूर्वदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ।

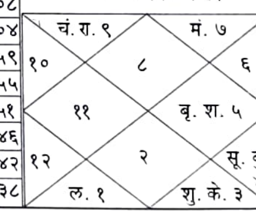
मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

तिथयः दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ मं.	११।२३।५६।२९	०८।००।३०।४०	०९।०६।१६।५८	०७।०६।४४।३७	०९।०२।५०।२०	०७।२७।४८।१५	४२।५७	१५।२१	१७।१७	१९।३०	२१।४८	००।०४	०२।१९	०४।३६	०६।५३	०८।५८	१०।४४	१२।१५	१३।४४
०२ बु.	११।२४।२०।५७	०८।०२।१५।०२	०९।०६।२९।५४	०७।०७।५९।३९	०९।०२।५६।५२	०७।२७।४५।०४	४२।५६	१५।१६	१७।१२	१९।२५	२१।४३	२३।५९	०२।१४	०४।३१	०६।४८	०८।५३	१०।३९	१२।१०	१३।३९
०३ बृ.	११।२४।४५।२५	०८।०३।५९।२३	०९।०६।४२।५०	०७।०९।१४।४१	०९।०३।०३।२३	०७।२७।४१।५३	४२।५५	१५।१२	१७।०८	१९।२१	२१।३९	२३।५५	०२।१०	०४।२७	०६।४४	०८।४९	१०।३५	१२।०६	१३।३५
०४ शु.	११।२५।०९।५३	०८।०५।४३।४४	०९।०६।५५।४६	०७।१०।२९।४३	०९।०३।०९।५४	०७।२७।३८।४२	४२।५४	१५।०७	१७।०३	१९।१६	२१।३४	२३।५०	०२।०५	०४।२२	०६।३९	०८।४४	१०।३०	१२।०१	१३।३०
०५ श.	११।२५।३४।२१	०८।०७।२८।०५	०९।०७।०८।४२	०७।११।४४।४४	०९।०३।१६।२५	०७।२७।३५।३१	४२।५३	१५।०३	१६।५९	१९।१२	२१।३०	२३।४६	०२।०१	०४।१८	०६।३५	०८।४०	१०।२६	११।५७	१३।२६
०६ र.	११।२५।५८।४८	०८।०९।१२।२६	०९।०७।२१।३७	०७।१२।५९।४५	०९।०३।२२।५६	०७।२७।३२।२१	४२।५३	१४।५९	१६।५५	१९।०८	२१।२६	२३।४२	०१।५७	०४।१४	०६।३१	०८।३६	१०।२२	११।५३	१३।२२
०७ चं.	११।२६।२३।१५	०८।१०।५६।४७	०९।०७।३४।३२	०७।१४।१४।४६	०९।०३।२९।२७	०७।२७।२९।११	४२।५३	१४।५४	१६।५०	१९।०३	२१।२१	२३।३७	०१।५२	०४।०९	०६।२६	०८।३१	१०।१७	११।४८	१३।१७
०८ मं.	११।२६।४९।४२	०८।१२।३८।१८	०९।०७।४७।४६	०७।१५।२९।५५	०९।०३।३५।५३	०७।२७।२६।००	४२।५३	१४।५०	१६।४६	१८।५९	२१।१७	२३।३३	०१।४८	०४।०५	०६।२२	०८।२७	१०।१३	११।४४	१३।१३
०९ बु.	११।२७।१६।०९	०८।१४।१९।४९	०९।०८।०१।००	०७।१६।४५।०४	०९।०३।४२।१९	०७।२७।२२।४९	४२।५३	१४।४५	१६।४१	१८।५४	२१।१२	२३।२८	०१।४३	०४।००	०६।१७	०८।२२	१०।०८	११।३९	१३।०८
१० बृ.	११।२७।४२।३६	०८।१६।०१।१९	०९।०८।१४।१४	०७।१८।००।१३	०९।०३।४८।४५	०७।२७।१९।३८	४२।५३	१४।४१	१६।३७	१८।५०	२१।०८	२३।२४	०१।३९	०३।५६	०६।१३	०८।१८	१०।०४	११।३५	१३।०४
११ शु.	११।२८।०९।०३	०८।१७।४२।४९	०९।०८।२७।२८	०७।१९।१५।२२	०९।०३।५५।१०	०७।२७।१६।२७	४२।५३	१४।३६	१६।३२	१८।४५	२१।०३	२३।१९	०१।३४	०३।५१	०६।०८	०८।१३	०९।५९	११।३०	१२।५९
१२ श.	११।२८।३५।२९	०८।१९।२४।१९	०९।०८।४०।४२	०७।२०।३०।३१	०९।०४।०१।३५	०७।२७।१३।१६	४२।५४	१४।३२	१६।२८	१८।४१	२०।५९	२३।१५	०१।३०	०३।४७	०६।०४	०८।०९	०९।५५	११।२६	१२।५५
१३ र.	११।२९।०१।५५	०८।२१।०५।४९	०९।०८।५३।५६	०७।२१।४५।४०	०९।०४।०८।००	०७।२७।१०।०६	४२।५५	१४।२८	१६।२४	१८।३७	२०।५५	२३।११	०१।२६	०३।४३	०६।००	०८।०५	०९।५१	११।२२	१२।५१
१४ चं.	११।२९।२८।२१	०८।२२।४७।१९	०९।०९।०७।०९	०७।२३।००।४८	०९।०४।१४।२५	०७।२७।०६।५६	४२।५६	१४।२३	१६।१९	१८।३२	२०।५०	२३।०६	०१।२१	०३।३८	०५।५५	०८।००	०९।४६	११।१७	१२।४६
१४ मं.	११।२९।५६।०९	०८।२४।२२।२२	०९।०९।२१।००	०७।२४।१६।१५	०९।०४।२१।४४	०७।२७।०३।४५	४२।५७	१४।१९	१६।१५	१८।२८	२०।४६	२३।०२	०१।१७	०३।३४	०५।५१	०७।५६	०९।४२	११।१३	१२।४२
१५ बु.	००।००।२३।५६	०८।२५।५७।२५	०९।०९।३४।५०	०७।२५।३१।४२	०९।०४।२९।०३	०७।२७।००।३४	४२।५८	१४।१५	१६।११	१८।२४	२०।४२	२२।५८	०१।१३	०३।३०	०५।४७	०७।५२	०९।३८	११।०९	१२।३८

७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३९।००
अयनांशाः २२।४९।३०



१४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३९।०७
अयनांशाः २२।४९।३१



विविधविषयाः—रविवासरे **त्याज्यवस्तूनि**—क्षारं (क्षौरं) तैलं जलं चोष्णमामिषं निशि भोजनम्। रतिः स्नानञ्च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्।। मार्गादिमासे **रविव्रतभक्ष्याणि**—पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्य मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयाञ्जलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण।। **षाण्मासिकरविव्रतं साम्बपुराणे**—अलिमेषगते भानौ भगवत्यर्कवासरे। शुक्लपक्षे स विधिवद् व्रतं साम्ब समाचरेत्।। देवोत्थानात्परं ग्राह्यं व्रतं देवस्य भास्वतः। कदाचिदलिमेषार्के कृष्णपक्षे न कारयेत्।। **ज्यौतिषे**—सूर्यव्रतञ्च वैशाखे मलमासो यदा भवेत्। तदा तत्रैव कर्त्तव्यं वृषादित्ये न कारयेत्।। यदि शुक्लपक्षे यथोक्तलक्षणघटितरविवासरालाभस्तदाऽनन्यगतिकत्वात् कृष्णपञ्चमीपर्यन्तं तदारम्भविसर्गौ कर्त्तव्यौ—"शुक्लपक्षे विशेषेण कृष्णेऽप्यापञ्चमं दिन"मिति म.म. वामदेवकृतगूढार्थदीपिकास्थाग्निपुराणीयवचनबलात्। रात्रौ **लग्नज्ञानं**—ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद् भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायव्यकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ, नैर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति। **चन्द्रोदयास्तसाधनम्**—तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। बाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च।। **यथा**—मार्गशुक्लपञ्चम्यां शनौ रात्रिमानम् ३४।१२, तदोक्तरीत्या (३४।१२) x ५ = १७०।६० = १७१।००, १७१।०० + ०२।०० = १७३।००, १७३।०० ÷ १५ = ११।३२ दण्डादि। सूर्यास्त(०५।१०)माने यथोक्तफलस्य घण्टामिण्टात्मकमान(०४।३७) योजनेन घं. ०९ मि. ४७ चन्द्रास्तमानमेवं कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानमिति।
ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः १४ तः पश्चिमोदितः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातशीतमेघचारादयस्तन्मध्यभागे हिमपातशीतवृद्धिच्छिन्नवृष्टयः।

पौषकृष्णपक्षः

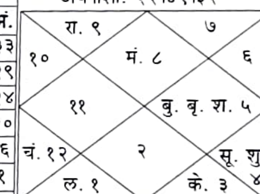
शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क ३१।१२।२०२० ई. तः दिनाङ्क १३।०१।२०२१ ई. यावत्।
अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्, पूर्वे कालः।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. द. प.	घं. मि.	योगाः यो. द. प.	करणानि क. द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानम् द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	
०१ बृ.	०६।२५	दि. ०९।४२	पुन. ३३।२०	रा. ०८।०८	ऐन्द्रः २२।२७	कौ. ०६।२५	मि. १७।४६	दि. ०१।५४	०८।२६।०५।४२	२५।५८	६।४८	५।२२	१०	१६	३१	पौषे कौशिकीस्नानं महापुण्यप्रदम्, पश्चिमयात्रा प्रतिपदि, द.ति. ०६।२५ उपरि।
०२ शु.	०६।२४	दि. ०९।४६	पुष्य: ३४।२९	रा. ०८।३१	वैधृति: १९।०६	ग. ०६।२४	कर्कः	अहोरात्रम्	०८।२७।०७।०८	२५।५९	६।४८	५।२२	११	१७	०१	**जनवरी २०२१ ई., पश्चिमास्तः शनिः** १३।२८, द.ति. ०६।२४ यावत्, भ. ३५।५२ उपरि, पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायां पुष्ये।
०३ श.	०५।२९	दि. ०८।५६	श्ले. ३४।०७	रा. ०८।२७	विष्क. १४।५६	वि. ०५।२९	क. ३४।०७	रा. ०८।२७	०८।२८।०८।३४	२६।००	६।४८	५।२२	१२	१८	०२	**लम्बोदर** ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०८।३२, **मकरे बुधः** १६।२०, भ. ०५।२९ यावत्, गं. २३।०७ उपरि ३८।०७ यावत्।
०४ र.	०२।५९	दि. ०८।००	मघा ३२।४९	रा. ०७।५६	प्रीति: ०९।५२	बा. ०२।५९	सिंहः	अहोरात्रम्	०८।२९।२०।००	२६।०१	६।४८	५।२२	१३	१९	०३	पञ्चमीदं. ५६।३९, **मूले धनुषि शुक्रः** १६।२४, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
०६ चं.	५५।२८	रा. ०४।५९	पूफ. ३०।४२	रा. ०७।०५	आयु. ०४।००	ग. २७।३३	सिं. ४४।५६	रा. १२।४६	०८।२०।२१।२५	२६।०२	६।४८	५।२२	१४	२०	०४	सौभाग्यदं. ५३।२८, भ. ५५।२८ उपरि, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
०७ मं.	५०।३३	रा. ०३।००	उफ. २७।४०	सं. ०५।५१	शोभ. ५०।२९	वि. २३।००	कन्या	अहोरात्रम्	०८।२१।२२।५०	२६।०४	६।४७	५।२३	१५	२१	०५	भ. २३।०० यावत्, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते। **सप्तम्यां** मेघदर्शने सत्यार्द्रायां श्रावण्याञ्च सुवृष्टिः। **शकुनम्**—पौषस्य कृष्णसप्तम्यां स्वातीभं यदि दृश्यते। सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तदा सर्वत्र जायते।।
०८ बु.	४५।०७	रा. १२।५०	हस्त: २४।०७	दि. ०४।२६	अगं. ४२।४७	बा. १७।५०	कं. ५२।०८	रा. ०३।३८	०८।२२।२४।२५	२६।०५	६।४७	५।२३	१६	२२	०६	अष्टकाश्राद्धम्, बुधाष्टमी स्नादानादावक्षयपुण्यदा। **शकुनम्**—अष्टम्यां पौषकृष्णायां निशीथे यदि गर्जति। तदा वदन्ति दैवज्ञाश्चातुर्मास्यं सुवर्षति।।
०९ बृ.	३९।२२	रा. १०।३२	चित्रा २०।०९	दि. ०२।५१	सुकर्मा३४।५९	तै. १२।२४	तुला	अहोरात्रम्	०८।२३।२५।४०	२६।०६	६।४७	५।२३	१७	२३	०७	अन्वष्टकाश्राद्धम्, पश्चिमयात्रा दशम्याम्। **शकुनम्**—पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यां तिथौ तोयधरो हि दृश्यः। तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिः प्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।।
१० शु.	३३।२६	रा. ०८।०९	स्वाती १५।५९	दि. ०१।२१	धृति: २७।०२	व. ०६।२४	तु. ५७।५३	रा. ०५।५६	०८।२४।२७।०५	२६।०७	६।४७	५।२३	१८	२४	०८	भ. ०६।२४ उपरि ३३।२६ यावत्, दक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
११ श.	२७।३९	सं. ०५।५०	विशा. ११।५१	दि. ११।३०	शूल: १९।२१	ब. ००।३२	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०८।२५।२८।२९	२६।०८	६।४६	५।२४	१९	२५	०९	**सफला ११** व्रतं सर्वेषाम्, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्।
१२ र.	२२।०८	दि. ०३।३७	अनु. ०७।५३	दि. ०९।५५	गण्ड: ११।३२	तै. २२।०८	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०८।२६।२९।५३	२६।०९	६।४६	५।२४	२०	२६	१०	गोमयेन पारणम्, प्रदोष १३ व्रतम्, उत्तरयात्रा, गं. ५८।२१ उपरि। ✪ पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा, भ. १७।०६ उपरि ४५।५४ यावत्, गं. १३।२१ यावत्।
१३ चं.	१७।०६	दि. ०१।३६	ज्ये. ०४।२१	दि. ०८।३०	वृद्धि: ०४।२२	व. १७।०६	वृ. ०४।२१	दि. ०८।३०	०८।२७।२१।२७	२६।२०	६।४६	५।२४	२१	२७	११	ध्रुवदं. ५३।२२, **उत्तराषाढे रविः** ०२।४४, प्रदोष १४ व्रतम्, **दशतारकारम्भो** दिवा घं. ०८।३० उपरि तत्र वाताभ्रगर्जनतडिदुदकशीतादिभिरग्रिमवर्षस्य वृष्टिविचारो विधेयः, ✪
१४ मं.	१२।४२	दि. ११।५१	मूलम् ०१।२७	दि. ०७।२१	व्या. ५१।२७	श. १२।४२	धनुः	अहोरात्रम्	०८।२८।२२।३८	२६।२२	६।४६	५।२४	२२	२८	१२	पूर्वाषाढदं. ५८।०२, भौमवती चतुर्दशी स्नानदानादौ पुण्यतमा, पूर्वयात्रा चतुर्दश्याम्, (१४—३०) एकोद्दिष्टम्।
३० बु.	०९।२०	दि. १०।२५	उषा. ५८।२०	रा. ०६।०५	हर्षण: ४५।५४	ना. ०९।२०	ध. १४।२४	दि. १२।२७	०८।२९।२३।५९	२६।२४	६।४५	५।२५	२३	२९	१३	मासान्तः, पौषी ३० स्नानदानादिः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

तिथयः दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ बृ.	००।००।५१।४३	०८।२७।३२।२८	०९।०९।४८।४०	०७।२६।४७।०९	०९।०४।३६।२२	०७।२६।५७।२३	४२।५९	१४।२०	१६।०६	१८।२९	२०।३७	२२।५३	०१।०८	०३।२५	०५।४२	०७।४७	०९।३३	११।०४	१२।३३
०२ शु.	००।०१।२९।३०	०८।२९।०७।३०	०९।२०।०२।३०	०७।२८।०२।३५	०९।०४।४३।४१	०७।२६।५४।२२	४३।००	१४।०६	१६।०२	१८।२५	२०।३३	२२।४९	०१।०४	०३।२१	०५।३८	०७।४३	०९।२९	११।००	१२।२९
०३ श.	००।०१।४७।२७	०९।००।४२।३२	०९।२०।२६।२०	०७।२९।२८।०१	०९।०४।५१।००	०७।२६।५१।०१	४३।०१	१४।०१	१५।५७	१८।२०	२०।२८	२२।४४	००।५९	०३।२६	०५।३३	०७।३८	०९।२४	१०।५५	१२।२४
०४ र.	००।०२।२५।०४	०९।०२।२७।३४	०९।२०।३०।२०	०८।००।३३।२७	०९।०४।५८।२९	०७।२६।४७।५०	४३।०१	१३।५७	१५।५३	१८।०६	२०।२४	२२।४०	००।५५	०३।२२	०५।२९	०७।३४	०९।२०	१०।५१	१२।२०
०६ चं.	००।०२।४२।५१	०९।०३।५२।३६	०९।२०।४४।००	०८।०१।४८।५३	०९।०५।०५।३७	०७।२६।४४।४०	४३।०१	१३।५३	१५।४९	१८।०२	२०।२०	२२।३६	००।५१	०३।०८	०५।२५	०७।३०	०९।२६	१०।४७	१२।२६
०७ मं.	००।०३।२२।२५	०९।०५।२६।३०	०९।२०।५७।५४	०८।०३।०४।२७	०९।०५।२२।५४	०७।२६।४१।२९	४३।०२	१३।४८	१५।४४	१७।५७	२०।२५	२२।३१	००।४६	०३।०३	०५।२०	०७।२५	०९।२१	१०।४२	१२।२१
०८ बु.	००।०३।४१।३९	०९।०६।४०।२४	०९।२१।२१।४८	०८।०४।२०।०१	०९।०५।२०।२१	०७।२६।३८।२८	४३।०३	१३।४४	१५।४०	१७।५३	२०।२१	२२।२७	००।४२	०२।५९	०५।२६	०७।२१	०९।०७	१०।३८	१२।०७
०९ बृ.	००।०४।२१।०३	०९।०८।०४।२८	०९।२१।२५।४१	०८।०५।३५।३५	०९।०५।२७।२८	०७।२६।३५।०७	४३।०४	१३।४०	१५।३६	१७।४९	२०।०७	२२।२३	००।३८	०२।५४	०५।२२	०७।२७	०९।०३	१०।३४	१२।०३
१० शु.	००।०४।४०।२६	०९।०९।२८।२१	०९।२१।३९।३४	०८।०६।५१।०९	०९।०५।३४।४५	०७।२६।३१।५६	४३।०५	१३।३५	१५।३१	१७।४४	२०।०२	२२।२८	००।३३	०२।५०	०५।०७	०७।२२	०८।५८	१०।२९	११।५८
११ श.	००।०५।०९।४९	०९।२०।५२।०४	०९।२१।५३।२७	०८।०८।०६।४२	०९।०५।४२।०२	०७।२६।२८।४५	४३।०५	१३।३१	१५।२७	१७।४०	१९।५८	२२।२४	००।२९	०२।४६	०५।०३	०७।०८	०८।५४	१०।२५	११।५४
१२ र.	००।०५।३९।२२	०९।२२।२५।५७	०९।२२।०७।२०	०८।०९।२२।२५	०९।०५।४९।२९	०७।२६।२५।३५	४३।०५	१३।२६	१५।२२	१७।३५	१९।५३	२२।०९	००।२४	०२।४१	०४।५८	०७।०३	०८।४९	१०।२०	११।४९
१३ चं.	००।०६।०८।३५	०९।२३।३९।५०	०९।२२।२१।२३	०८।२०।३७।४८	०९।०५।५६।३६	०७।२६।२२।२५	४३।०५	१३।२२	१५।२८	१७।३१	१९।४९	२२।०५	००।२०	०२।३७	०४।५४	०६।५९	०८।४५	१०।२६	११।४५
१४ मं.	००।०६।३९।०८	०९।२४।४६।२०	०९।२२।३५।२५	०८।२१।५३।३१	०९।०६।०३।४९	०७।२६।२९।२४	४३।०६	१३।२८	१५।२४	१७।२७	१९।४५	२२।०१	००।२६	०२।३३	०४।५०	०६।५५	०८।४१	१०।२२	११।४१
३० बु.	००।०७।०९।४१	०९।२५।५२।२९	०९।२२।४९।२७	०८।२३।०९।२४	०९।०६।२१।०२	०७।२६।२६।०३	४३।०७	१३।२३	१५।०९	१७।२२	१९।४०	२१।५६	००।२१	०२।२८	०४।४५	०६।५०	०८।३६	१०।०७	११।३६

६ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३९।२४
अयनांशाः २२।४९।३२



१३ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३९।२१
अयनांशाः २२।४९।३३



विविधविषयाः—दशतारकविचार—पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति।। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्।। **गर्भपुष्टिविचारः**—वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावपातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः।। तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति।। **पौषामावास्यायामर्द्धोदययोगो भारते**—अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता चेत्पौषमाघयोः। अर्द्धोदयः स विज्ञेयः किञ्चिन्न्यूने महोदयः।। किञ्चिन्न्यूने महोदय इति नक्षत्रयोगयोरन्यतरस्याभाव इत्यर्थः। अर्कवासरस्य प्राधान्यादिति रुद्रधरीयवर्षकृत्ये। अयमपि योगः दिवैव भवति, दिवैव योगः शस्तोऽयमित्युक्तत्वात्। **स्कान्दे**—अर्द्धोदये तु सम्प्राप्ते सर्वं गङ्गासमं जलम्। शुद्धात्मानो द्विजास्सर्वे भवेयुर्ब्रह्मसन्निभाः।। यत्किञ्चिद्दीयते दानं तद्दानं मेरुसन्निभम्।। **गोचरशन्यादिविचारः**—द्विजन्मनि पञ्चमसप्तमगाश्चतुराष्टकद्वादशधर्मयुताः। धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः।। **शनेर्विशेषः**—यदि स्वजन्मराशितः शनिराशिसञ्चारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्य निम्नलिखितानि पदानि भवेयुः—जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दैः रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टसूर्येष्विह लौहपादम्।। **तत्फलम्**—लौहे वित्तविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं राजते भवेत्।। अनिष्टफलदायकशनेर्जपः कार्यः लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्यः। **शनिस्तवः**—पिप्पलाद उवाच—नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते।। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य मे।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः २ तः पश्चिमास्तः।

वातावरणम्—पक्षादिभागे वातशीतमेघचारच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातमेघचारहिमपातशीतवृद्धयः।

पौषशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क १४।०१।२०२१ ई. तः दिनाङ्क २८।०१।२०२१ ई. यावत्।
अशुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, पूर्वे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्राशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ बृ.	०६।३७	दि. ०९।२४	श्रव. ५८।१८	रा. ०६।०४	वज्रः ४१।२१	ब. ०६।३७	मकरः	अहोरात्रम्	०९।००।२५।२०	२६।१६	६।४५	५।१५	२४	०१	१४
०२ शु.	०५।१५	दि. ०८।५१	धनि. ५९।२९	रा. ०६।३३	सिद्धिः३७।४७	कौ. ०५।१५	म. २८।५३	सं. ०६।१८	०९।०१।२६।४१	२६।१७	६।४५	५।१५	२५	०२	१५
०३ श.	०५।०८	दि. ०८।४७	शत. ६०।००	अहोरात्रम्	व्य. ३५।१३	ग. ०५।०८	कुम्भः	अहोरात्रम्	०९।०२।२८।०२	२६।१८	६।४४	५।१६	२६	०३	१६
०४ र.	०६।२०	दि. ०९।१६	शत. ०१।५७	दि. ०७।३१	वरी. ३३।४२	वि. ०६।२०	कुं. ४९।४५	रा. ०२।३८	०९।०३।२९।२३	२६।१९	६।४४	५।१६	२७	०४	१७
०५ चं.	०८।४८	दि. १०।१५	पूभा. ०५।४०	दि. ०९।००	परिघः३२।५९	बा. ०८।४८	मीनः	अहोरात्रम्	०९।०४।३०।४४	२६।२०	६।४४	५।१६	२८	०५	१८
०६ मं.	१२।२५	दि. ११।४१	उभा. १०।३१	दि. १०।५५	शिवः ३३।१३	तै. १२।२५	मीनः	अहोरात्रम्	०९।०५।३२।००	२६।२३	६।४३	५।१७	२९	०६	१९
०७ बु.	१६।५८	दि. ०१।३०	रेवती १६।१४	दि. ०१।१३	सिद्धः ३४।०४	व. १६।५८	मी. १६।१४	दि. ०१।१३	०९।०६।३३।१६	२६।२६	६।४३	५।१७	३०	०७	२०
०८ बृ.	२२।१०	दि. ०३।३४	अश्वि.२२।३४	दि. ०३।४४	साध्यः३५।२०	ब. २२।१०	मेषः	अहोरात्रम्	०९।०७।३४।३२	२६।२९	६।४२	५।१८	०१	०८	२१
०९ शु.	२७।३६	सं. ०५।४४	भर. २९।०८	सं. ०६।२१	शुभः ३६।४०	कौ. २७।३६	मे. ४५।४४	रा. ०१।००	०९।०८।३५।४८	२६।३२	६।४२	५।१८	०२	०९	२२
१० श.	३२।५२	रा. ०७।५०	कृत्ति. ३५।३३	रा. ०८।५४	शुक्लः३७।५२	तै. ००।१४	वृषः	अहोरात्रम्	०९।०९।३७।०४	२६।३४	६।४१	५।१९	०३	१०	२३
११ र.	३७।३०	रा. ०९।४१	रोहिणी४१।२०	रा. ११।१३	ब्रह्मः ३८।३६	व. ०५।११	वृषः	अहोरात्रम्	०९।१०।३८।२०	२६।३६	६।४१	५।१९	०४	११	२४
१२ चं.	४१।१३	रा. ११।०९	मृग. ४६।१४	रा. ०१।१०	ऐन्द्रः ३८।३८	ब. ०९।२१	वृ. १३।४७	दि. १२।११	०९।११।३९।३५	२६।३८	६।४०	५।२०	०५	१२	२५
१३ मं.	४३।४८	रा. १२।११	आर्द्रा ५०।०४	रा. ०२।४२	वैधृतिः३७।४६	कौ. १२।३०	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०९।१२।४०।४३	२६।४२	६।४०	५।२०	०६	१३	२६
१४ बु.	४५।१०	रा. १२।४३	पुन. ५२।३९	रा. ०३।५५	विष्क.३५।५९	ग. १४।२९	मि. ३७।०१	रा. ०९।२७	०९।१३।४१।५१	२६।४६	६।३९	५।२१	०७	१४	२७
१५ बृ.	४५।१२	रा. १२।४३	पुष्यः ५३।५६	रा. ०४।१२	प्रीतिः ३३।१०	वि. १५।११	कर्कः	अहोरात्रम्	०९।१४।४२।५९	२६।५०	६।३८	५।२२	०८	१५	२८

मकरे रविः १८।२१ मु. ३० फलं साम्यम्, **सौम्यायनसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** दिवा घं. ०२।०५ उपरि दिने, **पुण्याहः**, **तिलसङ्क्रान्तिः**, माघस्नानारम्भः, प्रयागे कल्पवासारम्भः, **सौम्यायनारम्भः** १८।२१ उपरि, ✪ मासादिः। ✪ चन्द्रदर्शनमु. ३० सौम्यशृङ्गफलं साम्यम्, **क्षीणो बृहस्पतिः अशुद्धारम्भश्च ३८।५५ उपरि**, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. ०६।०४ उपरि, द.ति. ०६।३७ उपरि १८।२१ यावत्।
गणेश ४ व्रतम्, भ. ३५।४४ उपरि।
पश्चिमास्तो बृहस्पतिः ३८।५५, भ. ०६।२० यावत्, उत्तरयात्रा मीनगते चन्द्रे।
मुण्डनं कर्णवेधश्च पञ्चम्यामुत्तरभाद्रे, पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे। **शकुनम्—**पौषस्य यदि पञ्चम्यां शुक्लायां हिमवर्षणम्। तदा स्यान्महती वृष्टिः प्रावृट् काले न संशयः॥
पश्चिमयात्रा रेवत्याम्, (७) एकोद्दिष्टम्। **शकुनम्—**पौषे मेघः शुक्लषष्ठ्यां श्रावणे तर्हि वर्षणम्। यदि वृष्टिः पौषषष्ठ्यां भाद्रकृष्णे घनोदयः॥
गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती, मुण्डनं कर्णवेधश्च सप्तम्याम्, पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा सप्तम्याम्, पञ्चकान्तो दिवा घं. ०१।१३ उपरि, भ. १६।५८ उपरि ४९।३४ यावत्, गं. ०४।१४ उपरि १९।१४ यावत्।
दशतारकान्तो दिवा घं. ०३।४४ उपरि, दक्षिणां विना यात्राष्टम्याम्, (८) एकोद्दिष्टम्।
शकुनम्—अष्टम्याञ्च नवम्याञ्च पौषशुक्लेऽश्विनी यदि। सप्तम्यां रेवतीबिन्दु—हिमवातैः शुभावहा॥
कर्मदशमी, विश्वकर्मणो जयन्ती, विश्वकर्मार्चा, दक्षिणयात्रा रोहिण्याम्।
पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषाम्, धर्मसावर्णिमन्वादिः, **श्रवणायां रविः** ०५।४५, द.ति. ३७।३० उपरि, भ. ०५।११ उपरि ३७।३० यावत्।
गोमयेन पारणम्, नारायण १२, पूर्वां विना यात्रा त्रयोदश्यां मृगशिरसि, द.ति. ४१।१३ यावत्। ☆ **कौशिकीस्नानमन्त्रः—**गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुनेः श्वसः। ऋचीकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि॥
प्रदोष १३ व्रतम्, **द्विसप्ततिगणतन्त्रदिवसः, राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानम्,** पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ।
मकरे शुक्रः ०४।४९, प्रदोष १४ व्रतम्, भ. ४५।१० उपरि, पश्चिमयात्रा पूर्णिमायां पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा पुष्ये।
पौषी १५ स्नानदानादिः, **कर्णवेधः**, दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये, शाकम्भरीजयन्ती, **लक्ष्मणसम्वत् ९१२ प्रारम्भः** प्रतिपत्तः, **वक्री बुधः** ०९।१९, भ. १५।११ यावत्, कौशिकीस्नानम्, ☆

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च							दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्											
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ बृ.	००।०७।४०।१४	०९।१६।५८।४८	०९।१३।०३।१९	०८।१४।२४।५७	०९।०६।१८।१४	०७।२६।१२।५२	४३।०८	१३।०९	१५।०५	१७।१८	१९।३६	२१।५२	००।०७	०२।२४	०४।४१	०६।४६	०८।३२	१०।०३	११।३२
०२ शु.	००।०८।१०।४७	०९।१८।०५।०७	०९।१३।१७।२१	०८।१५।४०।३९	०९।०६।२५।२६	०७।२६।०९।४१	४३।०९	१३।०५	१५।०१	१७।१४	१९।३२	२१।४८	००।०३	०२।२०	०४।३७	०६।४२	०८।२८	०९।५९	११।२८
०३ श.	००।०८।४१।२०	०९।१९।११।२६	०९।१३।३१।२३	०८।१६।५६।२१	०९।०६।३२।३८	०७।२६।०६।३०	४३।१०	१३।००	१४।५६	१७।०९	१९।२७	२१।४३	२३।५८	०२।१५	०४।३२	०६।३७	०८।२३	०९।५४	११।२३
०४ र.	००।०९।११।५३	०९।२०।१७।४५	०९।१३।४५।२५	०८।१८।१२।०३	०९।०६।३९।५०	०७।२६।०३।२०	४३।१०	१२।५६	१४।५२	१७।०५	१९।२३	२१।३९	२३।५४	०२।११	०४।२८	०६।३३	०८।१९	०९।५०	११।१९
०५ चं.	००।०९।४२।२६	०९।२१।२४।०४	०९।१३।५९।२६	०८।१९।२७।४५	०९।०६।४७।०२	०७।२६।००।१०	४३।१०	१२।५२	१४।४८	१७।०१	१९।१९	२१।३५	२३।५०	०२।०७	०४।२४	०६।२९	०८।१५	०९।४६	११।१५
०६ मं.	००।१०।१३।५३	०९।२२।००।३३	०९।१४।१३।३६	०८।२०।४३।२५	०९।०६।५४।१८	०७।२५।५६।५९	४३।१२	१२।४८	१४।४४	१६।५७	१९।१५	२१।३१	२३।४६	०२।०३	०४।२०	०६।२५	०८।११	०९।४२	११।११
०७ बु.	००।१०।४५।२०	०९।२२।३७।०१	०९।१४।२७।४५	०८।२१।५९।०५	०९।०७।०१।३४	०७।२५।५३।४८	४३।१४	१२।४४	१४।४०	१६।५३	१९।११	२१।२७	२३।४२	०१।५९	०४।१६	०६।२१	०८।०७	०९।३८	११।०७
०८ बृ.	००।११।१६।४७	०९।२३।१३।२९	०९।१४।४१।५४	०८।२३।१४।४५	०९।०७।०८।५०	०७।२५।५०।३७	४३।१५	१२।४०	१४।३६	१६।४९	१९।०७	२१।२३	२३।३८	०१।५५	०४।१२	०६।१७	०८।०३	०९।३४	११।०३
०९ शु.	००।११।४८।१३	०९।२३।४९।५७	०९।१४।५६।०३	०८।२४।३०।२५	०९।०७।१६।०५	०७।२५।४७।२६	४३।१६	१२।३६	१४।३२	१६।४५	१९।०३	२१।१९	२३।३४	०१।५१	०४।०८	०६।१३	०७।५९	०९।३०	१०।५९
१० श.	००।१२।१९।३९	०९।२४।२६।२५	०९।१५।१०।१२	०८।२५।४६।०५	०९।०७।२३।२०	०७।२५।४४।१५	४३।१७	१२।३२	१४।२८	१६।४१	१८।५९	२१।१५	२३।३०	०१।४७	०४।०४	०६।०९	०७।५५	०९।२६	१०।५५
११ र.	००।१२।५१।०५	०९।२५।०२।५३	०९।१५।२४।२१	०८।२७।०१।४४	०९।०७।३०।३५	०७।२५।४१।०५	४३।१८	१२।२७	१४।२३	१६।३६	१८।५४	२१।१०	२३।२५	०१।४२	०३।५९	०६।०४	०७।५०	०९।२१	१०।५०
१२ चं.	००।१३।२२।३१	०९।२५।३९।२१	०९।१५।३८।३०	०८।२८।१७।२३	०९।०७।३७।५०	०७।२५।३७।५५	४३।१९	१२।२३	१४।१९	१६।३२	१८।५०	२१।०६	२३।२१	०१।३८	०३।५५	०६।००	०७।४६	०९।१७	१०।४६
१३ मं.	००।१३।५५।०४	०९।२५।५५।३३	०९।१५।५२।३७	०८।२९।३२।५८	०९।०७।४५।०५	०७।२५।३४।४४	४३।२१	१२।१९	१४।१५	१६।२८	१८।४६	२१।०२	२३।१७	०१।३४	०३।५१	०५।५६	०७।४२	०९।१३	१०।४२
१४ बु.	००।१४।२७।३७	०९।२६।०३।४०	०९।१६।०६।४३	०९।००।४८।३३	०९।०७।५२।२०	०७।२५।३१।३३	४३।२३	१२।१५	१४।११	१६।२४	१८।४२	२०।५८	२३।१३	०१।३०	०३।४७	०५।५२	०७।३८	०९।०९	१०।३८
१५ बृ.	००।१५।००।१०	०९।२६।०१।२३	०९।१६।२०।४९	०९।०२।०४।०८	०९।०७।५९।३४	०७।२५।२८।२२	४३।२५	१२।११	१४।०७	१६।२०	१८।३८	२०।५४	२३।०९	०१।२६	०३।४३	०५।४८	०७।३४	०९।०५	१०।३४

५ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३९।२८
अयनांशाः २२।४९।३४



१२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३९।३५
अयनांशाः २२।४९।३५



विविधविषयाः—वैष्णवानामेकादशीव्रतनिर्णयः—दशमी पञ्चपञ्चाशद् घटिका चेत्प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत्॥ दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। मदिराबिन्दुपातेन त्याज्यो गङ्गाघटो यथा॥ **नारदपुराणे—**क्षये वाप्यथवा वृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम्॥ **कौर्मे—**तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन॥ **भविष्ये—**दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः। वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम्॥ अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्त्तितः। **अरुणोदयकालो ब्रह्मवैवर्ते—**चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते। यतीनां स्नानकालोऽयं गङ्गाम्भः सदृशं फलम्॥ **एकादश्यां त्याज्यवस्तूनि—**कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधु परान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुने॥ **केषामन्नं परान्नं नेत्याह—**गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वसुरान्नं तथैव च। पितुः पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः॥ **मातृमहिमा—**पितुरप्यधिका माता गर्भधारणपोषणात्। अतो हि त्रिषु लोकेषु नास्ति मातृसमो गुरुः॥ नास्ति गङ्गासमं तीर्थं नास्ति विष्णुसमः प्रभुः। नास्ति शम्भुसमः पूज्यो नास्ति मातृसमो गुरुः॥ माता धरित्री जननी दयार्द्रहृदया शिवा। देवी त्रिभुवनश्रेष्ठा निर्दोषा सर्वदुःखहा॥ **गौतमः—**आचार्यः श्रेष्ठो गुरूणां मातेत्येके। **मनुः—**उपाध्यायान्दशाचार्या आचार्याणां शतं पिता। सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते॥ **वशिष्ठः—**उपाध्यायाद्दशाऽऽचार्य आचार्याणां शतं पिता। पितुर्दशगुणं माता गौरवेणातिरिच्यते॥ **आपस्तम्बोऽपि—**माता पुत्रत्वस्य भूयाँसि कर्माण्यारभते तस्याँ शुश्रूषा नित्या पतितायामपि। **अथर्ववेदे—**माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। **तन्त्रशास्त्रेऽपि—**न मातुर्दैवतं परम्।
ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः १५ तो वक्री, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः ४ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः।
वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातशीतहिमपातच्छित्रवृष्टयस्तन्मध्यभागे शीतवातमेघचारादयः।

माघकृष्णपक्ष:

शकाब्द: १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क २९।०१।२०२१ ई. त: दिनाङ्क ११।०२।२०२१ ई. यावत्।
अशुद्ध:, शिशिरर्तु:, याम्यगोल:, सौम्यायनम्, पूर्वे काल:।

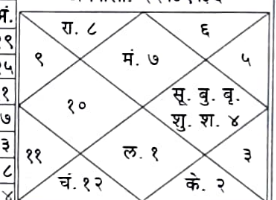
तिथय:	तिथय:		नक्षत्राणि		योगा:	करणानि	चन्द्रराशय:		स्पष्टसूर्य:	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्का:		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादि:	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ शु.	४४।००	रा. १२।२३	श्ले. ५४।०२	रा. ०४।२४	आयु. २९।२२	बा. १४।३६	क. ५४।०२	रा. ०४।२४	०९।२५।४४।०७	२६।५३	६।३७	५।२३	०९	१६	२९
०२ श.	४१।३५	रा. ११।२५	मघा ५२।५७	रा. ०३।४८	सौभा. २४।३७	तै. १२।४७	सिंह:	अहोरात्रम्	०९।२६।४५।२५	२६।५६	६।३७	५।२३	१०	१७	३०
०३ र.	३८।२०	रा. ०९।५२	पूफ. ५१।००	रा. ०३।००	शोभ. १९।०३	व. ०९।५२	सिंह:	अहोरात्रम्	०९।२७।४६।२३	२६।५९	६।३६	५।२४	११	१८	३१
०४ चं.	३३।५४	रा. ०८।२०	उफ. ४८।२०	रा. ०१।५२	अगं. १२।४७	व. ०६।०२	सिं. ०५।२७	दि. ०८।४३	०९।२८।४७।३१	२७।०२	६।३६	५।२४	१२	१९	०१
०५ मं.	२८।५५	सं. ०६।०९	हस्त: ४४।४२	रा. १२।२८	सुकर्मा ०५।५१	कौ. ०१।२४	कन्या	अहोरात्रम्	०९।२९।४८।३२	२७।०६	६।३५	५।२५	१३	२०	०२
०६ बु.	२३।२५	दि. ०३।५६	चित्रा ४०।४९	रा. १०।५४	शूल: ५०।४८	व. २३।२५	कं. १२।४५	दि. ११।४०	०९।२०।४९।३३	२७।०९	६।३४	५।२६	१४	२१	०३
०७ बृ.	१७।३६	दि. ०१।३६	स्वाती ३६।४१	रा. ०९।२४	गण्ड: ४२।५७	ब. १७।३६	तुला	अहोरात्रम्	०९।२१।५०।३४	२७।१२	६।३४	५।२६	१५	२२	०४
०८ शु.	११।४०	दि. ११।२३	विशा.३२।२८	रा. ०७।३२	वृद्धि: ३५।०५	कौ. ११।४०	तु. १८।३१	दि. ०१।५७	०९।२२।५१।३५	२७।१५	६।३३	५।२७	१६	२३	०५
०९ श.	०५।५०	दि. ०८।५२	अनु. २८।२८	स. ०५।५५	ध्रुव: २७।२२	ग. ०५।५०	वृश्चिक:	अहोरात्रम्	०९।२३।५२।३५	२७।१८	६।३२	५।२८	१७	२४	०६
१० र.	००।२०	दि. ०६।४०	ज्ये. २४।५२	दि. ०४।२९	व्या. १९।५८	वि. ००।२०	वृ. २४।५२	दि. ०४।२९	०९।२४।५३।३५	२७।२१	६।३२	५।२८	१८	२५	०७
१२ चं.	५०।५७	रा. ०२।५३	मूलम् २१।५०	दि. ०३।२५	हर्षण: १३।०१	कौ. २३।०७	धनु:	अहोरात्रम्	०९।२५।५४।३५	२७।२४	६।३१	५।२९	१९	२६	०८
१३ मं.	४७।२९	रा. ०१।३०	पूषा. १९।४०	दि. ०२।२२	वज्र: ०६।४३	ग. १९।२३	ध. ३४।२९	रा. ०८।२४	०९।२६।५५।२५	२७।२८	६।३०	५।३०	२०	२७	०९
१४ बु.	४५।००	रा. १२।३०	उषा. १८।२७	दि. ०१।४९	सिद्धि: ०१।०४	वि. १६।२४	मकर:	अहोरात्रम्	०९।२७।५६।२४	२७।३१	६।३०	५।३०	२१	२८	१०
३० बृ.	४३।४४	रा. ११।५९	श्रव. १८।०१	दि. ०१।४१	वरी. ५२।२५	च. १४।२२	म. ४८।२९	रा. ०१।५३	०९।२८।५७।०३	२७।३४	६।२९	५।३१	२२	२९	११

माघे कमलास्नानं महापुण्यप्रदम्, मकरे मूलकं त्याज्यम्, गं. ४३।०२ उपरि ५८।०२ यावत्।
उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायाम्, **पश्चिमास्तो बुध:** ४१।५१, भ. ०९।५२ उपरि ३८।२० यावत्।
फरवरी २, भालचन्द्र ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०८।२६, गणेशावतार:, श्रीगणेशपूजनम्, दक्षिणयात्रा हस्ते।
धृतिदं. ५२।३६, पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्याम्।
पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, भ. २३।२५ उपरि ५०।३१ यावत्।
रामानन्दाचार्यजयन्ती, पश्चिमयात्रा स्वात्याम्।
अष्टकाश्राद्धम्, उत्तरयात्रानुराधायाम्, (८–९) एकोद्दिष्टम्।
अन्वष्टकाश्राद्धम्, पश्चिमोत्तरयात्रा नवम्याम्, **धनिष्ठायां रवि:** ११।३६, भ. ३३।०५ उपरि।
एकादशीदं. ५४।५७, **षट्तिला ११** व्रतं स्मार्त्तानाम्, उत्तरयात्रा दशम्याम्, द.ति. ५५।२७ उपरि, गं. १८।५२ उपरि ३३।५२ यावत्, भ. ००।२० यावत्।
गोदुग्धेन पारणम्, **षट्तिला ११** व्रतं वैष्णवानाम्, उत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्, द.ति. ५०।५७ यावत्। ✪ स्वसुतमपि प्रजानां नाश: स्यात्ज्वलति वसुधा शुष्यति नदी।।
प्रदोष १३ व्रतम्, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे, भ. ४७।२९ उपरि। **षड्ग्रहयोगफलम्**—ग्रहाणामेकस्मिन् यदि भवति षण्णां निवसतिस्तदा गोलो योग: प्रलयपदमिन्द्रोऽपि लभते। भवेल्लोको रुङ्क्स्त्यजति च जननी ✪
व्यतीपातदं. ५५।२३, भ. १६।२४ यावत्, प्रदोष १४ व्रतम्, **नक्तव्रतम्**, नरकनिवारण(महाशिवरात्रि)१४ व्रतं प्रदोषे घं. ०७।०७ यावद्रात्रौ शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदम्, कुशेश्वरकपिलेश्वरप्रतिष्ठादिनम्, ☆
माघी ३० मौनी ३० स्नानदानादि:, कलियुगादिस्तद्गताब्दा: ५१२१, भोग्याब्दा: ४२६८७९, **पूर्वोदित: शनि:** ५६।२९, पञ्चकारम्भो दिवा घं. ०१।४१ उपरि, पूर्वयात्रा प्रतिपदि मकरस्थे चन्द्रे तत: पश्चिमयात्रा।
☆ **शिवलिङ्गोद्भवदिनम्**, रुद्रधरीयवर्षकृत्यधृतैशानसंहितायाम्—माघे कृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि। शिवलिङ्गतयोद्भूत: कोटिसूर्यसमप्रभ:।।

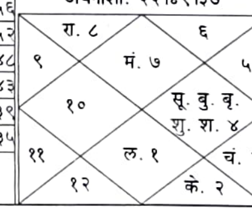
मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

तिथय: दिनानि	मङ्गल:	बुध:	बृहस्पति:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
०१ शु.	००।२५।३२।४३	०९।२५।४८।२५	०९।२६।३४।५५	०९।०३।२९।४३	०९।०८।०६।४८	०७।२५।२५।२१	४३।२७	१२।०६	१४।०२	१६।२५	१८।३३	२०।४९	२३।०४	०१।२१	०३।३८	०५।४३	०७।२९	०९।००	१०।२९
०२ श.	००।२६।०५।२५	०९।२५।३५।०७	०९।२६।४९।०१	०९।०४।३५।२८	०९।०८।२४।०२	०७।२५।२२।००	४३।२९	१२।०२	१३।५८	१६।२१	१८।२९	२०।४५	२३।००	०१।२७	०३।३४	०५।३९	०७।२५	०८।५६	१०।२५
०३ र.	००।२६।३७।४७	०९।२५।२१।५९	०९।२७।०३।०७	०९।०५।५०।५३	०९।०८।२१।२६	०७।२५।२८।५०	४३।३०	११।५८	१३।५४	१६।०७	१८।२५	२०।४१	२२।५६	०१।२३	०३।३०	०५।३५	०७।२१	०८।५२	१०।२१
०४ चं.	००।२७।२०।२९	०९।२५।०८।५१	०९।२७।२७।२३	०९।०७।०६।२७	०९।०८।२८।३०	०७।२५।२५।४०	४३।३१	११।५४	१३।५०	१६।०३	१८।२१	२०।३७	२२।५२	०१।०९	०३।२६	०५।३१	०७।२७	०८।४८	१०।२७
०५ मं.	००।२७।४३।२५	०९।२४।२७।०८	०९।२७।३१।२२	०९।०८।२२।०८	०९।०८।३५।४७	०७।२५।२२।२९	४३।३३	११।५०	१३।४६	१५।५९	१८।२७	२०।३३	२२।४८	०१।०५	०३।२२	०५।२७	०७।२३	०८।४४	१०।२३
०६ बु.	००।२८।२६।३१	०९।२३।४५।२५	०९।२७।४५।२२	०९।०९।३७।४९	०९।०८।४३।०४	०७।२५।०९।२८	४३।३५	११।४५	१३।४१	१५।५४	१८।२२	२०।२८	२२।४३	०१।००	०३।२७	०५।२२	०७।०८	०८।३९	१०।०८
०७ बृ.	००।२८।४९।३७	०९।२३।०३।४२	०९।२७।५९।२२	०९।२०।५३।३०	०९।०८।५०।२१	०७।२५।०६।०७	४३।३७	११।४१	१३।३७	१५।५०	१८।०८	२०।२४	२२।३९	००।५६	०३।२३	०५।२८	०७।०४	०८।३५	१०।०४
०८ शु.	००।२९।२२।४२	०९।२२।२१।५९	०९।२८।२३।२२	०९।२२।०९।२०	०९।०८।५७।३८	०७।२५।०२।५६	४३।३९	११।३७	१३।३३	१५।४६	१८।०४	२०।२०	२२।३५	००।५२	०३।०९	०५।२४	०७।००	०८।३१	१०।००
०९ श.	००।२९।५५।४७	०९।२१।४०।२६	०९।२८।२७।२२	०९।२३।२४।५०	०९।०९।०४।५५	०७।२४।५९।४५	४३।४०	११।३३	१३।२९	१५।४२	१८।००	२०।२६	२२।३१	००।४८	०३।०५	०५।२०	०६।५६	०८।२७	०९।५६
१० र.	००।२०।२८।५२	०९।२०।५८।३३	०९।२८।४१।२२	०९।२४।४०।३०	०९।०९।२२।२२	०७।२४।५६।३४	४३।४१	११।२९	१३।२५	१५।३८	१७।५६	२०।२२	२२।२७	००।४४	०३।०१	०५।०६	०६।५२	०८।२३	०९।५२
१२ चं.	००।२१।०१।५७	०९।२०।२६।५१	०९।२८।५५।२२	०९।२५।५६।२०	०९।०९।२९।२९	०७।२४।५३।२४	४३।४२	११।२५	१३।२१	१५।३४	१७।५२	२०।०८	२२।२३	००।४०	०२।५७	०५।०२	०६।४८	०८।२९	०९।४८
१३ मं.	००।२१।३५।४३	०९।२९।३५।२९	०९।२९।०९।२८	०९।२७।२१।४५	०९।०९।२६।४५	०७।२४।५०।२३	४३।४४	११।२०	१३।२६	१५।२९	१७।४७	२०।०३	२२।२८	००।३५	०२।५२	०४।५७	०६।४३	०८।२४	०९।४३
१४ बु.	००।२२।०९।२९	०९।२८।५४।०८	०९।२९।२३।४४	०९।२८।२७।२९	०९।०९।३४।०१	०७।२४।४७।०२	४३।४६	११।२६	१३।२२	१५।२५	१७।४३	१९।५९	२२।२४	००।३१	०२।४८	०४।५३	०६।३९	०८।२०	०९।३९
३० बृ.	००।२२।४३।२४	०९।२८।२२।४७	०९।२९।३८।००	०९।२९।४२।५३	०९।०९।४१।२६	०७।२४।४३।५१	४३।४८	११।२२	१३।०८	१५।२१	१७।३९	१९।५५	२२।२०	००।२७	०२।४४	०४।४९	०६।३५	०८।०६	०९।३५

४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३९।४२
अयनांशा: २२।४९।३६



१२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३९।४९
अयनांशा: २२।४९।३७



विविधविषया:—माघे प्रात:स्नानफलम्—यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताम्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।। **मकरार्के प्रात:स्नानमन्त्र:—**मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रात:स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। दु:खदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रात:स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।। **माघे कुत्रापि स्नानफलम्—**स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे।। **चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्ति:—**सर्वदेवमय: साक्षात्सर्वमङ्गलकारक:। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिप:।। तत्र गणेशं यथोपचारै: सम्पूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकञ्च दद्यात्। **चतुर्दश्यां नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतम्—**चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशय:।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।। **माघकृष्णचतुर्दश्यां यमतर्पणम्—**माघे मास्यसिते पक्षे रटन्त्याख्या चतुर्दशी। तस्यामुदयवेलायां स्नातो नाक्षिते यमम्।। (उदयवेलायामरुणोदयवेलायाम्)। अनर्काभ्युदिते काले माघे कृष्णचतुर्दशी। सतारव्योमकाले तु तस्यां स्नानं महाफलम्।। स्नात्वा सन्तर्प्य यमं सर्वपापै: प्रमुच्यते।। **स्नानदानादिष्वक्षयफलदास्तिथयो महामहोपाध्याय—रुद्रधरीयवर्षकृत्ये—**अमावास्या तु सोमेन सप्तमी भानुना युता। चतुर्थी भूमिपुत्रेण सोमपुत्रेण वा युता।। चतस्रस्तिथयस्त्वेता: सूर्यग्रहणसन्निभा:। स्नानं दानं तथा श्राद्धं सर्वं तत्राक्षयं भवेत्।। **मकरार्के तिलवस्त्रादिदानफलम्—**उत्तरे त्वयने विप्रा वस्त्रदानं महाफलम्। तिलपूर्णं तथा पात्रं दत्वा रोगै: प्रमुच्यते।। तिलोद्वर्त्ती तिलस्नायी तिलहोमी तिलार्चक:। तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला: स्वर्गगामिन:।।

ग्रहस्थिति:—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गल:, वक्री पश्चिमोदितो बुध: ३ त: पश्चिमास्त:, मार्गी पश्चिमास्तो बृहस्पति:, मार्गी पूर्वोदित: शुक्र:, मार्गी पश्चिमास्त: शनि: ३० त: पूर्वोदित:।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयो: वातहिमपातशीतवृद्धिच्छिन्नवृष्टयस्तन्मध्यभागे वातातपमेघचारादय:।

माघशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क १२।०२।२०२१ ई. तः दिनाङ्क २७।०२।२०२१ ई. यावत्।
अशुद्धः ५ तः शुद्धः ९ तोऽशुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।

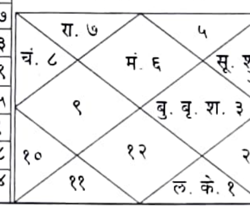
तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. द. प.	घं. मि.	योगाः यो. द. प.	करणानि क. द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानम् द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	माघशुक्लपक्षः
०१ शु.	४३।४३	रा. ११।५८	धनि. १८।५८	दि. ०२।०४	परिघः ४९।३३	किं. १३।४४	कुम्भः	अहोरात्रम्	०९।२९।५७।५२	२७।३७	६।२९	५।३१	२३	३०	१२	**कुम्भे रविः** ४५।५६ मु. १५ फलं महार्घम्, मासान्तः, **शिशिरनवरात्रारम्भः**, कलशस्थापनम्, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः।
०२ श.	४५।०२	रा. १२।२९	शत. २१।०९	दि. ०२।५६	शिवः ४७।४४	बा. १४।२२	कुम्भः	अहोरात्रम्	१०।००।५८।४१	२७।४०	६।२८	५।३२	२४	०१	१३	**पूर्वोदितो बृहस्पतिः** ५३।५५, **विष्णुपदीसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** दिवा घं. १२ यावद्दिने, **पुण्याहः**, चन्द्रदर्शनम्. ३० समशृङ्गफलं साम्यम्, रेमन्तपूजा, माघस्नानसमाप्तिः, प्रयागे कल्पवाससमाप्तिः।
०३ र.	४७।३५	रा. ०१।२९	पूभा. २४।३९	दि. ०४।१९	सिद्धः ४६।५२	तै. १६।१८	कुं. ०८।४७	दि. ०९।५८	१०।०१।५९।३०	२७।४३	६।२७	५।३३	२५	०२	१४	मासादिः, बदरीतृतीया, कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनम्, द.ति. ४७।३५ उपरि। ☆ पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०८।४५ उपरि, पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्याम्।
०४ चं.	५१।१८	रा. ०२।५८	उभा. २९।१४	सं. ०६।०९	साध्यः ४६।५३	व. १९।२६	मीनः	अहोरात्रम्	१०।०३।००।१९	२७।४६	६।२७	५।३३	२६	०३	१५	**गणेश ४ व्रतम्**, **द्विरागमनं** पश्चिमोत्तरयात्रा च पञ्चम्याम्, द.ति. ५१।१८ यावत्, भ. १९।२६ उपरि ५१।१८ यावत्।
०५ मं.	५५।५१	रा. ०४।४६	रेवती ३४।४८	रा. ०८।४५	शुभः ४७।३५	ब. २३।३४	मी. ३४।४८	रा. ०८।२१	१०।०४।००।५८	२७।५०	६।२६	५।३४	२७	०४	१६	**पुष्टो बृहस्पतिः शुद्धारम्भश्च** ५३।५५ उपरि, **पूर्वोदितो बुधः** ४५।५२, गं. २२।४८ उपरि ३७।४८ यावत्, **वसन्त ५** सरस्वत्यवतारः, श्रीसरस्वतीपूजनम्, हलपञ्चमी, हलपूजनम्, पश्चिमाभिमुखहलप्रवाहः, ☆
०६ बु.	६०।००	अहोरात्रम्	अश्वि. ४१।०४	रा. १०।५१	शुक्लः ४८।४७	कौ. २८।२७	मेषः	अहोरात्रम्	१०।०५।०१।३६	२७।५४	६।२५	५।३५	२८	०५	१७	त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, सरस्वतीविसर्जनम्, **कर्णवेधः**, **विवाहो द्विरागमनम्** उत्तरां विना यात्रा चाश्विन्याम्।
०६ बृ.	०१।०३	दि. ०६।४९	भर. ४७।३९	रा. ०१।२८	ब्रह्मः ५०।१४	तै. ०१।०३	मेषः	अहोरात्रम्	१०।०६।०२।१४	२७।५८	६।२४	५।३६	२९	०६	१८	गजपूजा, बिल्वाभिमन्त्रणम्। ✪ अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमं गङ्गायां शतसूर्यग्रहणसमं प्रयागे कोटिसूर्यग्रहणसमफलदम्, सूर्यपूजनम्, ब्रह्मसावर्णिमन्वादिः, **शनिवेधाद्रोहिण्यां नैव विवाहः।**
०७ शु.	०६।२५	दि. ०८।५८	कृत्ति. ५४।०६	रा. ०४।४६	ऐन्द्रः ५१।३४	व. ०६।२५	मे. ०४।१६	दि. ०८।०६	१०।०७।०२।५२	२८।०२	६।२४	५।३६	३०	०७	१९	**शतभिषायां रविः** २१।२३, **कुम्भे शुक्रः** ३८।२४, भ. ०६।२५ उपरि ३९।०१ यावत्, **द्विरागमनं** पूर्वदक्षिणयात्रा च रोहिण्याम्, पत्रिकाप्रवेशः, **महारात्रिर्निशापूजा**, **अचलासप्तमी**, रथसप्तमी, विधानसप्तमी, ✪
०८ श.	११।३६	दि. ११।०१	रोहिणी६०।००	अहोरात्रम्	वैधृतिः५२।३१	ब. ११।३६	वृषः	अहोरात्रम्	१०।०८।०३।३०	२८।०६	६।२३	५।३७	०१	०८	२०	**मार्गी बुधः** १८।४४, **महाष्टमीव्रतम्**, **दीक्षाग्रहणम्**, भीष्माष्टमी, भीष्मतर्पणम् (ब्राह्मणैः पितृतर्पणोत्तरम्, क्षत्रियादिभिः पितृतर्पणात्पूर्वमेव भीष्मतर्पणं कर्त्तव्यम्), दक्षिणयात्रा।
०९ र.	१६।०८	दि. १२।४९	रोहिणी००।०३	दि. ०६।२३	विष्क. ५२।५१	कौ. १६।०८	वृ. ३२।३८	रा. ०७।२५	१०।०९।०४।०८	२८।०९	६।२२	५।३८	०२	०९	२१	**क्षीणः शुक्रः अशुद्धारम्भश्च** ३७।५९ उपरि, **महानवमीव्रतम्**, **विवाहो द्विरागमनञ्च** दशम्यां रात्रौ घं. ०९।३४ यावत् ततः **प्रथमाब्दीयद्विरागमनम्**, पश्चिमां विना यात्रा दशम्याम्, (१०) एकोद्दिष्टम्।
१० चं.	१९।४५	दि. ०२।१६	मृग. ०५।१४	दि. ०८।२८	प्रीतिः ५२।१९	ग. १९।४५	मिथुनम्	अहोरात्रम्	१०।१०।०४।४६	२८।१२	६।२२	५।३८	०३	१०	२२	विजया १०, देवीविसर्जनम्, नवरात्रव्रतपारणम्, कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयप्रतिष्ठादिनम्, **मुण्डनं कर्णवेधः प्रथमाब्दीयद्विरागमनं** पूर्वां विना यात्रा च मृगशिरसि, भ. ५१।०० उपरि।
११ मं.	२२।१४	दि. ०३।०३	आर्द्रा ०९।१६	दि. १०।०३	आयु. ५०।५६	वि. २२।१४	मि. ५६।२५	रा. ०४।५५	१०।११।०५।१०	२८।१६	६।२१	५।३९	०४	११	२३	**भैमी ११ व्रतं** सर्वेषाम्, पश्चिमदक्षिणयात्रा द्वादश्यां मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा, भ. २२।१४ यावत्, (११) एकोद्दिष्टम्।
१२ बु.	२३।२६	दि. ०३।४२	पुन. १२।०८	दि. ११।११	सौभा. ४८।३०	बा. २३।२६	कर्कः	अहोरात्रम्	१०।१२।०५।३४	२८।२०	६।२०	५।४०	०५	१२	२४	**पूर्वास्तः शुक्रः** ३७।५९, **वृषे मङ्गलः** ३२।२९, गोदुग्धेन पारणम्, माधव १२, प्रदोष १३ व्रतम्, **कर्णवेधः**, **प्रथमाब्दीयद्विरागमनं** द्वादश्याम्, **मुण्डनं** त्रयोदश्याम्, पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा द्वादश्याम्।
१३ बृ.	२३।२०	दि. ०३।३९	पुष्यः १३।४४	दि. ११।४९	शोभ. ४५।०५	तै. २३।२०	कर्कः	अहोरात्रम्	१०।१३।०५।५८	२८।२४	६।१९	५।४१	०६	१३	२५	प्रदोष १४ व्रतम्, **मुण्डनं कर्णवेधः प्रथमाब्दीयद्विरागमनं** दक्षिणां विना यात्रा च पुष्ये।
१४ शु.	२१।५८	दि. ०३।०५	श्ले. १४।०७	दि. ११।५७	अगं. ४०।४१	व. २१।५८	क. १४।०७	दि. ११।५७	१०।१४।०६।२२	२८।२८	६।१८	५।४२	०७	१४	२६	भ. २१।५८ उपरि ५०।४२ यावत्, गं. ०३।०७ उपरि १८।०७ यावत्।
१५ श.	१९।२५	दि. ०२।०४	मघा १३।१९	दि. १०।३८	सुकर्मा३५।२५	ब. १९।३५	सिंहः	अहोरात्रम्	१०।१५।०६।४६	२८।३२	६।१८	५।४२	०८	१५	२७	माघी १५ स्नानदानादिः, मघायुक्ता पूर्णिमा महामाघी स्नानदानादावतीवपुण्यदा, गोशालाघट्टे कमलायां जीवछघट्टे जीववत्सायां स्नादानशिवार्चनादिकम्, **श्रीरविदासजयन्ती**, उत्तरयात्रा प्रतिपदि।

तिथयः दिनानि	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	दैनिकलग्नसारिणीचक्रम् — मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ शु.	००।२३।१६।५९	०९।१७।३१।२६	०९।१९।५२।१५	०९।२०।५८।२७	०९।०९।४८।३१	०७।२४।४०।४०	४३।५०	११।०८	१३।०४	१५।१७	१७।३५	१९।५१	२२।०६	००।२३	०२।४०	०४।४५	०६।३१	०८।०२	०९।३१
०२ श.	००।२३।५०।४४	०९।१६।५०।०५	०९।२०।०६।३०	०९।२२।१४।०१	०९।०९।५५।४६	०७।२४।३७।२९	४३।५१	११।०४	१३।००	१५।१३	१७।३१	१९।४७	२२।०२	००।१९	०२।३६	०४।४१	०६।२७	०७।५८	०९।२७
०३ र.	००।२४।२४।२९	०९।१६।०८।४४	०९।२०।२०।४५	०९।२३।२९।३५	०९।१०।०३।०१	०७।२४।३४।१९	४३।५२	११।००	१२।५६	१५।०९	१७।२७	१९।४३	२१।५८	००।१५	०२।३२	०४।३७	०६।२३	०७।५४	०९।२३
०४ चं.	००।२४।५८।१४	०९।१५।२७।२३	०९।२०।३५।००	०९।२४।४५।०९	०९।१०।१०।१६	०७।२४।३१।०९	४३।५३	१०।५६	१२।५२	१५।०५	१७।२३	१९।३९	२१।५४	००।११	०२।२८	०४।३३	०६।१९	०७।५०	०९।१९
०५ मं.	००।२५।३२।१८	०९।१५।१६।५२	०९।२०।४८।५७	०९।२६।००।३८	०९।१०।१६।४०	०७।२४।२७।५८	४३।५५	१०।५३	१२।४९	१५।०२	१७।२०	१९।३६	२१।५१	००।०८	०२।२५	०४।३०	०६।१६	०७।४७	०९।१६
०६ बु.	००।२६।०६।२२	०९।१५।०६।२१	०९।२१।०२।५३	०९।२७।१६।०७	०९।१०।२३।०४	०७।२४।२४।४७	४३।५७	१०।४९	१२।४५	१४।५८	१७।१६	१९।३२	२१।४७	००।०४	०२।२१	०४।२६	०६।१२	०७।४३	०९।१२
०६ बृ.	००।२६।४०।२६	०९।१४।५५।५०	०९।२१।१६।४९	०९।२८।३१।३६	०९।१०।२९।२८	०७।२४।२१।३६	४३।५९	१०।४५	१२।४१	१४।५४	१७।१२	१९।२८	२१।४३	००।००	०२।१७	०४।२२	०६।०८	०७।३९	०९।०८
०७ शु.	००।२७।१४।३०	०९।१४।४५।१९	०९।२१।३०।४५	१०।००।०७।०४	०९।१०।३५।५२	०७।२४।१८।२५	४४।०१	१०।४१	१२।३७	१४।५०	१७।०८	१९।२४	२१।३९	२३।५६	०२।१३	०४।१८	०६।०४	०७।३५	०९।०४
०८ श.	००।२७।४८।३३	०९।१४।३४।४७	०९।२१।४४।४१	१०।०१।२२।३२	०९।१०।४२।१६	०७।२४।१५।१४	४४।०३	१०।३७	१२।३३	१४।४६	१७।०४	१९।२०	२१।३५	२३।५२	०२।०९	०४।१४	०६।००	०७।३१	०९।००
०९ र.	००।२८।२२।३६	०९।१४।४७।०४	०९।२१।५८।३७	१०।०२।३८।००	०९।१०।४८।४०	०७।२४।१२।०४	४४।०५	१०।३४	१२।३०	१४।४३	१७।०१	१९।१७	२१।३२	२३।४९	०२।०६	०४।११	०५।५७	०७।२८	०८।५७
१० चं.	००।२८।५६।३९	०९।१४।५९।२१	०९।२२।१२।३३	१०।०३।३३।२८	०९।१०।५५।०३	०७।२४।०८।५४	४४।०६	१०।३०	१२।२६	१४।३९	१६।५७	१९।१३	२१।२८	२३।४५	०२।०२	०४।०७	०५।५३	०७।२४	०८।५३
११ मं.	००।२९।३१।३५	०९।१५।३६।५४	०९।२२।२६।३१	१०।०४।४८।४५	०९।११।०१।३४	०७।२४।०५।४३	४४।०८	१०।२६	१२।२२	१४।३५	१६।५३	१९।०९	२१।२४	२३।४१	०१।५८	०४।०३	०५।४९	०७।२०	०८।४९
१२ बु.	०१।००।०६।३१	०९।१६।१४।२७	०९।२२।४०।२८	१०।०६।०४।०२	०९।११।०८।०५	०७।२४।०२।३२	४४।१०	१०।२२	१२।१८	१४।३१	१६।४९	१९।०५	२१।२०	२३।३७	०१।५४	०३।५९	०५।४५	०७।१६	०८।४५
१३ बृ.	०१।००।४१।२६	०९।१६।५२।००	०९।२२।५४।२५	१०।०७।१९।१९	०९।११।१४।३६	०७।२३।५९।२१	४४।१२	१०।१८	१२।१४	१४।२७	१६।४५	१९।०१	२१।१६	२३।३३	०१।५०	०३।५५	०५।४१	०७।१२	०८।४१
१४ शु.	०१।०१।१६।२१	०९।१७।२९।३३	०९।२३।०८।२२	१०।०८।३४।३६	०९।११।२१।०६	०७।२३।५६।१०	४४।१४	१०।१५	१२।११	१४।२४	१६।४२	१८।५८	२१।१३	२३।३०	०१।४७	०३।५२	०५।३८	०७।०९	०८।३८
१५ श.	०१।०१।५१।१६	०९।१८।०७।०६	०९।२३।२२।१९	१०।०९।४९।५३	०९।११।२७।३६	०७।२३।५२।५९	४४।१६	१०।११	१२।०७	१४।२०	१६।३८	१८।५४	२१।०९	२३।२६	०१।४३	०३।४८	०५।३४	०७।०५	०८।३४

४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।३९।५६
अयनांशाः २२।४९।३८



१० चन्द्रे वल्ली ८।३९।४०।०३
अयनांशाः २२।४९।३९



विविधविषयाः—अचलासप्तम्यां सप्तार्कबदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र स्नानमन्त्रः— यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि हर माकरि सप्तमि।। **ततः सूर्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः**—सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। **ततः प्रणमेच्च तन्मन्त्रः**—जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमूर्त्तये।। ततो दानादिकं कुर्यात्। **अष्टम्यां भीष्मतर्पणमन्त्रः**—वैयाघ्रपादगोत्राय साङ्कृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे।। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन सन्ततिलाभः सम्वत्सरकृतपापक्षयश्च। **चत्वारिंशत् संस्कारा गौतमधर्मसूत्रे**— गर्भाधान—पुंसवन—सीमन्तोन्नयन—जातकर्म—नामकरण—अन्नप्राशन—चूडाकरण—उपनयन—वेदव्रत (महानाम्नीव्रत—महाव्रत—उपनिषद्व्रत—गोदानव्रतानि)—समावर्त्तन—विवाह—पञ्चमहायज्ञ (ब्रह्म—देव—पितृ—भूत—नृयज्ञाः)—सप्तपाकयज्ञ(अष्टका—पार्वण—श्राद्ध—श्रावण्याग्रहायणीचैत्र्याश्विनीपूर्णिमाः)—सप्तहविर्यज्ञ (अग्न्याधान—अग्निहोत्र—दर्शपौर्णमास—चातुर्मास्यान्यग्रयणेष्टि—निरूढपशुबन्ध—सौत्रामणयः)—सप्तसोमयज्ञ (अग्निष्टोम—अत्यग्निष्टोम—उक्थ्य—षोडशी—वाजपेय—अतिरात्र—आप्तोर्यामाः)। **अष्टौ आत्मगुणास्तत्रैव**— दयासर्वभूतेषु क्षान्तिरनसूया शौचमनायासो मङ्गलमकार्पण्यमस्पृहेति। **एतयोः संस्कारात्मगुणयोः फलन्तत्रैव**— यस्यैते चत्वारिंशत् संस्कारा न चाष्टावात्मगुणा न स ब्रह्मणः सायुज्यं सालोक्यञ्च गच्छति। यस्य तु संस्काराणामेकदेशोऽप्यष्टावात्मगुणाः स ब्रह्मणः सायुज्यं सालोक्यञ्च गच्छति।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ५ तः पूर्वोदितः ८ तो मार्गी, मार्गी पश्चिमास्तो बृहस्पतिः २ तः पूर्वोदितः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः १२ तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः मेघचारच्छिन्नवृष्टिवातादयस्तन्मध्यभागे वातमेघचारादयः।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क २८।०२।२०२१ ई. तः दिनाङ्क १३।०३।२०२१ ई. यावत्।
अशुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ र.	१५।५५	दि. १२।३९	पूफ. ११।३२	दि. १०।५४	धृतिः २९।२५	कौ. १५।५५	सिं. २५।५२	दि. ०४।३८	१०।२६।०७।०९	२८।३६	६।२७	५।४३	०९	१६	२८
०२ चं.	११।३१	दि. १०।५२	उफ. ०८।५२	दि. ०९।५४	शूलः २२।४७	ग. ११।३१	कन्या	अहोरात्रम्	१०।२७।०७।३२	२८।४०	६।२६	५।४४	१०	१७	०१
०३ मं.	०६।२८	दि. ०८।५०	हस्तः ०५।३४	दि. ०८।२९	गण्डः १५।३४	वि. ०६।२८	कं. ३३।४०	रा. ०७।४३	१०।२८।०७।४५	२८।४४	६।२५	५।४५	११	१८	०२
०४ बु.	००।५४	दि. ०६।३६	चित्रा ०१।४६	दि. ०६।५६	वृद्धिः ०८।००	बा. ००।५४	तुला	अहोरात्रम्	१०।२९।०७।५७	२८।४८	६।२४	५।४६	१२	१९	०३
०६ बृ.	४९।०१	रा. ०१।५०	विशा.५३।२९	रा. ०३।३८	ध्रुवः ००।२५	ग. २२।००	तु. ३९।३२	रा. १०।०३	१०।२०।०८।०९	२८।५२	६।२४	५।४६	१३	२०	०४
०७ शु.	४३।०९	रा. ११।२९	अनु. ४९।२७	रा. ०२।००	हर्षणः ४४।४०	वि. १६।०५	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	१०।२१।०८।२१	२८।५६	६।२३	५।४७	१४	२१	०५
०८ श.	३७।३७	रा. ०९।२५	ज्ये. ४५।४६	रा. १२।३०	वज्रः ३७।२२	बा. १०।२३	वृ. ४५।४६	रा. १२।३०	१०।२२।०८।३३	२९।००	६।२२	५।४८	१५	२२	०६
०९ र.	३२।३४	रा. ०७।२३	मूलम् ४२।३५	रा. ११।२३	सिद्धिः ३०।२०	तै. ०५।०५	धनुः	अहोरात्रम्	१०।२३।०८।४५	२९।०४	६।२१	५।४९	१६	२३	०७
१० चं.	२८।२५	सं. ०५।२८	पूषा. ४०।२३	रा. १०।२५	व्य. २३।४१	व. ००।२४	ध. ५४।४९	रा. ०४।०६	१०।२४।०८।५७	२९।०८	६।२०	५।५०	१७	२४	०८
११ मं.	२४।४५	दि. ०४।०४	उषा. ३८।३९	रा. ०९।३८	वरी. १७।५२	बा. २४।४५	मकरः	अहोरात्रम्	१०।२५।०८।५४	२९।२२	६।२०	५।५०	१८	२५	०९
१२ बु.	२२।२७	दि. ०३।०४	श्रव. ३८।०८	रा. ०९।००	परिघः १७।५२	तै. २२।२७	मकरः	अहोरात्रम्	१०।२६।०८।५१	२९।२६	६।०९	५।५१	१९	२६	१०
१३ बृ.	२१।००	दि. ०२।३२	धनि. ३८।४९	रा. ०९।४०	शिवः ०८।४९	व. २१।००	म. ०८।२८	दि. ०९।३१	१०।२७।०८।४८	२९।२०	६।०८	५।५२	२०	२७	११
१४ शु.	२०।५९	दि. ०२।३१	शत. ४०।४६	रा. १०।२५	सिद्धः ०५।४३	श. २०।५९	कुम्भः	अहोरात्रम्	१०।२८।०८।४५	२९।२४	६।०७	५।५३	२१	२८	१२
३० श.	२२।२८	दि. ०३।०२	पूभा. ४३।५८	रा. ११।४६	साध्यः ०३।४०	ना. २२।२८	कुं. २८।२०	सं. ०५।२३	१०।२९।०८।४२	२९।२८	६।०७	५।५३	२२	२९	१३

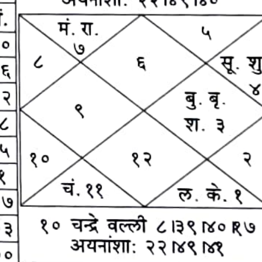
फाल्गुने वाङ्मतीस्नानं महापुण्यप्रदम्, **प्रथमाब्दीयद्विरागमनमुत्तरफल्गुन्याम्**, (१–२) एकोद्दिष्टम्।
मार्च ३, मुण्डनं कर्णवेधः प्रथमाब्दीयद्विरागमनं दक्षिणयात्रा च तृतीयायाम्, भ. ३९।०० उपरि।
हेरम्ब ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०९।०२, पूर्वदक्षिणयात्रा तृतीयायाम्, द.ति. ०६।२८ उपरि, भ. ०६।२८ यावत्।
पञ्चमीदं. ५४।०६, स्वातीदं. ५५।५६, द.ति. ००।५४ यावत्, **मुण्डनं पञ्चम्याम्, कर्णवेधः पञ्चम्यां चित्रायाम्, द्विरागमनं पञ्चमीचित्रास्वातीषु**, पश्चिमदक्षिणयात्रा पञ्चमीषष्ठीचित्रास्वातीषु।
पूर्वभाद्रे रविः ३६।२९, व्याघातदं. ५२।०८, भ. ४९।०१ उपरि, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्।
उत्तरयात्राष्टम्याम्, भ. १६।०५ यावत्।
अष्टकाश्राद्धम्, शनियुताऽष्टमी स्नानदानादौ पुण्यतमा, पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा, गं. ३९।४६ उपरि ५४।४६ यावत्।
अन्वष्टकाश्राद्धम्, पूर्वोत्तरयात्रा दशम्याम्।
उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, भ. ००।२४ उपरि २८।२५ यावत्।
विजया ११ व्रतं सर्वेषाम्, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम्।
कुम्भे बुधः ३६।३३, गोदध्ना पारणम्, प्रदोष १३ व्रतम्, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. ०९।०० उपरि, उत्तरां विना यात्रा द्वादश्याम्।
प्रदोष १४ व्रतम्, नक्तव्रतम्, **महाशिवरात्रिव्रतं** प्रदोषे घं. ०७।२८ यावद्रात्रौ शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदम्, गौरीशङ्करविवाहोत्सवः, रावणेश्वरवैद्यनाथसिंहेश्वरनाथयोः प्रतिष्ठादिनम्, सिंहेश्वरमेलापकः, ✪
श्रीशिवदर्शनम्। ✪ पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा त्रयोदश्याम्, भ. २१।०० उपरि ५१।०० यावत्।
शनैश्चरी ३०, गोसहस्रिका ३० स्नानदानादिः, मासान्तः।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च						
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ र.	०१।०२।२६।२१	०९।२८।४४।३८	०९।२३।३६।२६	१०।२१।०५।२०	०९।२१।३४।०६	०७।२३।४९।४९	४४।२८
०२ चं.	०१।०३।०१।०६	०९।२९।२२।२०	०९।२३।५०।२३	१०।२२।२०।२७	०९।२१।४०।३६	०७।२३।४६।३९	४४।२०
०३ मं.	०१।०३।३६।०८	०९।२०।३०।२२	०९।२४।०४।०२	१०।२३।३५।५०	०९।२१।४६।५०	०७।२३।४३।२८	४४।२२
०४ बु.	०१।०४।२१।२०	०९।२१।३८।२४	०९।२४।२७।५१	१०।२४।५१।२३	०९।२१।५३।०४	०७।२३।४०।२७	४४।२४
०६ बृ.	०१।०४।४६।२२	०९।२२।४६।२६	०९।२४।३१।४०	१०।२६।०६।३६	०९।२१।५९।२८	०७।२३।३७।०६	४४।२६
०७ शु.	०१।०५।२१।२४	०९।२३।५४।२८	०९।२४।४५।२९	१०।२७।२१।५९	०९।२२।०५।३२	०७।२३।३३।५५	४४।२८
०८ श.	०१।०५।५६।२५	०९।२५।०२।२०	०९।२४।५९।२८	१०।२८।३७।२१	०९।२२।२१।४६	०७।२३।३०।४४	४४।३०
०९ र.	०१।०६।३१।२६	०९।२६।२०।२२	०९।२५।२२।०६	१०।२९।५२।४३	०९।२२।२८।००	०७।२३।२७।३३	४४।३२
१० चं.	०१।०७।०६।२७	०९।२७।२८।२४	०९।२५।२६।५४	१०।२१।०८।०५	०९।२२।२४।२३	०७।२३।२४।२३	४४।३४
११ मं.	०१।०७।४१।४५	०९।२८।४५।०२	०९।२५।४०।२२	१०।२२।२३।०९	०९।२२।३०।२८	०७।२३।२१।२२	४४।३६
१२ बु.	०१।०८।२७।२३	१०।००।२१।४०	०९।२५।५३।५०	१०।२३।३८।२३	०९।२२।३६।२३	०७।२३।२८।०१	४४।३८
१३ बृ.	०१।०८।५२।४१	१०।०१।३८।२७	०९।२६।०७।२८	१०।२४।५३।२७	०९।२२।४२।२८	०७।२३।२४।५०	४४।४०
१४ शु.	०१।०९।२८।०८	१०।०३।०४।५४	०९।२६।२०।४६	१०।२६।०८।२१	०९।२२।४८।३३	०७।२३।२१।३९	४४।४२
३० श.	०१।२०।०३।३५	१०।०४।३१।३१	०९।२६।३४।२३	१०।२७।२३।२५	०९।२२।५४।३८	०७।२३।०८।२८	४४।४४

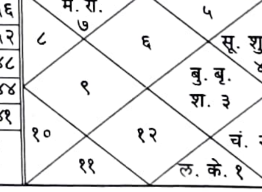
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
४४।२८	१०।०७	१२।०३	१४।२६	१६।३४	१८।५०	२१।०५	२३।२२	०१।३९	०३।४४	०५।३०	०७।०१	०८।३०
४४।२०	१०।०३	११।५९	१४।२२	१६।३०	१८।४६	२१।०१	२३।२८	०१।३५	०३।४०	०५।२६	०६।५७	०८।२६
४४।२२	०९।५९	११।५५	१४।०८	१६।२६	१८।४२	२०।५७	२३।२४	०१।३१	०३।३६	०५।२२	०६।५३	०८।२२
४४।२४	०९।५५	११।५१	१४।०४	१६।२२	१८।३८	२०।५३	२३।२०	०१।२७	०३।३२	०५।२८	०६।४९	०८।२८
४४।२६	०९।५२	११।४८	१४।०१	१६।२९	१८।३५	२०।५०	२३।०७	०१।२४	०३।२९	०५।२५	०६।४६	०८।२५
४४।२८	०९।४८	११।४४	१३।५७	१६।२५	१८।३१	२०।४६	२३।०३	०१।२०	०३।२५	०५।२१	०६।४२	०८।२१
४४।३०	०९।४४	११।४०	१३।५३	१६।२१	१८।२७	२०।४२	२२।५९	०१।२६	०३।२१	०५।०७	०६।३८	०८।०७
४४।३२	०९।४०	११।३६	१३।४९	१६।०७	१८।२३	२०।३८	२२।५५	०१।२२	०३।२७	०५।०३	०६।३४	०८।०३
४४।३४	०९।३७	११।३३	१३।४६	१६।०४	१८।२०	२०।३५	२२।५२	०१।०९	०३।२४	०५।००	०६।३१	०८।००
४४।३६	०९।३३	११।२९	१३।४२	१६।००	१८।२६	२०।३१	२२।४८	०१।०५	०३।२०	०४।५६	०६।२७	०७।५६
४४।३८	०९।२९	११।२५	१३।३८	१५।५६	१८।२२	२०।२७	२२।४४	०१।०१	०३।०६	०४।५२	०६।२३	०७।५२
४४।४०	०९।२५	११।२१	१३।३४	१५।५२	१८।०८	२०।२३	२२।४०	००।५७	०३।०२	०४।४८	०६।२९	०७।४८
४४।४२	०९।२१	११।२७	१३।३०	१५।४८	१८।०४	२०।२९	२२।३६	००।५३	०२।५८	०४।४४	०६।२५	०७।४४
४४।४४	०९।२८	११।२४	१३।२७	१५।४५	१८।०१	२०।२६	२२।३३	००।५०	०२।५५	०४।४१	०६।२२	०७।४१

२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४०।२०
अयनांशा: २२।४९।४०



१० चन्द्रे वल्ली ८।३९।४०।२७
अयनांशा: २२।४९।४१



विविधविषयाः—माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्माद्रिखण्डे—माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः॥ शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता॥ **तथा च**—उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः॥ वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्॥ **गङ्गासागरसङ्गमस्नानमन्त्रः**—त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे। उभयोः सङ्गमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै॥ **समुद्रस्नानमन्त्रः**—त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः॥ अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते॥ **गङ्गास्नानमन्त्रः**—ब्रह्मस्वरूपे हे गङ्गे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव॥ **गङ्गामाहात्म्यं विष्णुपुराणे**—गङ्गा गङ्गेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्॥ **पुनश्च**—इदं हि गाङ्गं त्यजतामिहाङ्गं पुनर्न चाङ्गं यदि वापि चाङ्गम्। याने विहङ्गं शयने भुजङ्गं करे रथाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम्॥ **पितृकृत्यमहत्त्वमाह मनुः**—राजतैर्भाजनैरेषामथो वा राजतान्वितैः। वार्यपि श्रद्धया दत्तमक्षयायोपकल्पते॥ देवकार्याद् द्विजातीनां पितृकार्यं विशिष्यते। दैवं हि पितृकार्यस्य पूर्वमाप्यायनं श्रुतम्॥ **उशना**—आपो देवगणाः सर्व आपः पितृगणाः स्मृताः। तस्मादप्सु जलं देयं पितृणां दत्तमक्षयम्॥ **गृहस्थाश्रममहत्त्वमाह मनुः**—यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः। तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः॥ यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनान्नेन चान्वहम्। गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही॥ **गौतमधर्मसूत्रे**—तेषां गृहस्थो योनिरप्रजनत्वादितरेषाम्। ऐकाश्रम्यं त्वाचार्याः प्रत्यक्षविधानाद् गार्हस्थ्यस्य गार्हस्थ्यस्य।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पश्चाद्यन्तभागयोः झञ्झावातोपलपातमेघचारादयस्तन्मध्यभागे वातातपमेघच्छायादयः।

फाल्गुनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क १४।०३।२०२१ ई. तः दिनाङ्क २८।०३।२०२१ ई. यावत्।
अशुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।

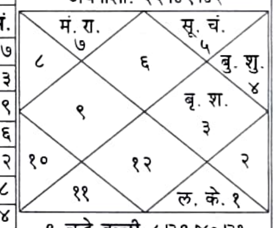
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
०१ र.	२४।५०	दि. ०४।०२	उभा. ४८।१७	रा. ०१।२५	शुभः ०२।३७	ब. २४।५०	मीनः	अहोरात्रम्	११।००।०८।३९	२९।३२	६।०६	५।५४	२३	०१	१४	**मीने रविः** ३६।०७ मु. ४५ फलं समर्घम्, **षडशीतिसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** दिवा घं. १२ उपरि दिने, **पुण्याहः**, द.ति. ३६।०७ उपरि, कल्याणेश्वरजनकपुरस्य वृहतीपरिक्रमारम्भः, श्रीरामकृष्णजयन्ती, ✪
०२ चं.	२८।३२	सं. ०५।३०	रेवती ५३।४४	रा. ०३।३५	शुक्लः०२।२७	कौ. २८।३२	मी. ५३।४४	रा. ०३।३५	११।०१।०८।३६	२९।३६	६।०५	५।५५	२४	०२	१५	**मीने शुक्रः** ४९।५८, मासादिः, चन्द्रदर्शनमु. ३० याम्यशृङ्गफलं महार्घम्, पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०३।३५ उपरि, द.ति. २८।३२ यावत्, गं. ४१।४४ उपरि ५६।४४ यावत्।
०३ मं.	३३।०८	रा. ०७।१९	अश्वि. ५९।४८	रा. ०५।५९	ब्रह्म: ०३।०४	तै. ००।५०	मेषः	अहोरात्रम्	११।०२।०८।१८	२९।४०	६।०४	५।५६	२५	०३	१६	उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्। ✪ विस्फोटकादिभयव्याधिनाशाय घटे स्नुहीमूले वा **घण्टाकर्णपूजा**, तन्मन्त्रश्च—घण्टाकर्ण ! महावीर ! सर्वव्याधिविनाशन। विस्फोटकभये प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल॥
०४ बु.	३८।१७	रा. ०९।२२	भर. ६०।००	अहोरात्रम्	ऐन्द्रः ०४।१२	व. ०५।४२	मेषः	अहोरात्रम्	११।०३।०८।००	२९।४४	६।०३	५।५७	२६	०४	१७	**उत्तरभाद्रे रविः** ५६।५६, **गणेश** ४ व्रतम्, भ. ०५।४२ उपरि ३८।१७ यावत्।
०५ बृ.	४३।३७	रा. ११।२९	भर. ०६।२१	दि. ०८।३४	वैधृतिः ०५।४०	ब. १०।५७	मे. २२।५९	दि. ०३।१४	११।०४।०७।४२	२९।४८	६।०२	५।५८	२७	०५	१८	शकुनम्—फाल्गुने शुक्लसप्तम्यां पूर्णिमायाञ्च निर्जला। निर्व्वाताः सतडिन्मेघाः सुभिक्षं सूचयन्ति हि॥
०६ शु.	४८।४१	रा. ०१।३०	कृत्ति. १२।५२	दि. ११।११	विष्क. ०७।०९	कौ. १६।०९	वृषः	अहोरात्रम्	११।०५।०७।२४	२९।५२	६।०२	५।५८	२८	०६	१९	पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां षष्ठ्याम्।
०७ श.	५३।०६	रा. ०३।१५	रोहिणी १९।००	दि. ०१।३७	प्रीतिः०८।१६	ग. २०।५३	वृ. ५१।४१	रा. ०२।४१	११।०६।०७।०५	२९।५६	६।०१	५।५९	२९	०७	२०	दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि, भ. ५३।०६ उपरि।
०८ र.	५६।३२	रा. ०४।३७	मृग. २४।२३	दि. ०३।४५	आयु. ०८।५३	वि. २४।४९	मिथुनम्	अहोरात्रम्	११।०७।०६।४६	३०।००	६।००	६।००	३०	०८	२१	पश्चिमां विना यात्रा मृगशिरसि, भ. २४।४९ यावत्।
०९ चं.	५८।५२	रा. ०५।३२	आर्द्रा २८।३८	सं. ०५।१४	सौभा. ०८।४१	बा. २७।४२	मिथुनम्	अहोरात्रम्	११।०८।०६।२७	३०।०४	५।५९	६।०१	०१	०९	२२	**पूर्वास्तो बुधः** ३५।३१, पश्चिमदक्षिणयात्रा दशम्याम्।
१० मं.	५९।५५	रा. ०५।५६	पुन. ३१।५१	रा. ०६।४२	शोभ. ०७।३९	तै. २९।२३	मि. १६।०३	दि. १२।२३	११।०९।०५।५४	३०।०८	५।५८	६।०२	०२	१०	२३	पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा दशम्याम्।
११ बु.	५९।३९	रा. ०५।५०	पुष्यः ३३।४४	रा. ०७।२८	अगं. ०५।३३	व. २९।४७	कर्कः	अहोरात्रम्	११।१०।०५।२१	३०।१२	५।५८	६।०२	०३	११	२४	**आमलकी ११ व्रतं** स्मार्त्तानाम्, **जनकपुरस्य लघ्वी परिक्रमारम्भः**, उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, भ. २९।४७ उपरि ५९।३९ यावत्।
१२ बृ.	५८।०९	रा. ०५।१३	श्ले. ३४।२२	रा. ०७।४२	सुकर्मा०२।२८	ब. २८।५४	क. ३४।२२	सं. ०७।४२	११।११।०४।४७	३०।१६	५।५७	६।०३	०४	१२	२५	गोदध्ना पारणम्, गोविन्द १२, **आमलकी ११ व्रतं** वैष्णवानाम्, समुद्रस्नानं जगन्नाथदर्शनञ्च, धृतिदं. ५५।५७, गं. २३।२२ उपरि ३८।२२ यावत्।
१३ शु.	५५।२८	रा. ०४।०७	मघा ३३।४९	रा. ०७।२८	शूलः ५३।२८	कौ. २६।४८	सिंहः	अहोरात्रम्	११।१२।०४।१३	३०।२०	५।५६	६।०४	०५	१३	२६	प्रदोष १३ व्रतम्, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
१४ श.	५१।४७	रा. ०२।३८	पूफ. ३२।१३	रा. ०६।४८	गण्डः ४७।४३	ग. २३।३८	सिं. ४६।३७	रा. १२।३४	११।१३।०३।३९	३०।२४	५।५५	६।०५	०६	१४	२७	प्रदोष १४ व्रतम्, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्, भ. ५१।४७ उपरि।
१५ र.	४७।१९	रा. १२।५०	उफ. २९।४८	सं. ०५।४९	वृद्धिः ४१।१६	वि. १९।३३	कन्या	अहोरात्रम्	११।१४।०३।०५	३०।२८	५।५४	६।०६	०७	१५	२८	फाल्गुनी १५ स्नानदानादिः, **मीने बुधः** ५७।१३, भ. १९।३३ यावत्, **होलिकादाहः प्रदोषे घं. ०६।०६ तः घं. ०७।४२ सायं यावत्**, कुलदेवतादिभ्यः सिन्दूरार्पणम् **(पातरिदानम्)**, चैतन्यजयन्ती, ☆

☆ सार्वर्णिमन्वादिः, जनकपुरस्यान्तर्गृहीयपरिक्रमा तत्समाप्तिश्च।

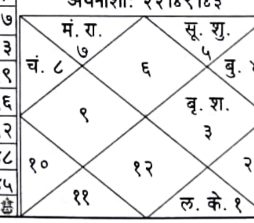
तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च						
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ र.	०१।१०।३९।०२	१०।०५।५८।०८	०९।२६।४७।४०	१०।२८।३८।२९	०९।१३।००।४२	०७।२३।०५।१८	४४।४६
०२ चं.	०१।११।१४।२९	१०।०७।२४।४५	०९।२७।०१।०७	१०।२९।५३।३२	०९।१३।०६।४६	०७।२३।०२।०८	४४।४८
०३ मं.	०१।११।५०।१२	१०।०९।०३।५२	०९।२७।१४।०९	११।०१।०८।४२	०९।१३।१२।५७	०७।२२।५८।५७	४४।५०
०४ बु.	०१।१२।२५।५५	१०।१०।४२।५९	०९।२७।२७।११	११।०२।२३।५१	०९।१३।१९।०८	०७।२२।५५।४६	४४।५२
०५ बृ.	०१।१३।०१।३८	१०।१२।२२।०६	०९।२७।४०।१३	११।०३।३९।००	०९।१३।२५।१८	०७।२२।५२।३५	४४।५४
०६ शु.	०१।१३।३७।२०	१०।१४।०१।१२	०९।२७।५३।१४	११।०४।५४।०९	०९।१३।३१।२८	०७।२२।४९।२४	४४।५६
०७ श.	०१।१४।१३।०२	१०।१५।४०।१८	०९।२८।०६।१५	११।०६।०९।१८	०९।१३।३७।३८	०७।२२।४६।१३	४४।५८
०८ र.	०१।१४।४८।४४	१०।१७।१९।२४	०९।२८।१९।१६	११।०७।२४।२७	०९।१३।४३।४८	०७।२२।४३।०३	४५।००
०९ चं.	०१।१५।२४।२६	१०।१८।५८।३०	०९।२८।३२।१७	११।०८।३९।३६	०९।१३।४९।५८	०७।२२।३९।५३	४५।०२
१० मं.	०१।१६।००।१७	१०।२०।४५।१२	०९।२८।४४।५६	११।०९।५४।२४	०९।१३।५४।३९	०७।२२।३६।४२	४५।०४
११ बु.	०१।१६।३६।०८	१०।२२।३१।५४	०९।२८।५७।३५	११।११।०९।१२	०९।१३।५९।२०	०७।२२।३३।३१	४५।०६
१२ बृ.	०१।१७।११।५९	१०।२४।१८।३६	०९।२९।१०।१४	११।१२।२४।००	०९।१४।०४।००	०७।२२।३०।२०	४५।०८
१३ शु.	०१।१७।४७।५०	१०।२६।०५।१८	०९।२९।२२।५३	११।१३।३८।४८	०९।१४।०८।४०	०७।२२।२७।०९	४५।१०
१४ श.	०१।१८।२३।४१	१०।२७।५२।००	०९।२९।३५।३१	११।१४।५३।३६	०९।१४।१३।२०	०७।२२।२३।५८	४५।१२
१५ र.	०१।१८।५९।३२	१०।२९।३८।४२	०९।२९।४८।०९	११।१६।०८।२४	०९।१४।१८।००	०७।२२।२०।४८	४५।१४

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्											
मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
०९।१४	११।१०	१३।२३	१५।४१	१७।५७	२०।१२	२२।२९	००।४६	०२।५१	०४।३७	०६।०८	०७।३७
०९।१०	११।०६	१३।१९	१५।३७	१७।५३	२०।०८	२२।२५	००।४२	०२।४७	०४।३३	०६।०४	०७।३३
०९।०६	११।०२	१३।१५	१५।३३	१७।४९	२०।०४	२२।२१	००।३८	०२।४३	०४।२९	०६।००	०७।२९
०९।०३	१०।५९	१३।१२	१५।३०	१७।४६	२०।०१	२२।१८	००।३५	०२।४०	०४।२६	०५।५७	०७।२६
०८।५९	१०।५५	१३।०८	१५।२६	१७।४२	१९।५७	२२।१४	००।३१	०२।३६	०४।२२	०५।५३	०७।२२
०८।५५	१०।५१	१३।०४	१५।२२	१७।३८	१९।५३	२२।१०	००।२७	०२।३२	०४।१८	०५।४९	०७।१८
०८।५१	१०।४७	१३।००	१५।१८	१७।३४	१९।४९	२२।०६	००।२३	०२।२८	०४।१४	०५।४५	०७।१४
०८।४८	१०।४४	१२।५७	१५।१५	१७।३१	१९।४६	२२।०३	००।२०	०२।२५	०४।११	०५।४२	०७।११
०८।४४	१०।४०	१२।५३	१५।११	१७।२७	१९।४२	२१।५९	००।१६	०२।२१	०४।०७	०५।३८	०७।०७
०८।४०	१०।३६	१२।४९	१५।०७	१७।२३	१९।३८	२१।५५	००।१२	०२।१७	०४।०३	०५।३४	०७।०३
०८।३६	१०।३२	१२।४५	१५।०३	१७।१९	१९।३४	२१।५१	००।०८	०२।१३	०३।५९	०५।३०	०६।५९
०८।३३	१०।२९	१२।४२	१५।००	१७।१६	१९।३१	२१।४८	००।०५	०२।१०	०३।५६	०५।२७	०६।५६
०८।२९	१०।२५	१२।३८	१४।५६	१७।१२	१९।२७	२१।४४	००।०१	०२।०६	०३।५२	०५।२३	०६।५२
०८।२५	१०।२१	१२।३४	१४।५२	१७।०८	१९।२३	२१।४०	२३।५७	०२।०२	०३।४८	०५।१९	०६।४८
०८।२२	१०।१८	१२।३१	१४।४९	१७।०५	१९।२०	२१।३७	२३।५४	०१।५९	०३।४५	०५।१६	०६।४५

२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४०।२४
अयनांशा: २२।४९।४२



९ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४०।३१
अयनांशा: २२।४९।४३



विविधविषयाः—कृत्यमहार्णवे ब्रह्मपुराणीयो **गोविन्दद्वादशीयोगः**—फाल्गुनस्य सिते पक्षे कुम्भस्थे दिवसाधिपे। जीवे धनुषि संस्थे च शोभने रविवासरे॥ पुष्यर्क्षेण च संयुक्ता गोविन्दद्वादशी मता॥ गोविन्दद्वादशीं प्राप्य गच्छेच्छ्रीपुरुषोत्तमम्। विष्णुलोकमवाप्नोति मोक्षं गङ्गाम्बुमज्जनात्॥ **अत्र योगे गङ्गास्नानमन्त्रः**—महापातकसंज्ञानि यानि पापानि सन्ति मे। गोविन्दद्वादशीं प्राप्य तानि मे हर जाह्नवि॥ चिरकालसम्भवोऽयं योगः। **पूर्णिमायां होलिकादाहः**—तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत्। घृतैः किलकिलाशब्दैः तालशब्दैर्मनोरमः॥ तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः॥ अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां **ध्यायेत्तन्मन्त्रः**—असृमयावसन्तप्तैः कृत्वा त्वं होलि वालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव॥ ततो होलिकायै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रदीपयेत्। **तत्रदीपनमन्त्रः**—दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः॥ ततः परदिने **होलिकाभस्मधारणमन्त्रः**—वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव॥ **प्रयागे केशवपनफलम्**—किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि॥ केशानां यावतीसङ्ख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते॥ **स्थानविशेषमहत्त्वम्**—प्रयागे वपनं कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्। दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत्॥ **सुवर्णपवित्रीमहत्त्वम्**—अन्यानि च पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च। स्वर्णात्मकपवित्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ अभावे रजतादीनामपि।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ९ तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे वातातपमेघचारादयस्तदुत्तरार्द्धभागे मेघच्छायाझञ्झावातोपलपातादयः।

चैत्रकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९४२, संवत् २०७७, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क २९।०३।२०२१ ई. तः दिनाङ्क १२।०४।२०२१ ई. यावत्।
अशुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ चं.	४२।२१	रा. १०।४६	हस्तः २६।३९	दि. ०४।३४	ध्रुवः ३४।२६	बा. १४।४५	कं. ५४।४८	रा. ०३।४९	११।२५।०२।३१	३०।३२	५।५४	६।०६	०८	१६	२९
०२ मं.	३६।२९	रा. ०८।२९	चित्रा २२।५७	दि. ०३।०४	व्या. २६।५२	तै. ०९।२०	तुला	अहोरात्रम्	११।२६।०१।४२	३०।३६	५।५३	६।०७	०९	१७	३०
०३ बु.	३०।३३	सं. ०६।०५	स्वाती १८।५३	दि. ०१।२५	हर्षणः १९।२३	व. ०३।३१	तुला	अहोरात्रम्	११।२७।००।५३	३०।४०	५।५२	६।०८	१०	१८	३१
०४ बृ.	२४।३५	दि. ०३।४१	विशा. १४।४२	दि. ११।४४	वज्रः ११।२५	बा. २४।३५	तु. ००।४४	प्रा. ०६।०९	११।२८।००।०३	३०।४४	५।५१	६।०९	११	१९	०१
०५ शु.	१८।३७	दि. ०१।२७	अनु. १०।३८	दि. १०।०५	सिद्धिः ०३।४४	तै. १८।३७	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	११।२८।५९।२३	३०।४८	५।५०	६।२०	१२	२०	०२
०६ श.	१२।५९	दि. ११।०२	ज्ये. ०६।५१	दि. ०८।३४	वरी. ४९।०७	व. १२।५९	वृ. ०६।५१	दि. ०८।३४	११।२९।५८।२३	३०।५२	५।५०	६।२०	१३	२१	०३
०७ र.	०७।५५	दि. ०८।५९	मूलम् ०३।३२	दि. ०७।२४	परिघः ४२।३१	ब. ०७।५०	धनुः	अहोरात्रम्	११।२०।५७।३३	३०।५६	५।४९	६।२१	१४	२२	०४
०८ चं.	०३।३२	दि. ०७।२३	पूषा. ००।५७	प्रा. ०६।२१	शिवः ३६।३८	कौ. ०३।२२	ध. १५।३०	दि. १२।००	११।२१।५६।४३	३१।००	५।४८	६।२२	१५	२३	०५
०९ मं.	००।०१	प्रा. ०५।४७	श्रव. ५८।२७	रा. ०५।२०	सिद्धः ३१।३१	ग. ००।०१	मकरः	अहोरात्रम्	११।२२।५५।३८	३१।०४	५।४७	६।२३	१६	२४	०६
११ बु.	५६।२१	रा. ०४।२४	धनि. ५८।५३	रा. ०५।२९	साध्यः २७।२४	ब. २६।५०	म. २८।४१	सं. ०५।२४	११।२३।५४।३३	३१।०८	५।४६	६।२४	१७	२५	०७
१२ बृ.	५६।०७	रा. ०४।२३	शत. ६०।००	अहोरात्रम्	शुभः २३।५८	कौ. २६।०९	कुम्भः	अहोरात्रम्	११।२४।५३।२८	३१।२२	५।४६	६।२४	१८	२६	०८
१३ शु.	५७।२४	रा. ०४।४३	शत. ००।३४	प्रा. ०५।४९	शुक्लः २१।४१	ग. २६।४५	कुं. ४७।४६	रा. १२।५१	११।२५।५२।२३	३१।२६	५।४५	६।२५	१९	२७	०९
१४ श.	५९।५२	रा. ०५।४१	पूभा. ०३।२९	दि. ०७।०८	ब्रह्मः २०।२८	वि. २८।३८	मीनः	अहोरात्रम्	११।२६।५१।२७	३१।२०	५।४४	६।२६	२०	२८	१०
३० र.	६०।००	अहोरात्रम्	उभा. ०७।३४	दि. ०८।४५	ऐन्द्रः २०।०२	च. ३१।४४	मीनः	अहोरात्रम्	११।२७।५०।२१	३१।२३	५।४३	६।२७	२१	२९	११
३० चं.	०३।३६	दि. ०७।०९	रेवती १२।४६	दि. १०।४९	वैधृतिः २०।३३	ना. ०३।३६	मी. १२।४६	दि.१०।४९	११।२८।४९।०५	३१।२६	५।४३	६।२७	२२	३०	१२

कुम्भे बृहस्पतिः ४१।२७, होलिकाभस्मधारणम्, सचैलस्नानम्, **होली**, सप्ताडोरकवन्धनम्, द.ति. ४२।२१ उपरि।
पश्चिमदक्षिणयात्रा तृतीयायाम्, द.ति. ३६।२९ यावत्।
रेवत्यां रविः २४।२०, **विकट ४** व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०९।२२, भ. ०३।३१ उपरि ३०।३३ यावत्।
अप्रील ४, पश्चिमोत्तरयात्रा पञ्चम्याम्।
व्यतीपातदं. ५२।३०, **कर्णवेधोऽनुराधायाम्,** उत्तरयात्रा।
पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा, भ. १२।५९ उपरि ४०।२७ यावत्, गं. ००।५१ उपरि १५।५१ यावत्, (६—७) एकोद्दिष्टम्।
रविसप्तमी स्नानदानादौ सूर्यग्रहणसमफलदा, पूर्वोत्तरयात्रा।
उत्तराषाढदं. ५८।२४, श्रीशीतलाष्टमीव्रतं पूजनञ्च, उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे।
दशमीदं. ५७।२९, भ. २८।४५ उपरि ५७।३० यावत्, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. ०५।२० उपरि, उत्तरां विना यात्रा नवमीदशम्योः।
पापमोचिनी ११ व्रतं स्मार्त्तानाम्, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।
अश्विन्यां मेषे शुक्रः ५३।५९, गोघृतेन पारणम्, **पापमोचिनी ११** व्रतं वैष्णवानाम्।
प्रदोष १३ व्रतम्, **वारुणीयोगो** घं. ०५।४९ प्रातर्यावत्तत्र गङ्गास्नानं शतसूर्यग्रहणसमफलदम्, उत्तरयात्रा मीनगते चन्द्रे, भ. ५७।२४ उपरि।
प्रदोष १४ व्रतम्, भ. २८।३८ यावत्, शनैश्चरी चतुर्दशी स्नानदानादौ पुण्यतमा।
चैत्री ३० स्नानदानादिः, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्। ✪ पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि रेवत्यां ततः पूर्वां विना यात्राश्विन्याम्।
मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ५३।०४, **सोमवत्यमाव्रतम्,** तत्पूजनं प्रातः घं. ०७।०९ यावत्, पञ्चकान्तो दिवा घं. १०।४९ उपरि, गं. ००।४६ उपरि १५।४६ यावत्, ✪

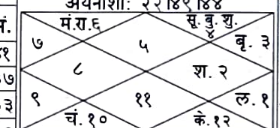
मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः / दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ चं.	०१।२९।३५।२२	११।०१।२५।२४	१०।००।००।४७	११।२७।२३।२२	०९।२४।२२।४०	०७।२२।२७।३८	४५।२६
०२ मं.	०१।२०।२१।३४	११।०३।२५।५६	१०।००।२३।०७	११।२८।३७।५८	०९।२४।२७।२०	०७।२२।२४।२७	४५।२८
०३ बु.	०१।२०।४७।४६	११।०५।०६।२८	१०।००।२५।२७	११।२९।५२।४३	०९।२४।३१।५९	०७।२२।२१।२६	४५।२०
०४ बृ.	०१।२१।२३।५८	११।०६।५६।५९	१०।००।३७।४७	११।२१।०७।२८	०९।२४।३६।३८	०७।२२।०८।०५	४५।२२
०५ शु.	०१।२२।००।२०	११।०८।४७।३०	१०।००।५०।०७	११।२२।२२।२३	०९।२४।४१।२७	०७।२२।०४।५४	४५।२४
०६ श.	०१।२२।३६।२२	११।२०।३८।०१	१०।०१।०२।२६	११।२३।३६।५८	०९।२४।४५।५६	०७।२२।०१।४३	४५।२६
०७ र.	०१।२३।२२।३३	११।२२।२८।३२	१०।०१।२४।४५	११।२४।५१।४३	०९।२४।५०।३५	०७।२१।५८।३२	४५।२८
०८ चं.	०१।२३।४८।४४	११।२४।२९।०३	१०।०१।२७।०४	११।२६।०६।२८	०९।२४।५५।२४	०७।२१।५५।२२	४५।३०
०९ मं.	०१।२४।२५।२१	११।२६।२१।३५	१०।०१।३८।३१	११।२७।२०।५१	०९।२४।५९।२८	०७।२१।५२।२१	४५।३२
११ बु.	०१।२५।०१।३८	११।२८।०४।०७	१०।०१।४९।५७	११।२८।३५।२४	०९।२५।०३।२२	०७।२१।४९।००	४५।३४
१२ बृ.	०१।२५।३८।०५	११।२९।५६।३९	१०।०२।०१।२३	११।२९।४९।३७	०९।२५।०७।२६	०७।२१।४५।४९	४५।३६
१३ शु.	०१।२६।२४।३२	११।२१।४९।२१	१०।०२।२२।४९	००।०१।०४।००	०९।२५।२१।३०	०७।२१।४२।३८	४५।३८
१४ श.	०१।२६।५०।५८	११।२३।४१।४३	१०।०२।२४।२५	००।०२।२८।२३	०९।२५।२५।३४	०७।२१।३९।२७	४५।४०
३० र.	०१।२७।२७।२४	११।२५।३४।२५	१०।०२।३५।४१	००।०३।३२।४६	०९।२५।२९।३८	०७।२१।३६।२७	४५।४२
३० चं.	०१।२८।०३।५०	११।२७।२६।४७	१०।०२।४७।०७	००।०४।४७।०९	०९।२५।२३।४२	०७।२१।३३।०७	४५।४३

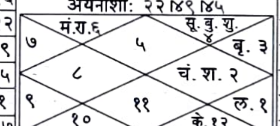
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ चं.	०८।२८	१०।२४	१२।२७	१४।४५	१७।०१	१९।२६	२१।३३	२३।५०	०१।५५	०३।४१	०५।२२	०६।४१
०२ मं.	०८।२४	१०।२०	१२।२३	१४।४१	१६।५७	१९।२२	२१।२९	२३।४६	०१।५१	०३।३७	०५।०८	०६।३७
०३ बु.	०८।२०	१०।०६	१२।२९	१४।३७	१६।५३	१९।०८	२१।२५	२३।४२	०१।४७	०३।३३	०५।०४	०६।३३
०४ बृ.	०८।०७	१०।०३	१२।२६	१४।३४	१६।५०	१९।०५	२१।२२	२३।३९	०१।४४	०३।३०	०५।०१	०६।३०
०५ शु.	०८।०३	०९।५९	१२।२२	१४।३०	१६।४६	१९।०१	२१।२८	२३।३५	०१।४०	०३।२६	०४।५७	०६।२६
०६ श.	०७।५९	०९।५५	१२।०८	१४।२६	१६।४२	१८।५७	२१।२४	२३।३१	०१।३६	०३।२२	०४।५३	०६।२२
०७ र.	०७।५६	०९।५२	१२।०५	१४।२३	१६।३९	१८।५४	२१।२१	२३।२८	०१।३३	०३।२९	०४।५०	०६।२९
०८ चं.	०७।५२	०९।४८	१२।०१	१४।२९	१६।३५	१८।५०	२१।०७	२३।२४	०१।२९	०३।२५	०४।४६	०६।२५
०९ मं.	०७।४८	०९।४४	११।५७	१४।२५	१६।३१	१८।४६	२१।०३	२३।२०	०१।२५	०३।२१	०४।४२	०६।२१
११ बु.	०७।४४	०९।४०	११।५३	१४।२१	१६।२७	१८।४२	२०।५९	२३।२६	०१।२१	०३।०७	०४।३८	०६।०७
१२ बृ.	०७।४१	०९।३७	११।५०	१४।०८	१६।२४	१८।३९	२०।५६	२३।२३	०१।२८	०३।०४	०४।३५	०६।०४
१३ शु.	०७।३७	०९।३३	११।४६	१४।०४	१६।२०	१८।३५	२०।५२	२३।०९	०१।२४	०३।००	०४।३१	०६।००
१४ श.	०७।३३	०९।२९	११।४२	१४।००	१६।२६	१८।३१	२०।४८	२३।०५	०१।२०	०२।५६	०४।२७	०५।५६
३० र.	०७।२९	०९।२५	११।३८	१३।५६	१६।२२	१८।२७	२०।४४	२३।०१	०१।०६	०२।५२	०४।२३	०५।५२
३० चं.	०७।२६	०९।२२	११।३५	१३।५३	१६।०९	१८।२४	२०।४१	२२।५८	०१।०३	०२।४९	०४।२०	०५।४९

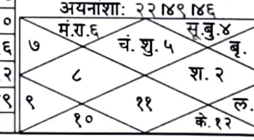
१ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४०।३८
अयनांशाः २२।४९।४४



८ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४०।४५
अयनांशाः २२।४९।४५



३० चन्द्रे वल्ली ८।३९।४०।५२
अयनांशाः २२।४९।४६



विविधविषयाः—स्कान्दे वारुणीयोगः—वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी। गङ्गायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा।। **महावारुणीयोगः**—शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता। गङ्गायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।। **महामहावारुणीयोगः**—शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि। महामहेति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत्।। **एते योगा दिवैव शस्ताः**—दिवैव योगः शस्तोऽयं न तु रात्रौ कदाचन इति भारतवचनात्। सधवाया अपि वारुण्यादिस्नानमिति **वर्षकृत्यपूर्वखण्डे म.म.रुद्रधरः।** दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च **छिक्काफलं मुहूर्तगणपतौ**—मृत्युर्वह्निभयं हानिस्तुष्टिर्द्रव्यागमः सुखम्। क्लेशोऽर्थागमनं प्रोक्तं दिक्षु छिक्काफलं क्रमात्।। गोक्षुतस्य दोषाधिक्यम् उक्तं **नारदेन**—सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्वपीनसकेतवः।। केतवः कपटः। पीनसो मुहुर्नासास्रावी। **रत्नावलीरत्नकलापयोः**—प्रागन्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्।। यात्रायां क्षुतमवश्यं वर्जनीयम्। **रत्नकलापे**—अग्रे क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः पश्चात्क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः।। **शुभक्षुतं सर्वशाकुने**—औषधे च नवारोहे विवादे शयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्।। **क्षुतादिषु कर्त्तव्यमाह**—छिक्कापतनजृम्भासु जीवोत्तिष्ठाङ्गुलीध्वनिः। गुरावपि च कर्त्तव्या अकृत्वा ब्रह्महा भवेत्।। **होमविधौ विशेषः प्रतिष्ठाप्रकाशे**—दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुत्रोत्सवे गर्भाधानविधौ च वास्तुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु। मौञ्जीबन्धन—वैश्वदेवकरणे संस्कारनैमित्तिके होमे नित्यभवे न दोषकथनं चक्रं च वह्नेरपि।। **अपि च**—विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीतिग्रहणे युगादौ। दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः ३० तः पश्चिमोदितः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वभागे वाताभ्रचारतापाग्निभयादयस्तदुत्तरार्द्धभागे मेघचारझञ्झावातोपलपातादयः।

चैत्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४३, संवत् २०७८, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क १३।०४।२०२१ ई. तः दिनाङ्क २७।०४।२०२१ ई. यावत्।
अशुद्धः ३ तः शुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ मं.	०८।०४	दि. ०८।५६	अश्वि. १८।४४	दि. ०१।१२	विष्क. २१।३९	ब. ०८।०४	मेषः	अहोरात्रम्	११।२९।४७।४४	३१।३०	५।४२	६।१८	२३	३१	१३
०२ बु.	१३।०७	दि. १०।५६	भर. २५।१६	दि. ०३।४७	प्रीतिः २३।०७	कौ. १३।०७	मे. ४१।५४	रा. १०।२७	००।००।४६।२३	३१।३४	५।४१	६।१९	२४	०१	१४
०३ बृ.	१८।२२	दि. ०१।२१	कृत्ति. ३१।५०	सं. ०६।२४	आयु. २४।४२	ग. १८।२२	वृषः	अहोरात्रम्	००।०१।४५।०२	३१।३८	५।४०	६।२०	२५	०२	१५
०४ शु.	२३।१९	दि. ०३।००	रोहिणी३८।०२	रा. ०८।५३	सौभा. २६।०४	वि. २३।१९	वृषः	अहोरात्रम्	००।०२।४३।४१	३१।४२	५।४०	६।२०	२६	०३	१६
०५ श.	२७।३७	दि. ०४।४२	मृग. ४३।३५	रा. ११।०५	शोभ. २६।५६	बा. २७।३७	वृ. १०।४८	दि. ०९।५८	००।०३।४२।२०	३१।४६	५।३९	६।२१	२७	०४	१७
०६ र.	३०।५८	सं. ०६।०१	आर्द्रा ४८।०९	रा. १२।५४	अगं. २७।०२	तै. ३०।५८	मिथुनम्	अहोरात्रम्	००।०४।४०।५९	३१।५०	५।३८	६।२२	२८	०५	१८
०७ चं.	३३।११	रा. ०६।५३	पुन. ५१।३६	रा. ०२।१५	सुकर्मा २६।१७	ग. ०२।०४	मि. ३५।४५	रा. ०७।५५	००।०५।३९।३८	३१।५४	५।३७	६।२३	२९	०६	१९
०८ मं.	३४।०८	रा. ०७।१५	पुष्यः ५३।४५	रा. ०३।०६	धृतिः २४।३२	वि. ०३।३९	कर्कः	अहोरात्रम्	००।०६।३८।०२	३१।५८	५।३६	६।२४	३०	०७	२०
०९ बु.	३३।४५	रा. ०७।०६	श्ले. ५४।३८	रा. ०३।२७	शूलः २१।४७	बा. ०३।५६	क. ५४।३८	रा. ०३।२७	००।०७।३६।२६	३२।०१	५।३६	६।२४	०१	०८	२१
१० बृ.	३२।०९	सं. ०६।२७	मघा ५४।२१	रा. ०३।१९	गण्डः १८।०२	तै. ०२।५७	सिंहः	अहोरात्रम्	००।०८।३४।५०	३२।०४	५।३५	६।२५	०२	०९	२२
११ शु.	२९।२५	दि. ०५।२१	पूफ. ५२।५६	रा. ०२।४५	वृद्धिः १३।२०	व. ००।४७	सिंहः	अहोरात्रम्	००।०९।३३।१४	३२।०७	५।३५	६।२५	०३	१०	२३
१२ श.	२५।४०	दि. ०४।५०	उफ. ५०।४५	रा. ०१।५२	ध्रुवः ०७।५०	बा. २५।४०	सिं. ०७।२३	दि. ०८।३१	००।१०।३१।३८	३२।१०	५।३४	६।२६	०४	११	२४
१३ र.	२१।०६	दि. ०१।५९	हस्तः ४७।२१	रा. ०४।३७	व्या. ०१।३८	तै. २१।०६	कन्या	अहोरात्रम्	००।११।३०।०२	३२।१३	५।३३	६।२७	०५	१२	२५
१४ चं.	१५।५५	दि. ११।५५	चित्रा ४४।०६	रा. ११।११	वज्रः ४७।३१	व. १५।५५	कं. १५।५४	दि. ११।५५	००।१२।२८।२५	३२।१६	५।३३	६।२७	०६	१३	२६
१५ मं.	१०।०९	दि. ०९।३६	स्वाती ४०।०८	रा. ०९।३५	सिद्धिः ३९।५९	ब. १०।०९	तुला	अहोरात्रम्	००।१३।२६।३४	३२।२०	५।३२	६।२८	०७	१४	२७

हरद्वारे कुम्भयोगः—मेषराशिस्थिते भानौ कुम्भे चैव गुरौ स्थिते। गङ्गाद्वारे भवेद्योगो **भुक्तिमुक्तिप्रदः** शिवे॥ (रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोगे, सिमरियाकुम्भदर्पणे, श्लो. १२६)

नववर्षविक्रमसंवत् २०७८ प्रारम्भः, चन्द्रदर्शनमु. १५ याम्यशृङ्गफलं महार्घम्, **वसन्तनवरात्रारम्भः**, **कलशस्थापनम्**, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, नवरात्रव्रतारम्भः, **अश्विन्यां मेषे रविः** ५८।१८ मु. १५ फलं महार्घम्, ☆
रेमन्तपूजा, **यवविषुवसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ यावद्दिने, **पुण्याहः**, वैशाखस्नानारम्भः, हरद्वारे कल्पवासारम्भः, **सतुआईन, आर्यभटजयन्ती**, सोपकरणवारिपूर्णघटदानम्, प्रपागलन्तिकादानम्, ✪
पुष्टः शुक्रः शुद्धारम्भश्च ५३।०४ उपरि, गौरीतृतीयाव्रतम्, **गणेश ४** व्रतम्, मासादिः, **जूडिशीतल**, पर्युषितान्नपानादिभक्षणम्, तुलस्यश्वत्थाम्रादिवृक्षसेचनम्, स्वायम्भुवमन्वादिः, भ. ५०।५३ उपरि।
मिथुने मङ्गलः ५६।५३, भ. २३।१९ यावत्, **विवाहो मुण्डनं द्विरागमनञ्च पञ्चम्याम्**, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा मृगशिरसि, (४) एकोद्दिष्टम्।
श्रीपञ्चमी, लक्ष्मीपूजनम्, मीनावतारः, रामराज्याभिषेकोत्सवः, षष्ठीव्रतैकभुक्तादिकं **(खरना)** सायङ्काले, द.ति. २७।३७ उपरि। ✪हनुमद्ध्वजदानम्, **अश्विन्यां मेषे बुधः** ०८।३१, अद्यारभ्य मेषार्कं यावद्धरद्वारे ○
सूर्यषष्ठीव्रतम्, सायङ्कालिकार्घदानम्, गजपूजा, बिल्वाभिमन्त्रणम्, **द्विरागमनं** पश्चिमदक्षिणयात्रा च पुनर्वसौ, द.ति. ३०।५८ यावत्। ○गङ्गास्नानदानजपहोमपूजापाठादिकमनन्तफलदं तत्रापि मेषसङ्क्रान्ति ❖
प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, पत्रिकाप्रवेशः, **महारात्रिर्निशापूजा, मुण्डनम्, कर्णवेधः, गृहप्रवेशः सप्तम्याम्, द्विरागमनमष्टम्याम्,** देवादिप्रतिष्ठा, पश्चिमदक्षिणयात्राष्टम्यां मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ☼
महाष्टमीव्रतम्, सन्धिपूजा, अशोकाष्टमी, अशोककलिकापानम्, ब्रह्मपुत्रस्नानम्, दीक्षाग्रहणम्, उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, भ. ०३।३९ यावत्। ☼ ततः पूर्वां विना यात्रा, भ. ३३।११ उपरि।
महानवमीव्रतम्, त्रिशूलिनीपूजा, **रामनवमीव्रतम्**, रामावतारः, **हनुमद्ध्वजदानम्**, श्रीसीतारामपूजनदर्शनादिकम्, अयोध्यायां साङ्गश्रीसीतारामदर्शनम्, दीक्षाग्रहणम्, गं. ४३।३८ उपरि ५८।३८ यावत्।
विजयादशमी, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनम्, जयन्तीधारणम्, नवरात्रव्रत—रामनवमीव्रतपारणम्, यात्रा, नीलकण्ठखञ्जनादिदर्शनम्, शनिवेधाद्विवाहो नैव मघायाम्, तडागकूपखननम्, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
कामदा ११ व्रतं सर्वेषाम्, **वीरकुँवरसिंहजयन्ती**, **उपनयनम्, ११ व्रतोद्यापनम्, विवाहो गृहप्रवेशश्चोत्तरफल्गुन्याम्,** पूर्वोत्तरयात्रैकादश्याम्, भ. ००।४७ उपरि २९।२५ यावत्।
पश्चिमोदितो बुधः ३१।२५, **गृहप्रवेशः**, गोघृतेन पारणम्, श्रीविष्णु १२, प्रदोष १३ व्रतम्, चैत्रावली, मदन १३, मदनपूजनम्, गोष्ठे सत्सङ्गारम्भः, **महावीर (२६१९) जयन्ती**, दक्षिणयात्रा हस्ते।
हर्षणदं. ५३।१२, प्रदोष १४ व्रतम्, मदनभञ्जिका १४, **षाण्मासिकरविव्रत—सप्ताडोरकविसर्गः**, **विवाहो द्विरागमनं** पूर्वदक्षिणयात्रा च त्रयोदश्याम्, देवादिप्रतिष्ठा।
विवाहो द्विरागमनं कर्णवेधो गृहारम्भो देवादिप्रतिष्ठा पश्चिमदक्षिणयात्रा च पूर्णिमायाम्, भ. १५।५५ उपरि ४३।०२ यावत्, (१४—१५) एकोद्दिष्टम्।
चैत्री १५ स्नानदानादिः, **भरण्यां रविः** ३९।२३, स्वारोचिषमन्वादिः, पश्चिमदक्षिणयात्रा पूर्णिमायाम्। ❖ एकादशी—अमाऽक्षयतृतीयाष्टमीचतुर्दशीपूर्णिमावृषसङ्क्रान्तिदिनानि विशेषपुण्यदानि।
☆हरद्वारकुम्भयोगः५८।१८उपरि,मासान्तः,**सौम्यगोलारम्भः१९४३ शकाब्दारम्भश्च ५८।१८ उपरि**,सृष्टिगताब्दा १९७२९४९१२२,भोग्याब्दाश्च २३४७०५०८७८,सृष्ट्यादिः,नववर्षारम्भः,द.ति.०८।०४ उपरि५८।१८यावत्।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च						
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ मं.	०१।२८।४०।१३	११।२९।१७।५२	१०।०२।५८।०९	००।०६।०१।३५	०९।१५।२७।१३	०७।२१।२९।५६	४५।४५
०२ बु.	०१।२९।१६।३६	००।०१।०८।५७	१०।०३।०९।११	००।०७।१६।०१	०९।१५।३०।४४	०७।२१।२६।४५	४५।४७
०३ बृ.	०१।२९।५२।५९	००।०३।००।०१	१०।०३।२०।१३	००।०८।३०।२७	०९।१५।३४।१५	०७।२१।२३।३४	४५।४९
०४ शु.	०२।००।२९।२२	००।०४।५१।०५	१०।०३।३१।१५	००।०९।४४।५३	०९।१५।३७।४६	०७।२१।२०।२३	४५।५१
०५ श.	०२।०१।०५।४५	००।०६।४२।०९	१०।०३।४२।१७	००।१०।५९।१९	०९।१५।४१।१७	०७।२१।१७।१२	४५।५३
०६ र.	०२।०१।४२।०७	००।०८।३३।१३	१०।०३।५३।१९	००।१२।१३।४४	०९।१५।४४।४८	०७।२१।१४।०२	४५।५५
०७ चं.	०२।०२।१८।२९	००।१०।२४।१७	१०।०४।०४।२०	००।१३।२८।०९	०९।१५।४८।१८	०७।२१।१०।५२	४५।५७
०८ मं.	०२।०२।५५।१५	००।१२।११।३९	१०।०४।१४।२७	००।१४।४२।१३	०९।१५।५१।०२	०७।२१।०७।४१	४५।५९
०९ बु.	०२।०३।३२।०१	००।१३।५९।०१	१०।०४।२४।३३	००।१५।५६।१७	०९।१५।५३।४६	०७।२१।०४।३०	४६।०१
१० बृ.	०२।०४।०८।४७	००।१५।४६।२२	१०।०४।३४।३९	००।१७।१०।२१	०९।१५।५६।३०	०७।२१।०१।१९	४६।०३
११ शु.	०२।०४।४५।३२	००।१७।३३।४३	१०।०४।४४।४५	००।१८।२४।२५	०९।१५।५९।१४	०७।२०।५८।०८	४६।०५
१२ श.	०२।०५।२२।१७	००।१९।२१।०४	१०।०४।५४।५१	००।१९।३८।२९	०९।१६।०१।५७	०७।२०।५४।५७	४६।०६
१३ र.	०२।०५।५९।०२	००।२१।०८।२५	१०।०५।०४।५७	००।२०।५२।३३	०९।१६।०४।४०	०७।२०।५१।४७	४६।०७
१४ चं.	०२।०६।३५।४७	००।२२।५५।४६	१०।०५।१५।०३	००।२२।०६।३७	०९।१६।०७।२३	०७।२०।४८।३७	४६।०८
१५ मं.	०२।०७।१२।३१	००।२४।३५।४७	१०।०५।२४।१६	००।२३।२०।४१	०९।१६।०९।२२	०७।२०।४५।२६	४६।१०

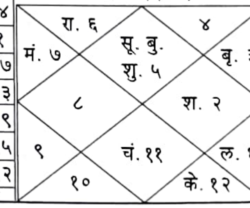
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
४५।४५	०७।२२	०९।१८	११।३१	१३।४९	१६।०५	१८।२०	२०।३७	२२।५४	००।५९	०२।४५	०४।१६	०५।४५
४५।४७	०७।१८	०९।१४	११।२७	१३।४५	१६।०१	१८।१६	२०।३३	२२।५०	००।५५	०२।४१	०४।१२	०५।४१
४५।४९	०७।१४	०९।१०	११।२३	१३।४१	१५।५७	१८।१२	२०।२९	२२।४६	००।५१	०२।३७	०४।०८	०५।३७
४५।५१	०७।१०	०९।०६	११।१९	१३।३७	१५।५३	१८।०८	२०।२५	२२।४२	००।४७	०२।३३	०४।०४	०५।३३
४५।५३	०७।०७	०९।०३	११।१६	१३।३४	१५।५०	१८।०५	२०।२२	२२।३९	००।४४	०२।३०	०४।०१	०५।३०
४५।५५	०७।०३	०८।५९	११।१२	१३।३०	१५।४६	१८।०१	२०।१८	२२।३५	००।४०	०२।२६	०३।५७	०५।२६
४५।५७	०६।५९	०८।५५	११।०८	१३।२६	१५।४२	१७।५७	२०।१४	२२।३१	००।३६	०२।२२	०३।५३	०५।२२
४५।५९	०६।५५	०८।५१	११।०४	१३।२२	१५।३८	१७।५३	२०।१०	२२।२७	००।३२	०२।१८	०३।४९	०५।१८
४६।०१	०६।५१	०८।४७	११।००	१३।१८	१५।३४	१७।४९	२०।०६	२२।२३	००।२८	०२।१४	०३।४५	०५।१४
४६।०३	०६।४८	०८।४४	१०।५७	१३।१५	१५।३१	१७।४६	२०।०३	२२।२०	००।२५	०२।११	०३।४२	०५।११
४६।०५	०६।४४	०८।४०	१०।५३	१३।११	१५।२७	१७।४२	१९।५९	२२।१६	००।२१	०२।०७	०३।३८	०५।०७
४६।०६	०६।४०	०८।३६	१०।४९	१३।०७	१५।२३	१७।३८	१९।५५	२२।१२	००।१७	०२।०३	०३।३४	०५।०३
४६।०७	०६।३६	०८।३२	१०।४५	१३।०३	१५।१९	१७।३४	१९।५१	२२।०८	००।१३	०१।५९	०३।३०	०४।५९
४६।०८	०६।३२	०८।२८	१०।४१	१२।५९	१५।१५	१७।३०	१९।४७	२२।०४	००।०९	०१।५५	०३।२६	०४।५५
४६।१०	०६।२९	०८।२५	१०।३८	१२।५६	१५।१२	१७।२७	१९।४४	२२।०१	००।०६	०१।५२	०३।२३	०४।५२

७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४०।५९
अयनांशाः २२।४९।४७



१४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४१।०६
अयनांशाः २२।४९।४८



विविधविषयाः—चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावद्दुर्गापूजनोत्सवः—क्रियते या च वार्षिकीति वचनात्। तत्र घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। चैत्रशुक्लतृतीयायाङ्गौरीशङ्करौ सम्पूज्य दोलोत्सवं कुर्यात्। तदुक्तं **देवीमहापुराणे**—तृतीयायां यजेद्देवीं शङ्करेण समन्विताम्। कुङ्कुमागरुकर्पूरमणिवस्त्र—सुगन्धकैः॥ स्रग्गन्धधूपदीपैश्च दमनेन विशेषतः। आन्दोलयेत्ततो वत्स शिवोमातुष्टये सदा॥ **चैत्रशुक्लपञ्चम्यां लक्ष्मीव्रतम्, कृत्यमहार्णवे**—शुक्लायामथ पञ्चम्यां चैत्रे मासि शुभानना। श्रीर्ब्रह्मलोकात् सम्प्राप्ता मानुष्यं केशवाज्ञया॥ तस्मात्तां पूजयेत्तत्र यस्तं लक्ष्मीर्न मुञ्चति। एषा श्रीपञ्चमी कार्या विष्णुलोकगतिप्रदा॥ **चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः**—त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु॥ **एतत्पानफलं लिङ्गपुराणे**—अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः॥ **ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रश्च**—ब्रह्मपुत्र महाभाग शन्तनोः कुलसम्भव। अमोघागर्भसम्भूतं पापं लौहित्य मे हर॥ **चैत्रशुक्लनवम्यां** रामनवमीव्रतं तत्राङ्गदेवतापूजनपूर्वकं **श्रीरामं** सम्पूज्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः—दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च॥ परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ॥ ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। **मिथिलामाहात्म्यं बृहद्विष्णुपुराणे**—मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः॥ मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते॥ **चक्षूरक्षार्थं पठनीयमन्त्रः**—शर्यातिञ्च सुकन्याञ्च च्यवनं शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते॥

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः १३ तः पश्चिमोदितः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातमेघचारतापादयस्तन्मध्यभागे मेघच्छायाझञ्झावातादयः।

वैशाखकृष्णपक्षः

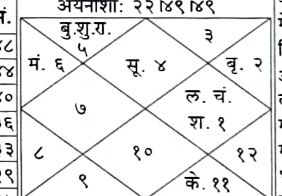
शकाब्दः १९४३, संवत् २०७८, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क २८।०४।२०२१ ई. तः दिनाङ्क ११।०५।२०२१ ई. यावत्।
शुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
०१ बु.	०४।०७	दि. ०७।१०	विशा.३५।५७	रा. ०७।५४	व्य. ३२।१६	कौ. ०४।०७	तु. २१।५९	दि. ०२।१९	००।१४।२४।४३	३२।२३	५।३१	६।२९	०८	१५	२८	द्वितीयादं. ५३।५१, सूर्यवेधाद्विवाहो नैवानुराधायाम्, **द्विरागमनं द्वितीयानुराधयोः**, पश्चिमयात्रानुराधायां द्वितीयायाम्।
०३ बृ.	५१।५८	रा. ०२।१८	अनु. ३१।५२	सं. ०६।१६	वरी. २४।३९	व. २४।५८	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	००।१५।२२।५२	३२।२६	५।३१	६।२९	०९	१६	२९	सूर्यवेधाद्विवाहो नैवानुराधायाम्, **गृहारम्भो द्विरागमनञ्चानुराधायाम्, कर्णवेधः**, पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायाम्, भ. २४।५८ उपरि ५१।५८ यावत्।
०४ शु.	४६।१५	रा. १२।००	ज्ये. २८।०१	दि. ०४।४२	परिघः १७।०८	ब. १९।०४	वृ. २८।०१	दि. ०४।४२	००।१६।२१।०१	३२।२९	५।३०	६।३०	१०	१७	३०	**वक्रतुण्ड ४** व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०९।५५, **विवाहो द्विरागमनञ्च पञ्चम्याम्**, उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा, गं. २२।०१ उपरि ३७।०१ यावत्।
०५ श.	४१।०७	रा. ०९।५७	मूलम्२४।३६	दि. ०३।२०	शिवः ०९।५६	कौ. १३।४१	धनुः	अहोरात्रम्	००।१७।१९।१०	३२।३२	५।३०	६।३०	११	१८	०१	**मई ५, गृहारम्भो मूले,** श्रमिकदिवसः, **वृषे बुधः** ००।४६, द.ति. ४१।०७ उपरि।
०६ र.	३६।४२	रा. ०८।१०	पूषा. २१।५०	दि. ०२।१३	सिद्धः ०३।१७	ग. ०८।५४	ध. ३६।२२	रा. ०८।०२	००।१८।१७।१९	३२।३५	५।२९	६।३१	१२	१९	०२	**विवाहः सप्तम्याम्,** कोकिलाषष्ठी, साध्यदं. ५४।००, द.ति. ३६।४२ यावत्, भ. ३६।४२ उपरि।
०७ चं.	३३।०५	सं. ०६।४२	उषा. १९।५७	दि. ०१।२७	शुभः ५२।००	वि. ०४।५३	मकरः	अहोरात्रम्	००।१९।१५।२८	३२।३८	५।२८	६।३२	१३	२०	०३	**विवाहो दिवारात्रौ,** शर्करासप्तमी, पूर्वा विना यात्राष्टम्याम्, **वृषे शुक्रः** ०९।४७, भ. ०४।५३ यावत्।
०८ मं.	३०।३०	सं. ०५।४०	श्रवणा १८।५७	दि. ०१।०३	शुक्लः४७।३४	बा. ०१।४७	म. ४९।०१	रा. ०१।०४	००।२०।१३।२३	३२।४२	५।२८	६।३२	१४	२१	०४	पञ्चकारम्भो दिवा घं. ०१।०३ उपरि, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम्।
०९ बु.	२९।०७	सं. ०५।०६	धनि. १९।०६	दि. ०१।०५	ब्रह्मः ४४।०६	ग. २९।०७	कुम्भः	अहोरात्रम्	००।२१।११।१८	३२।४५	५।२७	६।३३	१५	२२	०५	भ. ५९।०२ उपरि।
१० बृ.	२८।५८	सं. ०५।०१	शत. २०।२९	दि. ०१।३८	ऐन्द्रः ४१।४०	वि. २८।५८	कुम्भः	अहोरात्रम्	००।२२।०९।१३	३२।४८	५।२६	६।३४	१६	२३	०६	भ. २८।५८ यावत्, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
११ शु.	३०।११	सं. ०५।३०	पूभा. २३।०७	दि. ०२।४१	वैधृतिः ४०।१६	बा. ३०।११	कुं. ०७।२८	दि. ०८।२५	००।२३।०७।०८	३२।५१	५।२६	६।३४	१७	२४	०७	**वरुथिनी ११ व्रतं** सर्वेषाम्, **विवाह उत्तरभाद्रे**, वल्लभाचार्यजयन्ती, उत्तरयात्रा मीनगते चन्द्रे पूर्वभाद्रे।
१२ श.	३२।३२	सं. ०६।२६	उभा. २६।५७	दि. ०४।१२	विष्क. ३९।४१	कौ. ०१।२१	मीनः	अहोरात्रम्	००।२४।०५।०३	३२।५४	५।२५	६।३५	१८	२५	०८	कुशोदकेन पारणम्, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम्।
१३ र.	३६।०६	रा. ०७।५१	रेवती ३१।५५	सं. ०६।११	प्रीतिः ४०।०५	ग. ०४।१९	मी. ३१।५५	सं. ०६।११	००।२५।०२।५८	३२।५७	५।२५	६।३५	१९	२६	०९	प्रदोष १३ व्रतम्, **विवाहस्त्रयोदश्याम्**, उत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा त्रयोदश्याम्, पञ्चकान्तः सायं घं. ०६।११ उपरि, भ. ३६।०६ उपरि, गं. १९।५५ उपरि ३४।५५ यावत्।
१४ चं.	४०।२९	रा. ०९।३६	अश्वि.३७।४५	रा. ०८।३०	आयु. ४१।०७	वि. ०८।१७	मेषः	अहोरात्रम्	००।२६।००।५२	३३।००	५।२४	६।३६	२०	२७	१०	प्रदोष १४ व्रतम्, भ. ०८।१७ यावत्।
३० मं.	४५।३२	रा. ११।३६	भर. ४४।०९	रा. ११।०३	सौभा. ४२।३९	च. १३।००	मेषः	अहोरात्रम्	००।२६।५८।३४	३३।०४	५।२३	६।३७	२१	२८	११	**कृत्तिकायां रविः** २७।१४, वैशाखी ३० भौमयुताऽमाऽतीवपुण्यदा स्नानदानादौ।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च							दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्											
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ बु.	०२।०७।४९।१४	००।२६।१५।४८	१०।०५।३३।२९	००।२४।३४।४५	०९।१६।११।२१	०७।२०।४२।१५	४६।१२	०६।२५	०८।२१	१०।३४	१२।५२	१५।०८	१७।२३	१९।४०	२१।५७	००।०२	०१।४८	०३।१९	०४।४८
०३ बृ.	०२।०८।२५।५७	००।२७।५५।४९	१०।०५।४२।४२	००।२५।४८।४९	०९।१६।१३।२०	०७।२०।३९।०४	४६।१४	०६।२१	०८।१७	१०।३०	१२।४८	१५।०४	१७।१९	१९।३६	२१।५३	२३।५८	०१।४४	०३।१५	०४।४४
०४ शु.	०२।०९।०२।४०	००।२९।३५।५०	१०।०५।५१।५५	००।२७।०२।५३	०९।१६।१५।२०	०७।२०।३५।५३	४६।१६	०६।१७	०८।१३	१०।२६	१२।४४	१५।००	१७।१५	१९।३२	२१।४९	२३।५४	०१।४०	०३।११	०४।४०
०५ श.	०२।०९।३९।२३	०१।०१।१५।५१	१०।०६।०१।०८	००।२८।१६।५७	०९।१६।१७।२०	०७।२०।३२।४२	४६।१७	०६।१३	०८।०९	१०।२२	१२।४०	१४।५६	१७।११	१९।२८	२१।४५	२३।५०	०१।३६	०३।०७	०४।३६
०६ र.	०२।१०।१६।०६	०१।०२।५५।५१	१०।०६।१०।२१	००।२९।३१।०१	०९।१६।१९।२०	०७।२०।२९।३२	४६।१८	०६।१०	०८।०६	१०।१९	१२।३७	१४।५३	१७।०८	१९।२५	२१।४२	२३।४७	०१।३३	०३।०४	०४।३३
०७ चं.	०२।१०।५२।४९	०१।०४।३५।५१	१०।०६।१९।३४	०१।००।४५।०५	०९।१६।२१।२०	०७।२०।२६।२२	४६।१९	०६।०६	०८।०२	१०।१५	१२।३३	१४।४९	१७।०४	१९।२१	२१।३८	२३।४३	०१।२९	०३।००	०४।२९
०८ मं.	०२।११।२९।३९	०१।०६।०३।११	१०।०६।२७।४४	०१।०१।५८।४६	०९।१६।२२।३६	०७।२०।२३।११	४६।२१	०६।०२	०७।५८	१०।११	१२।२९	१४।४५	१७।००	१९।१७	२१।३४	२३।३९	०१।२५	०२।५६	०४।२५
०९ बु.	०२।१२।०६।२९	०१।०७।३०।३१	१०।०६।३५।५४	०१।०३।१२।२७	०९।१६।२३।५२	०७।२०।२०।००	४६।२३	०५।५८	०७।५४	१०।०७	१२।२५	१४।४१	१६।५६	१९।१३	२१।३०	२३।३५	०१।२१	०२।५२	०४।२१
१० बृ.	०२।१२।४३।१९	०१।०८।५७।५१	१०।०६।४४।०४	०१।०४।२६।०८	०९।१६।२५।०८	०७।२०।१६।४९	४६।२५	०५।५४	०७।५०	१०।०३	१२।२१	१४।३७	१६।५२	१९।०९	२१।२६	२३।३१	०१।१७	०२।४८	०४।१७
११ शु.	०२।१३।२०।०८	०१।१०।२५।१०	१०।०६।५२।१४	०१।०५।३९।४९	०९।१६।२६।२४	०७।२०।१३।३८	४६।२७	०५।५१	०७।४७	१०।००	१२।१८	१४।३४	१६।४९	१९।०६	२१।२३	२३।२८	०१।१४	०२।४५	०४।१४
१२ श.	०२।१३।५६।५७	०१।११।५२।२९	१०।०७।००।२४	०१।०६।५३।२९	०९।१६।२७।३९	०७।२०।१०।२७	४६।२८	०५।४७	०७।४३	०९।५६	१२।१४	१४।३०	१६।४५	१९।०२	२१।१९	२३।२४	०१।१०	०२।४१	०४।१०
१३ र.	०२।१४।३३।४६	०१।१३।१९।४८	१०।०७।०८।३४	०१।०८।०७।०९	०९।१६।२८।५४	०७।२०।०७।१६	४६।२९	०५।४३	०७।३९	०९।५२	१२।१०	१४।२६	१६।४१	१८।५८	२१।१५	२३।२०	०१।०६	०२।३७	०४।०६
१४ चं.	०२।१५।१०।३५	०१।१४।४७।०७	१०।०७।१६।४४	०१।०९।२०।४९	०९।१६।३०।०९	०७।२०।०४।०६	४६।३०	०५।३९	०७।३५	०९।४८	१२।०६	१४।२२	१६।३७	१८।५४	२१।११	२३।१६	०१।०२	०२।३३	०४।०२
३० मं.	०२।१५।४७।२९	०१।१५।५३।३५	१०।०७।२४।०७	०१।१०।३४।२२	०९।१६।३०।५७	०७।२०।००।५५	४६।३२	०५।३५	०७।३१	०९।४४	१२।०२	१४।१८	१६।३३	१८।५०	२१।०७	२३।१२	००।५८	०२।२९	०३।५८

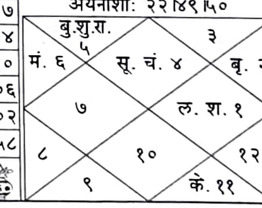
७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४१।१३

अयनांशा: २२।४९।४९



१४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४१।२०

अयनांशा: २२।४९।५०



विविधविषयाः—मेषसङ्क्रमे वारिपूर्णघटदानम्—त्रिकुशादिकमादाय ॐ सोपकरणवारिपूर्णघटाय **नमः** ३। कुशोपरि ॐ ब्राह्मणाय नमः ३। घटं सिक्त्वा—ॐ अद्यामुके मासि अमुकपक्षे अमुकतिथौ मेषार्कसङ्क्रमणप्रयुक्तपुण्याहे (पुण्यकाले) अमुकगोत्रस्य मम श्रीअमुकशर्मणः सकलमनोरथसिद्धिपूर्वक–पितृस्वर्गकाम इमं सोपकरणवारिपूर्णघटं वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे। ततः कुशत्रयादिकमादाय ॐ अद्य कृतैतत्सोपकरणवारिपूर्णघटदानप्रतिष्ठार्थमितावद् द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ततः प्रार्थयेत्—एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः। अस्य प्रसादात्सफला मम सन्तु मनोरथाः।। **वैशाखे प्रातःस्नानमन्त्रः—**वैशाखे सकलं मासं मेषसङ्क्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन।। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातःस्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्।। **वैशाखे त्याज्यवस्तूनि—**कास्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने।। **दानवस्तूनि स्कान्दे—**प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथापूपगृहाणि च।। **मिथिलापरिक्रमा, बृहद्विष्णुपुराणे—**परिक्रमाऽपि त्रिविधा बृहती मध्यमा लघु। मार्गशीर्षेऽथवा चैत्रे वैशाखे फाल्गुनेऽपि वा।। तत्र कौशिकी—सिंहेश्वर—गङ्गाकौशिकीसङ्गम—हरिहरक्षेत्र—हैमवत—कौशिकीतटस्थकामेश्वरशिव—सिंहेश्वरयात्रादिभिर्बृहती, कल्याणेश्वर—गिरिजास्थान—जलेश्वर—क्षीरेश्वर—धनुःस्थान—कल्याणेश्वरयात्रादिभिर्मध्यमा, गङ्गासागर—धनुःक्षेत्र—इन्द्रामसर—जानकीह्रद—वह्निमध्यमकुण्ड—रत्नसागर—कौण्डिन्यसर—अङ्गरागतीर्थ—लक्ष्मणकुण्ड—गङ्गासरःसु स्नानादिभिर्लघ्वी परिक्रमा सम्पद्यते।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः तापवृद्धिवाताग्निभयादयस्तन्मध्यभागे मेघचारच्छिन्नवृष्टियोगः।

वैशाखशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४३, संवत् २०७८, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क १२।०५।२०२१ ई. तः दिनाङ्क २६।०५।२०२१ ई. यावत्।
शुद्धः, वसन्तर्तुः ३ तः ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः ३ तः पश्चिमे कालः।

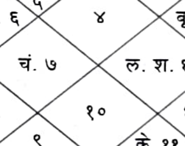
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ बु.	५०।३९	रा. ०१।३९	कृत्ति. ५०।४४	रा. ०१।४१	शोभ. ४४।१७	किं. १८।०६	मे. ००।४७	प्रा. ०५।४२	००।२७।५६।१६	३३।०७	५।२३	६।३७	२२	२९	१२
०२ बृ.	५५।३०	रा. ०३।३४	रोहिणी५७।०८	रा. ०४।१३	अगं. ४५।४६	बा. २३।०४	वृषः	अहोरात्रम्	००।२८।५३।५८	३३।१०	५।२२	६।३८	२३	३०	१३
०३ शु.	५९।४५	रा. ०५।१५	मृग. ६०।००	अहोरात्रम्	सुकर्मा४६।५०	तै. २७।३७	वृ. २९।५९	सं. ०५।२१	००।२९।५१।४०	३३।१३	५।२१	६।३९	२४	३१	१४
०४ श.	६०।००	अहोरात्रम्	मृग. ०२।४९	प्रा. ०६।२९	धृतिः ४७।१२	व. ३१।२३	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०१।००।४९।२२	३३।१६	५।२१	६।३९	२५	०१	१५
०४ र.	०३।०१	प्रा. ०६।३२	आर्द्रा ०७।३५	दि. ०८।३४	शूलः ४६।३९	वि. ०३।०१	मि. ५५।२२	रा. ०३।२९	०१।०१।४७।०४	३३।१९	५।२०	६।४०	२६	०२	१६
०५ चं.	०५।११	दि. ०७।२४	पुन. ११।१७	दि. ०९।५१	गण्डः ४५।१४	बा. ०५।११	कर्कः	अहोरात्रम्	०१।०२।४४।४६	३३।२२	५।२०	६।४०	२७	०३	१७
०६ मं.	०६।०३	दि. ०७।४४	पुष्यः १३।४४	दि. १०।४९	वृद्धिः ४२।४७	तै. ०६।०३	कर्कः	अहोरात्रम्	०१।०३।४२।१७	३३।२५	५।१९	६।४१	२८	०४	१८
०७ बु.	०५।३९	दि. ०७।३४	श्ले. १४।५२	दि. ११।१५	ध्रुवः ३९।१८	व. ०५।३९	क. १४।५२	दि. ११।१५	०१।०४।३९।४८	३३।२८	५।१८	६।४२	२९	०५	१९
०८ बृ.	०४।००	दि. ०६।५४	मघा १४।४९	दि. ११।१४	व्या. ३४।५३	व. ०४।००	सिंहः	अहोरात्रम्	०१।०५।३७।१९	३३।३१	५।१८	६।४२	३०	०६	२०
०९ शु.	०१।१२	प्रा. ०५।४६	पूफ. १३।३८	दि. १०।४४	हर्षणः २९।३६	कौ. ०१।१२	सिं. २८।०८	दि. ०४।३२	०१।०६।३४।५०	३३।३४	५।१७	६।४३	३१	०७	२१
११ श.	५२।४६	रा. ०२।२३	उफ. ११।३८	दि. ०९।५६	वज्रः २३।३९	व. २५।०५	कन्या	अहोरात्रम्	०१।०७।३२।२०	३३।३६	५।१७	६।४३	०१	०८	२२
१२ र.	४७।३०	रा. १२।१६	हस्तः ०८।४४	दि. ०८।४६	सिद्धिः १६।५८	ब. २०।०८	कं. ३६।५९	रा. ०८।०४	०१।०८।२९।५०	३३।३८	५।१६	६।४४	०२	०९	२३
१३ चं.	४१।४३	रा. ०९।५७	चित्रा ०५।१५	दि. ०७।२२	व्य. ०९।५०	कौ. १४।३६	तुला	अहोरात्रम्	०१।०९।२७।२०	३३।४०	५।१६	६।४४	०३	१०	२४
१४ मं.	३५।३९	रा. ०७।३२	स्वाती ०१।१८	प्रा. ०५।४७	वरी. ०२।२५	ग. ०८।४१	तु. ४३।१३	रा. १०।३३	०१।१०।२४।३९	३३।४२	५।१६	६।४४	०४	११	२५
१५ बु.	२९।३२	सं. ०५।०४	अनु. ५३।०५	रा. ०२।२९	शिवः ४७।०९	वि. ०२।३७	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०१।११।२१।५८	३३।४३	५।१५	६।४५	०५	१२	२६

कुम्भे मध्यमो बृहस्पतिः २१।४२ तत एव **"राक्षस"** नामैकोनपञ्चाशन्मध्यमबृहस्पतिसंवत्सरारम्भः, **शिवाजीजयन्ती, विवाहो द्विरागमनं** पूर्वदक्षिणयात्रा च रोहिण्याम्।
चन्द्रदर्शनमु. ४५ समशृङ्गफलं समर्घम्, **उपनयनम्, मुण्डनम्, कर्णवेधः, विवाहो दिवारात्रौ, द्विरागमनम्,** देवादिप्रतिष्ठा, वापीकूपखननम्, पूर्वयात्रा।
अक्षयतृतीया, त्रेतायुगादिः, गङ्गा–गण्डकी–कमला–कौशिकी–वाङ्मत्यादिस्नानदानादिः, **परशुरामजयन्ती**, परशुरामावतारः, **वृषे रविः** ५५।१८ मु. ३० फलं साम्यम्, मासान्तः, द.ति. ५९।४५ उपरि।
विष्णुपदीसङ्क्रान्तिपुण्यकालो दिवा घं. १२ यावत्, **पुण्याहः, गणेश ४** व्रतम्, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, दग्धतिथिः, वैशाखस्नानसमाप्तिः, हरद्वारे कल्पवाससमाप्तिः, भ. ३१।२३ उपरि।
मासादिः, **वक्री शनिः** ५९।४६, द.ति. ०३।०१ यावत्, भ. ०३।०१ यावत्।
जगद्गुरुशङ्कराचार्य(२५२८)जयन्ती, रामानुजाचार्य(१००३)जयन्ती, मुण्डनं कर्णवेधश्च पञ्चम्याम्, देवादिप्रतिष्ठा, पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा।
उत्तरां विना यात्रा सप्तम्यां पुष्ये।
जाह्नवीसप्तमी, जह्नुमुनेः कर्णरन्ध्राद्गङ्गायाः प्राकट्यम्, गङ्गास्नानदानादिः, शनिवेधाद्विवाहो नैव मघायाम्, भ. ०५।३९ उपरि ३५।१९ यावत्, गं. ०३।५२ उपरि १८।५२ यावत्।
जानकीनवमीव्रतम्, मैथिलीदिवसः, दीक्षाग्रहणम्, हनुमद्ध्वजदानम्, भूगर्भाज्जगज्जनन्या जानक्याः प्रादुर्भावः, श्रीसीतारामपूजनादिकम्, सीतामढ्यां पुण्यारण्ये (पुनौरायाम्) श्रीसीतारामदर्शनम्, बगलामुखीजयन्ती।
दशमीदं. ५६।१२, जानकीनवमीव्रतपारणम्, **उपनयनम्, विवाहो मुण्डनं कर्णवेधो** देवादिप्रतिष्ठा तडागवापीकूपखननञ्चोत्तरफल्गुन्याम्, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
मोहिनी ११ व्रतं स्मार्त्तानाम्, **रात्रौ ११** व्रतोद्यापनम्, दक्षिणयात्रैकादश्यां हस्ते, भ. २५।०५ उपरि ५२।४६ यावत्। ○ पश्चिमयात्रा, भ. ०२।३७ यावत्।
कुशोदकेन पारणम्, **मोहिनी ११** व्रतं वैष्णवानाम्, मधुसूदन १२, **उपनयनम्, विवाहो दिवारात्रौ**, देवादिप्रतिष्ठा, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा।
प्रदोष १३ व्रतम्, **विवाहः कर्णवेधश्च चित्रायाम्, स्वात्यां बृहस्पतिवेधाद्विवाहो मध्यमः, मुण्डनम्**, देवादिप्रतिष्ठा, पश्चिमदक्षिणयात्रा त्रयोदश्याम्। ✪ पश्चिमयात्रानुराधायाम्, पश्चिदक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
विशाखादं. ५५।५४, परिघदं. ५२।२१, **रोहिण्यां रविः** २१।०३, **वक्री बुधः** ३८।५२, भ. ३५।३९ उपरि, प्रदोष १४ व्रतम्, च्छिन्नमस्ताजयन्ती, नरसिंहावतारः, नरसिंह १४ व्रतं प्रदोषो घं. ०८।२० यावद्रात्रौ, ✪
वैशाखी १५ गङ्गा–गण्डकी–कमला–कौशिकी–वाङ्मत्यादिस्नानदानादिः, कूर्मावतारः, बुद्धावतारः, **बुद्ध(२६४५)जयन्ती, विवाहोऽनुराधायाम्, कर्णवेधः**, देवादिप्रतिष्ठा, कूपखननं पूर्णिमायाम्, ○

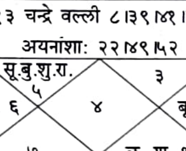
तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च						
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ बु.	०२।१६।२४।२२	०१।१७।००।०३	१०।०७।३१।३०	०१।११।४७।५५	०९।१६।३१।४५	०७।१९।५७।४४	४६।३४
०२ बृ.	०२।१७।०१।१५	०१।१८।०६।३१	१०।०७।३८।५३	०१।१३।०१।२७	०९।१६।३२।३३	०७।१९।५४।३३	४६।३६
०३ शु.	०२।१७।३८।०८	०१।१९।१२।५९	१०।०७।४६।१६	०१।१४।१४।५९	०९।१६।३३।२१	०७।१९।५१।२२	४६।३८
०४ श.	०२।१८।१५।०१	०१।२०।१९।२६	१०।०७।५३।३९	०१।१५।२८।३१	०९।१६।३४।०८	०७।१९।४८।११	४६।३९
०४ र.	०२।१८।५१।५४	०१।२१।२५।५३	१०।०८।०१।०१	०१।१६।४२।०३	०९।१६।३४।५५	०७।१९।४५।०१	४६।४०
०५ चं.	०२।१९।२८।४७	०१।२२।३२।२०	१०।०८।०८।२३	०१।१७।५५।३५	०९।१६।३५।४२	०७।१९।४१।५१	४६।४१
०६ मं.	०२।२०।०५।५०	०१।२३।०६।०७	१०।०८।१४।१६	०१।१९।०९।००	०९।१६।३५।१६	०७।१९।३८।४०	४६।४३
०७ बु.	०२।२०।४२।५३	०१।२३।३९।५४	१०।०८।२०।०८	०१।२०।२२।२५	०९।१६।३४।५०	०७।१९।३५।२९	४६।४५
०८ बृ.	०२।२१।१९।५६	०१।२४।१३।४१	१०।०८।२६।००	०१।२१।३५।५०	०९।१६।३४।२४	०७।१९।३२।१८	४६।४६
०९ शु.	०२।२१।५६।५८	०१।२४।४७।२८	१०।०८।३१।५२	०१।२२।४९।१४	०९।१६।३३।५८	०७।१९।२९।०७	४६।४७
११ श.	०२।२२।३४।००	०१।२५।२१।१५	१०।०८।३७।४४	०१।२४।०२।३८	०९।१६।३३।३२	०७।१९।२५।५६	४६।४८
१२ र.	०२।२३।११।०२	०१।२५।५५।०१	१०।०८।४३।३६	०१।२५।१६।०२	०९।१६।३३।०५	०७।१९।२२।४६	४६।४९
१३ चं.	०२।२३।४८।०४	०१।२६।२८।४७	१०।०८।४९।२८	०१।२६।२९।२६	०९।१६।३२।३८	०७।१९।१९।३६	४६।५०
१४ मं.	०२।२४।२५।१०	०१।२६।३७।०४	१०।०८।५४।१३	०१।२७।४२।३१	०९।१६।३१।४७	०७।१९।१६।२५	४६।५१
१५ बु.	०२।२५।०२।१६	०१।२६।२३।१३	१०।०८।५८।५८	०१।२८।५५।३६	०९।१६।३०।५६	०७।१९।१३।१४	४६।५२

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्											
मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०५।३२	०७।२८	०९।४१	११।५९	१४।१५	१६।३०	१८।४७	२१।०४	२३।०९	००।५५	०२।२६	०३।५५
०५।२८	०७।२४	०९।३७	११।५५	१४।११	१६।२६	१८।४३	२१।००	२३।०५	००।५१	०२।२२	०३।५१
०५।२४	०७।२०	०९।३३	११।५१	१४।०७	१६।२२	१८।३९	२०।५६	२३।०१	००।४७	०२।१८	०३।४७
०५।२०	०७।१६	०९।२९	११।४७	१४।०३	१६।१८	१८।३५	२०।५२	२२।५७	००।४३	०२।१४	०३।४३
०५।१६	०७।१२	०९।२५	११।४३	१३।५९	१६।१४	१८।३१	२०।४८	२२।५३	००।३९	०२।१०	०३।३९
०५।१२	०७।०८	०९।२१	११।३९	१३।५५	१६।१०	१८।२७	२०।४४	२२।४९	००।३५	०२।०६	०३।३५
०५।०८	०७।०४	०९।१७	११।३५	१३।५१	१६।०६	१८।२३	२०।४०	२२।४५	००।३१	०२।०२	०३।३१
०५।०४	०७।००	०९।१३	११।३१	१३।४७	१६।०२	१८।१९	२०।३६	२२।४१	००।२७	०१।५८	०३।२७
०५।००	०६।५६	०९।०९	११।२७	१३।४३	१५।५८	१८।१५	२०।३२	२२।३७	००।२३	०१।५४	०३।२३
०४।५६	०६।५२	०९।०५	११।२३	१३।३९	१५।५४	१८।११	२०।२८	२२।३३	००।१९	०१।५०	०३।१९
०४।५१	०६।४७	०९।००	११।१८	१३।३४	१५।४९	१८।०६	२०।२३	२२।२८	००।१४	०१।४५	०३।१४
०४।४७	०६।४३	०८।५६	११।१४	१३।३०	१५।४५	१८।०२	२०।१९	२२।२४	००।१०	०१।४१	०३।१०
०४।४३	०६।३९	०८।५२	११।१०	१३।२६	१५।४१	१७।५८	२०।१५	२२।२०	००।०६	०१।३७	०३।०६
०४।३९	०६।३५	०८।४८	११।०६	१३।२२	१५।३७	१७।५४	२०।११	२२।१६	००।०२	०१।३३	०३।०२
०४।३५	०६।३१	०८।४४	११।०२	१३।१८	१५।३३	१७।५०	२०।०७	२२।१२	२३।५८	०१।२९	०२।५८

५ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४१।२७
अयनांशाः २२।४९।५१



१३ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४१।३४
अयनांशाः २२।४९।५२



विविधविषयाः—सङ्क्रान्तिनिर्णयः सिद्धान्तसुधायाम्—निशार्क्कचाररात्रिकटं दिनार्द्धं दिवार्क्कचाररात्रिकटाष्टिघट्यः। ताः कर्क्कटे प्राक्कथितेतरेर्व्वाक् पुण्याय विष्वग्घटगोऽलिसिंहे।। रात्रि सङ्क्रमणे निकटं दिनार्द्धं पुण्याय भवति। तेन रात्रिपूर्वार्द्धे सङ्क्रमे पूर्वदिनार्द्धोत्तरपुण्यकालः तथा च रात्रिपरभागे सङ्क्रमे परदिनपूर्वार्द्धभागः पुण्यकालः स्यात्। यदि दिने सूर्यसङ्क्रमस्तदा निकटवर्तिन्यः षोडशघटिकाः पुण्याय भवन्ति। ताः कर्कसङ्क्रमे पूर्वाः, स्थिरराशिसङ्क्रमे पूर्वमष्टौ परतश्चाष्टौ घटिकाः तथा कथितेतरेषु सङ्क्रमोत्तरवर्तिन्यः पुण्याय भवन्ति। **अक्षयतृतीयायां दानमक्षयफलदम्, विष्णुधर्मोत्तरे**—वैशाखे शुक्लपक्षे तु तृतीयायां द्विजोत्तम। यद्ददाति नरश्रेष्ठ तद्दाताऽक्षयमश्नुते।। अत्र **परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः**—जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।। जानकीनवमीव्रतं **बृहद्विष्णुपुराणे**—वैशाखस्य सिते पक्षे नवमी तु मघायुता। सैव मध्याह्नयोगेन शस्यते व्रतकर्मणि।। तत्र जानकीं सम्पूज्य **प्रणमेत्तन्मन्त्रः**—दशाननविनाशाय जाता धरणिसम्भवा। मैथिली शीलसम्पन्ना पातु नः पतिदेवता।। **मूलवासः**—स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्त्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र।। **अभुक्तमूलविचारः**—अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसाः क्रमात्।। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः मूलादिनक्षत्रेषु कार्या। **मूलवृक्षविचारः**—मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः।। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च।। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्।। **त्रीतरशान्तिरपि** विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः १४ तो वक्री, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ४ तो वक्री।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातमेघचारतापादयस्तन्मध्यभागे मेघचारझञ्झावातादयः।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

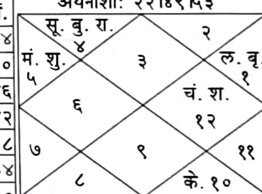
शकाब्दः १९४३, संवत् २०७८, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क २७।०५।२०२१ ई. तः दिनाङ्क १०।०६।२०२१ ई. यावत्।
शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, पश्चिमे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ बृ.	२३।२५	दि. ०२।३७	ज्ये. ४९।०९	रा. १२।५५	सिद्धः ३९।४१	कौ. २३।२५	वृ. ४९।०९	रा. १२।५५	०१।२२।२९।२७	३३।४४	५।२५	६।४५	०६	१३	२७
०२ शु.	१७।४०	दि. १२।२९	मूलम् ४५।३६	रा. ११।२९	साध्यः ३२।३०	ग. १७।४०	धनुः	अहोरात्रम्	०१।२३।२६।३६	३३।४५	५।२५	६।४५	०७	१४	२८
०३ श.	१२।२५	दि. १०।२३	पूषा. ४२।४१	रा. १०।२९	शुभः २५।४६	वि. १२।२५	ध. ५७।२०	रा. ०४।०७	०१।२४।२३।५५	३३।४६	५।२५	६।४५	०८	१५	२९
०४ र.	०७।५२	दि. ०८।२४	उषा. ४०।३९	रा. ०९।३१	शुक्लः १९।४२	बा. ०७।५२	मकरः	अहोरात्रम्	०१।२५।२१।२३	३३।४७	५।२५	६।४५	०९	१६	३०
०५ चं.	०४।०९	दि. ०६।५४	श्रवणा३९।२५	रा. ०९।००	ब्रह्मः १४।२८	तै. ०४।०९	मकरः	अहोरात्रम्	०१।२६।०८।३१	३३।४८	५।२४	६।४६	१०	१७	३१
०६ मं.	०१।२७	प्रा. ०५।४९	धनि. ३९।२७	रा. ०८।५७	ऐन्द्रः ०९।४५	व. ०१।२७	म. ०९।२१	दि. ०८।५८	०१।२७।०५।४२	३३।५०	५।२४	६।४६	११	१८	०१
०८ बु.	५९।३८	रा. ०५।०५	शत. ४०।२१	रा. ०९।२२	वैधृतिः ०६।०८	बा. २९।४६	कुम्भः	अहोरात्रम्	०१।२८।०२।५३	३३।५१	५।२४	६।४६	१२	१९	०२
०९ बृ.	६०।००	अहोरात्रम्	पूभा. ४२।४३	रा. १०।२९	विष्क. ०३।३१	तै. ३०।०९	कुं. २७।०८	दि. ०४।०५	०१।२९।००।०३	३३।५२	५।२४	६।४६	१३	२०	०३
०९ शु.	००।४१	प्रा. ०५।२९	उभा. ४६।२१	रा. ११।४५	प्रीतिः ०१।५७	ग. ००।४१	मीनः	अहोरात्रम्	०१।२९।५७।२३	३३।५३	५।२३	६।४७	१४	२१	०४
१० श.	०२।५५	प्रा. ०६।२३	रेवती ५१।०५	रा. ०१।३५	आयु. ०१।२९	वि. ०२।५५	मी. ५१।०५	रा. ०१।३९	०१।२०।५४।२३	३३।५४	५।२३	६।४७	१५	२२	०५
११ र.	०६।२१	दि. ०७।४५	अश्वि. ५६।४३	रा. ०३।५४	सौभा. ०१।३४	बा. ०६।२१	मेषः	अहोरात्रम्	०१।२१।५१।३३	३३।५५	५।२३	६।४७	१६	२३	०६
१२ चं.	१०।३७	दि. ०९।२८	भर. ६०।००	अहोरात्रम्	शोभ. ०२।३६	तै. १०।३७	मेषः	अहोरात्रम्	०१।२२।४८।४३	३३।५६	५।२३	६।४७	१७	२४	०७
१३ मं.	१५।३१	दि. ११।२४	भर. ०३।००	प्रा. ०६।२४	अगं. ०४।०२	व. १५।३१	मे. १९।३९	दि. ०१।०४	०१।२३।४५।४६	३३।५८	५।२२	६।४८	१८	२५	०८
१४ बु.	२०।४०	दि. ०१।२८	कृत्ति. ०९।३८	दि. ०९।०३	सुकर्मा ०५।४३	श. २०।४०	वृषः	अहोरात्रम्	०१।२४।४२।४९	३४।००	५।२२	६।४८	१९	२६	०९
३० बृ.	२५।३१	दि. ०३।२४	रोहिणी १६।०१	दि. ११।३६	धृतिः ०७।२९	ना. २५।३१	वृ. ४८।५७	रा. १२।४७	०१।२५।३९।५२	३४।०२	५।२२	६।४८	२०	२७	१०

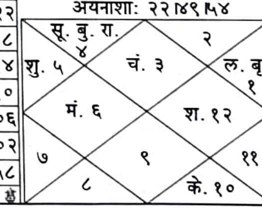
ज्येष्ठे वृन्ताकं त्यजेत्, **मुण्डनं द्वितीयायाम्**, पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा, **मिथुने शुक्रः** ३९।४५, गं. ४३।०९ उपरि ५८।०९ यावत्।
मङ्गलवेधाद्विवाहो नैव मूले, पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायाम्, भ. ४५।०३ उपरि, (२—३) एकोद्दिष्टम्।
आखुरथ ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०९।३०, **नैर्ऋत्यामगस्त्यास्तः**, उत्तरयात्रा तृतीयायाम्, **पश्चिमास्तो बुधः** १०।०३, द.ति. १२।२५ उपरि, भ. १२।२५ यावत्।
विवाहः पश्चिमां विना यात्रा च श्रवणायाम्, **उत्तराषाढे शुक्रवेधाद्विवाहो मध्यमः पञ्चम्याम्**, द.ति. ०७।५२ यावत्।
विवाहो दिवारात्रौ, मुण्डनं कर्णवेधश्च पञ्चम्याम्, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. ०९।०० उपरि।
जून ६, सप्तमीदं. ५८।२८, भ. ३०।४१ उपरि ५९।५५ यावत्, पूर्वयात्रा सप्तम्यां मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।
बुधाष्टमी स्नानदानादावक्षयफलदा।
कर्के मङ्गलः ४८।२६, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्।
विवाहो दशम्याम्, उत्तरयात्रा रेवत्याम्, भ. ३१।४८ उपरि।
पश्चिमोत्तरयात्रैकादश्यां रेवत्यां ततः पूर्वां विना यात्रा, पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०१।३५ उपरि, गं. ३९।०५ उपरि ५४।०५ यावत्, भ. ०२।५५ यावत्।
अपरा ११ व्रतं सर्वेषाम्, **विवाह अश्विन्याम्**, पश्चिमां विना यात्रा द्वादश्यामश्विन्याम्।
तिलेन पारणम्, प्रदोष १३ व्रतम्।
प्रदोष १४ व्रतम्, **मृगशिरसि रविः** १९।५३, भ. १५।३१ उपरि ४८।२६ यावत्, (१४) एकोद्दिष्टम्।
शकुनम्—ज्येष्ठे मासि तथाषाढे रोहिणीदिवसे नभः। निवृष्टं वृष्टिनाशाय सुवृष्टं वृष्टिवर्द्धनम्।।
ज्यैष्ठी ३० स्नानदानादिः, **वटसावित्री (वरसाति) व्रतम्**, **विवाहो** दक्षिणां विना यात्रा च प्रतिपदि।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च							दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्											
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ बृ.	०२।२५।३९।२२	०१।२६।०९।२२	१०।०९।०३।४३	०२।००।०८।४१	०९।२६।३०।०५	०७।२९।२०।०३	४६।५३	०४।३१	०६।२७	०८।४०	१०।५८	१३।२४	१५।२९	१७।४६	२०।०३	२२।०८	२३।५४	०१।२५	०२।५४
०२ शु.	०२।२६।२६।२८	०१।२५।५५।३१	१०।०९।०८।२८	०२।०१।२१।४६	०९।२६।२९।२४	०७।२९।०६।५२	४६।५४	०४।२७	०६।२३	०८।३६	१०।५४	१३।२०	१५।२५	१७।४२	१९।५९	२२।०४	२३।५०	०१।२१	०२।५०
०३ श.	०२।२६।५३।३४	०१।२५।४१।४०	१०।०९।२३।२३	०२।०२।३४।५०	०९।२६।२८।२३	०७।२९।०३।४१	४६।५४	०४।२३	०६।२९	०८।३२	१०।५०	१३।०६	१५।२१	१७।३८	१९।५५	२२।००	२३।४६	०१।२७	०२।४६
०४ र.	०२।२७।३०।३९	०१।२५।२७।४९	१०।०९।२७।५७	०२।०३।४७।५४	०९।२६।२७।३२	०७।२९।००।३१	४६।५४	०४।२९	०६।२५	०८।२८	१०।४६	१३।०२	१५।२७	१७।३४	१९।५१	२१।५६	२३।४२	०१।२३	०२।४२
०५ चं.	०२।२८।०७।४४	०१।२५।२३।५८	१०।०९।२२।४१	०२।०५।००।५८	०९।२६।२६।४२	०७।२८।५७।२१	४६।५४	०४।२५	०६।२१	०८।२४	१०।४२	१२।५८	१५।२३	१७।३०	१९।४७	२१।५२	२३।३८	०१।०९	०२।३८
०६ मं.	०२।२८।४४।५१	०१।२४।२९।२८	१०।०९।२६।२७	०२।०६।२३।५०	०९।२६।२४।५८	०७।२८।५४।२०	४६।५५	०४।२१	०६।०७	०८।२०	१०।३८	१२।५४	१५।०९	१७।२६	१९।४३	२१।४८	२३।३४	०१।०५	०२।३४
०८ बु.	०२।२९।२१।५८	०१।२३।४४।३८	१०।०९।२९।५२	०२।०७।२६।४२	०९।२६।२३।२४	०७।२८।५०।५९	४६।५६	०४।०७	०६।०३	०८।२६	१०।३४	१२।५०	१५।०५	१७।२२	१९।३९	२१।४४	२३।३०	०१।०१	०२।३०
०९ बृ.	०२।२९।५९।०५	०१।२२।५९।५८	१०।०९।३३।२७	०२।०८।३९।३४	०९।२६।२१।३०	०७।२८।४७।४८	४६।५७	०४।०३	०५।५९	०८।२२	१०।३०	१२।४६	१५।०१	१७।२८	१९।३५	२१।४०	२३।२६	००।५७	०२।२६
०९ शु.	०३।००।३६।२२	०१।२२।२५।२८	१०।०९।३७।०२	०२।०९।५२।२६	०९।२६।२९।४७	०७।२८।४४।३७	४६।५८	०३।५९	०५।५५	०८।०८	१०।२६	१२।४२	१४।५७	१७।२४	१९।३१	२१।३६	२३।२२	००।५३	०२।२२
१० श.	०३।०१।२३।२९	०१।२१।३०।३८	१०।०९।४०।३७	०२।२१।०५।२७	०९।२६।२८।०४	०७।२८।४१।२६	४६।५८	०३।५५	०५।५१	०८।०४	१०।२२	१२।३८	१४।५३	१७।२०	१९।२७	२१।३२	२३।२८	००।४९	०२।२८
११ र.	०३।०१।५०।२५	०१।२०।४५।५८	१०।०९।४४।२२	०२।२२।२८।०८	०९।२६।२६।२१	०७।२८।३८।२५	४६।५८	०३।५१	०५।४७	०८।००	१०।२८	१२।३४	१४।४९	१७।०६	१९।२३	२१।२८	२३।२४	००।४५	०२।२४
१२ चं.	०३।०२।२७।३१	०१।२०।०१।२८	१०।०९।४७।४७	०२।२३।३०।५९	०९।२६।२४।३८	०७।२८।३५।०५	४६।५८	०३।४७	०५।४३	०७।५६	१०।२४	१२।३०	१४।४५	१७।०२	१९।२९	२१।२४	२३।२०	००।४१	०२।२०
१३ मं.	०३।०३।०४।५३	०१।२९।२७।२४	१०।०९।४९।४९	०२।२४।४३।४१	०९।२६।२२।२१	०७।२८।३१।५४	४६।५९	०३।४३	०५।३९	०७।५२	१०।२०	१२।२६	१४।४१	१६।५८	१९।२५	२१।२०	२३।०६	००।३७	०२।०६
१४ बु.	०३।०३।४२।२५	०१।२८।५३।३०	१०।०९।५१।५०	०२।२५।५६।२३	०९।२६।०९।४४	०७।२८।२८।४३	४७।००	०३।३९	०५।३५	०७।४८	१०।०६	१२।२२	१४।३७	१६।५४	१९।२१	२१।२६	२३।०२	००।३३	०२।०२
३० बृ.	०३।०४।२९।३७	०१।२८।२९।३६	१०।०९।५३।५१	०२।२७।०९।०५	०९।२६।०७।२७	०७।२८।२५।३२	४७।०१	०३।३५	०५।३१	०७।४४	१०।०२	१२।२८	१४।३३	१६।५०	१९।०७	२१।२२	२२।५८	००।२९	०१।५८

५ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४१।४१
अयनांशाः २२।४९।५३



१२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४१।४८
अयनांशाः २२।४९।५४



विविधविषयाः—ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि वामनपुराणे—उदक्कुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्याज्ज्येष्ठमासि च।। **कृत्यशिरोमणौ**—निदाघकाले पानीयं यस्य तिष्ठत्यवारितम्। स दुर्गं विषमं कृच्छ्रं न कदाचिदवाप्नुयात्।। छत्रदानात्तथा ज्येष्ठे सर्वान् कामानवाप्नुयात्। छत्रोपानहयोर्दानाज्ज्येष्ठे मासि द्विजोत्तमाः। अक्षयं फलमाप्नोति नाकलोकं च गच्छति।। **अमायां वटसावित्रीव्रतम्**—अमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्।। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात्सौवर्णीं वापि मृण्मयीम्। सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः। सावित्र्याख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिति विधिपूर्वकं सम्पूज्य ब्राह्मणाय **दद्यात्तन्मन्त्रः**—सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्।। **कतिचिन्नियमाः**—समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः।। **मासविशेषे नदीविशेषे स्नानम्**—कौशिकीं माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववतीं मार्गे कार्त्तिके यामुनीं तथा।। भूयसी गैरिका चैवमाश्विने फलदा मता। भाद्रे जलाधिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा।। विरजा श्रावणे पुण्या मण्डना फाल्गुने मता। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा।। वाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्त्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।। चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्यः शुभावहाः। गङ्गा तु सर्वदेति। **सन्तानप्रदसन्तानगोपालमन्त्रः**—देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। इति मन्त्रस्य सपादलक्षसङ्ख्यकजपः, तिलपायसघृतैस्तद्दशांशहोमः, तद्दशांशतर्पणम्, तद्दशांशमार्जनम्, तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्।
ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, वक्री पश्चिमोदितो बुधः ३ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।
वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे झञ्झावातमेघचारादयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातमेघच्छायातापवृद्धयः।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४३, संवत् २०७८, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क ११।०६।२०२१ ई. तः दिनाङ्क २४।०६।२०२१ ई. यावत्।
शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, पश्चिमे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ शु.	२९।४३	दि. ०५।०४	मृग. २१।५३	दि. ०१।५६	शूल: ०८।२८	व. २९।४३	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०१।२६।३६।५५	३४।०३	५।११	६।४९	२१	२८	११
०२ श.	३२।५९	सं. ०६।२३	आर्द्रा २६।५३	दि. ०३।५६	गण्ड: ०९।००	बा. ०१।२१	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०१।२७।३३।५७	३४।०४	५।११	६।४९	२२	२९	१२
०३ र.	३५।१०	रा. ०७।१५	पुन. ३०।४७	दि. ०५।३०	वृद्धि: ०८।३९	तै. ०४।०४	मि. १४।४८	दि. ११।०६	०१।२८।३०।५९	३४।०५	५।११	६।४९	२३	३०	१३
०४ चं.	३६।०३	रा. ०७।३६	पुष्य: ३३।२९	सं. ०६।३५	ध्रुव: ०७।२८	व. ०५।३६	कर्क:	अहोरात्रम्	०१।२९।२८।०१	३४।०६	५।११	६।४९	२४	३१	१४
०५ मं.	३५।४०	रा. ०७।२६	श्ले. ३४।५५	रा. ०७।०८	व्या. ०५।१३	ब. ०५।४१	क. ३४।५५	रा. ०७।०८	०२।००।२४।५८	३४।०८	५।१०	६।५०	२५	०१	१५
०६ बु.	३४।०२	रा. ०६।४७	मघा ३५।०७	रा. ०७।१३	हर्षण: ०१।५७	कौ. ०४।५१	सिंह:	अहोरात्रम्	०२।०१।२१।५५	३४।०९	५।१०	६।५०	२६	०२	१६
०७ बृ.	३१।१२	सं. ०५।३९	पूफ. ३४।१०	रा. ०६।५०	सिद्धि: ५२।३६	ग. ०२।३७	सिं. ४८।४२	रा. १२।३९	०२।०२।१८।५२	३४।१०	५।१०	६।५०	२७	०३	१७
०८ शु.	२७।२५	दि. ०४।०८	उफ. ३२।१७	सं. ०६।०५	व्य. ४६।४६	व. २७।२५	कन्या	अहोरात्रम्	०२।०३।१५।४९	३४।११	५।१०	६।५०	२८	०४	१८
०९ श.	२२।४६	दि. ०२।१६	हस्त: २९।३२	दि. ०४।५९	वरी. ४०।१५	कौ. २२।४६	कं. ५७।५०	रा. ०४।१८	०२।०४।१२।४५	३४।१२	५।१०	६।५०	२९	०५	१९
१० र.	१७।२९	दि. १२।०९	चित्रा २६।०९	दि. ०३।३७	परिघ: ३३।१२	ग. १७।२९	तुला	अहोरात्रम्	०२।०५।०९।४१	३४।१३	५।०९	६।५१	३०	०६	२०
११ चं.	११।३८	दि. ०९।४८	स्वाती २२।१६	दि. ०२।०३	शिव: २५।४९	वि. ११।३८	तुला	अहोरात्रम्	०२।०६।०६।३७	३४।१४	५।०९	६।५१	३१	०७	२१
१२ मं.	०५।३२	दि. ०७।२२	विशा. १८।०८	दि. १२।२४	सिद्ध: १८।१६	बा. ०५।३२	तु. ०४।१४	प्रा. ०६।५१	०२।०७।०३।३०	३४।१४	५।०९	६।५१	०१	०८	२२
१४ बु.	५३।१४	रा. ०२।२७	अनु. १३।५५	दि. १०।४३	साध्य: १०।३६	ग. २६।१७	वृश्चिक:	अहोरात्रम्	०२।०८।००।२३	३४।१३	५।०९	६।५१	०२	०९	२३
१५ बृ.	४७।२६	रा. १२।०८	ज्ये. ०९।५४	दि. ०९।०८	शुभ: ०३।०६	वि. २०।२०	वृ. ०९।५४	दि. ०९।०८	०२।०८।५७।१६	३४।१२	५।१०	६।५०	०३	१०	२४

विवाहः कर्णवेधः पश्चिमां विना यात्रा च मृगशिरसि।

चन्द्रदर्शनमु. ४५ सौम्यशृङ्गफलं समर्घम्, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ।

रम्भा ३, पञ्चाग्निव्रतं पतिपुत्रफलप्रदम्,**महाराणाप्रतापजयन्ती, गणेश ४** व्रतम्,उमाचतुर्थी,उमापूजनम्,देवादिप्रतिष्ठा,दक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायाम्,द.ति. ३५।१० उपरि।

मासान्तः, **पूर्वोदितो बुधः** २२।५७, द.ति. ३६।०३ यावत्, भ. ०५।३६ उपरि ३६।०३ यावत्।

मिथुने रविः २०।४६ मु. १५ फलं महार्घम्, **षडशीतिसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** दिवा घं. ०१।२८ उपरि दिने, **पुण्याहः**, गं. २३।५५ उपरि ३८।५५ यावत्।

वज्रदं. ५५।४५, मासादिः, अरण्यषष्ठी, स्कन्दषष्ठी, विन्ध्यवासिनीपूजनदर्शनादिकम्।

पूर्वोत्तरयात्रा सप्तम्याम्, द.ति. ३१।१२ उपरि, भ. ३१।१२ उपरि ५९।१९ यावत्।

पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते, **मार्गी बुधः** ०१।५०, द.ति. २७।२५ यावत्।

वक्री बृहस्पतिः ४०।१५, **गृहप्रवेशो दशम्याम्, गृहारम्भो घं. ०४।५९ तः ०५।०८ यावदपराह्णे**, दक्षिणयात्रा नवम्याम्। ✪ भ. ४४।३४ उपरि, (१०—११) एकोद्दिष्टम्।

पृथिव्यां गङ्गावतरणम्, **गङ्गादशहरा** गङ्गास्नानदानादिः, रामेश्वरप्रतिष्ठादिनं तद्दर्शनं शिवसायुज्यप्रदम्, **उपनयनम्, बृहस्पतिवेधाद्विवाहो मध्यमो दिवारात्रौ**, देवादिप्रतिष्ठा, दक्षिणयात्रा दशम्याम्, ✪

कर्के शुक्रः २४।०९, **निर्जला ११** व्रतं सर्वेषाम्, **उपनयनम्, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनम्, बृहस्पतिवेधाद्विवाहो मध्यमः स्वात्याम्, मुण्डनं** पश्चिमदक्षिणयात्रा चैकादश्याम्, ❍

त्रयोदशीदं. ५३।४८, तिलेन पारणम्, त्रिविक्रम १२, प्रदोष १३ व्रतम्, पश्चिमयात्रानुराधायाम्, **आर्द्रायां रविः** २२।२० स्त्रीनपुंसूचयोगस्तुलालग्नं मण्डूकवाहनश्चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेनातपझञ्झावातयोगः।

प्रदोष १४ व्रतम्, चम्पकचतुर्दशी, पश्चिमयात्रा पूर्णिमायाम्, भ. ५३।१४ उपरि। ❍ **गृहारम्भो गृहप्रवेशः** देवादिप्रतिष्ठा च स्वात्याम्, भ. ११।३८ यावत्।

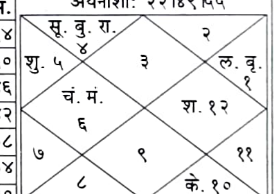
ज्यैष्ठी १५ स्नानदानादिः, तिलादिदानम्, साम्प्रतिकवैवस्वतमन्वादिः, **श्रीकबीर(६२३)जयन्ती, विवाहो गृहारम्भश्च मूले**, पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा, शुक्लदं. ५२।४७, ✪

✪ भ. २०।२० यावत्, गं. ०३।५४ उपरि १८।५४ यावत्।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च							दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्											
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ शु.	०३।०४।५६।५९	०१।१७।४५।४२	१०।०९।५५।५२	०२।१८।२१।४६	०९।१६।०४।५०	०७।१८।२२।२१	४७।०२	०३।३१	०५।२७	०७।४०	०९।५८	१२।१४	१४।२९	१६।४६	१९।०३	२१।०८	२२।५४	००।२५	०१।५४
०२ श.	०३।०५।३४।२१	०१।१७।११।४९	१०।०९।५७।५३	०२।१९।३४।२७	०९।१६।०२।२३	०७।१८।१९।१०	४७।०३	०३।२७	०५।२३	०७।३६	०९।५४	१२।१०	१४।२५	१६।४२	१८।५९	२१।०४	२२।५०	००।२१	०१।५०
०३ र.	०३।०६।११।४३	०१।१६।३७।५६	१०।०९।५९।५४	०२।२०।४७।०८	०९।१५।५९।५७	०७।१८।१६।००	४७।०३	०३।२३	०५।१९	०७।३२	०९।५०	१२।०६	१४।२१	१६।३८	१८।५५	२१।००	२२।४६	००।१७	०१।४६
०४ चं.	०३।०६।४९।०५	०१।१६।०४।०३	१०।१०।०१।५५	०२।२१।५९।४९	०९।१५।५७।३१	०७।१८।१२।५०	४७।०३	०३।१९	०५।१५	०७।२८	०९।४६	१२।०२	१४।१७	१६।३४	१८।५१	२०।५६	२२।४२	००।१३	०१।४२
०५ मं.	०३।०७।२६।१९	०१।१६।०३।०३	१०।१०।०२।४१	०२।२३।१२।२२	०९।१५।५४।२९	०७।१८।०९।३९	४७।०४	०३।१५	०५।११	०७।२४	०९।४२	११।५८	१४।१३	१६।३०	१८।४७	२०।५२	२२।३८	००।०९	०१।३८
०६ बु.	०३।०८।०३।३३	०१।१६।०२।०३	१०।१०।०३।२७	०२।२४।२४।५५	०९।१५।५१।२७	०७।१८।०६।२८	४७।०५	०३।११	०५।०७	०७।२०	०९।३८	११।५४	१४।०९	१६।२६	१८।४३	२०।४८	२२।३४	००।०५	०१।३४
०७ बृ.	०३।०८।४०।४७	०१।१६।०१।०२	१०।१०।०४।१२	०२।२५।३७।२८	०९।१५।४८।२५	०७।१८।०३।१७	४७।०६	०३।०७	०५।०३	०७।१६	०९।३४	११।५०	१४।०५	१६।२२	१८।३९	२०।४४	२२।३०	००।०१	०१।३०
०८ शु.	०३।०९।१८।०१	०१।१६।००।०१	१०।१०।०४।५७	०२।२६।५०।०१	०९।१५।४५।२३	०७।१८।००।०६	४७।०७	०३।०३	०४।५९	०७।१२	०९।३०	११।४६	१४।०१	१६।१८	१८।३५	२०।४०	२२।२६	२३।५७	०१।२६
०९ श.	०३।०९।५५।१५	०१।१६।२२।०८	१०।१०।०५।४२	०२।२८।०२।३४	०९।१५।४२।२२	०७।१७।५६।५५	४७।०७	०२।५९	०४।५५	०७।०८	०९।२६	११।४२	१३।५७	१६।१४	१८।३१	२०।३६	२२।२२	२३।५३	०१।२२
१० र.	०३।१०।३२।२८	०।१६।४४।१५	१०।१०।०५।२९	०२।२९।१५।०६	०९।१५।३९।२१	०७।१७।५३।४५	४७।०७	०२।५५	०४।५१	०७।०४	०९।२२	११।३८	१३।५३	१६।१०	१८।२७	२०।३२	२२।१८	२३।४९	०१।१८
११ चं.	०३।११।०९।४१	०१।१७।०६।२२	१०।१०।०५।१६	०३।००।२७।३८	०९।१५।३६।२०	०७।१७।५०।३५	४७।०७	०२।५१	०४।४७	०७।००	०९।१८	११।३४	१३।४९	१६।०६	१८।२३	२०।२८	२२।१४	२३।४५	०१।१४
१२ मं.	०३।११।४७।०५	०१।१७।५५।०९	१०।१०।०४।२४	०३।०१।३९।४९	०९।१५।३२।४९	०७।१७।४७।२४	४७।०७	०२।४७	०४।४३	०६।५६	०९।१४	११।३०	१३।४५	१६।०२	१८।१९	२०।२४	२२।१०	२३।४१	०१।१०
१४ बु.	०३।१२।२४।२९	०१।१८।४३।५५	१०।१०।०३।३१	०३।०२।५२।००	०९।१५।२९।१८	०७।१७।४४।१३	४७।०७	०२।४३	०४।३९	०६।५२	०९।१०	११।२६	१३।४१	१५।५८	१८।१५	२०।२०	२२।०६	२३।३७	०१।०६
१५ बृ.	०३।१३।०१।५३	०१।१९।३२।४१	१०।१०।०२।३८	०३।०४।०४।११	०९।१५।२५।४७	०७।१७।४१।०२	४७।०७	०२।३९	०४।३५	०६।४८	०९।०६	११।२२	१३।३७	१५।५४	१८।११	२०।१६	२२।०२	२३।३३	०१।०२

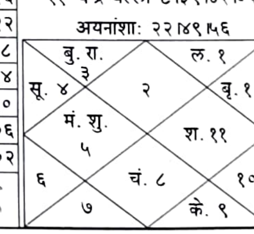
४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४१।५५

अयनांशाः २२।४९।५५



११ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४२।०२

अयनांशाः २२।४९।५६



विविधविषयाः—चतुर्थ्यां सौभाग्यवृद्धये उमापूजनं ब्रह्मपुराणे—ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां तु जाता पूर्वामुमा सती। तस्मात् सा तत्र सम्पूज्या स्त्रीभिः सौभाग्यवृद्धये।। षष्ठ्यां शुभसन्ततिकामा **स्कन्दषष्ठीव्रतं** कुर्यादित्याह **राजमार्त्तण्डे**—ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे षष्ठी चारण्यसंज्ञिता। व्यजनैककरास्तस्यामटन्ति विपिने स्त्रियः।। तां विन्ध्यवासिनीं स्कन्दषष्ठीमाराधयन्ति च। कन्दमूलफलाहाराः लभन्ते सन्ततिं शुभाम्।। **अष्टम्यां चतुर्दश्याञ्च** पञ्चाग्निव्रतभृक् तयोस्तिथ्योः सायङ्काले व्रतान्ते सुवर्णस्य धेनोश्च दाता दिवं यातीति प्रोक्तं **कृत्यमहार्णवे**—ज्येष्ठे पञ्चतपास्सायं हेमधेनुप्रदो दिवि। यात्यष्टमीचतुर्दश्यो रुद्रव्रतमिदं स्मृतम्।। **दशम्यां गङ्गादशहरा, पाद्मे**—शुक्लपक्षस्य दशमी ज्येष्ठे मासि द्विजोत्तम। हरते दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता।। **पराशरभाष्ये यमः**—ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां हस्तयोगतः। दशजन्माघहा गङ्गा दशपापहरा स्मृता।। **अस्यां दशयोगास्तिथितत्त्वचिन्तामणौ**—ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः। व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ।। दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।। **गङ्गामाहात्म्यम्, ब्रह्माण्डे**—दृष्ट्वा तु हरते पापं स्पृष्ट्वा तु त्रिदिवं नयेत्। **प्रसङ्गेनापि** या गङ्गा मोक्षदा त्ववगाहिता।। यैः पुण्यवाहिनी गङ्गा सकृद्भक्त्यावगाहिता। तेषां कुलानां लक्षन्तु भवात्तारयते शिवा।। अनेकजन्मसम्भूतं पापं पुंसां प्रणश्यति।। **आग्नेये**—गङ्गायां पूजितायान्तु पूजिताः सर्व्वदेवताः। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन पूजयेदमरोपगाम्।। **गङ्गायाः स्मरणफलम्**—गच्छन् तिष्ठन् स्वपन् ध्यायन् जाग्रद् भुञ्जन् श्वसन् वदन्। यः स्मरेत् सततं गङ्गां स वै मुच्येत बन्धनात्।। **पूर्णिमायां तिलदानमहत्त्वमादित्यपुराणे**—ज्येष्ठे मासि तिलान् दद्यात् पौर्णमास्यां विशेषतः। अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम्।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ४ तः पूर्वोदितः ८ तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः ९ तो वक्री, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धे वातमेघचारझञ्झावातादयस्तदुत्तरार्द्धे वाताभ्रचारतापवृद्धयः।

आषाढकृष्णपक्षः

शकाब्द: १९४३, संवत् २०७८, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क २५।०६।२०२१ ई. त: दिनाङ्क १०।०७।२०२१ ई. यावत्।
शुद्ध:, ग्रीष्मर्तु:, सौम्यगोल:, सौम्यायनम्, पश्चिमे काल:।

तिथय: दिनानि	तिथय: द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. द. प.	घं. मि.	योगा: यो. द. प.	करणानि क. द. प.	चन्द्रराशय: रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानम् द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्का: रा.	सौ.	अं.	
०१ शु.	४२।०५	रा. १०।००	मूलम् ०६।१५	दि. ०७।४०	ब्रह्म: ४९।०४	बा. १४।४६	धनु:	अहोरात्रम्	०२।०९।५४।०९	३४।११	५।१०	६।५०	०४	११	२५	बिल्वमाषाढके त्यजेत्, **विवाहो मूले**, पूर्वोत्तरयात्रा प्रतिपदि।
०२ श.	३७।२५	रा. ०८।०८	पूषा. ०३।०९	प्रा. ०६।२६	ऐन्द्र: ४२।५३	तै. ०९।४५	ध. १७।३५	दि. १२।१२	०२।१०।५१।०१	३४।१०	५।१०	६।५०	०५	१२	२६	**गृहारम्भ उत्तराषाढे।**
०३ र.	३३।३७	सं. ०६।३७	उषा. ००।५२	प्रा. ०५।३१	वैधृति: ३७।२२	व. ०५।३१	मकर:	अहोरात्रम्	०२।११।४७।५३	३४।०९	५।१०	६।५०	०६	१३	२७	**विवाहस्तृतीयायाम्, विघ्नराज ४** व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०९।३२, पश्चिमां विना यात्रा तृतीयाश्रवणयो:, श्रवणादं. ५८।३१, पञ्चकारम्भो रात्र्यन्ते घं. ०४।५५ उपरि, भ. ०५।३१ उपरि ३३।३७ यावत्. ✪
०४ चं.	३०।४५	दि. ०५।२८	धनि. ५८।५८	रा. ०४।४५	विष्क. ३२।४०	ब. ०२।११	म. २९।१०	दि. ०४।५०	०२।१२।४४।४५	३४।०८	५।१०	६।५०	०७	१४	२८	**विवाह:** पश्चिमयात्रा च पञ्चम्यां धनिष्ठायाम्, **मुण्डनं कर्णवेधश्च धनिष्ठायाम्, गृहारम्भ: पञ्चम्यामपराह्णे।** ✪ **मैथिलवैवाहिकसभारम्भ: (सौराठससौलयो:)।**
०५ मं.	२९।०७	दि. ०४।५०	शत. ५९।४७	रा. ०५।०६	प्रीति: २८।५३	तै. २९।०७	कुम्भ:	अहोरात्रम्	०२।१३।४१।३६	३४।०६	५।११	६।४९	०८	१५	२९	**शकुनम्**—आषाढकृष्णपञ्चम्यां यदि वृष्टिर्भवेत्तदा। चत्वारो वार्षिका मासा भवेयुर्वारिसम्प्लुता:।।
०६ बु.	२८।४४	दि. ०४।४१	पूभा. ६०।००	अहोरात्रम्	आयु. २६।०५	व. २८।४४	कुं. ४६।१९	रा. ११।४३	०२।१४।३८।२७	३४।०५	५।११	६।४९	०९	१६	३०	पश्चिमदक्षिणयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे तत: पश्चिमयात्रा, भ. २८।४४ उपरि ५८।११ यावत्।
०७ बृ.	२९।३७	दि. ०५।०२	पूभा. ०१।४९	प्रा. ०५।५५	सौभा. २४।१८	ब. २९।३७	मीन:	अहोरात्रम्	०२।१५।३५।१८	३४।०४	५।११	६।४९	१०	१७	०१	**जुलाई ७, विवाह: सप्तम्यामुत्तरभाद्रे**, पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे, द.ति. २९।३७ उपरि।
०८ शु.	३१।४६	दि. ०५।५३	उभा. ०५।१०	दि. ०७।१५	शोभ. २३।३१	बा. ००।४१	मीन:	अहोरात्रम्	०२।१६।३२।०९	३४।०३	५।११	६।४९	११	१८	०२	उत्तरयात्रा नवम्याम्, द.ति. ३१।४६ यावत्, गं. ५७।३७ उपरि।
०९ श.	३५।०५	रा. ०७।१४	रेवती ०९।३७	दि. ०९।०३	अगं. २३।३६	तै. ०३।२५	मी. ०९।३७	दि. ०९।०३	०२।१७।२८।५९	३४।०२	५।१२	६।४८	१२	१९	०३	पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां तत: पूर्वां विना यात्रा नवम्याम्, पञ्चकान्तो दिवा घं. ०९।०३ उपरि, गं. १२।३७ यावत्।
१० र.	३९।१५	रा. ०८।५४	अश्वि. १५।०५	दि. ११।१४	सुकर्मा २४।३०	व. ०७।१०	मेष:	अहोरात्रम्	०२।१८।२५।४९	३४।०१	५।१२	६।४८	१३	२०	०४	**विवाह:** पश्चिमां विना यात्रा चाश्विन्याम्, **मिथुने बुध:** २३।२७, भ. ०७।१० उपरि ३९।१५ यावत्।
११ चं.	४४।०६	रा. १०।५०	भर. २१।१३	दि. ०१।४१	धृति: २५।५२	ब. ११।४०	मे. ३७।५१	रा. ०८।२०	०२।१९।२२।३९	३४।००	५।१२	६।४८	१४	२१	०५	**योगिनी ११** व्रतं सर्वेषाम्।
१२ मं.	४९।०८	रा. १२।५१	कृत्ति. २७।४८	दि. ०४।१२	शूल: २७।३१	कौ. १६।३७	वृष:	अहोरात्रम्	०२।२०।१९।३१	३३।५८	५।१२	६।४८	१५	२२	०६	यवचूर्णेन पारणम्, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्, **पुनर्वसौ रवि:** २६।२३ पुंस्त्रीचंद्रयोगो वृश्चिकलग्नं मूषकवाहनञ्चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेनातपझञ्झावातयोग:।
१३ बु.	५४।००	रा. ०२।४९	रोहिणी ३४।१५	सं. ०६।५५	गण्ड: २९।०८	ग. २१।१९	वृष:	अहोरात्रम्	०२।२१।१६।२३	३३।५६	५।१३	६।४७	१६	२३	०७	प्रदोष १३ व्रतम्, **विवाहस्त्रयोदश्याम्**, भ. ५४।०० उपरि, **मैथिलवैवाहिकसभासमाप्ति: (सौराठससौलयो:)।**
१४ बृ.	५८।१६	रा. ०४।३१	मृग. ४०।१४	रा. ०९।१९	वृद्धि: ३०।२१	वि. २६।०८	वृ. ०७।१५	दि. ०८।०७	०२।२२।१३।१५	३३।५४	५।१३	६।४७	१७	२४	०८	प्रदोष १४ व्रतम्, भ. २६।०८ यावत्।
३० शु.	६०।००	अहोरात्रम्	आर्द्रा ४५।२७	रा. ११।२४	ध्रुव: ३१।०१	च. २९।५६	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०२।२३।१०।०६	३३।५३	५।१३	६।४७	१८	२५	०९	आषाढी ३० स्नानदानादि:, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्।
३० श.	०१।३६	प्रा. ०५।५२	पुन. ४९।३३	रा. ०१।०३	व्या. ३०।५१	ना. ०१।३६	मि. ३३।३२	सं. ०६।३९	०२।२४।०६।५७	३३।५२	५।१४	६।४६	१९	२६	१०	शनैश्चरी ३०, पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तत: पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ तत: पूर्वां विना यात्रा।

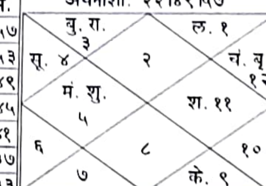
मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथय: दिनानि	मङ्गल:	बुध:	बृहस्पति:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानम्
०१ शु.	०३।१३।३९।१७	०१।२०।११।२७	१०।१०।०१।४५	०३।०५।१६।२२	०९।१५।२२।१६	०७।१७।३७।५१	४७।०७
०२ श.	०३।१४।१६।४०	०१।२१।१०।१३	१०।१०।००।५२	०३।०६।२८।३३	०९।१५।१८।४५	०७।१७।३४।४०	४७।०६
०३ र.	०३।१४।५४।०३	०१।२१।५८।५९	१०।०९।५९।५९	०३।०७।४०।४३	०९।१५।१५।१४	०७।१७।३१।३०	४७।०५
०४ चं.	०३।१५।३१।२६	०१।२२।४७।४५	१०।०९।५९।०६	०३।०८।५२।५३	०९।१५।११।४४	०७।१७।२८।२०	४७।०४
०५ मं.	०३।१६।०८।५३	०१।२४।०४।०८	१०।०९।५६।४६	०३।१०।०४।५९	०९।१५।०७।३७	०७।१७।२५।०९	४७।०३
०६ बु.	०३।१६।४६।२०	०१।२५।२०।३१	१०।०९।५४।२६	०३।११।१७।०५	०९।१५।०३।३०	०७।१७।२१।५८	४७।०२
०७ बृ.	०३।१७।२३।४७	०१।२६।३६।५४	१०।०९।५२।०६	०३।१२।२९।११	०९।१४।५९।२३	०७।१७।१८।४७	४७।०१
०८ शु.	०३।१८।०१।१३	०१।२७।५३।१७	१०।०९।४९।४६	०३।१३।४१।१७	०९।१४।५५।१६	०७।१७।१५।३६	४७।००
०९ श.	०३।१८।३८।३९	०१।२९।०९।४०	१०।०९।४७।२७	०३।१४।५३।२३	०९।१४।५१।०९	०७।१७।१२।२५	४७।००
१० र.	०३।१९।१६।०५	०२।००।२६।०३	१०।०९।४५।०८	०३।१६।०५।२९	०९।१४।४७।०२	०७।१७।०९।१४	४७।००
११ चं.	०३।१९।५३।३१	०२।०१।४२।२६	१०।०९।४२।४९	०३।१७।१७।३४	०९।१४।४२।५५	०७।१७।०६।०४	४७।००
१२ मं.	०३।२०।३१।०१	०२।०३।१४।४५	१०।०९।३९।०३	०३।१८।२९।२४	०९।१४।३८।३८	०७।१७।०२।५३	४६।५९
१३ बु.	०३।२१।०८।३१	०२।०४।४७।०४	१०।०९।३५।१८	०३।१९।४१।१४	०९।१४।३४।२१	०७।१६।५९।४२	४६।५८
१४ बृ.	०३।२१।४६।००	०२।०६।१९।२३	१०।०९।३१।३३	०३।२०।५३।०४	०९।१४।३०।०५	०७।१६।५६।३१	४६।५७
३० शु.	०३।२२।२३।२९	०२।०७।५१।४१	१०।०९।२७।४८	०३।२२।०४।५४	०९।१४।२५।४९	०७।१६।५३।२०	४६।५६
३० श.	०३।२३।००।५८	०२।०९।२३।५९	१०।०९।२४।०३	०३।२३।१६।४४	०९।१४।२१।३३	०७।१६।५०।०९	४६।५५

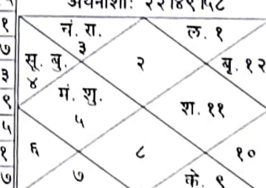
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कुं. अं.	मी. अं.
०१ शु.	०२।३४	०४।३०	०६।४३	०९।०१	११।१७	१३।३२	१५।४९	१८।०६	२०।११	२१।५७	२३।२८	००।५७
०२ श.	०२।३०	०४।२६	०६।३९	०८।५७	११।१३	१३।२८	१५।४५	१८।०२	२०।०७	२१।५३	२३।२४	००।५३
०३ र.	०२।२६	०४।२२	०६।३५	०८।५३	११।०९	१३।२४	१५।४१	१७।५८	२०।०३	२१।४९	२३।२०	००।४९
०४ चं.	०२।२२	०४।१८	०६।३१	०८।४९	११।०५	१३।२०	१५।३७	१७।५४	१९।५९	२१।४५	२३।१६	००।४५
०५ मं.	०२।१८	०४।१४	०६।२७	०८।४५	११।०१	१३।१६	१५।३३	१७।५०	१९।५५	२१।४१	२३।१२	००।४१
०६ बु.	०२।१४	०४।१०	०६।२३	०८।४१	१०।५७	१३।१२	१५।२९	१७।४६	१९।५१	२१।३७	२३।०८	००।३७
०७ बृ.	०२।१०	०४।०६	०६।१९	०८।३७	१०।५३	१३।०८	१५।२५	१७।४२	१९।४७	२१।३३	२३।०४	००।३३
०८ शु.	०२।०६	०४।०२	०६।१५	०८।३३	१०।४९	१३।०४	१५।२१	१७।३८	१९।४३	२१।२९	२३।००	००।२९
०९ श.	०२।०२	०३।५८	०६।११	०८।२९	१०।४५	१३।००	१५।१७	१७।३४	१९।३९	२१।२५	२२।५६	००।२५
१० र.	०१।५८	०३।५४	०६।०७	०८।२५	१०।४१	१२।५६	१५।१३	१७।३०	१९।३५	२१।२१	२२।५२	००।२१
११ चं.	०१।५४	०३।५०	०६।०३	०८।२१	१०।३७	१२।५२	१५।०९	१७।२६	१९।३१	२१।१७	२२।४८	००।१७
१२ मं.	०१।५०	०३।४६	०५।५९	०८।१७	१०।३३	१२।४८	१५।०५	१७।२२	१९।२७	२१।१३	२२।४४	००।१३
१३ बु.	०१।४६	०३।४२	०५।५५	०८।१३	१०।२९	१२।४४	१५।०१	१७।१८	१९।२३	२१।०९	२२।४०	००।०९
१४ बृ.	०१।४२	०३।३८	०५।५१	०८।०९	१०।२५	१२।४०	१४।५७	१७।१४	१९।१९	२१।०५	२२।३६	००।०५
३० शु.	०१।३८	०३।३४	०५।४७	०८।०५	१०।२१	१२।३६	१४।५३	१७।१०	१९।१५	२१।०१	२२।३२	००।०१
३० श.	०१।३४	०३।३०	०५।४३	०८।०१	१०।१७	१२।३२	१४।४९	१७।०६	१९।११	२०।५७	२२।२८	२३।५७

४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४२।०९
अयनांशा: २२।४९।५७



११ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४२।१६
अयनांशा: २२।४९।५८



विविधविषया:—सूर्यनक्षत्राणि—रोहिणि—मृगशिरा—पूर्वोत्तरफल्गुनी—हस्त—चित्रा— स्वाती—विशाखाऽनुराधा—ज्येष्ठा—मूल—शतभिषा—उत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। **एतत्फलम्**—चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टि: सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते।। **नक्षत्राणां पुरुषादिसंज्ञा**—मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आर्द्रादिदश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादित्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टि: स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभाव:। **सजलादिराशय:**—कुम्भकर्कटकौ मीनमकरालितुलाधरा:। सजला राशय: प्रोक्ता निर्जला: शेषराशय:।। **शकुनम्**—आषाढशुक्ले प्रतिपत्तिथौ वा पञ्चमीतिथौ। गुरुशुक्रेन्दुवारेण सुवृष्टिश्च सुभिक्षता।। शुक्लाषाढे द्वितीयायां नवम्यां वा तिथौ यदि। गुरुशुक्रेन्दुवारास्स्यु: सुवृष्टिश्च समर्घता।। उष्णा रवौ बुधे च्छाया भौमेऽनावृष्टिरिष्यते। शनिवारे प्रजापीडा स्यादिति ब्रुवते परे।। शुक्लाषाढद्वितीयायां पञ्चम्यां यदि वर्षति। मेघो वा दृश्यते तत्र श्रावणे बहु वर्षति।। आषाढशुक्लपञ्चम्यां विद्युद्विद्योतते भृशम्। तदा सुवृष्ट्या सर्वत्र सुभिक्षं जायतेऽनिशम्।। आषाढशुक्लपञ्चम्यारभ्ये तिथिचतुष्टये। यावन्त्यभ्राणि दृश्यन्ते वृष्टि: प्रावृषि तावती।। शुक्लाषाढनवम्यां तु विद्युद्घनघटा यदि। जलपातोऽपि वा तत्र तदा स्युरतिवृष्टय:।। **स्वपवित्रवस्तूनि**—आसनं वसनं शय्या जायाऽपत्यं कमण्डलु:। आत्मन: शुचिरेतानि न परेषां कदाचन।। **अशक्तादिषु विशेषमाह कात्यायन:**—अशक्तौ निर्जने देशे मृते जाते च सूतके। जपेच्च मानसीं सन्ध्यां कुशवारिविवर्जिताम्।। **साधारणधर्मानाह याज्ञवल्क्य:**—अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:। दानं दमो दया क्षान्ति: सर्वेषां धर्मसाधनम्।। **पञ्चमहायज्ञानप्याह स एव**—बलिकर्म—स्वधाहोम—स्वाध्यायातिथिसत्क्रिया:। भूतपितृमरब्रह्ममनुष्याणां महामखा:।।

ग्रहस्थिति:—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गल:, मार्गी पूर्वोदितो बुध:, वक्री पूर्वोदितो बृहस्पति:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, वक्री पूर्वोदित: शनि:।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे वातमेघच्छायाखण्डवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे वाताभ्रातपादय:।

आषाढशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४३, संवत् २०७८, सन् १४२८ साल, दिनाङ्क ११।०७।२०२१ ई. तः दिनाङ्क २४।०७।२०२१ ई. यावत्।
शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः ७ तो वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम् ७ तः याम्यायनम्, पश्चिमे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्राशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
०१ र.	०३।४७	प्रा. ०६।४५	पुष्यः ५२।३४	रा. ०२।२६	हर्षणः २९।४९	व. ०३।४७	कर्कः	अहोरात्रम्	०२।२५।०३।४८	३३।५१	५।२४	६।४६	२०	२७	११	चन्द्रदर्शनमु. ३० सौम्यशृङ्गफलं साम्यम्, **ग्रीष्मनवरात्रारम्भः**, कलशस्थापनम्, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, **करमूले पुलिकमूलबन्धनम्**, देवादिप्रतिष्ठा द्वितीयायाम्, पश्चिमां विना यात्रा द्वितीयायां पुष्ये।
०२ चं.	०४।४६	दि. ०७।०८	श्ले. ५४।२५	रा. ०२।५६	वज्रः २७।४३	कौ. ०४।४६	क. ५४।२५	रा. ०२।५६	०२।२६।००।३९	३३।५०	५।२४	६।४६	२१	२८	१२	**उपनयनं तृतीयायाम्, जगन्नाथरथयात्रा**, समुद्रस्नानं जगन्नाथदर्शनञ्च, मघायां शनिवेधाद्विवाहो नैव, गं. ४३।२५ उपरि ५८।२५ यावत्।
०३ मं.	०४।२६	दि. ०७।००	मघा ५४।४५	रा. ०३।०८	सिद्धिः २४।३८	ग. ०४।२६	सिंहः	अहोरात्रम्	०२।२६।५७।३५	३३।४८	५।२४	६।४६	२२	२९	१३	**गणेश ४** व्रतम्, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्, भ. ३३।३९ उपरि।
०४ बु.	०२।५२	प्रा. ०६।२४	पूफ. ५४।०२	रा. ०२।५२	व्य. २०।३२	वि. ०२।५२	सिंहः	अहोरात्रम्	०२।२७।५४।३०	३३।४७	५।२५	६।४५	२३	३०	१४	**उपनयनं पञ्चम्याम्, विवाहो गृहप्रवेशश्चोत्तरफल्गुन्याम्**, पूर्वयात्रा पञ्चम्यां पूर्वफल्गुन्याम्, भ. ०२।५२ यावत्।
०५ बृ.	००।०७	प्रा. ०५।२८	उफ. ५२।२८	रा. ०२।२०	वरी. १५।३५	बा. ००।०७	सिं. ०८।३६	दि. ०८।४१	०२।२८।५१।२५	३३।४६	५।२५	६।४५	२४	३१	१५	षष्ठीदं. ५६।२७, **विवाहो दिवारात्रौ, कर्णवेधः**, देवादिप्रतिष्ठा, पूर्वयात्रा हस्ते।
०७ शु.	५१।४८	रा. ०१।५८	हस्तः ४९।४३	रा. ०१।०८	परिघः ०९।५०	ग. २४।०६	कन्या	अहोरात्रम्	०२।२९।४८।२०	३३।४५	५।२५	६।४५	२५	३२	१६	मासान्तः, **कर्के रविः** ५९।०९ मु. ३० फलं साम्यम्, **याम्यायनारम्भः** ५९।०९ उपरि, **मघायां सिंहे शुक्रः** २३।४१, भ. ५१।४८ उपरि, द.ति. ५१।४८ उपरि ५९।०९ यावत्।
०८ श.	४६।२९	रा. ११।५१	चित्रा ४६।२७	रा. ११।५०	शिवः ०३।२५	वि. १९।०८	कं. १८।०५	दि. १२।२९	०३।००।४५।२५	३३।४४	५।२५	६।४५	२६	०१	१७	सिद्धदं. ५३।०३, भ. १९।०८ यावत्, **याम्यायनसङ्क्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ यावद्दिने, **पुण्याहः**।
०९ र.	४०।४२	रा. ०९।३२	स्वाती ४२।४२	रा. १०।२०	साध्यः ४९।०५	बा. १३।३५	तुला	अहोरात्रम्	०३।०१।४२।२०	३३।४३	५।२५	६।४५	२७	०२	१८	**पूर्वास्तो बुधः** ५७।४५, मासादिः, **करमूले पुलिकमूलबन्धनम्**।
१० चं.	३४।३६	सं. ०७।०६	विशा. ३८।३७	रा. ०८।४३	शुभः ४१।३४	तै. ०७।३९	तु. २४।३८	दि. ०३।०७	०३।०२।३९।०५	३३।४२	५।२६	६।४४	२८	०३	१९	रैवतमन्वादिः, **गृहप्रवेशः** पश्चिमोत्तरयात्रा चानुराधायाम्।
११ मं.	२८।२३	दि. ०४।३७	अनु. ३४।२४	सं. ०७।०२	शुक्लः३३।५३	व. ०१।३१	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०३।०३।३६।०५	३३।४०	५।२६	६।४४	२९	०४	२०	**हरिशयन ११** व्रतं सर्वेषाम्, चातुर्मास्यव्रतारम्भः, **पुष्ये रविः** २९।२४ स्त्रीनपुंसूर्चयोगो धनुर्लग्नमश्ववाहनञ्चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेनातपञ्झञ्झावातयोगः, पश्चिमयात्रा द्वादश्याम्, भ. ०१।३१ उपरि २८।२३ यावत्।
१२ बु.	२२।२५	दि. ०२।२०	ज्ये. ३०।२७	दि. ०५।२३	ब्रह्मः २६।२१	बा. २२।२५	वृ. ३०।२७	सं. ०५।२३	०३।०४।३३।०५	३३।३८	५।२६	६।४४	३०	०५	२१	यवचूर्णेन पारणम्, वासुदेव १२, प्रदोष १३ व्रतम्, सूर्योदयोत्तरपारणसमये अनुराधानक्षत्राभावाद्रविवासराभावः, **गृहप्रवेशो मूले**, पश्चिमयात्रा द्वादश्याम्, **मघायां सिंहे मङ्गलः** ५५।२७, गं. २४।२७ उपरि ३९।२७ यावत्।
१३ बृ.	१६।२२	दि. ११।५०	मूलम् २६।३४	दि. ०३।५५	ऐन्द्रः १९।०५	तै. १६।२२	धनुः	अहोरात्रम्	०३।०५।३०।०५	३३।३६	५।२७	६।४३	३१	०६	२२	**कर्के बुधः** ५२।३५, प्रदोष १४ व्रतम्, **गृहप्रवेशो मूले**, पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्, (१३–१४) एकोद्दिष्टम्।
१४ शु.	११।०१	दि. ०९।४१	पूषा. २३।२९	दि. ०२।३७	वैधृतिः १२।२१	व. ११।०१	ध. ३७।२६	रा. ०८।२५	०३।०६।२७।०५	३३।३४	५।२७	६।४३	०१	०७	२३	**गृहारम्भ उत्तराषाढे**, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, भ. ११।०१ उपरि ३८।४० यावत्।
१५ श.	०६।२८	दि. ०७।४९	उषा. २०।४७	दि. ०१।३७	विष्क. ०५।५०	ब. ०६।२८	मकरः	अहोरात्रम्	०३।०७।२४।०५	३३।३२	५।२८	६।४२	०२	०८	२४	आषाढी १५ स्नानदानादिः, **गुरुपूर्णिमा**, गुरुव्यासयोः पूजनम्, चाक्षुषमन्वादिः, **गृहारम्भः पूर्णिमायाम्**, शिवार्चनम्, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्, **सन् १४२९ सालसंज्ञकवर्षारम्भः पूर्णान्तात्**।

मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः / दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्
०१ र.	०३।२३।३८।२७	०२।२०।५६।२७	१०।०९।२०।२८	०३।२४।२८।३३	०९।२४।२७।२७	०७।२६।४६।५९	४६।५५
०२ चं.	०३।२४।२५।५६	०२।२२।२८।३५	१०।०९।२६।३३	०३।२५।४०।२२	०९।२४।२३।०१	०७।२६।४३।४९	४६।५५
०३ मं.	०३।२४।५३।३४	०२।२४।२०।५५	१०।०९।२१।२८	०३।२६।५२।२३	०९।२४।०८।२१	०७।२६।४०।३८	४६।५४
०४ बु.	०३।२५।३१।२२	०२।२५।५३।२५	१०।०९।०६।२३	०३।२८।०४।०४	०९।२४।०३।२१	०७।२६।३७।२७	४६।५३
०५ बृ.	०३।२६।०८।५०	०२।२७।३५।३५	१०।०९।०१।२८	०३।२९।२५।५४	०९।२३।५८।३१	०७।२६।३४।२६	४६।५२
०७ शु.	०३।२६।४६।२८	०२।२९।२७।५५	१०।०८।५६।२४	०४।००।२७।४४	०९।२३।५३।४१	०७।२६।३१।०५	४६।५१
०८ श.	०३।२७।२४।०६	०२।२१।००।२४	१०।०८।५१।२०	०४।०१।३९।३४	०९।२३।४८।५१	०७।२६।२७।५४	४६।५१
०९ र.	०३।२८।०१।४४	०२।२२।४२।३३	१०।०८।४६।०६	०४।०२।५१।२४	०९।२३।४४।०१	०७।२६।२४।४४	४६।५१
१० चं.	०३।२८।३९।२१	०२।२४।२४।५२	१०।०८।४१।०२	०४।०४।०३।२४	०९।२३।३९।२१	०७।२६।२१।३४	४६।५१
११ मं.	०३।२९।२७।०१	०२।२६।२३।०६	१०।०८।३४।५०	०४।०५।२४।३९	०९।२३।५४।२५	०७।२६।२८।२३	४६।५०
१२ बु.	०३।२९।५४।४१	०२।२८।०१।२०	१०।०८।२८।३८	०४।०६।२६।०४	०९।२३।४९।३९	०७।२६।२५।२२	४६।४९
१३ बृ.	०४।००।३२।२१	०२।२९।४९।३४	१०।०८।२२।२६	०४।०७।३७।२९	०९।२३।४४।५३	०७।२६।२२।०१	४६।४८
१४ शु.	०४।०१।२०।०१	०३।०१।३७।४८	१०।०८।२६।२४	०४।०८।४८।५४	०९।२३।४०।०८	०७।२६।०८।५०	४६।४७
१५ श.	०४।०१।४७।४१	०३।०३।२६।०२	१०।०८।२०।०२	०४।२०।००।२९	०९।२३।३५।२३	०७।२६।०५।३९	४६।४६

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दिनानि	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सिं. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
०१ र.	०१।३०	०३।२६	०५।३९	०७।५७	१०।२३	१२।२८	१४।४५	१७।०२	१९।०७	२०।५३	२२।२४	२३।५३
०२ चं.	०१।२६	०३।२२	०५।३५	०७।५३	१०।०९	१२।२४	१४।४१	१६।५८	१९।०३	२०।४९	२२।२०	२३।४९
०३ मं.	०१।२२	०३।२८	०५।३१	०७।४९	१०।०५	१२।२०	१४।३७	१६।५४	१८।५९	२०।४५	२२।२६	२३।४५
०४ बु.	०१।२८	०३।२४	०५।२७	०७।४५	१०।०१	१२।२६	१४।३३	१६।५०	१८।५५	२०।४१	२२।२२	२३।४१
०५ बृ.	०१।२४	०३।२०	०५।२३	०७।४१	०९।५७	१२।२२	१४।२९	१६।४६	१८।५१	२०।३७	२२।०८	२३।३७
०७ शु.	०१।२०	०३।०६	०५।२९	०७।३७	०९।५३	१२।०८	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।३३	२२।०४	२३।३३
०८ श.	०१।०६	०३।०२	०५।२५	०७।३३	०९।४९	१२।०४	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२९	२२।००	२३।२९
०९ र.	०१।०३	०२।५९	०५।२२	०७।३०	०९।४६	१२।०१	१४।२८	१६।३५	१८।४०	२०।२६	२१।५७	२३।२६
१० चं.	००।५९	०२।५५	०५।०८	०७।२६	०९।४२	११।५७	१४।२४	१६।३१	१८।३६	२०।२२	२१।५३	२३।२२
११ मं.	००।५५	०२।५१	०५।०४	०७।२२	०९।३८	११।५३	१४।२०	१६।२७	१८।३२	२०।२८	२१।४९	२३।२८
१२ बु.	००।५१	०२।४७	०५।००	०७।२८	०९।३४	११।४९	१४।०६	१६।२३	१८।२८	२०।२४	२१।४५	२३।२४
१३ बृ.	००।४८	०२।४४	०४।५७	०७।२५	०९।३१	११।४६	१४।०३	१६।२०	१८।२५	२०।२१	२१।४२	२३।२१
१४ शु.	००।४४	०२।४०	०४।५३	०७।२१	०९।२७	११।४२	१३।५९	१६।२६	१८।२१	२०।०७	२१।३८	२३।०७
१५ श.	००।४०	०२।३६	०४।४९	०७।०७	०९।२३	११।३८	१३।५५	१६।२२	१८।२७	२०।०३	२१।३४	२३।०३

२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।४२।२३
अयनांशाः २२।४९।५९

रा. २ | १२
सू. बु. ३ | ल. १ | बृ. ११
चं. मं. शु. ४ | श. १०
५ | ७ | ९
६ | के. ८

१० चन्द्रे वल्ली ८।३९।४२।३०
अयनांशाः २२।५०।००

रा. २ | १२
बु. ३ | ल. १ | बृ. ११
सू. मं. ४ | श. १०
शु. ५ | ७ | ९
६ | चं. के. ८

विविधविषयाः—आषाढशुक्लद्वितीयायां जगन्नाथरथयात्रा तद्दिने रथस्थरामावलोकनेन नैव विपद्यते। आषाढशुक्लपक्षे रविवासरे करमूले **पुलिकमूलबन्धनमन्त्रः**—शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य।। एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्यव्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद्भवेदित्यनेन कार्त्तिकशुक्लद्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः। **आर्द्रास्थे सूर्ये** नवोदकनिमित्तकपार्वणश्राद्धं विधेयम्, **शातातपः**—नवोदके नवान्ने च गृहप्रच्छादने तथा। पितरः स्पृहयत्यन्नमष्टकासु मघासु च।। आर्द्रागतसूर्यस्याद्यदिनत्रयं बीजवपनं निषिद्धम्, **राजमार्त्तण्डे**—रवौ रौद्राद्यपादस्थे भूमेः सञ्जायते रजः। तस्माद्दिनत्रयं यावद् बीजाधानं न कारयेत्।। **अत्रैव पायसभोजनमहत्त्वम्**—आर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः। अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति।। क्षीरमत्र पायसम्। **आषाढ्यां शिवपूजनफलम्भविष्ये**—आषाढपूर्णिमायां यो विधिवत् पूजयेच्छिवम्। सोऽश्वमेधफलं प्राप्य विष्णुलोके महीयते।। **मैथिलस्मार्त्तमते एकादश्यामेव हरिशयनम्, भारते**—आषाढे तु सिते पक्षे एकादश्यामुपोषितः। चातुर्मास्यव्रतं कुर्याद्यत्किञ्चिदखिलो नरः।। नित्यमेतद् व्रतम्। दैवादकरणे कार्त्तिकमात्रेऽपि कर्त्तव्यम्। **तदुक्तं तत्रैव**—वार्षिकयां चतुरो मासान् वाहयेत् केनचिन्नरः। व्रतेन नो चेदाप्नोति किल्विषं वत्सरोद्भवम्।। असम्भवे तुलार्केऽपि कर्त्तव्यं तत् प्रयत्नतः।। **शकुनविचारः**—आषाढकृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षं चान्यथा दुर्भिक्षम्, तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढशुक्लद्वितीयाया नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढे सति सुभिक्षं प्रजापीडा चोत्तराषाढे। **पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम्**—तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायुषु धान्योत्पत्तिः सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते तदितरवायुषु भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति। **ग्रहस्थितिः**—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ९ तः पूर्वास्तः, वक्री पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।
वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे वाताभ्रचारखण्डवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातातपखण्डवृष्टयः।

• विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाचक्रम् •

सूर्यदशावर्ष ६			
कृतिका, उत्तरफल्गुनी उत्तराषाढ			
अन्तर्दशा १८			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
सूर्य	००	०३	१८
चन्द्र	००	०६	००
मङ्गल	००	०४	०६
राहु	००	१०	२४
बृह.	००	०९	१८
शनि	००	११	१२
बुध	००	१०	०६
केतु	००	०४	०६
शुक्र	०१	००	००

चन्द्रदशावर्ष १०			
रोहिणी, हस्त, श्रवणा			
अन्तर्दशा ३०			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
चन्द्र	००	१०	००
मङ्गल	००	०७	००
राहु	०१	०६	००
बृह.	०१	०४	००
शनि	०१	०७	००
बुध	०१	०५	००
केतु	००	०७	००
शुक्र	०१	०८	००
सूर्य	००	०६	००

मङ्गलदशावर्ष ७			
मृगशिरा, चित्रा धनिष्ठा			
अन्तर्दशा २१			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
मङ्गल	००	०४	२७
राहु	०१	००	१८
बृह.	००	११	०६
शनि	०१	०१	०९
बुध	००	११	२७
केतु	००	०४	२७
शुक्र	०१	०२	००
सूर्य	००	०४	०६
चन्द्र	००	०७	००

राहुदशावर्ष १८			
आर्द्रा, स्वाती शतभिषा			
अन्तर्दशा ५४			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
राहु	०२	०८	१२
बृह.	०२	०४	२४
शनि	०२	१०	०६
बुध	०२	०६	१८
केतु	०१	००	१८
शुक्र	०३	००	००
सूर्य	००	१०	२४
चन्द्र	०१	०६	००
मङ्गल	०१	००	१८

बृहस्पतिदशावर्ष १६			
पुनर्वसु, विशाखा पूर्वभाद्र			
अन्तर्दशा ४८			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
बृह.	०२	०१	१८
शनि	०२	०६	१२
बुध	०२	०३	०६
केतु	००	११	०६
शुक्र	०२	०८	००
सूर्य	००	०९	१८
चन्द्र	०१	०४	००
मङ्गल	००	११	०६
राहु	०२	०४	२४

शनिदशावर्ष १९			
पुष्य, अनुराधा उत्तरभाद्र			
अन्तर्दशा ५७			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शनि	०३	००	०३
बुध	०२	०८	०९
केतु	०१	०१	०९
शुक्र	०३	०२	००
सूर्य	००	११	१२
चन्द्र	०१	०७	००
मङ्गल	०१	०१	०९
राहु	०२	१०	०६
बृह.	०२	०६	१२

बुधदशावर्ष १७			
आश्लेषा, ज्येष्ठा रेवती			
अन्तर्दशा ५१			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
बुध	०२	०४	२७
केतु	००	११	२७
शुक्र	०२	१०	००
सूर्य	००	१०	०६
चन्द्र	०१	०५	००
मङ्गल	००	११	२७
राहु	०२	०६	१८
बृह.	०२	०३	०६
शनि	०२	०८	०९

केतुदशावर्ष ७			
मघा, मूल अश्विनी			
अन्तर्दशा २१			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
केतु	००	०४	२७
शुक्र	०१	०२	००
सूर्य	००	०४	०६
चन्द्र	००	०७	००
मङ्गल	००	०४	२७
राहु	०१	००	१८
बृह.	००	११	०६
शनि	०१	०१	०९
बुध	००	११	२७

शुक्रदशावर्ष २०			
पूर्वफल्गुनी, पूर्वाषाढ भरणी			
अन्तर्दशा ६०			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	०३	०४	००
सूर्य	०१	००	००
चन्द्र	०१	०८	००
मङ्गल	०१	०२	००
राहु	०३	००	००
बृह.	०२	०८	००
शनि	०३	०२	००
बुध	०२	१०	००
केतु	०१	०२	००

• योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम् •

मङ्गला १ (चन्द्र)			पिङ्गला २(सूर्य)			धान्या ३(बृह.)			भ्रामरी ४(मङ्गल)		
श्रवणा, आर्द्रा, चित्रा			धनिष्ठा, पुनर्वसु, स्वाती			शतभिषा, पुष्य, विशाखा			अश्विनी, आश्लेषा, अनुराधा, पूर्वभाद्र		
मास १२			मास २४			मास ३६			मास ४८		
योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन
मङ्गला	००	१०	पिङ्गला	०१	१०	धान्या	०३	००	भ्रामरी	०५	१०
पिङ्गला	००	२०	धान्या	०२	००	भ्रामरी	०४	००	भद्रिका	०६	२०
धान्या	०१	००	भ्रामरी	०२	२०	भद्रिका	०५	००	उल्का	०८	००
भ्रामरी	०१	१०	भद्रिका	०३	१०	उल्का	०६	००	सिद्धा	०१	१०
भद्रिका	०१	२०	उल्का	०४	००	सिद्धा	०७	००	सङ्कटा	१०	२०
उल्का	०२	००	सिद्धा	०४	२०	सङ्कटा	०८	००	मङ्गला	०१	१०
सिद्धा	०२	१०	सङ्कटा	०५	१०	मङ्गला	०१	००	पिङ्गला	०२	२०
सङ्कटा	०२	२०	मङ्गला	००	२०	पिङ्गला	०२	००	धान्या	०४	००

भद्रिका ५(बुध)			उल्का ६(शनि)			सिद्धा ७(शुक्र)			सङ्कटा ८(केतु)		
भरणी, मघा, ज्येष्ठा,उत्तरभाद्र			कृत्तिका,पूर्वफल्गुनी मूल, रेवती			रोहिणी,उत्तरफल्गुनी पूर्वाषाढ			मृगशिरा, हस्त, उत्तराषाढ		
मास ६०			मास ७२			मास ८४			मास ९६		
योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन
भद्रिका	०८	१०	उल्का	१२	००	सिद्धा	१६	१०	सङ्कटा	२१	१०
उल्का	१०	००	सिद्धा	१४	००	सङ्कटा	१८	२०	मङ्गला	०२	२०
सिद्धा	११	२०	सङ्कटा	१६	००	मङ्गला	०२	१०	पिङ्गला	०५	१०
सङ्कटा	१३	१०	मङ्गला	०२	००	पिङ्गला	०४	२०	धान्या	०८	००
मङ्गला	०१	२०	पिङ्गला	०४	००	धान्या	०७	००	भ्रामरी	१०	२०
पिङ्गला	०३	१०	धान्या	०६	००	भ्रामरी	०९	१०	भद्रिका	१३	१०
धान्या	०५	००	भ्रामरी	०८	००	भद्रिका	११	२०	उल्का	१६	००
भ्रामरी	०६	२०	भद्रिका	१०	००	उल्का	१४	००	सिद्धा	१८	२०

• योगिनीभुक्तभोग्यानयनम् •

जन्मर्क्ष त्रियुत भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात्। मङ्गलाद्याः सङ्कटान्ता वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः॥ ततो विंशोत्तरीदशावद्भुक्तभोग्यवर्षानयन कार्यम्।

• योगिनीशान्तिमन्त्राः •

मङ्गला—ॐ ह्रीं मङ्गले मङ्गलायै स्वाहा।
पिङ्गला—ॐ ग्लौं पिङ्गले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा।
धान्या—ॐ श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा।
भ्रामरी—ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा।
भद्रिका—ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा।
उल्का—ॐ उल्के मम रोगं नाशय जृंभय स्वाहा।
सिद्धा—ॐ ह्रौं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा।
सङ्कटा—ॐ ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

• नेत्रस्फुरणफलम् •

नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःखजालम्,
नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः।
नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत् सङ्गरेऽभद्रहेतुः,
वामे चैतत्फलमविकलं दक्षिणे वैपरीत्यम्॥

एतानि फलानि पुरुषाणां ज्ञेयानि, स्त्रीणान्तु प्रोक्तवैपरीत्येन बोध्यानि।

• ग्रहाणां दानादिपदार्थाः •

सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
माणिक्य	वंशपात्र	विद्रुम	कांस्य	पीतधान्य	श्वेततण्डुल	माषान्न, तैल	गोमेद,माषान्न	माषान्न
गोधूम	श्वेततण्डुल	भूमि	हरितवस्त्र	पीतवस्त्र	श्वेतचित्रवस्त्र	कृष्णतिल	तुरग, तिल	कम्बल,कस्तूरी
गुड़, ताम्र	श्वेतवस्त्र	मसूरद्विदल	हरितपुष्प	पीतपुष्प	श्वेतचन्दन	कृष्णवस्त्र	नीलवस्त्र	तिलतैल
रक्तपुष्प	श्वेतपुष्प	रक्तवृषभ	कर्पूर, शङ्ख	पीतचन्दन	घी, सोना	कृष्णपुष्प	नीलपुष्प	कृष्णवस्त्रादि
रक्तचन्दन	श्वेतचन्दन	गुड़, ताम्र	फल, मुद्ग	सोना, घृत	रजत,स्फटिक	कम्बल,उपानह	तिलतैल	सुवर्ण, लौह
रक्तवस्त्र	दधि, शङ्ख	रक्तवस्त्र	गजदन्त	पीतफल,दधि	दधि, शङ्ख	कस्तूरी, सोना	सप्तधान्य	छाग, खड्ग
सुवर्ण	सिता, चाँदी	रक्तचन्दन	घृत, सोना	पोखराज	गोधूम,शक्कर	लौह, कुल्थी	लौह, सुवर्ण	कस्तूरी
केसर	कर्पूर	रक्तपुष्प	मोथा	अश्व, मधु	सुगन्धद्रव्य	महिषी, छत्र	कृष्णपुष्प	वैदूर्यमणि
मूँगा	श्वेतवृषभ	सुवर्ण,केसर	मणि	पुस्तक, छत्र	श्वेताश्व	कृष्णधेनु	कम्बल	उपानह
सवत्सगौ	घृत, कूढ	कस्तूरी	षड्रसभोजन	भूमि, शक्कर	भूमि, श्वेतगौ	कज्जल, शमी	शस्त्र, छाग	कृष्णतिल
लाजा	मोती	बला	पन्ना	हरिद्रा	हीरा	नीलम	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त
जप—७०००	११०००	१००००	८०००	१६०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

ग्रहाणां दानरत्नधारणजपादिकालः—सूर्यादीनां च यद्दानं जपहोमार्चनादिकम्। तेषां वारे प्रकुर्वीत सन्तुष्टास्ते भवन्ति हि॥ कन्यापते राहोः, मीनपतेः केतोः जपादिकं शनौ बुधे वा कार्यम्।

धर्मप्रशंसा—धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण शुभदा ग्रहाः। धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः॥

• अङ्गस्फुरणफलम् •

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	हस्ते	धनलाभः	ओष्ठे	इष्टसिद्धिः
ललाटे	पदलाभः	वक्षसि	सुखम्	हनौ	भयम्
स्कन्धे	भोगः	हृदये	इष्टसिद्धिः	कण्ठे	ऐश्वर्यम्
भ्रूमध्ये	सुखम्	कटिदेशे	प्रमोदः	ग्रीवाधः	शत्रुभयम्
भ्रुवोः	सुखम्	नाभौ	स्त्रीनाशः	पृष्ठे	पराजयः
कपाले	शुभम्	कटिपार्श्वे	प्रीतिः	मुखे	मधुभोजनम्
नेत्रयोः	धनाप्तिः	आन्त्रिके	कोषवृद्धिः	कपोलौ	व्यभिचारः
नेत्रकोणयोः	धनम्	भगे	पतिसमागमः	बाहौ	प्रियलाभः
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	कुक्षौ	प्रीतिः	बाहुमध्ये	धनागमः
नेत्रपक्ष्मणि	राज्याप्तिः	उदरे	धनम्	वस्तिदेशे	उन्नतिः
नेत्रपक्ष्मणोः	विजयः	लिङ्गे	स्त्रीसमागमः	उरसी	वस्त्रलाभः
पादयोरुपरि	स्थानलाभः	पादतले	पराक्रमः	पादयोः	हानिः
नेत्रपाङ्गे	स्त्रीलाभः	गुदे	वाहनाप्तिः	जागुन्योः	भयम्
नासिकयोः	सुखम्	वृषणौ	पुत्रलाभः	जङ्घे	स्वामिप्रीतिः

• गरुडादिवर्गचक्रम् •

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसङ्ख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

• गरूडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः •

नामग्रामदिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसङ्ख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, शनि, बृहस्पति, राहु, शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्दिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद् गृहं तत्र शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्गमित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

• गृहोपरि गृध्राद्युपवेशनफलं तच्छान्तिश्च •

गृध्रः कङ्कः कपोतश्च उलूकः श्येन एव च। चिल्लश्च चर्मचिल्लश्च भासः पाण्डर एव च॥
गृहे यस्य पतन्त्येते गेहं तस्य विपद्यते। पक्षान्मासात्तथा वर्षान्मृत्युः स्याद्गृहमेधिनः॥
अत्र गृध्रस्य महादोषः, तदन्यानां गृहोपवेशने दोषविचारो न क्रियते इति लोकाचारः। अतस्तच्छान्तिर्विधेया। तत्र शनिदिने निरामिषमेकवारं भुक्त्वा रविदिने कृतनित्यक्रियः पीतवस्त्रं परिधाय गृहं पञ्चगव्येन गङ्गाजलेन चाभिषिच्य गृहमध्यभागे प्रथमं सूर्यादिपञ्चदेवताविष्णू सम्पूज्य ततो गणेश—लक्ष्मी—पृथ्वी—वास्तुपुरुष—इन्द्रादिदशदिक्पाल—सूर्यादिनवग्रहान् क्रमेण सम्पूज्य अष्टोत्तरसहस्रसङ्ख्यकं शनिसूर्ययोः वैदिकमन्त्रैः होमं विधाय तत्तर्पणमार्जनं कुर्यात्। होमाशक्तौ द्विगुणजपं कुर्यात्। यथासम्भवं पार्थिवशिवलिङ्गपूजनं तदभावे "ॐ नमः शिवाय" इति मन्त्रजपं वा कुर्यात्। ततो ब्राह्मणभोजनं कुमारीभोजनञ्च कारयेत्। अथवा शतावृत्तिचण्डीपाठं ब्राह्मणकुमारीभोजनञ्च कारयेत्। तदभावे एकपञ्चाशतसहस्रसङ्ख्यकमहामृत्युञ्जयमन्त्रजपं कुर्यात्। ततो ब्राह्मणभोजनं कुमारीभोजनञ्च कारयेत्।

शतपदचक्रम् नक्षत्रवर्णाः	चु चे चो ल	लि लु ले लो	अ इ उ ए	ओ ब वि बु	वे वो क कि	कु घ ङ छ	के को ह हि	हु हे हो ड	डि डु डे डो	म मि मु मे	मो ट टि टु	टे टो प पि	पु ष ण ठ	पे पो र रि	रु रे रो त	ति तु ते तो	न नि नु ने	नो य यि यु	ये यो भ भि	भु ध फ ढ	भे भो ज जि	खि खु खे खो	ग गि गु गे	गो स सि सु	से सो द दि	दु थ झ ञ	दे दो च चि
	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूफ.	उफ.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ	उत्तराषाढ	श्रवणा	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वभाद्र	उत्तरभाद्र	रेवती
राशिः	मेष	मेष	मे.१वृ.३	वृष	वृ.२मि.२	मिथुन	मि.३क.१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं.१कं.३	कन्या	कं.२तु.२	तुला	तु.३वृ.१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	ध.१म.३	मकर	म.२कुं.२	कुम्भ	कुं.३मी.१	मीन	मीन
वर्णः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष.१वै.३	वैश्य	वै.२शू.२	शूद्र	शू.३वि.१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष.१वै.३	वैश्य	वै.२शू.२	शूद्र	शू.३वि.१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष.१वै.३	वैश्य	वै.२शू.२	शूद्र	शू.३वि.१	विप्र	विप्र
वश्यः	चतुष्पद	चतु.	चतुष्पद	चतुष्पद	च.२म.२	मनुष्य	म.३ज.१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	व.१म.३	मनुष्य	मनुष्य	मनुष्य	म.३की.१	कीट	कीट	मनुष्य	म.।च.३।।	चतुष्पद	च.१।ज.२।।	ज.२म.२	मनुष्य	म.३ज.१	जलचर	जल.
युञ्जा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
हंसकः	अग्नि	अग्नि	अ.१भू.३	भूमि	भू.२वा.२	वायु	वा.३ज.१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ.१भू.३	भूमि	भू.२वा.२	वायु	वा.३ज.१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ.१भू.३	भूमि	भू.२वा.२	वायु	वा.३ज.१	जल	जल
योनिः	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनिवैरः	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशः	मङ्गल	मङ्गल	मं.१शु.३	शुक्र	शु.२बु.२	बुध	बु.३चं.१	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सू.१बु.३	बुध	बु.२शु.२	शुक्र	शु.३मं.१	मङ्गल	मङ्गल	बृह.	बृह.	बृ.१श.३	शनि	शनि	शनि	श.३बृ.१	बृह.	बृह.
गणः	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

• पल्लीपतनफलबोधकचक्रम् •

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	वामभुजे	राजभयम्	कटिभागे	पशुलाभः
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	कण्ठे	शत्रुनाशः	दक्षिणमणिबन्धे	हानिस्तापः
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	स्तनयोः	सौभाग्यम्	वाममणिबन्धे	कीर्तिनाशः
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	उदरे	भूषणाप्तिः	हृदये	धनाप्तिः
अधरोष्ठे	ऐश्वर्याप्तिः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः	मुखे	मधुरभोजनम्
नासाग्रे	रोगः	जानुद्वये	शुभः	केशान्ते	कष्टम्
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	जङ्घयोः	शुभः	गुल्फयोः	धनम्
वामकर्णे	लाभः	हस्तद्वये	लाभः	दक्षिणचरणे	भ्रमणम्
नेत्रयोः	धनलाभः	स्कन्धयोः	विजयः	वामचरणे	बन्धुनिग्रहः
दक्षिणभुजे	पराक्रमः	नाभौ	धनाप्तिः	पादान्ते मध्ये	स्त्रीनाशः

• पल्लीपतनफलम् •

यदि पतति च पल्ली दक्षिणाङ्गे नराणां स्वजनधनवियोगी लाभदा वामभागे। उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठदेशे च मृत्युः करचरणहृदिस्था सर्वसम्पत्तिदा स्यात्।। एतानि फलानि पुरुषाणाम्, स्त्रीणान्तु वैपरीत्येन ज्ञेयानि। अनिष्टपल्लीपतने स्नात्वा तिलमाषादिदानं कार्यम्। शिवालये दीपं दद्यादष्टोत्तरशतसङ्ख्यक "नमः शिवाय" इति शिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य जपश्च कार्यः।

• जन्मराशेः सायुररिष्टवर्षाणि •

राशिः	अरिष्टवर्षाणि	आयुः
मेष	१,१३,५०,६२	७५
वृष	३,६,८,३३,४६,५२,६३	७५
मिथुन	६,१०,११,१८,२४,५३,६३	७५
कर्क	१,१९,२२,२७,३५,४५,५५,६०	७०
सिंह	१,१०,१५,२५,४५,५१,६१	६५
कन्या	१,३,१३,२६,३३,४३	६८
तुला	२,४,१६,२१,३३,४१,५१,६१	६५
वृश्चिक	३,७,८,१३,३२,३५,४५,६३	७५
धनु	३,९,१०,१६,२३,३६,४७,५७,६७	९५
मकर	३,१०,३२,३३,४२,५१,५६,६१	१००
कुम्भ	१८,३२	६१
मीन	१८,३३	६१

• जन्मलग्नात् सायुररिष्टवर्षाणि •

लग्नम्	अरिष्टवर्षाणि	आयुः
मेष	४,११,१६,४४,५८	१००
वृष	१,२८,३३,४४	६०
मिथुन	१,१०,१४,३८,५८	६४
कर्क	५,२५,४०,४८,६२	१००
सिंह	५,१३,२८,३६,४८	६३
कन्या	४,१६,२३,३६,४५	१००
तुला	१५,३१,३५,५४,६२	७५
वृश्चिक	११,२८,३८,५२,६२	१००
धनु	२,८,१०,१८,३१,३८,४२,६७	८१
मकर	५,१३,२७,३६,५७,६२	८५
कुम्भ	२,२८,३३,४८,६४	९०
मीन	१,८,१३,३६,४८	८३

• काकस्पर्शपक्षघातमैथुनावलोकनादिशान्तिः •

गर्गसंहितायाम्—काकस्य मैथुनं पश्येत् काकः शिरसि चेद्विशेत्। शिरस्युपरि वा कुर्यात्पक्षघातं नखैस्तथा।। विदारणं च कुरुते शयानं च स्पृशेद्यदि। तदा वदेत्तु मरणं महारिष्टमथापि वा।। शान्तिं तत्र प्रकुर्वीत विधानेन यथोदिताम्। मध्यरात्रे यदा काको वसते हेतुना विना।। तद्गृहारिष्टमाचष्टे ग्रामारिष्टमथापि वा। शान्तिं तत्रापि कुर्वीत विधानेन यथोदिताम्।। **नारदसंहितायाम्**—दिवा वा यदि वा रात्रौ यः पश्येत्काकमैथुनम्। स नरो मृत्युमाप्नोति ह्यथवा स्थाननाशनम्।। सूर्यास्तमनवेलायां वायसः संस्पृशेद्यदि। निःशब्दो वा सशब्दो वा पुंसो मृत्युप्रदायकः।। अङ्गनां च स्पृशेत्काको वैधव्यं तत्र निर्दिशेत्। नदीतीरे गवां गोष्ठे वधबन्धनमाप्नुयात्।। प्रतिचन्द्रं प्रतिसूर्यं वायसः स्पृशते यदि। अर्थहानिं तथा मृत्युं शस्त्रेण च विनिर्दिशेत्।। मासैः पञ्चभिरेवास्य निशाभिः फलमादिशेत्। तद्दिनादि फलं सद्भिः प्रोक्तमत्र शुभाशुभम्।। शान्तिं तत्र प्रकुर्वीत शास्त्रदृष्टेन कर्मणा।। महानद्यम्भसि स्नात्वा शिवलिङ्गं निरीक्षयेत्। नत्वा सम्पूज्य लिङ्गन्तु स्तुत्वा च दिक्पतीनपि।। आरभ्य तद्दिनादेव वायसेभ्यो बलिं क्षिपेत्। शनैश्चरदिने प्राप्ते एकान्ते शुभमन्दिरे।। कृष्णानि नववस्त्राणि अहतानि नवानि च।। **शान्तिविधिः**—शनिदिने गङ्गादिमहानद्यां स्नात्वा कृतनित्यक्रियः शिवलिङ्गं प्रणम्य पञ्चदेवताविष्णुपूजनं विधाय (सधवा पञ्चदेवतागौरीपूजनं विधाय) ततः कलशस्थापनं विधाय सूर्यादिनवग्रह–इन्द्रादिदशदिक्पालान् सम्पूज्य प्रस्थप्रमितमाषोपरिस्थपीठे लौहमयं कृष्णवस्त्र–रक्तोष्णीष–दण्डैरलङ्कृतं यमं सम्पूज्य तत्परितः पूर्वादिक्रमेण माषोपरि कपिल–नीलग्रीव–विकृतस्वर–क्रौञ्च–विद्युज्जिह्व–कृष्णकर्बुर–काल–श्वेतसंज्ञकान् काकान् सम्पूज्य शिवं पूजयेत्। ततः अग्निस्थापनं कृत्वा प्रजापत्यादि नवग्रहान्तं होमं विधाय "सुगत्रु पन्था अनृक्षर आदित्या सञ्चतं यते। नात्रावखादो अस्ति वः।।" इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतं जुहुयात्। काकस्पृष्टं वस्त्रं सहिरण्यं (तदभावे सद्रव्यम्) कृत्वा दानं कुर्यात्। ततो यथाशक्ति अन्नदानङ्गोदानञ्च कुर्यात्। ततो विसर्जनं कृत्वा दक्षिणां दत्त्वा कलशजलेनाभिषेकं कुर्यात्। यममूर्तिवस्त्रसुवर्णादिकं ब्राह्मणाय आचार्याय वा निवेदयेत्। ततो ब्राह्मणभोजनं कुमारीभोजनञ्च कारयेत्। एतन्मध्ये शान्तिदिनपर्यन्तं प्रतिदिनं काकेभ्यो बलिं दद्यात्। एवं कृते सति काकदोषः प्रशाम्यति। इयं शान्तिः रविवासरेऽपि कर्तुं शक्यते।

• माहेन्द्रादियोगचक्रम् •

चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि— मा २ अ ८ व १० शू ८ मा २ शू २ अ ६ शू ८ व ६ मा २ व ४ अ २
चन्द्र— मा ४ शू ६ व १२ मा २ अ २ शू ४ व २ मा ६ व २२
मङ्गल— व ४ शू २ मा ६ व ४ शू २ अ ४ शू ४ अ ६ व ४ शू २ व ८ अ ६ शू ४ अ ४
बुध— व ४ अ ४ व ६ अ ४ शू २ व ४ मा २ व ४ शू ४ अ ६ शू ६ व ८ अ ६
बृह.— अ ६ शू ४ व ४ अ ६ व ६ अ ४ व ४ मा ४ अ २ व ८ अ ४ शू ४ अ ४
शुक्र— शू २ अ१६ व ८ अ २ शू २ व ४ शू ८ अ ६ व ८ अ २ शू २
शनि— शू ४ व ४ शू ६ अ ४ शू २ अ ४ शू २ अ ४ शू ४ व ४ अ ४ व ४ अ ६ व ४ अ २ शू २

ज्येष्ठाषाढमासयोः

रवि— शू ४ अ ६ मा ६ व ६ शू २ व ४ अ २ शू ४ मा ६ शू ४ व ६ शू २ मा ४ व ४
चन्द्र— व ८ अ ४ शू ६ अ ६ मा ६ व ६ अ ८ व ८ शू ४ व ४
मङ्गल— अ ४ शू ४ व ४ शू २ अ ४ व २ मा ८ शू २ व ६ अ ४ व ४ अ २ शू २ व २ अ ६ व ४
बुध— शू २ व ४ अ ८ व ६ अ ८ शू २ अ१० शू २ व ८ अ ६ शू २ अ २
बृह.— अ २ शू २ अ ४ व ८ अ ६ शू २ अ ६ शू ४ अ ४ शू २ व ६ अ ६ शू ४ व ४
शुक्र— शू ४ अ १४व ८ अ २ शू २ व ४ शू २ अ ६ शू ६ अ ८ मा २ शू २
शनि— शू ४ व ६ अ ६ शू २ व ४ अ ४ शू ६ व ४ अ ६ व ४ अ ४ शू २ अ २ व ६

आश्विनकार्त्तिकमार्गपौषमासेषु

रवि— मा ६ व ८ अ ८ शू २ मा ४ शू ६ व ४ अ ४ व ४ अ ६ शू २ अ ४ शू २
चन्द्र— अ ४ व ४ अ ६ व२२ अ ८ व ६ अ ४ व ६
मङ्गल— मा २ व ६ अ१० व ६ शु २ व१२ अ २ शू २अ ६ व ४ मा ४ व ४
बुध— शू ४ अ ४ मा ६ शू ४ व ६ शू २ व ८ अ ४ व ८ अ ६ शू ८
बृह.— अ ४ व ६ अ ८ शू ४ व ६ शू ६ अ ८ व ४ अ ६ व ६ मा २
शुक्र— अ २ व ६ शू ६ व ६ अ ८ व१४ शू ४ मा २ व ६ मा ६
शनि— मा ४ शू ४ अ ८ शू ८ अ ४ शू २ अ१२ शू ४ व ६ मा २ शू ६

फलम्—ज्योतिषां ग्रहशास्त्राणां सारमुद्धृत्य यत्नतः। क्रियते मिहिरेणेदं नराणां हितकाम्यया।। न वार–तिथि–नक्षत्रं न योगः करणन्तथा। शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्।। माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये च मरणं ध्रुवम्।। अयं रव्यादिवारेषु माहेन्द्रादियोगः प्रोक्तदण्डप्रमाणकालेन व्यतीतो भवतीति चक्रे विलोकनीयम्।

शुभस्वप्नफलम्—आदित्यमण्डलं स्वप्ने चन्द्रं वा यदि पश्यति। रोगैर्विमुच्यते रोगी चारोगी श्रियमाप्नुयात्।। निगडैर्बध्यते यस्तु क्रोशते यः पुनः पुनः। पुत्रश्च जायते तस्य दशकर्मविनिर्दिशेत्।। रुधिरं पिबति यः स्वप्ने सुरां वाऽपि कथञ्चन। ब्राह्मणो लभते विद्यामितरस्तु लभेद्धनम्।। उरगो वृश्चिकश्चैव जलौका दृश्यते यदि। विजयश्चार्थलाभश्च पुत्रलाभो भवेदिति।। दधि दृष्ट्वा भवेद्वृद्धिर्गोधूमैश्च धनागमः। यवैर्यज्ञागमो विद्याल्लाभः सिद्धार्थकेन तु।। फलिते फलितं विद्यात् पुष्पिते वृद्धिमाप्नुयात्।। सर्वाणि शुक्लानि सुशोभनानि कार्पासभस्मास्थिकपालवर्जम्। सर्वाणि कृष्णानि विनिन्दितानि गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्जम्।।

१ वर्णगुणाः वरस्य

(कन्यायाः)

वर्णाः	विप्रः	क्षत्रियः	वैश्यः	शूद्रः
विप्रः	१	०	०	०
क्षत्रियः	१	१	०	०
वैश्यः	१	१	१	०
शूद्रः	१	१	१	१

२ वश्यगुणाः वरस्य

(कन्यायाः)

वश्यः	चतुष्पद्	मनुष्यः	जलचरः	वनचरः	कीटः
चतुष्पद्	२	१	१	०	१
मनुष्यः	१	२	॥	०	१
जलचरः	१	॥	२	१	१
वनचरः	०	०	१	२	०
कीटः	१	१	१	०	२

७ राशिकूटगुणाः

(वरस्य राशयः; कन्यायाः)

वरस्य राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

३ तारागुणाः वरस्य

(कन्यायाः)

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुणाः वरस्य

(कन्यायाः)

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु.	४	१	॥	५	॥	५	४
बृ.	५	४	५	॥	५	॥	३
शु.	०	॥	३	५	॥	५	५
श.	०	॥	॥	४	३	५	५

६ गणगुणाः वरस्य

(कन्यायाः)

गणः	देवः	मनुष्यः	राक्षसः
देवः	६	५	०
मनुष्यः	५	६	०
राक्षसः	०	०	६

८ नाडीगुणाः वरस्य

नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

४ योनिकूटगुणाः वरस्य

(कन्यायाः)

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	१	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	३	३	३	१	३	०	३	०
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	२	०
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	२	२	२	४	३	१	२	२	२	३
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	३
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	२	२	३	१	२	२	२	४

• विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः •

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	बृहस्पतिः
शुभः	३,६,१०,११	३,६,७,१०,११	२,५,७,९,११
पूज्यः	१,२,५,७,९	१,२,५,९	१,३,६,१०
निन्द्यः	४,८,१२	४,८,१२	४,८,१२

• विवाहे रेखाप्रदग्रहाः •

ग्र.	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः
सं.	३॥	५	१॥	२	३	२	१॥

शनिवद्राहुकेत्वोः। सूर्य–शनि–राहु–केतवः ३, ६ ⇨ ८, ११, चन्द्रः २, ३, ११, मङ्गलः ३, ६, ११, बुधबृहस्पती १, २, ३, ४, ५, ६, ९, १०, ११, शुक्रः १, २, ४, ५, ९, १०, ११ उक्तस्थानस्थ ग्रहाङ्कान् संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहबलविश्वा विज्ञेया। लग्नेशनवमांशेशौ १, ४, ७, १०, ११ स्थानस्थौ सर्वदोषनाशकौ भवतः।

• नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम् •

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः
मित्राणि	चं.मं.बृ.	सू.बु.	सू.चं.बृ.	सू.शु.	सू.चं.मं.	बु.श.	बु.शु.
समाः	बु.	मं.बृ.शु.श.	शु.श.	मं.बृ.श.	श.	मं.बृ.	बृ.
शत्रवः	शु.श.	–	बु.	चं.	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.

• वर्षप्रवेशसारिणी • प्रतिवर्षक्षेपकदिनानि •

गतवर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
दिन	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०४	०२	०१	०६	०५	०४	०२	०१	०६
दण्ड	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	१०	४५	२१	५६	३१	०६	४२	१७	५२
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	३०	४५	००	१५	३०	४५	००	१५	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००

• विंशोत्तरीमुद्दादशाचक्रम् •

पति	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	राहु	बृह.	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	००	०१	००	०१	०१	०१	०१	००	०२
दिन	१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	००

गतवर्षसङ्ख्या जन्मनक्षत्रसङ्ख्यायुता द्विहीना नवभक्ता शेषक्रमेण दशापतिः।

वर्षमुन्थानयनम्—(गतवर्षसङ्ख्या+जन्मलग्न सङ्ख्या)÷१२. एकादिशेषे मेषादिमुन्थाराशिः। **वर्षेशनिर्णयः**—वर्षलग्नेशजन्मलग्नेश–मुन्थेश–त्रिराशिपतिदिवारविराशीश–निशिचन्द्रराशीशेषु लग्नद्रष्टा सर्वाधिक–बलवत्तरो वर्षेशः।

• त्रिराशिपतिः •

लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
दिवा	सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र	बृह.	चन्द्र	बुध	मङ्गल	शनि	मङ्गल	बृह.	चन्द्र
रात्रौ	बृह.	चन्द्र	बुध	मङ्गल	सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र	शनि	मङ्गल	बृह.	चन्द्र

• सार्द्धसप्तवर्षीय शनेः मासभेदेन फलम् •

स्थानम्	अवधिः	फलम्	स्थानम्	अवधिः	फलम्
मस्तके	७ मासाः	सर्वांशे हानिः	नेत्रे	९ मासाः	सर्वांशे हानिः
मुखे	८ मासाः	भोजनादिलाभः	कण्ठे	६ मासाः	भूषणादिलाभः
हृदये	१० मासाः	यन्त्रादिलाभः	उदरे	११ मासाः	अन्नादिलाभः
नाभौ	४ मासाः	कष्टमुदरे	गुह्ये	५ मासाः	सर्वांशे हानिः
जानुनि	१४ मासाः	राजबलेन जयः	जङ्घयोः	११ मासाः	सौख्यम्
पादयोः	५ मासाः	व्यर्थभ्रमणम्			

• त्रिपताकिचक्रनिर्माणप्रकारः •

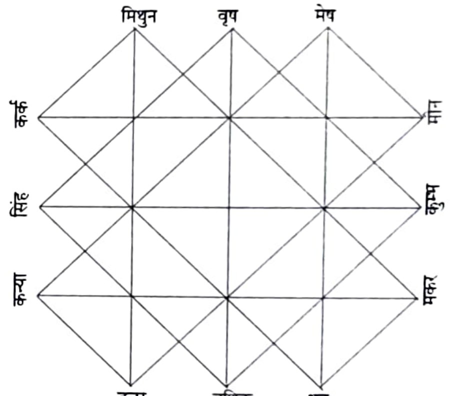
ऊर्ध्वं रेखात्रयं लेख्यं तिर्यग्रेखात्रयं तथा। वेधस्तिर्यक्क्रमाज्ज्ञेयो द्वाभ्यान्द्वाभ्यां परस्परम्॥ षड्रेखास्तु समालिख्य पताकी वेधनिर्णये। रव्यादिग्रहदानेन जन्मारिष्टं विधीयते॥

शिवारुतादिशान्तिः—ग्राममध्ये तु वाशेत वनादागत्य जम्बुकः। तीव्रस्वरेण महता दृष्टो ग्रामवधाय सः॥ दिवा गृहं प्रविशति जम्बुको यस्य निर्भयः। ध्रुवं गृहपतेस्तस्य विनाशः क्षिप्रमुच्यते॥ अतस्तत्र **शान्तिः कर्त्तव्या**—कृतनित्यक्रियः अष्टम्यां चतुर्दश्यां वा गणेश– दिक्पालनवग्रहपूजनपूर्वकं शिवां सम्पूज्य "ॐ नमो भगवति एनमेनं बलिं गृहण गृहण गन्धपुष्पधूपदीपादिकं दह दह पच पच घोररूपिणि भो भगवति पिबत पिबत स्वाहा" इत्यनेन मन्त्रेण सप्तकृत्वः निशायां बलिं दद्यात्।

• त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम् •

सैका गताब्दसङ्ख्या या विभक्ता नवभिस्ततः। शेषाङ्केजन्मनि गताच्चन्द्रराशिरिह न्यसेत्। शेषग्रहाद्यतुर्भक्तशेषसङ्ख्यासु विन्यसेत्। त्रिपताके वर्षलग्नमादौ स्थाप्यौ विधूदयौ। शुभर्विदौ शुभफलौ पापैः पापफलप्रदौ।

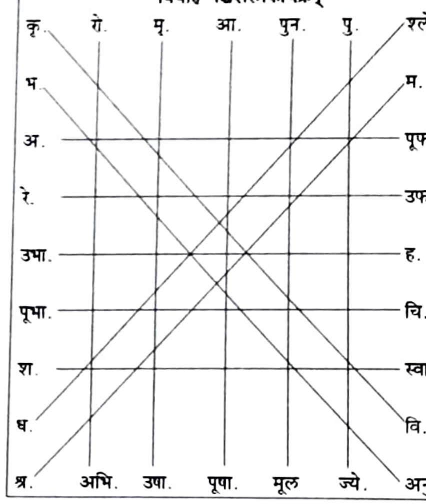
• त्रिपताकिचक्रम् •



• गोचरफलबोधकचक्रम् •

भावाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानिः	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	अभयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागमः	हानि	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	भीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नैरुज्यम्	सुखम्
सुहृद्	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धिः	शत्रुवृद्धिः	भीतिः
सुतः	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनपुत्रनाशः	शोकः	शोकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभः	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मृत्युः	पीडा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	राजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीड़ा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानिः	पापरतिः	बन्धनम्
कर्म	कार्यसिद्धिः	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयुर्वृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ता	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

• विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम् •



• गुणयोगबोधक (मेलापक) चक्रम् • पार्श्वे कन्यानक्षत्राणि • उपरि वरनक्षत्राणि •

नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.१	कृ.३	रो.	मृ.२	मृ.२	आ.	पुन.३	पुन.१	पुष्य	श्ले.	मघा	पूफ.	उफ.१	उफ.३	ह.	चि.२	चि.२	स्वा.	वि.३	वि.१	अनु.	ज्ये.	मूल	पूषा.॥	पूषा.३॥	उषा.१	उषा.३	श्र.१॥	श्र.२॥	ध.२	ध.२	शत.	पूभा.३	पूभा.१	उभा.	रेवती
अश्वि.	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	३१॥	२७	२०॥	२६	१७॥	११	०९	१३	२२॥	२६॥	२२॥	१९॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१८॥	२४॥	२६
भ.	३४	२८	२९	१९	२२॥	१३॥	१७	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥	२१	१९	२८	२१॥	१९	०६	१४॥	२९॥	२२॥	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१९	२०	२७	२८॥	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१६॥	२८
कृ.१	२७॥	२७॥	२८	१६॥	०९	१५॥	१९	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥	१५॥	१८॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	२०॥	२६॥	२४॥	१८	१९	१४	१५॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१९॥	१७॥	१९॥	११॥
कृ.३	१८॥	१८॥	१९	२८	१९	२५॥	१६॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१९॥	२३	२४	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२॥	१३॥	०९॥	१४	११	१०	२२॥	२९॥	३१	२३॥	२०	२२	१४
रो.	२३॥	२३॥	१०	१९	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२६	१३	१२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	१९	१५॥	०९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१९	२०	११॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४	३०॥	२७	२६	१९
मृ.२	२३॥	१३॥	१८॥	२७॥	३४	२८	२०	२५	२३॥	२६	१९	२२	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२७	१३	१०	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१२	११	१८	२१	२४॥	२४	१३	१९	२७	२९॥	२६॥	१७	२७
मृ.२	२७	१८	२१	१८॥	२५॥	२०	२८	३३	३१॥	१९॥	११	१५॥	२४	२०॥	२८॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	१९॥	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२९॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१३॥	१७	०४	१६	२८	२७	२७	२२॥	२२॥	२२॥	१७	२०	११	१६	१९	२७	२७
पुन.३	१९	२६	२२	१९॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१६	२३	१६॥	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	०५	१३	२७	२६	२७	२७॥	२२॥	२३॥	१७॥	१८॥	११	१७	१९॥	२७	२८
पुन.१	२१॥	२८	२३॥	२०	२४	२५	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२८॥	१५॥	२०	१४॥	१७	१८	२०॥	२०	२७	२०	१९	२६	१०॥	०८	२१	२०॥	२१॥	२८॥	२५	२७	२१	१२॥	०७	११	१७	२५	२५॥
पुष्य	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	१७	१०	१८	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१३	०४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
श्ले.	२५	२३॥	२२॥	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८॥	२८॥	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२२॥	२६	२५	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१६॥	०८॥	१२	१३	१३	२७	०८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
मघा	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१९॥	२२॥	२२॥	२१॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	०५॥	०५॥	०४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१७॥	१८॥	१२
पूफ.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	२०॥	२८॥	२७॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२४	२२॥	०८॥	११॥	२५॥	१९॥	२६॥	२४॥	२४॥	१९	१८	१९	२७	२१	१९॥	१८॥	०४॥	११॥	१९॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उफ.१	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१॥	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८	१६॥	१४॥	१७॥	२६॥	१७॥	२४॥	३०	१९॥	१०	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११॥	१८॥	१२॥	१३॥	१५॥	२६॥	२४॥
उफ.३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१९॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१९	२८	२५॥	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२७	१३	१५॥	२९॥	२८॥	२९॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८	२९	२७
हस्त	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	३३	२३॥	२३॥	१९॥	२८॥	२३॥	१७॥	२२॥	१७	२६	२८	२७	१९	२६॥	१७॥	१९॥	२६	१२	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१९	१९	०८॥	१४॥	१९	२७	२७
चित्रा२	१३	०६	१९	२५॥	२०	१२	१९	२६	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥	२३॥	०९॥	१५॥	२४	२७	२८	२०	१९	२६॥	२८॥	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१९	१९	१८	१८	२४	१८॥	२२	११	२१
चित्रा२	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	२०	१२	२६	२५॥	१०	१७॥	१७॥	२०	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	०७॥	२१॥	२८	१४	१३	२१	२५॥	२७	२७	२६	२०	२६	२१	१५	०४	१३
स्वाती	२७॥	२९॥	१७॥	१२॥	१६॥	२७	२७	२६	२६॥	२८	२८	१५॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३॥	१७	२१	२०	२५	२०॥	२०	१३
विशा.३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१९॥	२१	२१	२२॥	२१॥	१९	१७॥	१९॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१८	२८	१८	१७	२१॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७	१७॥	३२॥	२६॥	२६॥	२२	१६॥	१३॥	०५
विशा.१	१६॥	१६॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	१३	१४॥	१४॥	१९	१८	१५॥	२१	२३	२१॥	१८	१९	२८	२३॥	०८	१७	२८	२७	३१॥	२३॥	१७॥	१६॥	०९॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	०९॥
अनु.	२४॥	२४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२१॥	२६॥	१८	२१	२४॥	२०॥	२९॥	२६	२७	१२	०७॥	२२॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१४॥	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४॥	२४	१८	२७
ज्ये.	१२	१८॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	१३	०३	०६	१०॥	२०	२६	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५॥	२०॥	१७॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२१	२५	१८	११	१०॥	२१	२१
मूल	१२	२०	२४॥	१९	१३	१४	२१	१५	१२	०८॥	१७॥	२४	२५	१९	०९॥	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२१॥	२५	२१	११	१७॥	२५॥	२७
पूषा.॥	२६	१९	१८	१२॥	१९	११	१९	२७	२७	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१८॥	१८॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	०८॥	१६॥	२३॥	३१॥	३२॥	२३॥	३२॥
पूषा.३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२७	२६	११	११	२६	१९	१८॥	१८॥	१९	२७	२७	२८	३४	२४	२४	२३॥	०८॥	१५॥	२२॥	२९॥	३२॥	२३॥	३२॥
उषा.१	२५॥	२७	१४	०८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	०९॥	११॥	२७	२८	२८॥	२७॥	२०	२०	१९	१२	११॥	२५॥	१९॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उषा.३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२२॥	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२८	१३	०६॥	२२	२३	२६	२५	१७॥	२४॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२२	१६॥	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	३०॥	३२॥	२३॥
श्रव.१॥	२८	२७	१४॥	१२	१८	३४॥	२४	२१॥	२१॥	२७	२५	१५	१७॥	१९	२०	२४	२५	१९॥	२६॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२३॥	३१॥	३०॥	२२॥
श्रव.२॥	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	२३॥	२१	२३॥	२८॥	२६	१५	०६॥	१८॥	२०॥	२३॥	२४	१८॥	२५॥	२३	१६	१४	२८	२३	१६	२५	२५॥	१५	२४	२७	२८	३०	२०	१८॥	२३	३२॥	३१॥	२४॥
धनि.२	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	०८॥	१७॥	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	०५॥	१२॥	१६	१७॥	१६॥	२४॥	२६	३०	२८	१४	२८	२१॥	०९	०९॥	१६॥	२५॥	२८	२१	२८	१८॥	२३॥	२१॥	२६॥	१५॥	२२॥
धनि.२	२०	११	२६	३०॥	२७	१९	१०	२०	१९	१४	०५	२०	२५॥	११॥	१९॥	१७॥	२१	१८	१९	२२	२५॥	२८	१२	२६	२९॥	१७॥	१६॥	१३॥	१८॥	२१॥	२१	२०॥	२८	३३	२८॥	१८॥	०७॥	१४॥
शत.	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२५	१८	१०	१०	०७॥	१५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११	०८॥	२६	२६	१९	२६॥	२६॥	२१	१९	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१९	०९	१७॥	१६॥
पूभा.३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२०॥	१४	१९॥	२५॥	१७॥	१५॥	१७॥	१८॥	१९॥	२८	२१	२१॥	०७॥	१२	१५॥	३१॥	३०॥	२९॥	२४	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१९	२८॥	१८	२३	२०॥
पूभा.१	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६॥	२५॥	१८	१८	१८	२५	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१९॥	१२॥	१९	१४	२१	२७	११॥	१५	३१॥	३१॥	३०	२८	२९॥	३०	२५॥	१७	०७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
उभा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२६	१९	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६	०९॥	०५	१९॥	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२॥	३१॥	२९॥	२८॥	२९॥	१४॥	०६	१६	२१॥	३३	२८	३४॥
रेवती	२५	२४॥	११॥	१४	१७	१६	२५॥	२४	२५॥	२४॥	२७	१३	१२	२२	२२	२४॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	०५॥	१२॥	२७	२२	२७	३०	३०॥	२१	१९	२०	२२॥	२२॥	१४	१६	१८	२०॥	३३	२८

गुणविचार:—गुणैः षोडशभिर्निन्द्यो मध्यमा विंशतिस्तथा। श्रेष्ठस्त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम्॥ **वर्णादिपरिहार:**—मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद्गुणानां न दोष:। खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम्॥ राशीशयोरमित्रत्वे मित्रत्वे नांशनाथयो:। गणादिदौष्ट्येऽप्युद्वाह: पुत्रपौत्रप्रद: स्मृत:॥ राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयो: स्यात्रक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव। नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्॥ रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्। अतिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते॥ **वरकन्ययोर्मेलापकविचार:**—लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुज:। कन्या भर्तृविनाशाय भर्ता कन्याविनाशक:॥ इद लग्नचन्द्राभ्यां विचार्यम्। सप्तमेशे षष्ठाष्टव्ययगते न शोभन:। परं सप्तमेशे स्वोच्चमूलत्रिकोणमित्रगृहगते शोभन:॥ **अस्य परिहार:**—यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्॥ शनिर्भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्॥ लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च। द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषाख्यदोषम्॥ केन्द्रे कोणे शुभा: सर्वे त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहा:। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥ उभयोर्वरकन्ययोर्नामनक्षत्रानुसारं जन्मर्क्षानुसारं वा मेलापकं गणनीयम्। यतो हि व्यत्ययोऽशुभप्रद:॥

• नित्यपूजाविधि: •

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करें। (अथवा विष्णु की जगह गौरीपूजा करें। गौरि इहागच्छ, गौर्यै नम:।) **अक्षत लेकर**—"ॐ भूर्भुव: स्व: सूर्यादिपञ्चदेवता इहागच्छत इह तिष्ठत" इस मन्त्र से आवाहन कर "एतानि पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि ॐ भूर्भुव: स्व: सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नम:" इस मन्त्र से जल दें। इसके बाद "इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नम:" इस मन्त्र से चन्दन तथा अन्य वस्तु भी समर्पित करें। रात्रि में सूर्यादि के स्थान पर गणपत्यादि पढ़ें। पुन: तिल से "ॐ भूर्भुव: स्वर्विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ" से आवाहन कर "ॐ भूर्भुव: स्वर्विष्णवे नम:" से पूजा करें (शालग्राम या नर्मदेश्वर हो तो आवाहन विसर्जन न करें)। तत: स्वेष्टदेवता की पूजा, जप आदि करें। तत: "ॐ भूर्भुव: स्व: कीर्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ" इस मन्त्र से पूर्ववत् पूजा करें। तत: "ॐ हराय नम:" इस मन्त्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर "ॐ महेश्वराय नम:" इस मन्त्र से महादेव बनाकर "ॐ शूलपाणये नम:, शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव" इस मन्त्र से अक्षत लगाकर पात्र में शिव को सामने रखकर निम्न मन्त्र से ध्यान करें—"ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।" इसके बाद "ॐ पिनाकधृगे नम:, पिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ" इस मन्त्र से अक्षत से आवाहन कर "एतानि पाद्यादीनि ॐ पशुपतये नम:।" तत: "इदमनुलेपनम्, इदमक्षतम्, एतानि पुष्पाणि, एतानि बिल्वपत्राणि, एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयथाभागनानाविधनैवेद्यानि ॐ नम: शिवाय नम:" इस मन्त्र से क्रमश: चन्दन, अक्षत, पुष्प, बिल्वपत्र, गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यादि दें। इसके बाद फूल, अक्षत, चन्दन से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर और अन्त में महादेव के ऊपर निम्नलिखित मन्त्रों से क्रमश: अष्टमूर्ति की पूजा करें—"ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नम: १। ॐ भवाय जलमूर्तये नम: २। ॐ रुद्रायाग्निमूर्तये नम: ३। ॐ उग्राय वायुमूर्तये नम: ४। ॐ भीमायाकाशमूर्तये नम: ५। ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नम: ६। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नम: ७। ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नम: ८।" अन्त में जलपुष्पाक्षतचन्दनादि से "ॐ ब्रह्मणे नम:" इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा एक बार में ही भूमि पर करें। उसके बाद पूजा क्रम से जल लेकर विसर्जन करें—"ॐ सूर्यादिपञ्चदेवता: पूजिता: स्थ: क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ महादेव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ।" इसके बाद "ॐ विष्वक्सेनाय नम:" इस मन्त्र से भगवान् पर से तथा "ॐ चण्डेश्वराय नम:" इस मन्त्र से महादेव पर से निर्माल्य हटावें।

• गृहदैर्घ्यविस्तारघातवशेन आयादिबोधकचक्रम् • (गृहस्य यद्दैर्घ्यं यश्च विस्तारस्तयोर्गुणनफलं पिण्डो भवति)

दैर्घ्यम्	२१	२१	२३	२३	२३	२५	२५	२५	२७	२७	२७	२९	२९	२९	३१	३१	३१	३१	३३	३३	३३	३३	३५	३५	३५	३५	३७	३७	३७	३७	३९	३९	३९	३९	४१	४१	४१	४१	४१	४३	४३	४३	४३	४३	४५	४५	४५	४५	४५	४७	४७	४७	४७
विस्तार:	१९	२१	१९	२१	२३	२१	२३	२५	२३	२५	२७	२५	२७	२९	२५	२७	२९	३१	२७	२९	३१	३३	२९	३१	३३	३५	३१	३३	३५	३७	३३	३५	३७	३९	३३	३५	३७	३९	४१	३५	३७	३९	४१	४३	३७	३९	४१	४३	४५	३९	४१	४३	४५
आय:	०७	०१	०५	०३	०१	०५	०७	०१	०५	०३	०१	०५	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०१	०३	०५	०७	०१	०१	०७	०५	०३	०१	०१	०३	०५	०७	०१	०१	०७	०५	०३
वार:	०७	०७	०६	०७	०१	०७	०२	०४	०३	०६	०२	०१	०५	०२	०३	०१	०६	०४	०४	०३	०२	०१	०७	०७	०७	०७	०५	०६	०७	०१	०५	०७	०२	०४	०४	०७	०३	०६	०१	०७	०४	०१	०५	०२	०५	०३	०१	०६	०४	०५	०४	०३	०२
अंश:	०९	०९	०३	०९	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०३	०९	०६	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९	०६	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९	०६	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९
द्रव्यम्	१२	१२	०४	१२	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	०४	१२	०८	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२	०८	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२	०८	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२
ऋणम्	०५	०३	०७	०१	०३	०७	०५	०३	०७	०१	०३	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०३	०१	०७	०५	०३	०३	०५	०७	०१	०३	०३	०१	०७	०५	०३	०३	०५	०७	०१
नक्षत्रम्	०६	१८	१३	०३	२०	१५	१०	०५	२७	२७	२७	२२	२७	०५	१७	२७	१०	२०	२७	१५	०३	१८	२०	१३	०६	२६	२३	२१	१९	१७	०९	१२	१५	१८	२४	०५	१३	२१	०२	२५	११	२४	१०	२३	०९	२७	१८	०९	२७	०३	२६	२२	१८
तिथि:	१२	०३	०१	०९	०२	१५	१०	०५	०३	१५	१२	१०	०९	०८	०५	०६	०७	०८	०३	०६	०९	१२	०५	१०	१५	०५	१०	०३	१०	०२	०६	१५	०९	०३	०९	०५	०१	१२	०८	१०	०८	०६	०४	०२	१५	१५	१५	१५	१५	०९	११	१३	१५
योग:	०३	०९	२०	१५	१०	२१	०५	१६	२७	२७	२७	११	२७	१६	२२	२७	०५	१०	२७	२१	१५	०९	१०	२०	०३	१३	२५	२४	२३	२२	१८	०६	२१	०९	१२	१६	२०	२४	०१	२६	११	१२	०५	२५	१८	२७	०९	१८	२७	१५	१३	११	०९
आयु:	७२	४८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	४८	१२०	७२	४०	२४	०८	८०	९६	११२	०८	४८	९६	२४	७२	८०	४०	१२०	८०	५६	४८	४०	३२	९६	१२०	२४	४८	२४	८०	१६	७२	०८	४०	०८	९६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	२४	५६	८८	१२०

दैर्घ्यम्	४७	४९	४९	४९	४९	४९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६५	६५	६५
विस्तार:	४७	४१	४३	४५	४७	४९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	४९	५१	५३	५५	५७	५९	६१	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	५३	५५	५७
आय:	०१	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०५	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०५	०७	०१
वार:	०१	०७	०७	०७	०७	०७	०३	०४	०५	०६	०७	०१	०१	०३	०५	०७	०२	०४	०१	०४	०७	०३	०६	०२	०३	०७	०४	०१	०५	०२	०७	०५	०३	०१	०६	०४	०७	०६	०५	०४	०३	०२	०१	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०२	०३	०४
अंश:	०६	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०३	०९	०६	०३	०९	०६	०९	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०३	०९	०६	०३	०९	०६	०६	०९	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९
द्रव्यम्	०८	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०४	१२	०८	०४	१२	०८	१२	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०४	१२	०८	०४	१२	०८	०८	१२	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२
ऋणम्	०३	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०७	०५	०३
नक्षत्रम्	१४	०७	०८	०९	१०	११	१५	२१	२७	०६	१२	१८	०७	१८	०२	१३	२४	०८	०९	२५	२४	०३	१९	०८	२१	१५	०९	०३	२४	१८	१६	१५	१४	१३	१२	११	१७	२१	२५	०२	०६	१०	१४	२७	०९	१८	२७	०९	१८	२७	२०	०७	२१
तिथि:	०२	०७	११	१५	०४	०८	०३	०९	१५	०६	१२	०३	०७	१५	०८	०१	०९	०२	१५	१०	०५	१५	१०	०५	१२	०९	०६	०३	१५	१२	१३	१२	११	१०	०९	०८	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१२	१५	०३	०६	०९	१२	०५	१०	१५
योग:	०७	१७	०४	१८	०५	१९	२१	२४	२७	०३	०६	०९	१७	०९	०१	२०	१२	०४	१८	२६	०७	१५	२३	०४	२४	२१	१८	१५	१२	०९	०८	२१	०७	२०	०६	१९	२२	२४	२६	०१	०३	०५	०७	२७	१८	०९	२७	१८	०९	२७	१०	१७	२४
आयु:	३२	११२	५६	१२०	६४	०८	४८	२४	१२०	९६	७२	४८	११२	१२०	०८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	१२०	४०	८०	७२	२४	९६	४८	१२०	७२	८८	७२	५६	४०	२४	०८	३२	४८	६४	८०	६९	११२	०८	२४	७२	१२०	४८	९६	२४	७२	८०	४०	१२०

दैर्घ्यम्	६५	६५	६५	६५	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६९	६९	६९	६९	६९	६९	६९	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५
विस्तार:	५९	६१	६३	६५	५५	५७	५९	६१	६३	६५	६७	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	७५
आय:	०३	०५	०७	०१	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१
वार:	०५	०६	०७	०१	०६	०१	०३	०५	०७	०२	०४	०५	०१	०४	०७	०३	०६	०२	०२	०६	०३	०७	०४	०१	०५	०२	०४	०२	०७	०५	०३	०१	०६	०४	०१	०७	०६	०५	०४	०३	०२	०१
अंश:	०६	०३	०९	०६	०६	०९	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९	०६	०३	०९	०६	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९
द्रव्यम्	०८	०४	१२	०८	०८	१२	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२	०८	०४	१२	०८	०४	०८	१२	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
ऋणम्	०१	०७	०६	०३	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३
नक्षत्रम्	०८	२२	०९	२३	२३	१५	०७	२६	१८	१०	०२	०९	०६	०३	२७	२४	२१	१८	०३	०५	०७	०९	११	१३	१५	१७	०४	११	१८	२५	०५	१२	१९	२६	१५	२७	१२	२४	०९	२१	०६	१८
तिथि:	०५	१०	१५	०५	०५	१२	०४	११	०३	१०	०२	०९	०३	१२	०६	१५	०९	०३	०६	०२	१३	०९	०५	०१	१२	०८	०१	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
योग:	०४	११	१८	२५	२५	२१	१७	१३	०९	०५	०१	१८	०३	१५	२७	२१	२४	०९	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	०२	१९	०९	२६	१६	०६	२३	१३	२१	२७	०६	१२	१८	२४	०३	१९
आयु:	८०	४०	१२०	८०	८०	७२	६४	५६	४८	४०	३२	२४	४८	७२	९६	१२०	२४	४८	९६	३२	८८	२४	८०	१६	७२	४८	१६	१०४	७२	४०	०८	९६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०

• पिण्डवशेन गृहाणामायादिसाधनप्रकार: •

पिण्डे नवाङ्काङ्कगजाग्निनागनागाब्धिनागैर्गुणिते क्रमेण। विभाजिते नागनगाङ्कसूर्य–नागर्क्षतिथ्यृक्षखभानुभिश्च।। आयो वारोंऽशको द्रव्यमृणमृक्षन्तिथिर्युति:। आयुश्चाथ गृहेशर्क्षगृहभैक्यं मृतिप्रदम्।। विषमाय: शुभ:, रविमङ्गलभिन्नदिनराश्यंशा: शुभा:, द्विराश्यात्मकनक्षत्रस्य शेषक्रमेण राशिज्ञानं कर्त्तव्यम्, द्रव्याधिकं ऋणाल्पञ्च गृहं शोभनम्, गृहनक्षत्राद्गृहारम्भदिनकनक्षत्रं गृहपतिनक्षत्रं यावच्च विगणय्य नवभक्ते शेषे २,४,६,८,० तारा: शुभा:, रिक्तारहिततिथय: शुभा:, योगास्तु विष्कम्भ–अतिगण्डशूलगण्डवज्रव्याघातव्यतीपातवैधृतिभिन्ना: शुभा:, अधिकायुर्गृहं शोभनम्। गृहगृहेशयो: नक्षत्रैक्यं न शोभनं परञ्च राशिभेदे सति शोभनम्। अत्र नाडीवेधो न दोषावह:। पुनश्चात्राश्विन्यादिनक्षत्रत्रयं मेषराशि:, मघादित्रयं सिंह:, मूलादित्रयं धनूराशि:। शेषभेषु यथाक्रमेण राशय:।

• मिनटसेकेण्डरूपा चरसारिणी •

क्रान्त्यंशाः (पंक्ति) / अक्षांशाः (स्तम्भ)

क्रान्त्यंशाः \ अक्षांशाः	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०१	०० ०४	०० ०८	०० १३	०० १७	०० २१	०० २५	०० २९	०० ३४	०० ३८	०० ४२	०० ४६	०० ५१	०० ५५	०१ ००	०१ ०४	०१ ०९	०१ १३	०१ १८	०१ २३	०१ २७
०२	०० ०८	०० १७	०० २५	०० ३४	०० ४२	०० ५०	०० ५९	०१ ०८	०१ १६	०१ २४	०१ ३३	०१ ४२	०१ ५१	०२ ००	०२ ०८	०२ १८	०२ २७	०२ ३६	०२ ४५	०२ ५५
०३	०० १३	०० २५	०० ३८	०० ५०	०१ ०३	०१ १६	०१ २८	०१ ४१	०१ ५४	०२ ०७	०२ २०	०२ ३३	०२ ४६	०३ ००	०३ १३	०३ २६	०३ ४०	०३ ५४	०४ ०८	०४ २२
०४	०० १७	०० ३४	०० ५०	०१ ०७	०१ २४	०१ ४१	०१ ५८	०२ १५	०२ ३२	०२ ५०	०३ ०७	०३ २४	०३ ४२	०४ ००	०४ १८	०४ ३६	०४ ५४	०५ १२	०५ ३१	०५ ५०
०५	०० २१	०० ४२	०१ ०३	०१ २४	०१ ४५	०२ ०७	०२ २८	०२ ४९	०३ १०	०३ ३२	०३ ५४	०४ १६	०४ ३८	०५ ००	०५ २२	०५ ४५	०६ ०८	०६ ३१	०६ ५४	०७ १८
०६	०० २५	०० ५०	०१ १६	०१ ४१	०२ ०६	०२ ३२	०२ ५८	०३ २३	०३ ४९	०४ १४	०४ ४१	०५ ०७	०५ ३४	०६ ००	०६ २७	०६ ५४	०७ २२	०७ ५०	०८ १८	०८ ४६
०७	०० ३०	०० ५९	०१ २८	०१ ५८	०२ २८	०२ ५८	०३ २७	०३ ५७	०४ २७	०४ ५८	०५ २८	०५ ५९	०६ ३०	०७ ०१	०७ ३२	०८ ०४	०८ ३६	०९ ०९	०९ ४२	१० १५
०८	०० ३४	०१ ०८	०१ ४१	०२ १५	०२ ४९	०३ २३	०३ ५७	०४ ३२	०५ ०६	०५ ४१	०५ १६	०६ ५१	०७ २७	०८ ०२	०८ ३८	०९ १४	०९ ५१	१० २८	११ ०६	११ ४४
०९	०० ३८	०१ १६	०१ ५४	०२ ३२	०३ १०	०३ ४९	०४ २७	०५ ०६	०५ ४५	०६ २४	०७ ०३	०७ ४३	०८ २३	०९ ०३	०९ ४४	१० २५	११ ०६	११ ४८	१२ ३०	१३ १३
१०	०० ४२	०१ २४	०२ ०७	०२ ५०	०३ ३२	०४ १४	०४ ५८	०५ ४१	०६ २४	०७ ०८	०७ ५१	०८ ३६	०९ २०	१० ०५	१० ५०	११ ३६	१२ २२	१३ ०८	१३ ५५	१४ ४३
११	०० ४६	०१ ३३	०२ २०	०३ ०७	०३ ५४	०४ ४१	०५ २८	०६ १६	०७ ०३	०७ ५१	०८ ४०	०९ २८	१० १७	११ ०७	११ ५६	१२ ४७	१३ ३८	१४ ३०	१५ २१	१६ १४
१२	०० ५१	०१ ४२	०२ ३३	०३ २४	०४ १६	०५ ०७	०५ ५९	०६ ५१	०७ ४३	०८ ३६	०९ २८	१० २१	११ १५	१२ ०९	१३ ०४	१३ ५८	१४ ५४	१५ ५०	१६ ४६	१७ ४५
१३	०० ५५	०१ ५१	०२ ४६	०३ ४२	०४ ३८	०५ ३४	०६ ३०	०७ २६	०८ २३	०९ २०	१० १७	११ १५	१२ १३	१३ १२	१४ ११	१५ ११	१६ १२	१७ १२	१८ १४	१९ १८
१४	०१ ००	०२ ००	०३ ००	०४ ००	०५ ००	०६ ००	०७ ०१	०८ ०२	०९ ०३	१० ०५	११ ०७	१२ ०९	१३ १२	१४ १५	१५ १९	१६ २४	१७ २९	१८ ३५	१९ ४१	२० ५०
१५	०१ ०४	०२ ०८	०३ १३	०४ १८	०५ २२	०६ २७	०७ ३२	०८ ३८	०९ ४४	१० ५०	११ ५६	१३ ०४	१४ ११	१५ १९	१६ २८	१७ ३८	१८ ४८	१९ ५९	२१ १०	२२ २३
१६	०१ ०९	०२ १७	०३ २६	०४ ३६	०५ ४४	०६ ५४	०८ ०४	०९ १४	१० २४	११ ३६	१२ ४७	१३ ५८	१५ ११	१६ २३	१७ ३८	१८ ५२	२० ०७	२१ २३	२२ ३९	२३ ५५
१७	०१ १३	०२ २६	०३ ४०	०४ ५४	०६ ०७	०७ २२	०८ ३६	०९ ५१	११ ०६	१२ २२	१३ ३८	१४ ५४	१६ १२	१७ २९	१८ ४७	२० ०७	२१ २७	२२ ४८	२४ ०९	२५ ३०
१८	०१ १८	०२ ३६	०३ ५४	०५ १२	०६ ३०	०७ ४९	०९ ०९	१० २८	११ ४८	१३ ०८	१४ २९	१५ ५०	१७ १४	१८ ३४	१९ ५८	२१ २३	२२ ४८	२४ १४	२५ ४१	२७ ०८
१९	०१ २२	०२ ४५	०४ ०८	०५ ३१	०६ ५४	०८ १८	०९ ४२	११ ०६	१२ ३०	१३ ५५	१५ २१	१६ ४६	१८ १७	१९ ४१	२१ १०	२२ ४०	२४ ११	२५ ४२	२७ १४	२८ ४७
२०	०१ २७	०२ ५५	०४ २२	०५ ४०	०७ १८	०८ ४०	१० १५	११ ४४	१३ १३	१४ ४३	१६ १४	१७ ४५	१९ २०	२० ४७	२२ २२	२३ ५८	२५ ३४	२७ ०८	२८ ४८	३० २७
२१	०१ ३२	०३ ०४	०४ ३७	०६ ०९	०७ ४२	०९ १५	१० ४८	१२ २२	१३ ५६	१५ ३२	१७ ०७	१८ ४३	२० २४	२१ ५७	२३ ३६	२५ १६	२६ ५७	२८ ३७	३० २४	३२ ०९
२२	०१ ३७	०३ १४	०४ ५१	०६ २८	०८ ०६	०९ ४४	११ २१	१३ ०१	१४ ४०	१६ २०	१८ ०१	१९ ४२	२१ ३०	२३ ०८	२४ ५२	२६ ३७	२८ २३	३० १०	३१ ५९	३३ ५०
२३	०१ ४२	०३ २४	०५ ०६	०६ ४८	०८ ३१	१० १४	११ ५३	१३ ४१	१५ २४	१७ १०	१८ ५६	२० ४२	२२ ३७	२४ १८	२६ ०७	२७ ५८	२९ ५०	३१ ४२	३३ ३७	३५ ३३
२४	०१ ४७	०३ ३४	०५ २०	०७ ०८	०८ ५६	१० ४४	१२ २६	१४ २१	१६ १०	१८ ००	१९ ५२	२१ ४३	२३ ४६	२५ ३०	२७ २४	२९ २०	३१ १९	३३ २०	३५ १६	३७ १८

क्रान्त्यंशाः \ अक्षांशाः	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०१	०१ ३२	०१ ३७	०१ ४२	०१ ४७	०१ ५२	०१ ५७	०२ ०२	०२ ०७	०२ १३	०२ १८	०२ २४	०२ ३०	०२ ३६	०२ ४२	०२ ४८	०२ ५४	०३ ०१	०३ ०८	०३ १४	०३ २१
०२	०३ ०४	०३ १४	०३ २४	०३ ३४	०३ ४४	०३ ५४	०४ ०५	०४ १५	०४ २६	०४ ३७	०४ ४८	०५ ००	०५ १२	०५ २४	०५ ३६	०५ ४९	०६ ०२	०६ १५	०६ २८	०६ ४३
०३	०४ ३७	०४ ५१	०५ ०६	०५ २१	०५ ३६	०५ ५२	०६ ०७	०६ २३	०६ ४०	०६ ५६	०७ १३	०७ ३०	०७ ४८	०८ ०६	०८ २५	०८ ४४	०९ ०३	०९ २३	०९ ४४	१० ०५
०४	०६ ०९	०६ २८	०६ ४८	०७ ०८	०७ २८	०७ ४९	०८ १०	०८ ३१	०८ ५३	०९ १५	०९ ३८	१० ०१	१० २४	१० ४९	११ १४	११ ३९	१२ ०५	१२ ३२	१२ ५९	१३ २७
०५	०७ ४२	०८ ०६	०८ ३१	०८ ५६	०९ २१	०९ ४७	१० १३	१० ४०	११ ०७	११ ३५	१२ ०३	१२ ३२	१३ ०१	१३ ३२	१४ ०३	१४ ३४	१५ ०७	१५ ४१	१६ १५	१६ ५०
०६	०९ १५	०९ ४४	१० १४	१० ४४	११ १४	११ ४५	१२ १७	१२ ४९	१३ २१	१३ ५५	१४ २९	१५ ०४	१५ ३९	१६ १२	१६ ५३	१७ ३१	१८ १०	१८ ५०	१९ ३०	२० १०
०७	१० ४८	११ २३	११ ५७	१२ ३२	१३ ०८	१३ ४३	१४ २१	१४ ५८	१५ ३६	१६ १६	१६ ५६	१७ ३६	१८ १८	१९ ००	१९ ४४	२० २८	२१ १३	२२ ०१	२२ ५२	२३ ३९
०८	१२ २२	१३ ०१	१३ ४१	१४ २१	१५ ०२	१५ ४३	१६ २६	१७ ०८	१७ ५२	१८ ३७	१९ २२	२० ०९	२० ५७	२१ ४६	२२ ३५	२३ २६	२४ १९	२५ १३	२६ ०८	२७ ०५
०९	१३ ५८	१४ ४०	१५ २५	१६ १०	१६ ५६	१७ ४३	१८ ३१	१९ १९	२० ०९	२० ५९	२१ ५०	२२ ४३	२३ ३८	२४ ३१	२५ २८	२६ २६	२७ २५	२८ २६	२९ २८	३० ३३
१०	१५ ३२	१६ २०	१७ १०	१८ ००	१८ ५२	१९ ४४	२० ३७	२१ ३१	२२ २६	२३ २२	२४ २०	२५ १८	२६ १८	२७ १९	२८ २१	२९ २७	३० ३२	३१ ४०	३२ ५०	३४ ०२
११	१७ ०७	१८ ०१	१८ ५६	१९ ५२	२० ४८	२१ ४६	२२ ४४	२३ ४४	२४ ४४	२५ ४६	२६ ५०	२७ ५४	२९ ००	३० ०८	३१ १७	३२ २८	३३ ४६	३४ ५६	३६ १४	३७ ३३
१२	१८ ४३	१९ ४२	२० ४२	२१ ४३	२२ ४५	२३ ४८	२४ ५२	२५ ५७	२७ ०४	२८ १२	२९ २२	३० ३२	३१ ४४	३२ ५८	३४ १३	३५ ३२	३६ ५२	३८ १४	३९ ३९	४१ ०६
१३	२० २०	२१ २४	२२ ३०	२३ ३६	२४ ४३	२५ ५२	२७ ०१	२८ १२	२९ २४	३० ३८	३१ ५४	३३ ११	३४ ३०	३५ ५०	३७ १३	३८ ३८	४० ००	४१ ३४	४३ ०५	४४ ४१
१४	२१ ५८	२३ ०८	२४ १८	२५ ३०	२६ ४२	२७ ५६	२९ १२	३० २८	३१ ४६	३३ ०५	३४ २८	३५ ५२	३७ १६	३८ ४४	४० १३	४१ ४६	४३ १९	४४ ५५	४६ ३६	४८ १८
१५	२३ ३६	२४ ५२	२६ ०७	२७ २४	२८ ४३	३० ०२	३१ २३	३२ ४६	३४ १०	३५ ३४	३७ ०४	३८ ३३	४० ०५	४१ ३९	४३ १५	४४ ५४	४६ ३६	४८ २०	५० ०८	५१ ५८
१६	२५ १६	२६ ३७	२७ ५८	२९ २०	३० ४४	३२ ०९	३३ ३६	३५ ०४	३६ ३५	३८ ०७	३९ ४१	४१ १७	४२ ५६	४४ ३६	४६ २०	४८ ०६	४९ ५५	५१ ४६	५३ ४२	५५ ४१
१७	२६ ५६	२८ २३	२९ ४९	३१ ११	३२ ४७	३४ १८	३५ ५०	३७ २५	३९ ०१	४० ४०	४२ २०	४४ ०३	४५ ४९	४७ ३६	४९ २७	५१ २०	५३ १७	५५ १७	५७ २०	५९ २८
१८	२८ ३७	३० १०	३१ ४२	३३ २०	३४ ५१	३६ २८	३८ ०७	३९ ४९	४१ ३०	४३ १५	४५ ०५	४६ ५२	४८ ४४	५० ३८	५२ ३६	५४ ३७	५६ ४१	५८ ४९	६१ ०१	६३ १७
१९	३० १९	३१ ५८	३३ ३७	३५ २१	३६ ५८	३८ ४०	४० २५	४२ १२	४४ ००	४५ ५२	४७ ४०	४९ ४२	५१ ४१	५३ ४३	५५ ४७	५७ ५७	६० ०९	६२ २५	६४ ४०	६७ १०
२०	३२ ०९	३३ ५०	३५ ३३	३७ २३	३९ ०५	४० ५४	४२ ४५	४४ ३६	४६ ३२	४८ ३१	५० ३२	५२ ३५	५४ ४१	५६ ५९	५९ ००	६१ २०	६३ ४०	६६ ०४	६८ ३४	७१ ०८
२१	३३ ५०	३५ ४१	३७ ३२	३९ २५	४१ १५	४३ १०	४५ ०७	४७ ०२	४९ ०८	५१ ३१	५३ २०	५५ ३१	५७ ४४	६० ०१	६२ २२	६४ ४६	६७ १५	६९ ४८	७२ ३०	७५ २०
२२	३५ ४१	३७ ३५	३९ २७	४१ ३९	४३ २६	४५ २८	४७ ३३	४९ ३०	५१ ४६	५३ ५८	५६ १२	५८ ३०	६० ४९	६३ १५	६५ ४४	६८ १७	७० ५४	७३ ३६	७६ ३०	७९ १६
२३	३७ ३०	३९ ३०	४१ ३५	४३ ३४	४५ ४०	४७ ४८	४९ ५८	५२ ०४	५४ २६	५६ ४६	५९ ०६	६१ ३३	६३ ५४	६६ ३३	६९ १०	७१ ५१	७४ ३७	७७ २८	८० २५	८३ २१
२४	३९ २२	४१ २७	४३ ३५	४५ ४०	४७ ५३	५० १०	५२ २७	५४ ३८	५७ ०९	५९ ३४	६२ ०२	६४ ३७	६७ ०४	६९ ५८	७२ ४०	७५ ३०	७८ २५	८१ २५	८४ ३२	८७ ४५

• अंशादि—क्रान्तिसारिणी • सूर्यक्रान्तिः २१ मार्चतः २२ सितम्बरं यावदुत्तरा ऋणात्मिका (–), २३ सितम्बरतः २० मार्चं यावद्दक्षिणा धनात्मिका (+) भवति।

दिनाङ्क	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
जनवरी	२३ ०२	२२ ५७	२२ ५१	२२ ४५	२२ ३९	२२ ३२	२२ २४	२२ १७	२२ ०९	२२ ००	२१ ५१	२१ ४१	२१ ३१	२१ २१	२१ १०	२० ५९
फरवरी	१७ ११	१६ ५३	१६ ३६	१६ १८	१६ ००	१५ ४२	१५ २३	१५ ०५	१४ ४६	१४ २६	१४ ०७	१३ ४७	१३ २७	१३ ०७	१२ ४६	१२ २६
मार्च	०७ ४१	०७ १८	०६ ५५	०६ ३२	०६ ०९	०५ ४६	०५ २३	०५ ००	०४ ३६	०४ १३	०३ ४९	०३ २६	०३ ०२	०२ ३८	०२ १५	०१ ५१
अप्रील	०४ २६	०४ ४९	०५ १२	०५ ३५	०५ ५८	०६ २१	०६ ४४	०७ ०६	०७ २८	०७ ५१	०८ १३	०८ ३५	०८ ५७	०९ १९	०९ ४०	१० ०२
मई	१५ ००	१५ १८	१५ ३६	१५ ५३	१६ ११	१६ २८	१६ ४४	१७ ०१	१७ १७	१७ ३३	१७ ४९	१८ ०४	१८ १९	१८ ३४	१८ ४८	१९ ०२
जून	२२ ०१	२२ ०९	२२ १७	२२ २४	२२ ३१	२२ ३८	२२ ४४	२२ ४९	२२ ५५	२३ ००	२३ ०४	२३ ०८	२३ १२	२३ १५	२३ १८	२३ २०
जुलाई	२३ ०८	२३ ०४	२२ ५९	२२ ५४	२२ ४९	२२ ४३	२२ ३७	२२ ३१	२२ २४	२२ १६	२२ ०९	२२ ०१	२१ ५२	२१ ४३	२१ ३४	२१ २५
अगस्त	१८ ०५	१७ ५०	१७ ३५	१७ १९	१७ ०३	१६ ४७	१६ ३०	१६ १३	१५ ५६	१५ ३९	१५ २१	१५ ०३	१४ ४५	१४ २७	१४ ०८	१३ ४०
सितम्बर	०८ २३	०८ ०१	०७ ३९	०७ १७	०६ ५५	०६ ३३	०६ १०	०५ ४८	०५ २५	०५ ०२	०४ ४०	०४ १७	०३ ५४	०३ ३१	०३ ०८	०२ ४५
अक्टूबर	०३ ०५	०३ २८	०३ ५१	०४ १४	०४ ३८	०५ ०१	०५ २४	०५ ४७	०६ ०९	०६ ३२	०६ ५५	०७ १८	०७ ४०	०८ ०३	०८ २५	०८ ४७
नवम्बर	१४ २०	१४ ४०	१४ ५९	१५ १७	१५ ३६	१५ ५४	१६ १२	१६ २९	१६ ४७	१७ ०४	१७ २१	१७ ३७	१७ ५०	१८ ०९	१८ २५	१८ ४०
दिसम्बर	२१ ४६	२१ ५५	२२ ०४	२२ १२	२२ २०	२२ २८	२२ ३५	२२ ४१	२२ ४८	२२ ५३	२२ ५९	२३ ०४	२३ ०८	२३ १२	२३ १५	२३ १८

दिनाङ्क	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी	२० ४८	२० ३६	२० २४	२० ११	१९ ५८	१९ ४४	१९ ३०	१९ १६	१९ ०२	१८ ४७	१८ ३२	१८ १६	१८ ००	१७ ४४	१७ २७
फरवरी	१२ ०५	११ ४४	११ २२	११ ०१	१० ३९	१० १८	०९ ५६	०९ ३४	०९ ११	०८ ४९	०८ २७	०८ ०४	०७ ५२	•	•
मार्च	०१ २७	०१ ०४	०० ४१	०० १६	०० ०८	०० ३१	०० ५५	०१ १९	०१ ४२	०२ ०६	०२ २९	०२ ५३	०३ १६	०३ ४०	०४ ०३
अप्रील	१० २३	१० ४४	११ ०५	११ २५	११ ४६	१२ ०६	१२ २६	१२ ४६	१३ ०६	१३ २६	१३ ४५	१४ ०४	१४ २३	१४ ४१	•
मई	१९ १६	१९ २९	१९ ४३	१९ ५५	२० ०८	२० २०	२० ३२	२० ४३	२० ५४	२१ ०५	२१ १५	२१ २५	२१ ३५	२१ ४४	२१ ५३
जून	२३ २२	२३ २४	२३ २५	२३ २६	२३ २७	२३ २७	२३ २६	२३ २५	२३ २४	२३ २२	२३ २०	२३ १८	२३ १५	२३ ११	•
जुलाई	२१ १५	२१ ०५	२० ५४	२० ४३	२० ३२	२० २०	२० ०८	१९ ५६	१९ ४३	१९ ३०	१९ १७	१९ ०३	१८ ४९	१८ ३५	१८ २०
अगस्त	१३ ३१	१३ ११	१२ ५२	१२ ३२	१२ १३	११ ५३	११ ३२	११ १२	१० ५१	१० ३१	१० १०	०९ ४९	०९ २७	०९ ०६	०८ ४५
सितम्बर	०२ २२	०१ ५९	०१ ३५	०१ १२	०० ४९	०० २५	०० ०२	०० २१	०० ४५	०१ ०८	०१ ३१	०१ ५५	०२ १८	०२ ४१	•
अक्टूबर	०९ ०९	०९ ३१	०९ ५३	१० १४	१० ३६	१० ५७	११ १८	११ ३९	१२ ००	१२ २१	१२ ४१	१३ ०२	१३ २२	१३ ४१	१४ ०१
नवम्बर	१८ ५५	१९ १०	१९ २४	१९ ३८	१९ ५१	२० ०४	२० १७	२० ३०	२० ४२	२० ५३	२१ ०५	२१ १५	२१ २६	२१ ३६	•
दिसम्बर	२३ २१	२३ २३	२३ २५	२३ २६	२३ २६	२३ २७	२३ २६	२३ २६	२३ २४	२३ २३	२३ २१	२३ १८	२३ १५	२३ ११	२३ ०७

• दिनार्द्धसाधनतालिका •

उत्तरा क्रान्ति		दक्षिणा क्रान्ति	
उत्तर अक्षांश	दक्षिण अक्षांश	उत्तर अक्षांश	दक्षिण अक्षांश
दिनार्द्धघण्टादि	दिनार्द्धघण्टादि	दिनार्द्धघण्टादि	दिनार्द्धघण्टादि
६।००+चरमिनट	६।००–चरमिनट	६।००–चरमिनट	६।००+चरमिनट

क्रान्ति—नाड़ीवृत्त एवं क्रान्तिवृत्त के दक्षिण या उत्तर अन्तर को क्रान्ति कहते हैं। अंशादि क्रान्तिसारिणी के वामभाग में अङ्ग्रेजी महीनों के नाम तथा ऊपर दिनाङ्क है। जिस दिन की क्रान्ति जाननी हो उस दिन के दिनाङ्क एवं मास के सामने वाले कोष्ठक में देखें। सूर्यक्रान्ति २१ मार्च से २२ सितम्बर तक उत्तरा (ऋण) तथा २३ सितम्बर से २० मार्च तक दक्षिणा (धन) होती है।

अक्षांश—उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुवस्थान से ९० अंश के अन्तर पर निरक्षदेश है। निरक्षदेश से जो जितना उत्तर रहता है उसका उतना उत्तर अक्षांश तथा जो जितना दक्षिण रहता है उसका उतना दक्षिण अक्षांश होता है। सरल शब्दों में यह कहा जा सकता है कि भूमध्य रेखा से जो जितना उत्तर रहता है उसका उतना उत्तर अक्षांश तथा जो जितना दक्षिण रहता है उसका उतना दक्षिण अक्षांश होता है। यह मान अपने क्षितिज तथा ध्रुवस्थान के अन्तर तुल्य होता है।

देशान्तर—देशान्तर का अर्थ है दो देशों (स्थानों) का अन्तर। यह दो प्रकार का होता है—पूर्वापर एवं दक्षिणोत्तर। पूर्वापर देशान्तर का ज्ञान रेखांशों के अन्तर से किया जाता है तथा दक्षिणोत्तर देशान्तर का ज्ञान अक्षांश द्वारा होता है। **दक्षिणोत्तर देशान्तर (चर)** के साधन हेतु अक्षांश एवं चरसारिणी की आवश्यकता होती है। मिनटसेकेण्डरूप चरसारिणी के वामभाग में १ से २४ अंश तक क्रान्त्यंश तथा ऊपर में १ से ४० अंश तक अक्षांश दिया गया है।

विश्वविद्यालय—पञ्चाङ्गम् के द्वारा अन्य स्थानों के तिथ्यादि एवं सूर्योदयास्तादि साधन की विधि—दिनाङ्क १५–०८–२०२० ई. को **देवघर** में तिथ्यादि एवं सूर्योदयास्तादि साधन हेतु चरमिनट का साधन करना है। देवघर का अक्षांश २४ अंश २८ कला उत्तर एवं देशान्तर ८६ अंश ५५ कला पूर्व है। अंशादिक्रान्तिसारिणी में उस दिन की सूर्यक्रान्ति १४ अंश ०८ कला उत्तरा ऋणात्मिका है। सारिणी में २४ अंश अक्षांश तथा १४ अंश क्रान्ति सम्बन्धी चर २५ मिनट ३० सेकेण्ड है, किन्तु २८ कला अक्षांश तथा ०८ कला क्रान्ति सम्बन्धी चरमिनट नहीं दिया गया है। अतएव अक्षांश एवं क्रान्ति की कलाओं से सम्बद्ध चरमिनट हेतु अनुपात के द्वारा इसका साधन करना चाहिए जो निम्नलिखित है –

२४ अक्षांश एवम् १५ क्रान्त्यंश का चरमिनटादि = २७ मिनट २४ सेकेण्ड
२४ अक्षांश एवम् १४ क्रान्त्यंश का चरमिनटादि = २५ मिनट ३० सेकेण्ड
अन्तर चरमिनटादि = ०१ मिनट ५४ सेकेण्ड = ११४ सेकेण्ड।

यहाँ १५ तथा १४ क्रान्ति के मध्य १ अंश क्रान्ति अथवा ६० कला का अन्तर है जिसका चरमिनटान्तर ११४ सेकेण्ड प्राप्त हुआ है। अतएव ०८ कला क्रान्ति सम्बन्धी चरमिनट साधन हेतु अनुपात करते हैं–

०१ अंश अथवा ६० कला का चरमिनटान्तर = ११४ सेकेण्ड

अतएव ०१ कला का चरमिनटान्तर = ११४ सेकेण्ड ÷ ६०

अत: ०८ कला का चरमिनटान्तर = ११४ सेकेण्ड X ०८ ÷ ६० = ९१२ ÷ ६० = १५ सेकेण्ड १२ प्रतिसेकेण्ड = १५सेकेण्ड **(अ)**

२४ अक्षांश एवम् १४ क्रान्त्यंश का चरमिनटादि = २५ मिनट ३० सेकेण्ड

(अ) अनुपात से प्राप्त फल = + १५ सेकेण्ड

अतएव २४ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटादि = २५ मिनट ४५ सेकेण्ड **(ब)**

२५ अक्षांश एवम् १५ क्रान्त्यंश का चरमिनटादि = २८ मिनट ४३ सेकेण्ड

२५ अक्षांश एवम् १४ क्रान्त्यंश का चरमिनटादि = २६ मिनट ४२ सेकेण्ड

अन्तर चरमिनटादि = ०२ मिनट ०१ सेकेण्ड = १२१ सेकेण्ड

यहाँ १५ तथा १४ क्रान्ति के मध्य १ अंश क्रान्ति अथवा ६० कला का अन्तर है जिसका चरमिनटान्तर १२१ सेकेण्ड प्राप्त हुआ है। अतएव ०८ कला क्रान्ति सम्बन्धी चरमिनट साधन हेतु अनुपात करते हैं–

०१ अंश अथवा ६० कला का चरमिनटान्तर = १२१ सेकेण्ड

अतएव ०१ कला का चरमिनटान्तर = १२१ सेकेण्ड ÷ ६०

अत: ०८ कला का चरमिनटान्तर = १२१ सेकेण्ड X ०८ ÷ ६० = ९६८ ÷ ६० = १६ सेकेण्ड ०८ प्रतिसेकेण्ड = १६ सेकेण्ड **(स)**

२५ अक्षांश एवम् १४ क्रान्त्यंश का चरमिनटादि = २६ मिनट ४२ सेकेण्ड

(स) अनुपात से प्राप्त फल = + १६ सेकेण्ड

अतएव २५ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटादि = २६ मिनट ५८ सेकेण्ड **(द)**

२५ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटादि = २६ मिनट ५८ सेकेण्ड

२४ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटादि = २५ मिनट ४५ सेकेण्ड

अन्तर चरमिनटादि = ०१ मिनट १३ सेकेण्ड = ७३ सेकेण्ड

यहाँ २५ तथा २४ अक्षांश के बीच १ अक्षांश अथवा ६० कला का अन्तर है जिसका चरमिनटान्तर ७३ सेकेण्ड प्राप्त हुआ है। अत: २८ कला अक्षांश सम्बन्धी चरमिनट साधन हेतु अनुपात करते हैं–

०१ अंश अथवा ६० कला का चरमिनटान्तर = ७३ सेकेण्ड

अतएव ०१ कला का चरमिनटान्तर = ७३ सेकेण्ड ÷ ६०

अत: २८ कला का चरमिनटान्तर = ७३ सेकेण्ड X २८ ÷ ६० = २०४४÷६० = ३४ सेकेण्ड ०४ प्रतिसेकेण्ड = ३४ सेकेण्ड **(य)**

२४ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटादि = २५ मिनट ४५ सेकेण्ड

(य) अनुपात से प्राप्त फल = + ३४ सेकेण्ड

अत: २४ अंश २८ कला अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला उत्तरा क्रान्ति का चरमिनट = २६ मिनट १९ सेकेण्ड = २६ मिनट। अब **दिनार्द्धसाधनतालिका** द्वारा दिनमान साधन करते हैं– ०६।०० + ००।२६ = ०६।२६ दिनार्द्धघण्टादि। इसे ढाई से गुणा करने पर १६।०५ दण्डादि दिनार्द्धमान हुआ। इसे द्विगुणित करने पर **३२।१० दण्डादि दिनमान देवघर** का हुआ। इसे ६०।०० दण्ड में घटाने पर **२७।५० दण्डादि रात्रिमान देवघर** का हुआ। दिनमान + रात्र्यर्द्धमान = **मिश्रमान** = ३२।१० + १३।५५ = ४६।०५ **मिश्रमान देवघर** का हुआ। **अभीष्ट स्थान का सूर्योदयास्त साधन**–दिनमान में ५ से भाग देने पर सूर्यास्त होता है। सूर्यास्त को १२।०० घण्टे में घटाने पर सूर्योदय का मान होता है। **यथा**– ३२।१०÷५ = ०६।२६ घण्टादि **सूर्यास्त** एवं १२।००–०६।२६ = ०५।३४ घण्टादि **सूर्योदय देवघर** का हुआ।

अभीष्टस्थान का तिथ्यादिसाधन–जिस स्थान का पञ्चाङ्ग उपलब्ध हो उस पञ्चाङ्ग में दिए गए तिथ्यादि के दण्डादि मानों में **स्पष्टदेशान्तर** का संस्कार (धन या ऋण) करें। **स्पष्टदेशान्तर**–देशान्तर दो प्रकार के होते हैं–पूर्वापर तथा दक्षिणोत्तर। **पूर्वापर** रेखांशों के अन्तर से ज्ञात होता है। इस हेतु पञ्चाङ्ग के रेखांश तथा अभीष्टस्थान के पूर्वापर रेखांशों का अन्तर कर उसे ४ से गुणा करने पर मिनटादि फल आता है। पूर्वदिशा में इस फल का धन तथा पश्चिमदिशा में ऋण संस्कार किया जाता है। **दक्षिणोत्तर** अन्तर का साधन चर द्वारा किया जाता है। इसके साधन का प्रकार पूर्वोक्त उदाहरण द्वारा स्पष्ट रूप से कहा जा चुका है। यहाँ अभीष्टस्थान तथा जिस स्थान का पञ्चाङ्ग हो, उसका चर लाकर दोनों का अन्तर करने से चरान्तर होगा। इसके धन–ऋण संस्कार करने का नियम निम्नलिखित है–

१. जिस स्थान का पञ्चाङ्ग हो वहाँ के अक्षांश से अभीष्टस्थान का अक्षांश अधिक हो तथा उत्तरा क्रान्ति हो तो चरान्तर धन होगा अन्यथा ऋण होगा।

२. जिस स्थान का पञ्चाङ्ग हो वहाँ के अक्षांश से अभीष्टस्थान का अक्षांश कम हो तथा दक्षिणा क्रान्ति हो तो चरान्तर धन होगा अन्यथा ऋण होगा।

पूर्वापर देशान्तर तथा चरान्तर दोनों धन या ऋण हो तो योग करने पर धन या ऋण **स्पष्टदेशान्तर** होगा। यदि एक धन तथा अन्य ऋण हो तो दोनों का अन्तर करें। यदि धनमान अधिक हो तो स्पष्ट संस्कार धन तथा यदि ऋणमान अधिक हो तो स्पष्ट संस्कार ऋण होगा। यही **स्पष्टदेशान्तर संस्कार** है। **उदाहरण**–दिनाङ्क १५–०८–२०२० ई. को **देवघर** के तिथ्यादि का मान साधन करना है। अभीष्ट स्थान देवघर का अक्षांश = २४ अंश २८ कला उत्तर, रेखांश = ८६ अंश ५५ कला पूर्व, उत्तरा क्रान्ति = १४ अंश ०८ कला ऋणात्मिका, पूर्वसाधित चर = २६ मिनट। **विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्गम्** का अक्षांश = २६ अंश ३५ कला उत्तर, रेखांश = ८५ अंश ३० कला पूर्व, उत्तरा क्रान्ति = १४ अंश ०८ कला ऋणात्मिका, पूर्वोक्त विधि से दिनाङ्क १५–०८–२०२० ई. को मिथिला का चर = २९ मिनट। मिथिला से देवघर पूर्व है। अत: रेखांशान्तर = ८६।५५–८५।३० = ०१।२५ को ४ से गुणा करने पर देशान्तर मिनट ०५।४० = **६ मिनट (स्वल्पान्तरात्) धन हुआ**। पूर्वोक्त नियमानुसार मिथिला के अक्षांश से देवघर का अक्षांश कम तथा उत्तरा क्रान्ति है, अतएव चर ऋण होगा। अत: २९–२६ = **३ मिनट चरान्तर ऋण**। यहाँ देशान्तर ६ मिनट धन तथा चरान्तर ३ मिनट ऋण है। अतएव इन दोनों का अन्तर ६–३ = **०३ मिनट स्पष्टदेशान्तर धन** हुआ। इसे ढाई से गुणा करने पर **००।०७ दण्डादि स्पष्टदेशान्तर धन हुआ।** अत: दिनाङ्क १५–०८–२०२० ई. को मिथिला के तिथ्यादि मान में ००।०७ दण्डादि का योग करने पर निम्नलिखित तिथ्यादि मान **देवघर** का होगा–

मिथिला मान दण्डादि		**स्पष्टदेशान्तर दण्डादि**	**देवघर मान दण्डादि**	
एकादशी तिथि	१३।५८	+ ००।०७	१४।०५	एकादशी तिथि
आर्द्रा नक्षत्र	६०।०४	+ ००।०७	६०।११	आर्द्रा नक्षत्र
हर्षण योग	०७।०६	+ ००।०७	०७।१३	हर्षण योग

मिथिला (विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्गम्) से अभीष्ट स्थान का ग्रहस्पष्टीकरण–विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्गम् में मिश्रमान(मध्यरात्रि)कालिक ग्रहस्पष्ट दिया गया है। इन ग्रहों को अभीष्टस्थानीय बनाने के लिए पूर्वोक्त नियमानुसार चर साधन कर अभीष्ट स्थान का दिनमान–मिश्रमान–सूर्योदयास्तादि साधन कर लें। तत: पञ्चाङ्गस्थ मिश्रमान एवम् अभीष्टस्थानीय मिश्रमान के अन्तर से ग्रहगति द्वारा प्राप्त फल को पूर्व में ऋण तथा पश्चिम में धन करने से अभीष्टस्थान का मिश्रमानकालिक ग्रह होगा। **उदाहरण**–दिनाङ्क १५–०८–२०२० ई. को देवघर में मिश्रमानकालिक **सूर्यस्पष्टीकरण**–पूर्ववत् देवघर का चरादि साधन कर दिनमान–मिश्रमान–सूर्योदयास्तादि साधन करें। तत: दोनों स्थानों के मिश्रमानों का अन्तर = ४६।१३–४६।०५ = ००।०८ दण्डादि को सूर्यगति ५७।२८ से गुणा कर ६० से भाग देने पर प्राप्त विकलादि फल ०७।३९ = ०८ (स्वल्पान्तरात्) को पञ्चाङ्गस्थ मिश्रमानकालिक स्पष्टसूर्य ०३।२८।३८।१७ में घटाने पर ०३।२८।३८।०९ देवघर का मिश्रमानकालिक स्पष्टसूर्य हुआ। इसी प्रकार अन्य दिनों के ग्रह भी बनाए जा सकते हैं। तत: **मिश्रमान (निशीथ) कालिक ग्रह से इष्टकालिक ग्रहस्पष्टीकरण (पृष्ठ २)** नियमानुसार अभीष्ट तिथि को मिश्रमानकालिक ग्रह से इष्टकालिक ग्रह साधन किया जा सकता है।

• वेलान्तरसारिणी •

मास	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रील	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
दिनाङ्क	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
०१	–०३	–१४	–१२	–०४	+०३	+०२	–०३	–०६	+००	+१०	+१६	+११
०२	–०४	–१४	–१२	–०४	+०३	+०२	–०४	–०६	+००	+१०	+१६	+११
०३	–०४	–१४	–१२	–०४	+०३	+०२	–०४	–०६	+००	+११	+१६	+११
०४	–०५	–१४	–१२	–०३	+०३	+०२	–०४	–०६	+०१	+११	+१६	+१०
०५	–०५	–१४	–१२	–०३	+०३	+०२	–०४	–०६	+०१	+११	+१६	+१०
०६	–०५	–१४	–१२	–०३	+०३	+०२	–०४	–०६	+०१	+१२	+१६	+०९
०७	–०६	–१४	–११	–०२	+०३	+०१	–०५	–०६	+०२	+१२	+१६	+०९
०८	–०६	–१४	–११	–०२	+०४	+०१	–०५	–०६	+०२	+१२	+१६	+०९
०९	–०७	–१४	–११	–०२	+०४	+०१	–०५	–०६	+०२	+१२	+१६	+०८
१०	–०७	–१४	–११	–०२	+०४	+०१	–०५	–०५	+०३	+१३	+१६	+०८
११	–०८	–१४	–१०	–०१	+०४	+०१	–०५	–०५	+०३	+१३	+१६	+०७
१२	–०८	–१४	–१०	–०१	+०४	+०१	–०५	–०५	+०४	+१३	+१६	+०७
१३	–०८	–१४	–१०	–०१	+०४	+००	–०६	–०५	+०४	+१३	+१६	+०६
१४	–०९	–१४	–१०	–०१	+०४	+००	–०६	–०५	+०४	+१४	+१६	+०६
१५	–०९	–१४	–०९	+००	+०४	–००	–०६	–०५	+०५	+१४	+१६	+०५
१६	–१०	–१४	–०९	+००	+०४	–००	–०६	–०४	+०५	+१४	+१६	+०५
१७	–१०	–१४	–०९	+००	+०४	–०१	–०६	–०४	+०५	+१४	+१५	+०४
१८	–१०	–१४	–०८	+००	+०४	–०१	–०६	–०४	+०५	+१५	+१५	+०४
१९	–१०	–१४	–०८	+०१	+०४	–०१	–०६	–०४	+०६	+१५	+१५	+०३
२०	–११	–१४	–०८	+०१	+०४	–०१	–०६	–०४	+०६	+१५	+१५	+०३
२१	–११	–१४	–०८	+०१	+०४	–०१	–०६	–०३	+०७	+१५	+१४	+०२
२२	–११	–१४	–०७	+०१	+०४	–०२	–०६	–०३	+०७	+१५	+१४	+०२
२३	–१२	–१४	–०७	+०१	+०३	–०२	–०६	–०३	+०७	+१५	+१४	+०१
२४	–१२	–१३	–०७	+०२	+०३	–०२	–०६	–०३	+०८	+१६	+१४	+०१
२५	–१२	–१३	–०६	+०२	+०३	–०२	–०६	–०२	+०८	+१६	+१३	+००
२६	–१२	–१३	–०६	+०२	+०३	–०२	–०६	–०२	+०८	+१६	+१३	+००
२७	–१३	–१३	–०६	+०२	+०३	–०३	–०६	–०२	+०९	+१६	+१३	–०१
२८	–१३	–१३	–०५	+०२	+०३	–०३	–०६	–०२	+०९	+१६	+१२	–०१
२९	–१३	–१२	–०५	+०३	+०३	–०३	–०६	–०१	+०९	+१६	+१२	–०२
३०	–१३	—	–०५	+०३	+०३	–०३	–०६	–०१	+१०	+१६	+१२	–०२
३१	–१३	—	–०५	—	+०३	—	–०६	–०१	—	+१६	—	–०३

विशेष–स्थानीय समय में मानक देशान्तर एवं वेलान्तर के विपरीत संस्कार से प्रामाणिक (मानक) समय होता है।

देशान्तर एवं वेलान्तरसंस्कारप्रकार–सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड (मानक) समय समान है। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह १० या १२ बजते हैं। परन्तु लोकल (स्थानीय) समय प्रत्येक जगह के भिन्न–भिन्न होते हैं। अत: स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार (योग या अन्तर) करना चाहिये। जैसे – १ जनवरी को **देवघर** के स्टैण्डर्ड (मानक) समय में ३ मिनट वेलान्तर ऋण एवम् १८ मिनट मानक देशान्तर धन कर देंगे तो **देवघर (वैद्यनाथधाम)** का लोकल (स्थानीय) समय हो जाएगा।

• अक्षांश–देशान्तरसारिणी •

स्थान	अक्षांश उत्तर	मिथिलादेशान्तर मिनटादि	मानकदेशान्तर मिनटादि
अहल्यास्थान	२६।३३	+ ०१।३०	+ १३।३०
अजमेर	२६।२९	− ४३।२८	− ३१।२८
अमृतसर	३१।३७	− ४२।२०	− ३०।२०
अयोध्या	२६।४९	− १३।१२	− ०१।१२
अररिया	२६।०६	+ ०८।००	+ २०।००
अहमदाबाद	२३।०३	− ५१।२०	− ३९।२०
आगरा	२७।१०	− २९।५६	− १७।५६
आरा	२५।३४	− ०३।२०	+ ०८।४०
आसनसोल	२३।४२	+ ०५।५६	+ १७।५६
इन्दौर	२२।४२	− ३८।४०	− २६।४०
उज्जयिनी	२३।०९	− ३९।०८	− २७।०८
उत्तरकाशी	३०।४४	− २८।१२	− १६।१२
उदयपुर	२४।३५	− ४७।१६	− ३५।१६
औरङ्गाबाद	२४।४५	− ०४।२०	+ ०७।४०
कटक	२०।२६	+ ०१।४४	+ १३।४४
कटिहार	२५।३०	+ ०८।२०	+ २०।२०
काठमाण्डु	२७।४५	− ००।४०	+ ११।२०
कानपुर	२६।२८	− २०।३६	− ०८।३६
काशी	२५।२०	+ १०।००	+ ०२।००
किशनगञ्ज	२६।१०	+ ०९।४४	+ २१।४४
कुरुक्षेत्र	२९।५९	− ३४।४०	− २२।४०
कोटा	२५।१०	− ३८।१२	− २६।३२
कोलकाता	२२।३४	+ ११।३६	+ २३।३६
खगड़िया	२५।१९	+ ०४।१०	+ १६।१०
गया	२४।४९	− ०२।००	+ १०।००
गाजियाबाद	२८।४०	− ३२।१६	− २०।१६
गाजीपुर	२५।३४	− ०७।४०	+ ०४।२०
गिरीडीह	२४।११	+ ०३।२०	+ १५।२०
गुमला	२३।०२	− ०३।२०	+ ०८।४०
गुरुग्राम	२८।२७	− ३३।४४	− २१।४४
गोड्डा	२४।५०	+ ०६।३०	+ १८।३०
गोण्डा	२७।२८	− १३।५६	− ०१।५६
गोपालगञ्ज	२६।२८	− ०४।१६	+ ०७।४४

स्थान	अक्षांश उत्तर	मिथिलादेशान्तर मिनटादि	मानकदेशान्तर मिनटादि
गोरखपुर	२६।४५	− ०८।३२	+ ०३।२८
गोहाटी	२६।१०	+ २५।००	+ ३७।००
ग्वालियर	२६।१४	−२९।२०	− १७।२०
घाटशिला	२२।३६	+ ०३।५६	+ १५।५६
चतरा	२४।०२	− ०२।३०	+ ०९।३०
चण्डीगढ़	३०।४५	− ३४।४०	− २२।४०
चायबासा	२२।३३	+ ०१।२४	+ १३।२४
चास	२३।३८	+ ०२।४०	+ १४।४०
चेन्नई	१३।०५	− २०।५०	− ०८।५०
छपरा	२५।४७	− ०३।००	+ ०९।००
जनकपुर	२७।००	+ ०१।४८	+ १३।४८
जबलपुर	२३।१०	− २२।०४	− १०।०४
जमशेदपुर	२२।५०	+ ०२।४०	+ १४।४०
जमालपुर	२५।१९	+ ०४।०८	+ १६।०८
जमुई	२४।५५	+ ०२।५०	+ १४।५०
जयनगर	२६।४०	+ ०२।३६	+ १४।३६
जयपुर	२६।५५	− ३८।३२	− २६।३२
जहानाबाद	२५।००	− ०२।००	+ १०।००
जालन्धर	३१।१९	− ३९।४४	− २७।४४
जोधपुर	२६।२०	− ४९।४८	− ३७।४८
जौनपुर	२५।४६	− ११।०४	+ ००।५६
झरिया	२३।४५	+ ०३।३०	+ १५।३०
झाझा	२४।४६	+ ०३।२०	+ १५।२०
झांसी	२५।२६	− २७।४०	− १५।४०
डाल्टेनगञ्ज	२४।०२	− ०५।३०	+ ०६।३०
डुमराँव	२५।३३	− ०५।१२	+ ०६।४८
डेहरी	२४।५२	− ०५।१६	+ ०६।४४
तिरुपति	१३।४०	− २४।२०	− १२।२०
तिलैया	२४।२०	+ ००।०४	+ १२।०४
दरभङ्गा	२६।१०	+ ०१।४८	+ १३।४८
दाङ	२८।०७	− १२।४८	− ००।४८
दानापुर	२५।४५	− ०२।००	+ १०।००
दार्जिलिङ्ग	२७।०२	+ ११।०४	+ २३।०४

स्थान	अक्षांश उत्तर	मिथिलादेशान्तर मिनटादि	मानकदेशान्तर मिनटादि
दिल्ली	२८।३८	− ३३।००	− २१।००
दुमका	२४।१६	+ ०७।००	+ १९।००
देवघर	२४।२८	+ ०५।४०	+ १७।४०
देवरिया	२६।२३	− ०६।४८	+ ०५।१२
देहरादून	३०।१९	− २९।५२	− १७।५२
धनकूटा	२७।००	+ ०७।२०	+ १९।२०
धनबाद	२३।४७	+ ०४।००	+ १६।००
धरान	२६।४६	+ ०६।३६	+ १८।३६
नवादा	२४।४०	+ ००।००	+ १२।००
नागपुर	२१।१०	− २५।२०	− १३।२०
नालन्दा	२५।०७	− ००।२०	+ ११।४०
पटना	२५।३७	+ ०१।१०	+ १०।५०
पलामू	२३।५२	− ०४।५२	+ ०७।०८
पुरी	१९।४८	+ ०१।२८	+ १३।२८
पूणे	१८।३४	− ४६।२८	− ३४।२८
पूर्णिया	२५।४९	+ ०८।०४	+ २०।०४
पोखरा	२८।१७	− ०६।०८	+ ०५।५२
प्रयाग	२८।२८	− १४।२४	− ०२।२४
फरीदाबाद	२८।२६	− ३२।४४	− २०।४४
फारविसगञ्ज	२६।१८	+ ०७।०४	+ १९।०४
बक्सर	२५।३४	− ०६।००	+ ०६।००
बगहा	२७।०८	− ०५।४०	+ ०६।२०
बद्रीनाथ	३०।४४	− २४।०४	− १२।०४
बलिया	२५।४४	− ०५।२४	+ ०६।३६
बस्ती	२६।४८	− ११।०४	+ ००।५६
बाँका	२४।१५	+ ०४।२०	+ १६।२०
बेगूसराय	२५।२५	+ ०२।३२	+ १४।३२
बेङ्गलुरु	१३।००	− ३१।४०	− १९।४०
बेतिया	२६।४८	− ०३।४८	+ ०८।१२
बोकारो	२३।५०	+ ०२।४०	+ १४।४०
भभुआ	२३।२०	− ०७।५२	+ ०४।०८
भागलपुर	२५।१५	+ ०६।००	+ १८।००
भिलाई	२१।१३	− १६।१६	− ०४।१६

स्थान	अक्षांश उत्तर	मिथिलादेशान्तर मिनटादि	मानकदेशान्तर मिनटादि
भुवनेश्वर	२०।१३	+ ०१।२०	+ १३।२०
भोपाल	२३।१६	− ३२।२४	− २०।२४
मथुरा	२७।३०	− ३१।१६	− १९।१६
मधुपुर	२४।१८	+ ०४।२८	+ १६।२८
मधुबनी	२६।२१	+ ०२।२८	+ १४।२८
मधेपुरा	२५।५७	+ ०५।२४	+ १७।२४
मुक्तिनाथ	२८।५४	− ०६।४५	+ ०५।१५
मुङ्गेर	२५।२३	+ ०४।००	+ १६।००
मुजफ्फरपुर	२६।०७	− ००।१२	+ ११।४८
मुम्बई	१९।००	− ५०।२५	− ३८।२५
मुरी	२३।५०	− ११।४४	+ ००।१६
मेरठ	२९।००	− ३१।१२	− १९।१२
मैसूर	१२।१८	− ३५।३२	− २३।३२
मोकामा	२५।२४	+ ०१।४०	+ १३।४०
मोतिहारी	२६।४०	− ०१।४०	+ १०।२०
मोहनिया	२५।११	− ०७।३२	+ ०४।२८
मोहाली	३०।४३	− ३५।१२	− २३।१२
रक्सौल	२६।५८	− ०२।३६	+ ०९।२४
राउरकेला	२२।१५	− ०२।३२	+ ०९।२८
राँची	२३।२३	− ००।२८	+ ११।३२
राजगीर	२५।००	− ००।२४	+ ११।३६
राजमहल	२५।०३	+ ०९।३२	+ २१।३२
रामगढ़	२३।३८	+ ००।१६	+ १२।१६
रायपुर	२१।१५	+ १५।१६	− ०३।१६
रोसड़ा	२५।४५	+ ०२।०८	+ १४।०८
रोहतक	२८।५४	− ३५।२८	− २३।२८
लखनऊ	२६।५१	− १८।२०	− ०६।२०
लखीसराय	२५।१२	− ०२।२४	+ १४।२४
लालगञ्ज	२६।००	− ००।२८	+ ११।३२
लुधियाना	३०।५५	− ३८।२४	− २६।२४
लोकहा	२६।३३	+ ०३।५२	+ १५।५२
लोहरदग्गा	२३।२६	− ०२।००	+ १०।००
विराटनगर	२६।२८	+ ०७।०४	+ १९।०४

स्थान	अक्षांश उत्तर	मिथिलादेशान्तर मिनटादि	मानकदेशान्तर मिनटादि
विलासपुर	२२।०५	− १३।०८	− ०१।०८
विशाखापत्तन	१७।१२	− ०८।४८	+ ०३।१२
वीरगञ्ज	२७।०८	− ०२।००	+ १०।००
वैष्णवीदेवी	३३।०२	− ४२।१२	− ३०।१२
शिमला	३१।०६	− ३३।२०	− २१।२०
शिलौङ्ग	२५।३६	+ २५।३२	+ ३७।३२
शिवहर	२६।३०	− ००।५०	+ ११।१०
श्रीनगर	३४।०७	− ४२।४०	− ३०।४०
शेखपुरा	२५।०९	+ ०१।३२	+ १३।३२
सतना	२४।३४	− १८।२०	− ०६।२०
समस्तीपुर	२५।५५	+ ०१।२०	+ १३।२०
सरायकेला	२२।४२	+ ०१।५२	+ १३।५२
सहरसा	२५।५५	+ ०४।२०	+ १६।२०
सारनाथ	२५।२४	− ०९।५६	+ ०२।०४
सासाराम	२४।५७	− ०५।४८	+ ०६।१२
साहेबगञ्ज	२५।१३	+ ०८।४०	+ २०।४०
सिन्दरी	२३।३९	+ ०४।००	+ १६।००
सिमरियाधाम	२५।२५	+ ०२।००	+ १४।००
सिलीगुड़ी	२६।४२	+ ११।४४	+ २३।४४
सिवान	२६।०३	− ०३।५२	+ ०८।०८
सिंहभूमि	२२।२४	+ ००।००	+ १२।००
सीतामढ़ी	२६।३५	+ ००।००	+ १२।००
सुगौली	२६।४७	− ०२।४८	+ ०९।१२
सुपौल	२६।०८	+ ०२।५२	+ १६।००
सूरत	२१।१०	− ५०।४०	− ३८।४०
सोनपुर	२५।४२	− ०१।१५	+ १०।४५
हजारीबाग	२४।००	− ००।२०	+ ११।४०
हटिया	२२।०२	+ १०।२०	+ २२।२०
हरद्वार	२९।५८	− २९।०८	− १७।०८
हाजीपुर	२५।४३	− ०१।०४	+ १०।५६
हावड़ा	२२।३६	+ ११।१६	+ २३।१६
हैदराबाद	१७।२२	− २८।००	− १६।००
होशियारपुर	३१।३२	− ३८।१२	− २६।१२

• पलभासारिणी •

अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा
०१	००।१२।३४	११	०२।१९।५५	२१	०४।३६।२२	३१	०७।१२।३६	४१	१०।२५।५३	५१	१४।४९।०८
०२	००।२५।०९	१२	०२।३३।००	२२	०४।५०।५३	३२	०७।२९।५३	४२	१०।४८।१८	५२	१५।२१।३२
०३	००।३७।४४	१३	०२।४६।१२	२३	०५।०५।३८	३३	०७।४७।३१	४३	११।११।२४	५३	१५।५५।३०
०४	००।५०।२१	१४	०२।५९।२८	२४	०५।२०।३१	३४	०८।०५।३८	४४	११।३५।२४	५४	१६।३१।०१
०५	०१।०३।००	१५	०३।१२।५४	२५	०५।३५।४२	३५	०८।२४।०७	४५	१२।००।००	५५	१७।०८।१४
०६	०१।१५।४०	१६	०३।२६।२४	२६	०५।५१।०७	३६	०८।४३।०५	४६	१२।२५।३७	५६	१७।४७।२८
०७	०१।२८।२३	१७	०३।४०।०५	२७	०६।०६।५०	३७	०९।०२।२५	४७	१२।५२।०४	५७	१८।२८।४४
०८	०१।४१।१०	१८	०३।५३।५६	२८	०६।२२।४८	३८	०९।२२।३०	४८	१३।१९।३४	५८	१९।१२।१३
०९	०१।५४।००	१९	०४।०७।५५	२९	०६।३९।०४	३९	०९।४३।०१	४९	१३।४८।१८	५९	१९।५८।१८
१०	०२।०६।५०	२०	०४।२२।०१	३०	०६।५५।४२	४०	१०।०४।०९	५०	१४।१८।०३	६०	२०।४७।०७

• अक्षांश द्वारा पलभा साधन करने की रीति •

पलांशतश्चेदधिकं कलाद्यं व्यतीतभोग्याक्षप्रभान्तरघ्नम्।
षष्ठ्या हतं तत्फलयुग्गता याऽक्षभा भवेत्साऽभिमता सुखार्थम्।।

अर्थात् गत अक्षांश और ऐष्य अक्षांश सम्बन्धी अङ्गुलादि पलभाओं के अन्तर को अक्षांश सम्बन्धी कलामान से गुणा करना चाहिए। प्राप्त गुणनफल को ६० से भाग देने पर जो लब्धि प्राप्त हो उसको गत अक्षांश सम्बन्धी पलभा में जोड़ देने से अभीष्ट पलभा अङ्गुलादि हो जाती है। इसे सूत्ररूप में इस प्रकार लिखा जा सकता है–

{(ऐष्यपलभामान − गतपलभामान) X अक्षांशकलामान} ÷ ६० = अङ्गुलादि लब्धि।

गत अक्षांशसम्बद्ध पलभामान + अङ्गुलादि लब्धि = अभीष्टस्थानीय पलभामान अङ्गुलादि।

उपर्युक्त पलभासारिणी में १ से लेकर ६० अक्षांशों की पलभा दी गई है। प्रमुख स्थानों के अक्षांशमान "अक्षांश–देशान्तरसारिणी" में दे दिए गए हैं।

उदाहरण–देवघर की पलभा ज्ञात करने के लिए "अक्षांश–देशान्तरसारिणी" में देवघर का उत्तर अक्षांश २४ अंश २८ कला है। पलभासारिणी में २४ अक्षांश का ०५।२०।३१ तथा २५ अक्षांश का ०५।३५।४२ अङ्गुलादि पलभामान है। दोनों का अन्तर (०५।३५।४२) − (०५।२०।३१) = ००।१५।११ हुआ। यहाँ २४ गत अक्षांश तथा २५ ऐष्य अक्षांश के बीच १ अंश अथवा ६० कला का अन्तर है जिसका पलभान्तर ००।१५।११ अङ्गुलादि प्राप्त हुआ है।

अत: २८ कला का मान साधन करने हेतु अनुपात करते है–

१ अंश अथवा ६० कला का पलभान्तर = ००।१५।११ है।

अत: १ कला का पलभान्तर = ००।१५।११ ÷ ६०.

अत: २८ कला का पलभान्तर = (००।१५।११ X २८) ÷ ६० = ००।४२०।३०८ ÷ ६० = ००।०७।०५।०८ = ००।०७।०५ प्राप्त हुआ। इसे २४ अक्षांश के पलभामान में योग करने पर (०५।२०।३१) + (००।०७।०५) = ०५।२७।३६ अङ्गुलात्मिका पलभा **देवघर** की हुई। इसी प्रकार अन्य स्थानों की पलभा का साधन करना चाहिए।

• शरीरान्तकालिकवैतरणीदानम् •

हरिं स्मृत्वा कुशत्रयपुष्पाक्षतजलान्यादाय "ॐ कृष्णगव्यै नमः ३। कुशोपरि ॐ ब्राह्मणाय नमः ३।" ततः "ॐ उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्। दातारं त्रायते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता।। ॐ यमद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी। तां सन्तर्तुं ददाम्येतां कृष्णां वैतरणीं च गाम्।।" इति पठेत्। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय "ओमद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः यमद्वारस्थितवैतरणीनदीसुखसन्तरणकाम इमां गां रुद्रदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे।" ततो ग्रहीता स्वस्तीति वदेत्। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय "ओमद्य कृतैतत्कृष्णगवीदानप्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे।" ततः स्वस्तीत्युक्त्वा ग्रहीता दक्षिणां स्वीकुर्यात्। शूद्र ओमित्यस्य स्थाने नमः पठेत्। गोरभावे एतावद् द्रव्यमूल्यककृष्णगव्यै नमः इति पठेत्। शेषं यथावत्। मातृपक्षे अमुकगोत्राया मातुरमुकदेव्याः इति पठेत्।

• दाहसंस्कारविधिः •

स्नातः शुचिवस्त्रादिधरः पूर्वाभिमुख उपविष्टः कुशहस्तः कर्त्ता नूतनमृद्भाण्डे जलं कृत्वा शवञ्च दक्षिणशिरसं कृत्वा "ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरुक्षेत्रं च गङ्गाञ्च यमुनाञ्च सरिद्वराम्।। कौशिकीं चन्द्रभागाञ्च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा।। धैनवञ्च वराहञ्च तीर्थं पिण्डारकं तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा।।" इत्यनेन तीर्थानि ध्यायन् जले आवाह्य तेन जलेन शवं संस्नाप्य नूतनवस्त्रयज्ञोपवीतपुष्पमाल्यचन्दनादिभिरलङ्कृत्य दारुविरचितचितायां कुशोपरि पुरुषमधोमुखं स्त्रियञ्चोत्तानमुखीमुत्तरशिरसं शाययेत्। ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखो वामपाणिनोल्मुकं गृहीत्वा "ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्।। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् स गच्छतु।।" इति मन्त्रद्वयं पठित्वा शवं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य शिरोदेशे ज्वलदुल्मुकं दद्यात्। ततस्तृणकाष्ठघृतादिकं चितायां निःक्षिप्य कपोतावशेषं दहेत्। ततः प्रादेशमात्रकसप्तकाष्ठिकाभिः सह प्रदक्षिणसप्तकं विधाय कुठारेण उल्मुकोपरि प्रहारसप्तकं विधाय "ॐ क्रव्यादाय नमस्तुभ्यम्" इति पठित्वा एकैकां काष्ठिकां चितायां क्षिपेत्। ततः "ॐ अहरहर्नयमानो गामश्वं पुरुषं पशुम्। वैवस्वतो न तृप्यति सुराभिरिव दुर्मतिः।।" इति यमगाथा गायन्तो बालपुरस्सराः वृद्धपश्चिमाः शवानुगमनकर्त्तारः पादेन पादस्पर्शमकुर्वाणाः जलाशयं गत्वा सकृत् स्नात्वा "ओमद्यामुकगोत्र (पितः) अमुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्" इत्यनेन तिलाञ्जलिं दद्युः। स्त्रियाः पक्षे "ओमद्यामुकगोत्रे (मातः) अमुकप्रेते" इति पठेयुः। ततः पुनः स्नात्वा (कर्त्तुः) प्राङ्गणद्वारं गत्वा तत्र "ॐ लौहवद् दृढकायोस्तु इति लौहम्, ओमश्मेव स्थिरो भूयासम् इत्यश्मानम्, ओमग्निर्नः शर्म यच्छतु इत्यग्निं" स्पृशेयुरत्र प्रत्येकं जलस्पर्शः। ततग्निक्तं (निम्बपत्रम्) प्राश्य गृहं गच्छेयुरिति।

• अशौचव्यवस्था •

ब्राह्मणों को जन्म से षण्मासाभ्यन्तर शरीरान्त होने पर सद्यः शौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपण। सात महीने से लेकर दो वर्ष के अन्दर एकाहोरात्र अशौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपण। तीसरे वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त तीन अहोरात्र अशौच, अग्निसंस्कार, पिण्डोदकक्रिया एवं चौथे दिन ब्राह्मणभोजन। उसके बाद यज्ञोपवीत हुआ हो अथवा नहीं सबों को दशाहाशौच एवं श्राद्ध। **क्षत्रियों** को षण्मासाभ्यन्तर ब्राह्मणवत्। सात मास से लेकर दो वर्ष तक दो रात्रि अशौच एवं भूमिनिक्षेपणमात्र। तीन वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त षडहोरात्र अशौच, अग्निसंस्कार, पिण्डोदकक्रिया। उसके बाद अग्निसंस्कार, द्वादशाहाशौच एवं श्राद्ध। **वैश्यों** को जन्म से षण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत्। उसके बाद दो वर्षों तक भूमिनिक्षेपण एवं तीन दिन अशौच। उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त नौ दिन तक अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदकक्रिया। उसके बाद सम्पूर्ण पञ्चदशाहाशौच, अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध। **शूद्रों** को षण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत्। उसके बाद दो वर्षों तक पाँच दिन अशौच एवं भूमिनिक्षेपण। उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त अविवाहित मृत्यु से पाँच दिन तथा विवाहित मृत्यु से द्वादशाहाशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदकक्रिया। उसके बाद सम्पूर्ण तीस दिन अशौच, अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध।

• कन्यामरणाशौच •

सभी वर्णों को जन्म से दो वर्षों तक सद्यःशौच। उसके बाद विवाहावधि त्र्यहाशौच। विवाह के बाद पितृगृह अथवा पतिगृह में कन्या मृत्यु से माता–पिता को तीन अहोरात्र अशौच एवं पतिगृह में विहित स्वस्ववर्णानुसार अशौच एवं श्राद्ध।

• अशौचसङ्करविचार •

ब्राह्मणों को सम्पूर्णाशौच के बीच में पाँच दिनों तक, क्षत्रियों को छह दिनों तक, वैश्यों को सात दिनों तक एवं शूद्रों को पन्द्रह दिनों तक यदि सजातीय द्वितीयसम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो प्रथमाशौच की शुद्धि के साथ–साथ दोनों की शुद्धि तथा साथ–साथ श्राद्ध होता है। यदि सम्पूर्णाशौच के मध्य ब्राह्मणादि को क्रमशः ६, ७, ८, १६ दिनों से लेकर क्रमशः ९, ११, १४ २९ वें अहोरात्र के बीच में सजातीय द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीयाशौचान्त होने पर दोनों की शुद्धि तथा श्राद्ध साथ–साथ होता है।

यदि क्षौरकर्म के दिन सूर्योदय से ५६ दण्ड रात्रि के अन्दर सजातीयाशौचान्तर प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के तीसरे दिन दोनों का क्षौर तथा चौथे दिन श्राद्ध होता है। यदि क्षौरकर्म के दिन ५६ दण्ड के बाद अग्रिम सूर्योदय से पूर्व तक द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के चौथे दिन दोनों का क्षौर तथा पाँचवें दिन श्राद्ध होता है।

आद्यश्राद्धदिन सूर्योदय से श्राद्धसङ्कल्प के पूर्व तक यदि द्वितीयाशौच प्राप्त हो तो उसकी शुद्धि के बाद दोनों का श्राद्ध होता है। यदि सङ्कल्पानन्तर अशौच प्राप्त हो तो आद्यश्राद्ध हो जाता है परञ्च सपिण्डन, द्वितीय के आद्यश्राद्धदिन होता है। सपिण्डनदिन, सङ्कल्प से पूर्व द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त होने पर द्वितीय के आद्यश्राद्धदिन सपिण्डन होना चाहिए। सम्पूर्णाशौच के मध्य त्रिरात्राशौच तथा मरणाशौच के मध्य जननाशौच की मान्यता नहीं होती है। त्रिरात्राशौच के मध्य द्वितीय त्रिरात्राशौच हो जाए तो द्वितीय त्रिरात्राशौचानुसार दोनों की शुद्धि होती है।

• निवेदनम् •

कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमभिगम्य वै। योजनानि चतुर्विंशत् व्यायामः परिकीर्तितः।। गङ्गाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं वनम्। विस्तारः षोडश प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन।। मिथिला नाम नगरी तत्रास्ते लोकविश्रुता।। (बृहद्विष्णुपुराण, मिथिलामाहात्म्य, अध्याय १४, श्लोक ४२–४४)

गङ्गा वहथि जनिक दक्षिणदिशि पूर्व कौशिकीधारा। पश्चिम वहथि गण्डकी उत्तर हिमवतवन विस्तारा।। कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा वागमती कृतसारा। मध्य वहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा।। (चन्दा झा)

उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर कोशी से गण्डकी (हरिहरक्षेत्रस्थ शालग्रामी या नारायणी) तक, पूरब से पश्चिम तक २४ योजन (९६ कोश) लम्बा एवं गङ्गाप्रवाह से हिमालय वन तक (दक्षिण से उत्तर तक) १६ योजन (६४ कोश) चौड़ा तीरभुक्ति अथवा मिथिलाक्षेत्र कहा गया है। इस आधार पर वर्तमान समय में उत्तर से दक्षिण तक क्रमशः नेपाल के तराई क्षेत्र (दक्षिणीभाग) से मुङ्गेर तक तथा पश्चिम से पूरब तक क्रमशः चम्पारण्य–वैशाली से पूर्णियाँ–भागलपुर तक का क्षेत्र तिरहुत अथवा मिथिलाक्षेत्र है। १८१५–१७ ई. में सुगौली सन्धि के समय विविध राजनीतिक स्थितिवश उक्त तराई क्षेत्र नेपाल के अधीन हो गया। किन्तु आचार–विचार, सभ्यता–संस्कृति की दृष्टि से आज भी सर्वथा साम्य है।

वेद, उपनिषद्, रामायण, भागवत, गीता, पुराण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों एवं विविध भाषा के मानक (ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि) ग्रन्थों में तीरभुक्ति क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण वर्णन मिलता है। प्राचीनकाल से ही यह क्षेत्र विद्या, उपासना एवम् आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में विश्वविख्यात रहा है। यहाँ देवरात, मिथि, निमि, जनक, विशाल, गार्गी, मैत्रेयी, अष्टावक्र, वाल्मीकि, गौतम, कपिल, कणाद, मण्डन–भारती, अयाची, वाचस्पति, उदयन, कालिदास, विद्योत्तमा, श्रीधर, रामदत्त, वीरेश्वर, विद्यापति, महात्मा बुद्ध, भगवान् महावीर, रुद्रधर, तान्त्रिकशिरोमणि मदन उपाध्याय, भक्तशिरोमणि बाबासाहेबराम, सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोस्वामी, नव्यन्यायप्रवर्तक गङ्गेशोपाध्याय, म.म. गोकुलनाथ, महार्घ्य मधुसूदन ओझा, देवीकान्त ठाकुर, गोविन्द ठाकुर, दैवज्ञरत्न गेनालाल चौधरी, डॉ. म.म. सर गङ्गानाथ झा, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र बच्चा झा, म.म. जयदेव मिश्र, म.म. परमेश्वर झा, म.म. बालकृष्ण मिश्र, आचार्य जानकीवल्लभशास्त्री, राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर, गोपाल सिंह नेपाली, रामवृक्ष बेनीपुरी, भिखारी ठाकुर, फणीश्वरनाथ रेणु, वैद्यनाथ मिश्र यात्री–नागार्जुन, सुरेन्द्र झा सुमन आदि अनेक मनीषिगण हो चुके है जिनके कार्यकलापालोक से समस्त विश्व आलोकित हो रहा है।

सिमरियाधाम में क्षीरसागरमन्थन से अमृतप्राप्ति (रुद्रयामलोक्तामृतीकरण, श्लो. ११–४२, १२३–१२८, वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग ४५, यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल ४, श्लो. २–३) वैकुण्ठांशनिर्मित मिथिला (तत्रैव, पटल ३, श्लो. १५–१६) एवं मिथिलायात्रा महापुण्यप्रद तथा वास से मोक्ष (बृहद्विष्णुपुराण–मिथिलामाहात्म्य, अ. १३, श्लो. १७, अ. १६, श्लो. १३८) सुप्रसिद्ध है।

सीतामढी में दुर्भिक्षनिवारणार्थ सम्पन्न यज्ञ के पश्चात् सीरध्वज जनक द्वारा स्वर्णहलप्रवाहावसर पर पुण्यारण्य (पुनौरा) में भूगर्भ से **आदिशक्ति जगज्जननी जानकी** का प्रादुर्भाव (यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, ०१।३६, वाल्मीकिरामायण, ०१।६६।१३–१४), **याज्ञवल्क्य** का ब्रह्मविद्योपदेश (श्रीमद्भागवत, १२।०६।६१–७३ एवं बृहदारण्यकोपनिषद्), **बलराम–श्रीकृष्ण** की मिथिलायात्रा (हरिवंशपर्व, ३९।२३,२८, श्रीमद्भागवत, १०।८६, विष्णुपुराण, ३।५), कर्म की उत्कृष्टता निरूपणावसर पर भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा "कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः" (श्रीमद्भगवद्गीता, ०३।२०), जनकादि का उदाहरण के रूप में उल्लेख तथा पिता (श्रीव्यास) जी की आज्ञा से **शुकदेव** जी द्वारा मिथिलाधिपति जनक से (श्रीमद्देवीभागवत, ०१।१४–१९) गार्हस्थ्य धर्मोपदेश एवम् आत्मज्ञान की प्राप्ति सर्वविदित ही है।

हिमालय के सान्निध्य एवं गङ्गादि विविध नदियों के प्रवाह होने के कारण यहाँ का वातावरण शुद्ध एवं भूमि ऊर्वराशक्ति सम्पन्न है। अतएव यह सम्पूर्ण क्षेत्र जीवनोपयोगी कन्द, मूल, वनस्पति, लता, गुल्म, फूल, फल, औषधि तथा शरद्, हेमन्त एवं ग्रैष्मिक धान्यादि विविध वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। विशेषतः हाजीपुर का केला, मुजफ्फरपुर की शाही लीची, समस्तीपुर का विविध कृषि उत्पादन, चम्पारण का धान, भागलपुर के कतरनी धान का चूड़ा, दरभङ्गा का मालदह आम एवं सकल मिथिलाञ्चल का पान, माँछ तथा मखान प्रसिद्ध है। यहाँ के लोग शालीनता, कर्मठता, आचार–विचार, प्रतिभा एवं मेधाविता के लिए प्रसिद्ध हैं। इस क्षेत्र का मनोरञ्जन, हास्य, गीत–सङ्गीत, कुलग्रामदेवतापूजन, रामलीला, भजन, कीर्त्तन, कथा, प्रवचन, लोरिक, दीनाभद्री, विहुला, राजा सल्हेश, सामाचकेवा, कठपुतली एवं जट–जटिन आदि सुप्रसिद्ध है।

यह सम्पूर्ण क्षेत्र शक्तिपीठ के नाम से विख्यात है। आदिशक्ति सती के योगाग्निदग्ध शरीर के विभिन्नावयवपात से जब इस धराधाम पर ५१ शक्तिपीठ बन गये तो जहाँ उनका तीन बार साक्षात् प्राकट्य हो उस धाम के सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता ही क्या है? यहाँ हरिहरनाथ, सोमेश्वरनाथ, गरीबनाथ, उग्रनाथ (उगना), कपिलेश्वर, सिंहेश्वर, कुशेश्वर, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, हलेश्वर, विदेश्वर, वृद्धेश्वर, क्षीरेश्वर, त्रिपुरसुन्दरी, चण्डी, कात्यायनी, छिन्नमस्तिका, रमेश्वरीश्यामा, काली, कङ्काली, दुर्गा, उग्रतारा, जयमङ्गला, बगला, वनदुर्गा, भुवनेश्वरी, राजराजेश्वरी, अहल्यागौतमस्थान, गिरिजास्थान (फुलहर), जानकीस्थान, जनकपुरधाम आदि शिवशक्तिक्षेत्र सतत प्रेरणास्रोतस्त्वेन इस क्षेत्र में विद्यमान है। यह विश्व में एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जिसमें वैवाहिक सम्बन्ध हेतु अधिकारमूलक जानकारी के लिये पञ्जीप्रबन्ध की व्यवस्था है। यहाँ (मधुबनी) की चित्रकला सर्वत्र विख्यात है। यह भूमि (चम्पारण) महात्मा गाँधी की एवं (मुजफ्फरपुर) जयप्रकाशनारायण की कर्मभूमि रही है। इस तरह हर क्षेत्र में इसका अपना महत्त्वपूर्ण अवदान अतिप्राचीनकाल से ही रहा है।

उक्त शास्त्रीय, सांस्कृतिक एवम् आध्यात्मिक मर्यादा को यथावत् अक्षुण्ण रखने की दृष्टि से महाराजाधिराज डॉ. सर कामेश्वरसिंह जी ने प्राच्य विद्याओं–संस्कृत, पाली, प्राकृत के अध्ययन–अध्यापन हेतु इस संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना १९६१ ई. में, उत्तम पुस्तकालय से सुसज्जित अपना आवास भवन "लक्ष्मीश्वर विलास प्रासाद" दान देकर की। इसी क्रम में शकाब्द १८९९–१९००, सम्वत् २०३५, सन् १३८५–८६ साल, लक्ष्मण सम्वत् ८६९–७०, क्रिस्ताब्द १९७८–७९ से **"विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्गम्"** का निरन्तर प्रकाशन (व्रत–पर्व, यात्रा, वास्तु, विवाहादि संस्कार तथा महापुरुषों के जयन्त्युत्सव आदि यथासमय सम्पादनार्थ) हो रहा है।

• हरद्वार महाकुम्भयोग •

श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण(६।१४।३५), श्रीमद्भागवतमहापुराण(८।२–९), वाल्मीकिरामायण(१।४५), रुद्रयामलोक्तामृतीकरण (श्लोक १२२–१२८) तथा कुम्भपर्वनिर्णय (स्वामी करपात्रीजी) ग्रन्थरत्नों के अनुसार कार्त्तिककृष्णत्रयोदशी–चतुर्दशी को तुलाराशिगत सूर्य–चन्द्र–बृहस्पति योगावसर पर सिमरियाधाम (बिहारप्रान्त के बेगूसराय से नैर्ऋत्यकोण में अवस्थित शाल्मलीवन) में क्षीरसागरमन्थन, अमृतप्राप्ति एवम् अमावास्या को देवताओं द्वारा अमृतपान सिद्ध होता है। वर्त्तमान समय मे सिमरियाधाम के दक्षिणभूभाग में बौंसीक्षेत्र में अवस्थित मन्दारपर्वत, दारुकवन (दुमका के समीप) वासुकीनागराज द्वारा स्थापित वासुकीनाथज्योतिर्लिङ्ग, जनकपुर से लगभग ५० मील उत्तर ठोसेमेगजेन नामक स्थान पर जूटापोखरि नाम से प्रसिद्ध पुष्करिणी के मध्य में विषपानोत्तर नीलकण्ठ शिव का विश्रामस्थल, अहल्यास्थान से पश्चिम ब्रह्मपुर में गौतमकुण्ड तक प्रवाहित क्षीरोदकी(खिरोई)नदी, नेपाल का सागरमाथा जिला एवं दरभङ्गा से ईशानकोण में अवस्थित बलिराजगढ़ प्रमाणस्वरूप विद्यमान हैं। इस प्रसङ्ग में बृहद्विष्णुपुराण के मिथिलामाहात्म्य(१।१७,२।३९,४।१९,९।१३) तथा यामलसारोद्धार के मिथिलाखण्ड (३।१५–१६,६।२९–३४) के आलोक में प्रतिवर्ष तुलार्क(कार्त्तिक)में सिमरियाधाम में कल्पवास का आयोजन, म.म. रुद्रधरीय वर्षकृत्य पूर्वखण्ड के आलोक में प्रतिवर्ष भाद्रशुक्लचतुर्दशी को अनन्तपूजा के अवसर पर गोदुग्धपूर्ण तैजसपात्र में प्रतीकरूप में क्षीरसागरमन्थन कर अनन्तडोरक का अन्वेषण तथा मधुश्रावणीपूजा के अवसर पर क्षीरसागरमन्थनकथा का श्रवण भी इसके प्रमाण हैं। तदनुसार इस वर्ष मेष–वृषसङ्क्रान्तिमध्य **दिनाङ्क १४।०४।२०२१ ई. से १५।०५।२०२१ ई.** तक **हरद्वार** में महाकुम्भयोग का आयोजन होगा। इसमें स्नान दानादि हेतु सम्पूर्णमास महत्त्वपूर्ण होगा किन्तु अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या, पूर्णिमा, अक्षयतृतीया, मेष एवं वृषसङ्क्रान्तिदिन विशेष फलप्रद होंगे।

दूर्वाक्षतदानमन्त्रः

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

यज्ञोपवीतधारणमन्त्रः

वाजसनेयिनाम्—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ **छन्दोगानाम्**—ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि॥ **जीर्णयज्ञोपवीतत्यागमन्त्रः**—एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया। जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्॥

ग्रहाणां यजुर्वेदीय (वाजसनेयि) शान्तिमन्त्राः

सूर्यस्य—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ **चन्द्रस्य**—ॐ इमं देवा असपत्नᳬं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳬं राजा॥ **मङ्गलस्य**—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाᳬं रेताᳬंसि जिन्वति॥ **बुधस्य**—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳬं सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ **बृहस्पतेः**—ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्॥ **शुक्रस्य**—ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳬं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ **शनेः**—ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। संयोरभिस्रवन्तु नः॥ **राहोः**—ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ **केतोः**—ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

ग्रहाणां सामवेदीय (छन्दोग) शान्तिमन्त्राः

सूर्यस्य—ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ **चन्द्रस्य**—ॐ सन्ते पयांसि समयन्तुवाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः। आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व॥ **मङ्गलस्य**— ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति॥ **बुधस्य**—ॐ अग्ने विवश्वदुषसश्चित्रां राध्नो अमर्त्य आदाशुषे। जातवेदो वहात्वमद्या देवो उपर्ब्बुधः॥ **बृहस्पतेः**—ॐ बृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्राँ अपबाधमानः। प्रभञ्जत्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकं मेध्यविता रथानाम्॥ **शुक्रस्य**—ॐ शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया। अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ **शनेः**—ॐ शन्नो देवीरभिष्टये शन्नो भवन्तु पीतये। संयोरभिस्रवन्तु नः॥ **राहोः**—ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ **केतोः**—ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

• विशिष्टपर्वसूची •

मौनापञ्चमी	१० जुलाई	निशापूजा	२३ अक्टूबर	वीडपञ्चमी	०५ दिसम्बर	जूडिशीतल	१५ अप्रील
सोमवत्यमा	२० जुलाई	महाष्टमीव्रत	२४ अक्टूबर	कालभैरवाष्टमी	०७ दिसम्बर	सूर्यषष्ठीव्रत	१८ अप्रील
मधुश्रावणी	२३ जुलाई	महानवमीव्रत	२५ अक्टूबर	सोमवत्यमा	१४ दिसम्बर	रामनवमी	२१ अप्रील
नागपञ्चमी	२५ जुलाई	विजयादशमी	२६ अक्टूबर	विवाहपञ्चमी	१९ दिसम्बर	कुँवरसिंहजयन्ती	२३ अप्रील
शीतलापूजा	२७ जुलाई	कोजागरा	३० अक्टूबर	बबाजीजयन्ती	१९ दिसम्बर	महावीरजयन्ती	२४ अप्रील
संस्कृतदिवस	०३ अगस्त	लक्ष्मीपूजा	३० अक्टूबर	गीताजयन्ती	२५ दिसम्बर	रविव्रतविसर्ग	२५ अप्रील
रक्षाबन्धन	०३ अगस्त	धन्वन्तरिजयन्ती	१२ नवम्बर	हरिहरक्षेत्रस्नान	३० दिसम्बर	सप्ताडोराविसर्ग	२५ अप्रील
कृष्णाष्टमी	१२ अगस्त	अमृतप्राप्ति	१२ नवम्बर	दशतारकारम्भ	११ जनवरी	श्रमिकदिवस	०१ मई
स्वतन्त्रतादिवस	१५ अगस्त	हनुमानजयन्ती	१३ नवम्बर	मकरसङ्क्रान्ति	१४ जनवरी	शिवाजीजयन्ती	१२ मई
कुशोत्पाटन	१९ अगस्त	दीपावली	१४ नवम्बर	दशतारकान्त	२१ जनवरी	अक्षयतृतीया	१४ मई
हरितालिका	२१ अगस्त	लक्ष्मीपूजा	१४ नवम्बर	गणतन्त्रदिवस	२६ जनवरी	परशुरामजयन्ती	१४ मई
चौठचन्द्र	२२ अगस्त	कालीपूजा	१४ नवम्बर	कौशिकीस्नान	२८ जनवरी	शङ्कराचार्यजयन्ती	१७ मई
गणेशपूजा	२२ अगस्त	गोवर्द्धनपूजा	१५ नवम्बर	गणेशावतार	०१ फरवरी	जाह्नवीसप्तमी	१९ मई
सप्तर्षिपूजन	२३ अगस्त	अन्नकूट	१५ नवम्बर	नरकनिवारण १४	१० फरवरी	जानकीनवमीव्रत	२० मई
राधाष्टमी	२६ अगस्त	कालिदासजयन्ती	१६ नवम्बर	मौनी अमावास्या	११ फरवरी	नरसिंहचतुर्दशी	२५ मई
इन्द्रपूजारम्भ	३० अगस्त	भ्रातृद्वितीया	१६ नवम्बर	शिशिरनवरात्रारम्भ	१२ फरवरी	वैशाखीपूर्णिमा	२६ मई
अगस्त्योदय	०१ सितम्बर	चित्रगुप्तपूजा	१६ नवम्बर	सरस्वतीपूजा	१६ फरवरी	कूर्मजयन्ती	२६ मई
अनन्तपूजा	०१ सितम्बर	प्रतिहारषष्ठीव्रत	२० नवम्बर	अचलासप्तमी	१९ फरवरी	बुद्धजयन्ती	२६ मई
अगस्त्यार्घदान	०२ सितम्बर	जगद्धात्रीपूजारम्भ	२१ नवम्बर	माघीपूर्णिमा	२७ फरवरी	अगस्त्यास्त	२९ मई
पितृपक्षारम्भ	०२ सितम्बर	गोपाष्टमी	२२ नवम्बर	रविदासजयन्ती	२७ फरवरी	वटसावित्रीव्रत	१० जून
जितिया	१० सितम्बर	अक्षयनवमी	२३ नवम्बर	महाशिवरात्रि	११ मार्च	पञ्चाग्निव्रत	१३ जून
मातृनवमी	११ सितम्बर	देवोत्थान ११	२५ नवम्बर	सिंहेश्वरमेला	११ मार्च	विन्ध्यवासिनीपूजा	१६ जून
विश्वकर्मापूजा	१७ सितम्बर	विद्यापतिपर्व	२७ नवम्बर	घण्टाकर्णपूजा	१४ मार्च	गङ्गादशहरा	२० जून
पितृपक्षान्त	१७ सितम्बर	कार्त्तिकेयपूजा	२९ नवम्बर	होलिकादाह	२८ मार्च	रामेश्वरदर्शन	२० जून
मलमासारम्भ	१७ सितम्बर	रविव्रतारम्भ	२९ नवम्बर	होली	२९ मार्च	वैवस्वतमन्वादि	२४ जून
मलमासान्त	१६ अक्टूबर	सामापूजा	२९ नवम्बर	सप्ताडोरारम्भ	२९ मार्च	कबीरजयन्ती	२४ जून
कलशस्थापन	१७ अक्टूबर	नवान्नपार्वण	३० नवम्बर	वारुणीयोग	०९ अप्रील	ग्रीष्मनवरात्रारम्भ	११ जुलाई
सिमरियाधाम–	१७ अक्टू.–	कार्त्तिकी १५	३० नवम्बर	सोमवत्यमा	१२ अप्रील	जगन्नाथरथयात्रा	१२ जुलाई
कल्पवास	१६ नवम्बर	हरिहरक्षेत्रस्नान	३० नवम्बर	वसन्तनवरात्रारम्भ	१३ अप्रील	हरिशयन ११	२० जुलाई
विल्वाभिमन्त्रण	२२ अक्टूबर	सोनपुरमेला	३० नवम्बर	मेषसङ्क्रान्ति	१४ अप्रील	चातुर्मास्यव्रतारम्भ	२० जुलाई
पत्रिकाप्रवेश	२३ अक्टूबर	कमलास्नान	३० नवम्बर	नववर्षारम्भ	१४ अप्रील	गुरुपूर्णिमा	२४ जुलाई
		जीवछस्नान	३० नवम्बर	हरद्वार–	१४ अप्रील–		
				कुम्भयोग	१५ मई		

• सौराठससौलासभा •

आषाढकृष्णतृतीयारविवासरतः (दिनाङ्क २७।०६।२०२१ ई.) आषाढकृष्णत्रयोदशीबुधवासर (दिनाङ्क ०७।०७।२०२१ ई.) यावत्।

- **उपनयनदिनानि—अप्रील**—२३। **मई**—१३, २१, २३। **जून**—२०, २१। **जुलाई**—१२, १४।
- **विवाहदिनानि—दिसम्बर**—०६, ०७, १०, ११, १४। **फरवरी**—१७, २१। **अप्रील**—१६, २३, २५, २६, ३०। **मई**—०२, ०३, ०७, ०९, १२, १३, २१, २३, २४, २६, ३०, ३१। **जून**—०४, ०६, १०, ११, २०, २१, २४, २५, २७, २८। **जुलाई**—०१, ०४, ०७, १४, १५।
- **तृतीयाद्यब्दीयद्विरागमनदिनानि—नवम्बर**—२६, २७, २९, ३०। **दिसम्बर**—०२, ०३, ०४। **फरवरी**—१५, १७, १९, २१। **मार्च**—०३। **अप्रील**—१६, १८, १९, २५, २६, २८, २९, ३०। **मई**—१२, १३।
- **प्रथमाब्दीयद्विरागमनदिनानि—फरवरी**—२१, २२, २४, २५, २८। **मार्च**—०१।
- **मुण्डनदिनानि—नवम्बर**—२७। **दिसम्बर**—०२, ०३। **जनवरी**—१८, २०। **फरवरी**—२२, २४, २५। **मार्च**—०१, ०३। **अप्रील**—१६, १९। **मई**—१३, १७, २१, २४, २७, ३१। **जून**—२१, २८।
- **गृहारम्भदिनानि—जुलाई**—२९, ३०। **अगस्त**—०३, ०५, ०६, ०८। **अक्टूबर**—२३, २६, २९, ३०, ३१। **दिसम्बर**—०२, ०३, ०५। **अप्रील**—२६, २९। **मई**—०१। **जून**—१९, २१, २४, २६, २८। **जुलाई**—२३।
- **गृहप्रवेशदिनानि—जुलाई**—२७, २९, ३०, ३१। **अगस्त**—०१। **अक्टूबर**—२१, २३, २६, २८, २९। **अप्रील**—१९, २३, २४। **जून**—१९, २१। **जुलाई**—१४, १९, २१, २२, २४।

• अस्मिन् वर्षे ग्रहणाभावः •

• अथ चाक्षुषोपनिषद् •

ॐ अस्याः चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः। ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाहमन्धो न स्याम तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्व्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा। इति नमस्कारपूर्व्वकं पाठं विधाय अर्घ्यं समर्प्य प्रणमेत्। अनेन चक्षूरोगनिवृत्तिः स्यादिति।

धर्मः सनातनो नित्यं जनैः सम्यगनुष्ठितः।
विधत्ते सबलं राष्ट्रं समृद्धं निरुपद्रवम्॥

आस्तिक्यभावनावशंवदानां श्रौतस्मार्त्तकर्मानुष्ठानतत्पराणां शिष्टानां तदनुशिष्टानामितरेषाञ्च जनानां धर्मोपार्जनौपयिकवर्षव्यापिकृत्यजात–सम्पादनोचितकालविशेषप्रबोधनप्रयोजनं निर्वोढुं दैवज्ञवर्यश्रीरामचन्द्रझाशर्म्मणा विनिर्मितं पण्डितमण्डलीसमनुमोदितं पारम्पर्यक्रमागतं पञ्चाङ्गमिदं नूनमलङ्कर्मीणतां कलयिष्यतीत्याशास्ते।

गङ्गादशहरा — **प्रो. राजेश सिंहः**
संवत् २०७७ — **कुलपतिः**

अथैतत् त्रिचत्वारिंशत्तमे नूतनतिथ्यादिपत्रे मैथिलनिबन्धसम्मत–समयशुद्धि–व्रत–पर्व–विशिष्टयोगप्रभृतिविषयान् संरक्ष्य समयशुद्धौ विहितमुहूर्तानुसारं यज्ञ–विवाह–उपनयन–देवादिप्रतिष्ठा–द्विरागमन–मुण्डन–कर्णवेध–यात्रा–तडागकूपवापीखनन–गृहारम्भ–गृहप्रवेशप्रभृति–शुभदिनानि सन्निवेशितानि। तानि च **कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृत–विश्वविद्यालय–ज्योतिषशोधकेन्द्राभ्यामायोजित**–ज्येष्ठकृष्णचतुर्दशीबृहस्पति–दिनाङ्क. २१।०५।२०२० क्रिस्ताब्दीय–**पण्डितसभयानुमोदितानि**।

अपि चात्र तिथ्यादिपत्रे वैशिष्ट्यमाधातुं स्वकीयाः सम्मतीः संस्कारप्रकारांश्च सहर्षं प्रेषयन्तु सुधीवराः।

अन्ते टङ्कणजन्यदोषाद् भ्रमाद्वा या अशुद्धयस्ताः पूर्वापरसन्दर्भ–मवलम्ब्य स्वयमेव संशोध्य व्यवहरन्तु गुणैकपक्षपातिनो विद्वांस इति निवेदयति।

वटसावित्रीव्रतम् — **पं. श्रीरामचन्द्रझाः**
सौरदिनाङ्क ०९।०२।१९४२ — **"राष्ट्रपति–सम्मानितः"**

ग्राम+पोष्ट–जयदेवपट्टी
द्वारा–कुर्सों (नदियामी)
दरभङ्गा–८४७४०५

• महामहोपाध्याय–महेशठक्कुरकृत–जगदम्बस्तुति •

यन्त्र न मन्त्र न तन्त्र कछू नहि जानत योग समाधि विचारो।
वेद सुदर्शन जानत नाहि पुराण प्रमाण विधान सुधारो॥ १॥
जौं मिथिलानल है जननी न रहै कछु लेश सुधर्म प्रचारो।
और उपाय न देखि पड़ै अवलम्ब हमें एक पाँओ तिहारो॥ २॥
याचक एक करय अर्जी मर्जी करिके सुनु शैलकुमारी।
जग मे जत देव विराजत हों तत् को प्रतिपालि पुकारि के हारी॥ ३॥
धाय पड़ौं पद पङ्कज मे जगदम्ब रहो अवलम्ब हमारो।
तारि सको मम त्राण करो नहि तारिणि नाम निरर्थ तिहारो॥ ४॥
नहि तारिणि नाम निरर्थ तिहारो ॥ श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥